सरल गृह वास्तु प्रमोद कुमार सिन्हा AIFAS

Future Point

# सरल गृह वास्तु

लेखक

**प्रमोद कुमार सिन्हा**

प्रकाशक

**अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ (पंजी.)**

X-35, ओखला फेस–2, नयी दिल्ली–110020

Phone (फोन): (011) 40541000 (50 Line) Fax (फैक्स): (011) 40541001

Email (इमेल)– mail@aifas.com

Web (वेब)– www.aifas.com

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

# सरल गृह वास्तु

लेखक
**प्रमोद कुमार सिन्हा**

प्रकाशक
**अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ (पंजी.)**
X-35, ओखला फेस–2, नयी दिल्ली–110020
Phone (फोन): (011) 40541000 (50 Line) Fax (फैक्स): (011) 40541001
Email (इमेल)– mail@aifas.com
Web (वेब)– www.aifas.com

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

सर्वाधिकार ©

अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ

Future Point

द्वितीय संस्करण 2010

संघ के पाठ्यक्रम के लिए विशेष रूप से प्रकाशित

प्रकाशक :

अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ (पंजी.)

X-35, ओखला फेस–2, नयी दिल्ली–110020

Phone (फोन): (011) 40541000 (50 Line) Fax (फैक्स): (011) 40541001

Email (इमेल)– mail@aifas.com

Web (वेब)– www.aifas.com

Future Point

## लेखक परिचय

अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ के बिहार एवं झारखंड के गर्वनर श्री प्रमोद कुमार सिन्हा जी ज्योतिष के क्षेत्र में अपनी अलग ही पहचान रखते हैं। 15 वर्षों से इन विद्याओं के स्वाध्याय में लगे हैं। दस साल से तो समर्पित होकर ज्योतिष कार्य ही कर रहे हैं। अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ के अन्तर्गत ज्योतिष की कक्षाएं प्रारम्भ करने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। संघ के चैप्टर चेयरमैन होने के नाते संघ की सभी गतिविधियों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेते हैं। संघ द्वारा प्रकाशित रिसर्च जर्नल ऑफ एस्ट्रोलॉजी में उनके लेख प्रकाशित होते रहते हैं। देश विदेश में होने वाली घटनाओं का ज्योतिषीय विवेचन बहुत ही सरल और सटीक ढंग से करते हैं। ज्योतिष महर्षि पाठ्यक्रम के अन्तर्गत सौ से अधिक ज्योतिषियों की कुण्डलियों का अध्ययन करके ज्योतिषी बनने के योगों पर काम किया है। ज्योतिष के प्रचार के लिए निरंतर सक्रिय रहते हैं। ज्योतिष के साथ वास्तु, अंकशास्त्र और लाल किताब का भी ज्ञान रखते हैं। प्रस्तुत पुस्तक 'सरल गृह वास्तु' में ज्योतिषीय उपाय जैसे कठिन विषय को बहुत ही सुंदर व सटीक रूप से पेश किया है जो अत्यंत ही सराहनीय है। पुस्तक में वास्तु का समग्र अवलोकन करते हुए बहुत ही सरल और व्यावहारिक उपायों का समावेश है। हम उनकी उत्तरोत्तर उन्नति की कामना करते हैं।

# प्रस्तावना

वास्तुविद्या प्राचीनतम् विद्या है, जिसका उल्लेख प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद में मिलता है। मनुष्य के जीवन को सुगम, सरल व कल्याणकारी बनाने के लिए हमारे ऋषि–मुनि सदैव चिंतित रहे हैं। इसके सिद्धांत पूर्णतः वैज्ञानिक हैं। अतः यह एक व्यावहारिक विज्ञान है जिसकी उपयोगिता स्पष्ट एवं निश्चित है।

प्राचीनकाल में विद्यार्थी गुरुकुल में चौंसठ विद्याओं का अध्ययन करते थे, जिनमें वास्तु विद्या प्रमुख थी। विगत कुछ वर्षों से इस विद्या की ओर लोगों का विशेष ध्यान आकृष्ट हुआ है। विश्वकर्मा प्रकाश में कहा गया है :

**''वास्तुशास्त्रं प्रवक्ष्यामि लोकानां हितकाम्यया''**

''वास्तु'' शब्द का अर्थ है – बसने या वास करने योग्य। वास्तुविद्या एक अत्यंत विस्तृत एवं गूढ़ विज्ञान है। इसके अधिकांश ग्रंथ लुप्त हो चुके हैं। रामचरितमानस में तुलसीदास जी ने लिखा है :

**''क्षिति जल पावक गगन समीरा।**
**पंच तत्व रचित यह अधम शरीरा।।''**

जिस प्रकार मानव शरीर पांच तत्वों से निर्मित है उसी प्रकार प्रकृति भी इन्हीं पांचों तत्वों से निर्मित है। इसलिए ये पांच तत्व जीवन के अभिन्न अंग हैं।

यदि मनुष्य प्रकृति के इन पांच तत्वों के अनुकूल वातावरण में वास करे तो उसका जीवन सुखी, स्वस्थ एवं आध्यात्मिक बना रहेगा। अनुकूल एवं प्रतिकूल घटनाएं मानव जीवन के अंग हैं, जो प्रकृति का शाश्वत सत्य है। प्रारब्ध का हमारे जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान है फिर भी मनुष्य को शास्त्रों में बताए गए मार्गों के अनुसार ही कर्म करना चाहिए।

वास्तुशास्त्र एक गूढ़ एवं विस्तृत विषय है जो वर्तमान समय में सभी लोगों के लिए प्रासंगिक हो गया है। इसके सिद्धांतों का उचित ज्ञान प्राप्त कर इनका प्रयोग भवन निर्माण में किया जाए तो यथासंभव वास्तुजनित दोषों का निराकरण किया जा सकता है।

इस पुस्तक के अध्ययन एवं इसमें निहित वास्तु सम्मत नियमों का अनुसरण एवं पालन कर पाठक यथोचित लाभ उठाएं यही मेरा उद्देश्य है, यही मेरी अभिलाषा है। इसे लिखने में मेरी माता श्रीमती उषारानी, पिता श्री अवधेशनंदन प्रसाद, पत्नी श्रीमती वीणा सिन्हा, ज्येष्ठ भ्राता श्री सुधेन्द्र कुमार सिन्हा, गुरुजन, ईश्वर एवं मित्रजन की सद्प्रेरणा रही है। पुस्तक लिखने की प्रेरणा का श्रेय विशेष रूप से अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अरुण कुमार बंसल एवं राष्ट्रीय कोषाध्यक्षा श्रीमती आभा बंसल को जाता है। इनके निरंतर मार्गदर्शन से यह पुस्तक अति शीघ्र तैयार की गई है। साथ ही पटना चैप्टर के प्राचार्य श्री रामशरण सिंह, संकलन करने में कार्यालय सहयोगी रवि कुमार एवं छात्र राजेन्द्र शर्मा का प्रयास सराहनीय रहा है।

इन सभी लोगों के प्रति अपनी कृतज्ञता एवं आभार प्रकट करता हूं।

**प्रमोद कुमार सिन्हा**

Future Point

# विषय सूची


पृष्ठ संख्या

1. वास्तुशास्त्र का परिचय ..... 1
2. वास्तु देव या वास्तु पुरुष ..... 4
3. वास्तु में दिशाओं का महत्व ..... 12
4. पंचमहाभूतात्मक तत्व का वास्तु में महत्व ..... 17
5. वास्तु का ज्योतिष से संबंध ..... 23
6. मुहूर्त ..... 25
7. भूमि चयन ..... 30
8. मार्ग विचार ..... 36
9. भूखंड में ऊर्जा का स्तर ..... 43
10. भूखंड का आकृति मूलक वर्गीकरण ..... 45
11. भूखंड का विस्तार ..... 55
12. छिद्रिल कोण युक्त भूखंड ..... 60
13. वेध ..... 63
14. गृह वास्तु विचार ..... 68
15. छत पर पानी की टंकी ..... 73
16. भवन का मुख्य द्वार ..... 75
17. भवन की खिड़कियां ..... 82
18. सीढ़ी बनाने के मुख्य नियम ..... 83
19. आवास कक्षों का शुभ आकार ..... 86
20. भवन में पूजा कक्ष की व्यवस्था ..... 88
21. रसोई घर ..... 93
22. भाजन कक्ष ..... 96


Future Point

23. स्नानागार ..... 98
24. प्रसाधन कक्ष ..... 100
25. सेप्टिक टैंक ..... 102
26. शयन कक्ष का स्थान ..... 104
27. अध्ययन कक्ष ..... 108
28. तिजोरी कक्ष ..... 110
29. बेसमेंट/सेलर ..... 112
30. गैरेज और बरामदा ..... 114
31. भंडार कक्ष ..... 116
32. फ्लैट, अपार्टमेंट और आवासीय परिसर ..... 117
33. वास्तु के शाश्वत नियम ..... 120
34. वास्तु में रंगों का महत्व ..... 122
35. वृक्ष का वास्तु में महत्व ..... 124
36. वास्तु और रोग ..... 128
37. दिशा का ग्रहों से संबंध एवं दोष निवारण के उपाय ..... 129
38. फेंगसुई ..... 146
39. पिरामिड ..... 169
40. वास्तु सिद्धांतों पर आधारित नक्शे ..... 176

Future Point

Future Point

# Astrological Products

## VPP FACILITY AVAILABLE

### Malas (Beads)

- Rudraksha Mala(For prayer) 101/-
- Rudraksha Mala(Medium beads) 301/-
- Rudraksha Mala (Small beads) 650/-,900/-,1500/-
- Rudraksha Mala(Special) 2500/-
- Rudraksha & Pearl Mixed 650/-
- Rudraksha & Crystal Mixed 301/-
- Crystal Mala(Small) 501/-
- Crystal Mala diamond cutting (Medium) 1100/-
- Crystal Mala diamond cutting (Big) 2500/-
- Crystal & Special Rudraksha Mixed 2500/-
- Putra Prapti Mala 101/-
- Tulsi Mala 101/-
- Red Chandan Mala 101/-
- White Chandan Mala 201/-
- Kamal Gatta Mala 101/-
- Kayakalpa Mala 201/-
- Haldi Mala 201/-
- Vaijayanti Mala 101/-
- Feroja Mala 650/-
- Hakika Mala 501/-
- Pearl Mala 650/-
- Pearl Mala(Special) 1100/-
- Moonga Mala(Coral) 2100/-
- Italian Moonga Mala (Special) 3100/-
- Coral & Pearl Mixed 1100/-
- Navratna Mala 1100/-
- Navratna Mala(Special) 2100/-
- Parad Mala 1100/-

### Crystal Items

- Crystal Sri Ya. 600/-, 1100/-, 2100/-, 3100/-, 5100/-
- Crystal Lakshmi 600/-, 1100/-, 2100/-
- Crystal Ganesh 600/-, 1100/-, 2100/- Per Piece
- Crystal Shivalinga 600/-, 1100/-, 2100/- Per Piece
- Crystal Locket of Ganesh 300/- Per Piece
- Crystal Pyramid 300/-, 500/- Per Piece
- Crystal Moon 300/- Per Piece
- Crystal Sun 300/- Per Piece
- Crystal Turtle 300/- Per Piece
- Crystal Ball 300/-, 500/- Per Piece
- Crystal Shiv Family 5100/- Per Piece
- Sangsitara Laxmi Ganesh 2100/-, 3100/-
- Sangsitara Shriyantra 2100/-, 5100/-
- Margaj Shriyantra 2100/-, 5100/-
- Lens 250/-, 150/-
- Two faced Sangsitara Ganesh 2800/-, 5100/-

### Pyramid

- Ashtadhaatu Pyramid(Nine in one) 401/-
- Ashtadhaatu Pyramid Shree Yantra 500/-
- Set of Pocket Pyramid Yantra 500/-
- Set of Turtle Pyramid 500/-
- Pyramid Small 100/-

### Miscellaneous Items

- Navratna Bracelet (Small/Big)) 3100/-, 5100/-
- Navratna Ring 1500/-
- Black Horse Shoe 251/-
- Saturn Ring 51/-
- Pendulum 51/-
- Shwetarka Ganpati 300/-, 500/-
- Indrajaal 151/-
- Metal Turtle 101/-
- Narmada Shivalinga 251/- Per Piece
- Shaligrama 450/- Per Piece
- Seepa Turtle 400/-,600/-
- Ekakshi Naariyal 300/-
- Vastu Compass 250/-
- Lal Kitab Materials 21/- Per Piece
- Fish, Snake etc. 21/- Per Piece
- Parad Ring 101/-
- Gomti Chakra 21/- (Pair)
- Laxmi Ganesha of Coral 1100/- Per Piece

### Shankha

- Turtle Shankha 1100/-
- Dakshinaavarti Shankha (Special) 3100/-
- Dakshinaavarti Shankha (Large) 2100/-
- Dakshinaavarti Shankha (Medium) 1100/-, 1500/-
- Dakshinaavarti Shankha (Small) 650/-, 900/-
- Moti Shankha 251/-, 501/-
- Ganesh Shankh 251/-, 501/-
- Blower Shankha (Large) 1100/-, 2100/-
- Blower Shankha 750/-
- Kauri Om Namah Shivay 251/-

### All Type of Silver Lockets

- Navaratna Locket (Small/Big) 3100, 5100/-
- Navaratna Bracelate Locket (Small/Big) 3100, 5100/-
- Trishakti Locket - Types 2100/-
- Kaal Sarpa Locket 351/-
- Mahamrutyunjaya Locket 351/-
- Saraswati Yantra Locket 351/-
- Shree Yantra Locket 351/-
- Lxmi-Ganesh Locket 351/-
- Baglamukhi Locket 351/-
- Durgabisa Locket 351/-
- Lockets of Mercury, Moon, Venus, 351/-
- Lockets of Mars, Sun, Jupiter, 351/-
- Lockets of Saturn, Rahu, Ketu 351/-
- Ganesh Locket 351/-
- Gayatri Locket 351/-
- Motichand Locket 301/-, 500/-

Future Point

## Rudraksha

| | |
|---|---|
| • Ganesh Rudraksha | 500/- |
| • Gauri Shankar | 4100/- |
| • One Faced (Kaju Dana) | 2100/- |
| • Two Faced | 51/- |
| • Three Faced/Nepali | 51/-, 500/- |
| • Four Faced | 51/- |
| • Five Faced | 21/- |
| • Six Faced | 51/- |
| • Seven Faced | 500/- |
| • Eight Faced | 1500/- |
| • Nine Faced | 2100/- |
| • Ten Faced | 2100/- |
| • Eleven Faced | 3100/- |
| • Twelve Faced | 5100/- |
| • Thirteens Faced | 7500/- |
| • Fourteen Faced | 25000/- |
| • Fifteen Faced | 25000/- |

## Mercury Items

| | |
|---|---|
| • Mercury Hanuman | 500/-, 800/-, 5100/- P. Pc. |
| • Mercury Sh. Ya. Small | 600/-,900/, 1500-P. Pc. |
| • Mercury Sh. Ya. Big | 2100/-, 3100 /-, 5100/- P. Pc. |
| • Mercury Lakshmi-Ganesh | 800/-, 1100/- Per Set |
| • Mercury Pyramid | 400/-, 600/- Per Piece |
| • Mercury Shivalinga (Small) | 500/-, 1500/- |
| • Mercury Shivalinga (Big) | 2100/-, 3100/-, 4100/-P.Pi. |
| • Mercury Shiv Family | 4100/- |
| • Mercury Durgaji | 300/-, 2200/- |
| • Mercury Shankh | 200/- |
| • Mercury Laxmi Paduka | 300/- |

## Feng Sui Items

| | |
|---|---|
| • Paakua Mirror (Big) | 250/- |
| • Wind Chimes | 200/- |
| • Luk Puk Sau | 300/- |
| • Laughing Budha | 200/-, 400/- |
| • Three legged frog | 100/-,151/- |
| • Love Birds | 250/-,400/- |
| • Lucky Coin with three | 51/- |
| • Tree of gems (Big) | 500/- |
| • Education Tower (Small/Big) | 150/-,250/- |

## Silver Yantra

Shree Ganesh Yantra, Shree Yantra, Shree Saraswati Yantra, Shree Mahalaxmi Yantra,Durga Beesa Yantra,Shree Mahaamrutyunjaya Yantra, Bagala Mukhi Yantra.

| | | |
|---|---|---|
| • Size | 2"x2" | 650/- |
| • Size | 4"x4" | 2100/- |
| • Size | 7"x7" | 4100/- |

## Silver Ratna Locket/Ring

| | Big 5¼ Ratti |
|---|---|
| • Sapphire (Nili) | 1100/-, 2100/- |
| • Ruby | 1100/-,2100/- |
| • Coral | 1100/-, 2100/- |
| • Emerald | 1100/-, 2100/- |
| • Pearl | 1100/-, 2100/- |
| • Gomed | 1100/-, 2100/- |
| • Peetambari, Firoja | 1100/-, 2100/- |
| • Cat's Eye, Zircon | 1100/-, 2100/- |
| • Aquamarine Stone | 1100/-, 2100/- |

## Yantra Coated With Gold Polish

Ganesh Yantra, Shree Yantra, Kuber Yantra, Bagalamukhi Yantra, Maha Laxmi Yantra, Sampurn Maha Laxmi Yantra, Laxmi Ganesh Yantra, Sukh Samridhi Yantra, Vastu Dosh Nivarak Yantra, Vyapaar Vridhi Yantra, Durga Beesa Yantra, Maha Mrityunjaya Yantra, Vahan Durghatna Nashak Yantra, Vaastu Yantra, Kaalsarp Yantra, Hanuman Yantra, Saraswati Yantra, Navadurga Yantra, Santan Gopal Yantra, Kanakdhara Yantra, Vashikaran Yantra, Matsya Yantra, Gayatri Yantra, Geeta Yantra, Navgraha Yantra, Budha Yantra, Shukra Yantra, Chandra Yantra, Brihspati Yantra, Surya Yantra, Mangal Yantra, Ketu Yantra, Rahu Yantra, Shani Yantra, Aakarshan Yantra, Prem Virddhi Yantra, Maatangi Yantra, Ram Raksha Yantra, Ganpati Yantra, Kali Yantra, Sarvakarya Shidhi Yantra, Maha Sudarshan Yantra, Chinnamasta Yantra, Dhumavati Yantra, Tara Yantra, Tripura Bhairavi Yantra, Kamla Yantra, Bhuvneshwari Yantra.

| | | |
|---|---|---|
| • Size | 2"x2" | 50/- |
| • Size | 3½"x3½" | 150/- |
| • Size | 7"x7" without frame | 400/- |
| • Size | 7"x7" with Italian frame | 650/- |
| • Size | 12"x14" with frame | 1500/- |
| • Size | 24"x24" with frame | 7500/- |

## Special 13 in one yantra with Italian frame

Sampurn Badha Mukti Yantra, Sampurn KaalSarp Yantra, Sampurn Vidya Pradaayak Yantra, Sampurn Shree Yantra, Sampurn Rognashak Yantra, Sampurn Vaastu Yantra, Sampurn Sarvakaarya Siddhi Yantra, Sampurn Navagrah Yantra, Sampurn Vyaapaar Virdhi Yantra.

| | | |
|---|---|---|
| • Size | 14"x14" | 2100/- |
| • Size | 8"x8" | 900/- |

Please send your name and address along with the cheque or DD for the item you need favouring Future Point Ratna Bhandar at the address given below
You can send the amount by Moneyorder also. Please send Rs. 50/- as postage charge for the item worth less than Rs. 500/-

卐 Future Point 卐


*Head Office:*
X-35, Okhla Industrial Area, Phase-II, Delhi-110020
☎ : 91-11-40541000 (40 Line) Fax : 40541001

*Branch Office:*
D-68, Hauz Khas, New Delhi-110016
☎ : 40541020 (10 Line) Fax : 40541021

E-mail: mail@futurepointindia.com, Web: www.futurepointindia.com

Future Point

Future Point

# WORLD'S LEADING ASTROLOGICAL WEBSITE

## www.futurepointindia.com

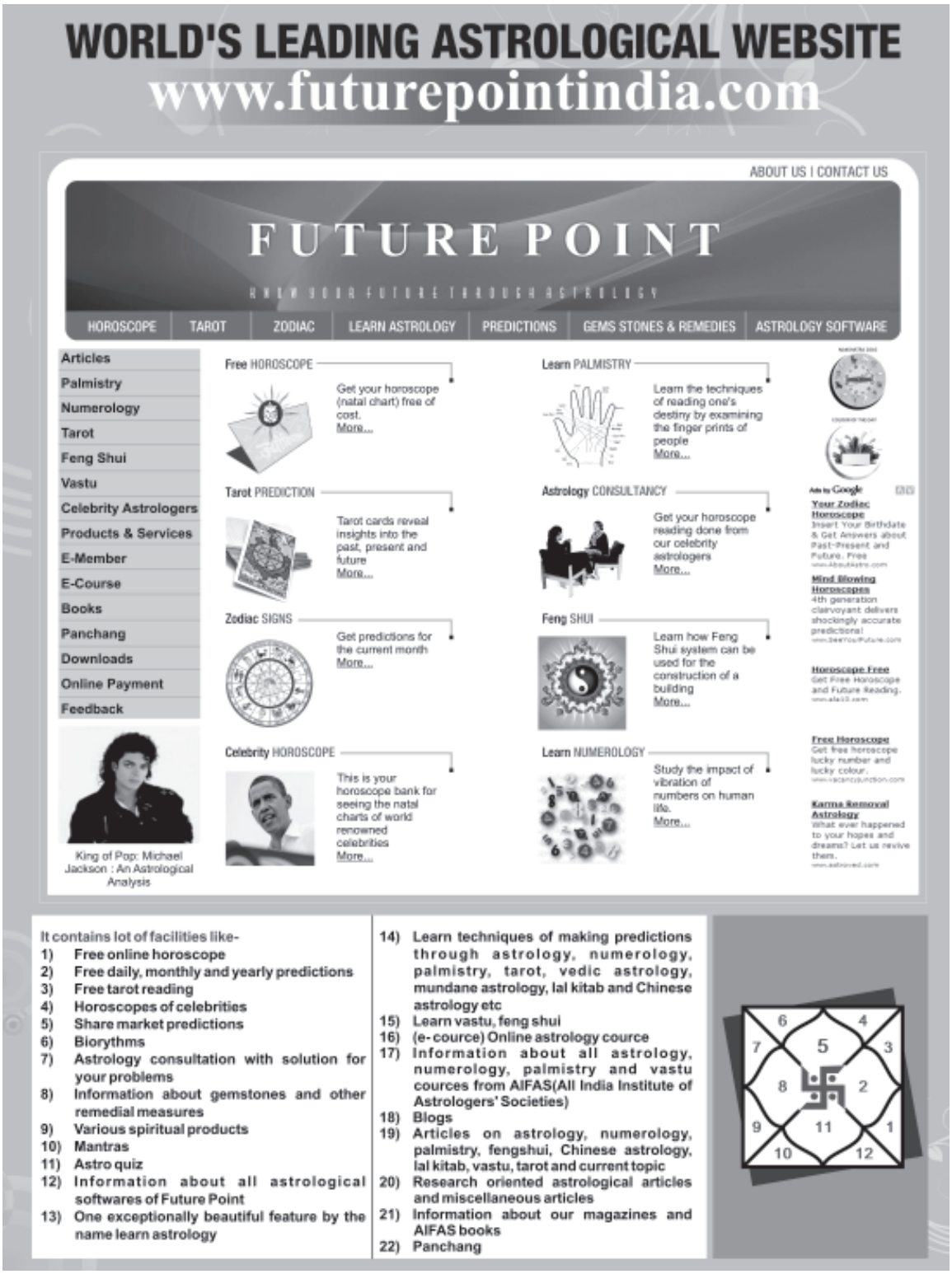


It contains lot of facilities like-

1) Free online horoscope
2) Free daily, monthly and yearly predictions
3) Free tarot reading
4) Horoscopes of celebrities
5) Share market predictions
6) Biorythms
7) Astrology consultation with solution for your problems
8) Information about gemstones and other remedial measures
9) Various spiritual products
10) Mantras
11) Astro quiz
12) Information about all astrological softwares of Future Point
13) One exceptionally beautiful feature by the name learn astrology
14) Learn techniques of making predictions through astrology, numerology, palmistry, tarot, vedic astrology, mundane astrology, lal kitab and Chinese astrology etc
15) Learn vastu, feng shui
16) (e-cource) Online astrology cource
17) Information about all astrology, numerology, palmistry and vastu cources from AIFAS(All India Institute of Astrologers' Societies)
18) Blogs
19) Articles on astrology, numerology, palmistry, fengshui, Chinese astrology, lal kitab, vastu, tarot and current topic
20) Research oriented astrological articles and miscellaneous articles
21) Information about our magazines and AIFAS books
22) Panchang

Future Point

PUBLISHED BY

# ALL INDIA FEDERATION OF ASTROLOGERS' SOCIETIES

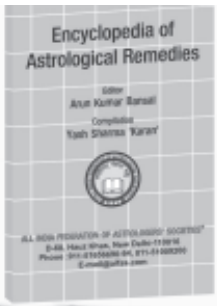


### ASTROLOGY

| | |
|---|---|
| * A Text Book of Astrology | Rs. 200/- |
| * Encyclopedia of Astrological Remedies | Rs. 300/- |
| * Longitudes & Latitudes of the World | Rs. 125/- |
| * Prediction through Dasha System | Rs. 100/- |
| * Horoscope Matching | Rs. 100/- |
| * Muhurat (Electional Astrology) | Rs. 100/- |
| * Remedies of Astrological Science | Rs. 100/- |
| * Principals of Ashtak Varg Siddhant | Rs. 200/- |
| * Transit of Planets | Rs. 100/- |
| * A Text Book on Shadabala | Rs. 100/- |
| * Horary for Beginners | Rs. 100/- |
| * Timing of Events Through Dasha & Transit | Rs. 100/- |
| * Mundane Astrology | Rs. 200/- |
| * Jaimini Systems | Rs. 100/- |
| * Krishnamurthi Paddhati | Rs. 100/- |
| * Analysis of Longevity | Rs. 100/- |

### VASTU

| | |
|---|---|
| * Remedies of Domestic Vastu | Rs. 100/- |
| * Remedies of Vastu | Rs. 200/- |
| * Vastu Shastrachrya-I | Rs. 200/- |

### PALMISTRY

| | |
|---|---|
| * Remedies of Palmistry | Rs. 100/- |

### NUMEROLOGY

| | |
|---|---|
| * An Introduction to Numerology | Rs. 200/- |

| | |
|---|---|
| लाल किताब | Rs. 200/- |
| फेंग सुई | Rs. 200/- |

**ENCYCLOPEDIA OF ASTROLOGICAL REMEDIES'**

Encyclopedia of Astrological Remedies' is a consolidated effort to combine the various types of remedial measures available in vedic astrology, vedas, mythology, mantra shastra, Lal Kitab, gemology, science of yantras and other reliable sources of our cultural heritage which include all sorts of effective astrological remedies. Method of the uses of gems, rudraksha, yantras, rosaries, crystals, rudraksha kavach, parad, rings, conch, pyramids, coins, lockets, fengshui, remedial bags, colors, talismans, fasting and meditation with mantras have been incorporated in this book which would certainly become a matter of pleasure for the lovers of occult and Astrology. The present book may prone to be a milestone in the area of Remedial Astrology. Book lovers would find it as a unique compendium of anything which alleviates, placates, and cures

**Price : Rs 300/-**
**Pages : 275**
**Publisher : All India Federation of Astrologer's Societies**

### ज्योतिष

| | |
|---|---|
| * सरल ज्योतिष | Rs. 200/- |
| * सरल दशाफल निर्णय | Rs. 100/- |
| * सरल अष्टक वर्ग सिद्धान्त | Rs. 200/- |
| * सरल अष्टकूट मिलान | Rs. 100/- |
| * सरल मुहूर्त्त बोध | Rs. 100/- |
| * सरल उपाय विचार | Rs. 100/- |
| * सरल गोचर विचार | Rs. 100/- |
| * षडबल | Rs. 100/- |
| * प्रश्न शास्त्र | Rs. 100/- |
| * वर्षफल | Rs. 200/- |
| * घटना का काल निर्धारण | Rs. 100/- |
| * मेदनीय ज्योतिष | Rs. 200/- |
| * जैमिनि पद्धति | Rs. 100/- |
| * आयुनिर्णय | Rs. 100/- |

### वास्तु

| | |
|---|---|
| * सरल गृह वास्तु उ. विचार | Rs. 100/- |
| * सरल वास्तु उपाय विचार | Rs. 100/- |
| * सरल गृह वास्तु | Rs. 200/- |

### हस्तरेखा

| | |
|---|---|
| * सरल हस्त रेखा शास्त्र | Rs. 200/- |
| * सरल मुखाकृति विज्ञान | Rs. 100/- |
| * सरल हस्तरेखा उ. विचार | Rs. 100/- |

### अंक ज्योतिष

| | |
|---|---|
| * सरल अंक ज्योतिष | Rs. 200/- |

To order send money order, bank draft or a check payble in Delhi in the name of **All India Federation of Astrologers' Society** on the following address. For an order of less than Rs. 500 also include Rs. 50 for postal charges.

## Future Point

*Head Office:*
**X-35, Okhla Industrial Area, Phase-II, Delhi-110020**
**Ph.: 91-11-40541000 (40 Line) Fax : 40541001**

*Branch Office:*
**D-68, Hauz Khas, New Delhi-110016**
**Ph.: 40541020 (10 Line) Fax : 40541021**

**E-mail: mail@futurepointindia.com, Web: www.futurepointindia.com**

Future Point

# अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ
## के गया एवं पटना चैप्टर के
## एस्ट्रोलॉजिकल पॉइंट की सेवाएं एक नजर में

### ज्योतिषीय पाठ्यक्रम : सीखिए

ज्योतिष शास्त्र

वास्तु शास्त्र

हस्त रेखा

अंक शास्त्र

ज्योतिषीय परामर्श एवं प्रशिक्षण प्राप्त करने की सुविधा विडियो कांफ्रेंसिंग के द्वारा भी उपलब्ध।

हमारी सेवाएं निम्न हैं

1. ज्योतिषीय परामर्श : कुंडली निर्माण, कुंडली मिलान, वर्षफल
2. अंक शास्त्र : कुंडली निर्माण, फैक्ट्री, व्यवसाय एवं व्यक्तियों का नामकरण
3. हस्त रेखा : परीक्षण द्वारा भविष्यफल
4. वास्तु परामर्श : औद्योगिक, व्यावसायिक एवं आवासीय भवन के वास्तु परामर्श तथा वास्तु आधारित नक्शे की सुविधा

संपर्क करें

पटना चैप्टर
एस्ट्रोलॉजिकल पॉइंट
कंकड़ बाग रोड, समीप चौधरी पेट्रोल पंप, चिरैयाटांड, पटना
मो. : 09431223487, 09835412470
ई-मेल : pramod@astrologicalpoint.com
info@astrologicalpoint.com
वेबसाइट : www.astrologicalpoint.com

गया चैप्टर
एस्ट्रोलॉजिकल पॉइंट, इंस्टीट्यूट ऑफ एस्ट्रोलॉजी
शांति निकेतन, महारानी रोड, गया, पिन-823002 (बिहार)
दूरभाष : 0631-2225473 मो. 09431223487, 09835268086
ई-मेल : pramod@astrologicalpoint.com
info@astrologicalpoint.com
वेबसाइट : www.astrologicalpoint.com

नोट : वास्तु एवं ज्योतिष शास्त्र से संबंधित विभिन्न यंत्रों एवं रत्न सामग्रियों की विस्तृत जानकारी सुझाव एवं परामर्श और आवश्यकतानुसार विभिन्न यंत्र एवं रत्न उपलब्ध कराने की सुविधा

Future Point

A house of complete Astrology Solutions

समग्र ज्योतिषीय समाधान

लियो गोल्ड

लियो पाम

लियो गोल्ड (गृह संस्करण)

रिसर्च जॉर्नल

फ्यूचर समाचार पत्रिका

प्रकाशन

रुद्राक्ष

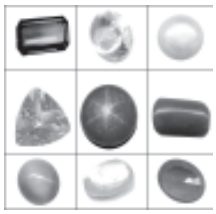

उपलब्ध सामग्री

वेब साईट

आयोजन गतिविधियां

शिक्षा

परामर्श

Future Point (P) Ltd

Head Office- X-35, Okhla Phase-2, New Delhi - 20
Ph : 40541000 (20 Line), Fax : 40541001
Branch Office -D-68, Hauzkhas, New Delhi - 110016
Ph : 40541020 (10 Line), Fax : 40541021
Email : mail@aifas.com, Web :www.aifas.com

Price - 200/-

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

# 1. वास्तुशास्त्र का परिचय

वास्तुशास्त्र की जानकारी हमें ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद के साथ–साथ पुराणों एवं अन्य ग्रन्थों से भी मिलती है। परंतु इसके सिद्धांतों का उल्लेख सर्वप्रथम ऋग्वेद में किया गया। इन चार वेदो के पश्चात् चार उपवेद भी लिखे गये। इन्हीं उपवेदों में स्थापत्य वेद भी है जो अथर्ववेद का उपवेद है। कालान्तर में यह स्थापत्यवेद ही वास्तुशास्त्र के रूप में विकसित हुआ। इसके साथ ही मत्स्य पुराण, स्कंद पुराण, अग्नि पुराण, वायु पुराण, गरूड़ पुराण तथा भविष्य पुराण आदि से भी वास्तु के बारे में जानकारी मिलती है। मत्स्य पुराण में शिलाओं पर नक्काशी, समारोह स्थल की स्थिति एवं साज–सजा के सिद्धांतो की विस्तृत चर्चा की गई । नारद पुराण में मंदिरो के विषय में अनेक उल्लेखनीय तथ्य देखने को मिलता है। इसी प्रकार गरूड़ पुराण में रिहायशी भवनों तथा मंदिरो से संबंधित सिंद्धांतो की विस्तृत चर्चा है। मंदिरो के विषय में वास्तु सिद्धांतो की व्याख्या वायु पुराण भी करता है। परंतु इसमें उन मंदिरो का वर्णन है जो अधिक ऊँचाई पर बनाये गयें है। स्कंद पुराण में दिए गए नगर योजना सिद्धांतो को यथासंभव ठीक ढंग से अपनाया जाए तो पश्चात्य सभ्यता के महानगर भी उस कृति के समक्ष फीके पड़ जाएंगे। इसी तरह अग्नि पुराण में रिहायशी भवन की विस्तृत व्याख्या मिलती है।

इन प्राचीन ग्रंथो के अतिरिक्त अन्य ग्रंथो में भी वास्तु की व्यापक एवं विस्तृत जानकारी मिलती है। रामायण, महाभारत, चाणक्य के अर्थशास्त्र, जैन एवं बौद्ध ग्रंथ वृहत् संहिता, समरांगण सूत्रधार, विश्वकर्मा प्रकाश, मयमत, मानसार, वास्तु राजवल्लव, वराहमिहिर के ज्योतिष ग्रंथ वृहत्संहिता आदि विभिन्न ग्रंथो में वास्तुशास्त्र के महत्व एवं उपयोगिता का वर्णन है। इसके अतिरिक्त भृगु, शुक्राचार्य और वृहस्पति जैसे अठारह महर्षियों ने इस पर विस्तृत प्रकाश डाला है। ये सभी ग्रंथ अपने आप में व्यापक हैं एवं विस्तृत वास्तु सिद्धांतो को समेटे हुए है परंतु मालवा के प्रसिद्ध शासक भोज परमार ने ग्यारहवीं शताब्दी में समरांगण सूत्रधार लिखा जो वास्तुशास्त्र का प्रमाणिक एवं अधिकृत ग्रंथ है। इसमें सभी पूर्ववर्ती ग्रंथो के सिद्धांतो का समावेश है। साथ ही इसमें वास्तु दोषों के निवारण के अत्यंत सरल उपाय बतायें गए हैं ये सारे उपाय भवन को किसी तरह की क्षति पहुँचाए बगैर किए जा सकते हैं।

वास्तुशास्त्र का प्रादुर्भाव वैदिक काल में ही हुआ तथा वैदिक काल से तेरहवीं शताब्दी तक वास्तु कला का प्रचार–प्रसार एवं प्रयोग होता रहा परंतु इसके बाद मुगलों के आने पर इस कला का प्रचलन कम होता गया और धीरे–धीरे लुप्तप्रायः हो गई किन्तु दक्षिण भारत में इस कला का प्रचलन जारी रहा। हमारे यहां जैसे ही अंग्रेजो का शासन काल शुरू हुआ इस अद्भूत कला का ह्रास होता चला गया। लोग अपने जीवन में इसे अपनाने के बजाय ढोंग मानने लगे परन्तु आज के भौतिकता भरे जीवन में जहाँ पल–पल तनाव, परेशानियां एवं दुखः की अनुभूति हो रही है यह शास्त्र मनुष्य को सुख–समृद्धि ऐश्वर्य एवं शांति देने में सामर्थ्यवान साबित हो रहा है। इसी कारण से इस मृत प्रायः शास्त्र को वर्तमान समय में हमलोग स्वागत कर रहें है एवं इसके सिद्धांतो को अपने जीवन में अपनाकर सुख समृद्धि एवं शांति की प्राप्ति



Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

कर रहें हैं।

वास्तुशास्त्र का उदय तथा उसकी संरचना सृष्टि के पंचभूतात्मक सिद्धांत पर ही आधारित है। जिस प्रकार हमारा शरीर पंचमहाभूतात्मक तत्वों से मिलकर बना है उसी प्रकार किसी भी भवन के निर्माण में पंचतत्वों का पर्याप्त ध्यान रखा जाए तो उसमें रहने वाले सुख से रहेंगे। ये पंचमहाभूत–पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश है। हमारा ब्रह्माण्ड भी इन्हीं पांच तत्वों से बना है। इसलिए कहा जाता है 'यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे'। जिस प्रकार शरीर में इन तत्वों की कमी या अधिकता होने से व्यक्ति अस्वस्थ्य या रूग्ण हो जाता है उसी प्रकार भवन में इन तत्वों के असंतुलित होने से उसमें निवास करने वाले को नाना प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ता है। इसके साथ ही प्रकृति के अनन्त शक्तियों में से कुछ शक्तियां हमें प्रभावित करती है जैसे सूर्य की स्थिति, पृथ्वी पर गुरूत्वाकर्षण शक्ति ,आभामंडल की शक्तियां, चुम्बकीय शक्ति तथा विद्युत चुम्बकीय शक्ति इत्यादि। यह शक्तियां निर्माण किये गए भवन में विद्यमान रहती है जो मानव शरीर की विद्युत चुंबकीय शक्ति को प्रभावित करके शुभ या अशुभ फल देती है। यह शक्तियाँ जगह–जगह पर पृथ्वी एवं मानव पर हमेशा अलग–अलग प्रभाव एवं महत्व रखती है। यही कारण है कि वास्तु शास्त्र सदैव प्रत्येक स्थान पर एक समान फल नही देता है। यह परिवर्तन मानव के ग्रह नक्षत्र तथा भौगोलिक अक्षांश के अनुसार बदलते रहती है। अन्यथा सभी भवनें एक समान ही फल देने वाले होते। ब्रह्मंड की सारी शक्तियाँ प्रकृति और हमारे शरीर को प्रभावित करती रहती है। यदि प्रकृति के विरूद्ध जाएंगे तो प्रकृति के कुप्रभाव का समाना करना पडेगा। फलस्वरूप हमारी अवनति होगी और यदि प्रकृति के अनुरूप चलेंगे तो सुप्रभाव पडेगा जिसके फलस्वरूप उन्नति होगी जो समृद्धशाली एवं सुखमय जीवन के लिए सहायक होगी। अतः यह आवश्यक है कि प्रकृति के अनुसार हम अपने जीवन को व्यवस्थित करें। वास्तुशास्त्र का सिद्धांत यह भी बतलाता है कि प्रकृति से सामंजस्य स्थापित कर भवन निर्माण किया जाए तो मनुष्य सुख–शांति एवं स्वस्थयमय जीवन प्राप्त करता है। वास्तुशास्त्र के संबंध में हालायुद्धकोष में कहा गया है–

**वास्तु संक्षेपतो वक्ष्ये गृहादो विघ्ननाशनम्।**
**ईशानकोणादारभ्य ह्योकाशीतिपदे त्यजेत्।।**

अर्थात् वास्तु संक्षेप में ईशान आदि कोणों से प्रारम्भ होकर गृह–निर्माण की वह कला है जो गृह में निवास करने वालों को प्राकृतिक विघ्न, उत्पातों व उपद्रवों से बचाती है।

अमर कोष के अनुसार

**"गृहरचना वच्छिन्न भूमे"**

गृहरचना के योग्य अविछिन्न भूमि को वास्तु कहते है। वास्तु वह स्थान कहलाता है जिसपर कोई इमारत खडी हो अथवा घर बनाने लायक जगह को वास्तु कहते है। इसे इस प्रकार भी कहा जा सकता है– वास्तु वस्तु से संबंधित वह विज्ञान है जो भवन निर्माण से लेकर भवन में उपयोग की जाने वाली वस्तु के बारे में मनुष्य को बतलाता है।



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

इसी प्रकार मालवा के प्रसिद्ध शासक भोज परमार ने ग्यारहवीं शताब्दी में स्वरचित ग्रंथ समरांगण सूत्राधार के पहले अध्याय के पांचवे श्लोक में कहा है–

**वास्तुशास्त्रादृते तस्य न स्याल्लः क्षणनिश्यचः।**
**तस्माल्लोकस्य कृपया शास्त्रमतेदृदीर्यते।।**

अर्थात् वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तों के अतिरिक्त अन्य कोई प्रकार नहीं है जिससे यह निश्चित किया जा सके कि कोई भी भवन सही निर्मित है अथवा नहीं। संक्षेप में वस्तु को सुनियोजित तरीके से रखना ही वास्तु है।

समारांगण सूत्र धनानि बुद्धिश्च सन्तति सर्वदानृणाम्।
प्रियान्येषां च सांसिद्धि सर्वस्यात् शुभ लक्षणमफ।।

यात्रा निन्दित लक्ष्मत्र तहिते वां विधात कृत।
अथ सर्व मुपादेयं यभ्दवेत् शुभ लक्षणम्।।

देश पुर निवाश्रच सभा वीस्म सनाचि।
यद्य दीदृसमन्याश्रच तथ भेयस्करं मतम्।।

वास्तु शास्त्रादृतेतस्य न स्यल्लक्षनिर्णयः।
तस्मात् लोकस्य कृपया सभामेतत्र्दुरीयते।।

अर्थात्, वास्तु शास्त्र के अनुसार भली भांति योजनानुसार बनाया गया घर सब प्रकार के सुख, धन–संपदा, बुद्धि, सुख–शांति और प्रसन्नता प्रदान करने वाला होता है और ऋणों से मुक्ति दिलाता है। वास्तु की अवहेलना के परिणामस्वरूप अवांछित यात्राएं करनी पड़ती है, अपयश, दुख तथा निराशा प्राप्त होते हैं। सभी घर, ग्राम, बस्तियां और नगर वास्तु शास्त्र के अनुसार ही बनाये जाने चाहिए। इसलिए इस संसार के लोगों के कल्याण ओर उन्नति के लिए वास्तु शास्त्र प्रस्तुत किया गया है।

इसी तरह नारद संहिता में कहा गया है भवन में निवास करने वाले गृह स्वामी को भवन प्रत्येक रूप से शुभ फलदायक, सुख–समृद्धि प्रदाता, ऐश्वर्य, लक्ष्मी एवं धन को बढाने वाला, पुत्र–पौत्रादि प्रदान करने वाला हो इसका विचार वास्तु के अंतर्गत किया जाता है।

सचमुच वास्तुशास्त्र एक गहन विषय है इसका वैज्ञनिक एवं आध्यात्मिक आधार है। वास्तु के अनुसार बने भवन मंगलदायक एवं कल्याणकारी होता है परंतु इसके नियमों का उल्लंधन से उसमें निवास करने वाले के लिए विध्वंसकारी एवं विनाशकारी होता है। वास्तु के अनुसार बने भवन मानसिक, शारीरिक एवं भावनात्मक सुख देते हैं। इसी तरह वास्तु के अनुरूप बने परिसर शांति खुशहाली एवं समृद्धि देते हैं।

◆ ◆ ◆ ◆ ◆



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

# 2. वास्तु देव या वास्तु पुरुष

भवन निर्माण में वास्तु देवता या वास्तु पुरुष का बड़ा महत्व है। यह भवन के प्रमुख देवता हैं। इनका मस्तक ईशान एवं पैर नैर्ऋत्य में रहते हैं। दोनों पैरों के पद तल एक–दूसरे से सटे होते हैं। हाथ व पैर की संधियां आग्नेय और वायव्य में होती हैं। शास्त्रों के अनुसार प्राचीनकाल में अंधकासुर दैत्य एवं भगवान शंकर के बीच घमासान युद्ध हुआ। इस युद्ध में शंकर जी के शरीर से पसीने की कुछ बूंदें जमीन

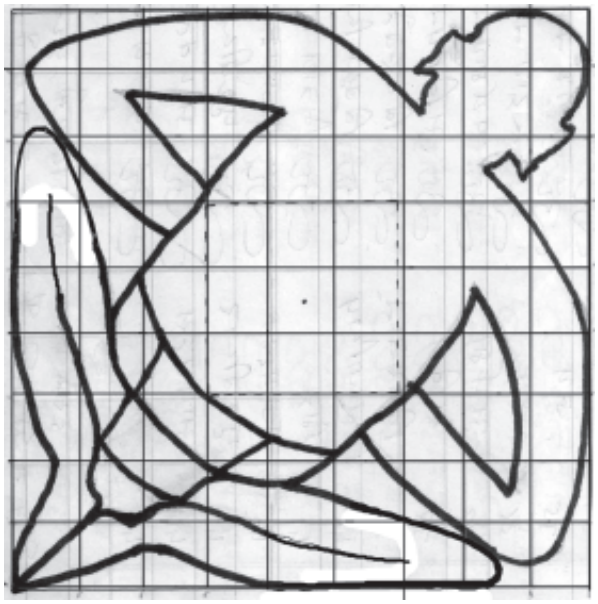


पर गिर पड़ीं। उन बूंदों से आकाश और पृथ्वी को भयभीत कर देने वाला एक प्राणी प्रकट हुआ। यह प्राणी तुरंत देवताओं को मारने लगा। तब सभी देवताओं ने उसे पकड़कर उसका मुंह नीचे करके दबा दिया और उसे शांत करने के लिए वर दिया 'सभी शुभ कार्यों में तेरी पूजा होगी।' देवों ने उस पूरुष पर वास किया, इसी कारण उसका नाम वास्तु पुरुष पड़ा। उस महाबली पुरुष को औंधे मुंह गिराकर उस पर सभी देव बैठे हैं। अतः सभी बुद्धिमान पुरुष उसकी पूजा करते हैं। जो व्यक्ति उसकी पूजा नहीं करता उसे कदम–कदम पर बाधाओं का सामना करना पड़ता है। साथ ही उसकी अकाल मृत्यु होती है।



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

## कब करें वास्तु पुरुष की पूजा

गृह निर्माण के प्रारंभ में द्वार बनाने के समय देवकी पूजन एवं मकान बनाकर परिपूर्ण होने पर गृह प्रवेश के समय इन तीनों अवसरों पर वास्तु पूजन किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त यज्ञोपवीत, विवाह, आदि के समय, जीर्णोद्धार तथा बिजली और अग्नि से जले मकान को पुनः बनाने के समय, जहां स्त्रियां लड़ती झगड़ती हों या रोगी हों वहां और ऐसे अनेक उत्पातों से दूषित घर में पुनः प्रवेश करते समय वास्तु शांति करानी चाहिए। पुत्र जन्म एवं हर प्रकार के यज्ञ के प्रारंभ में वास्तु पुरुष की पूजा विधि विधान से करने पर घर के सभी प्रकार के दोष और उत्पातों का शमन होता है तथा सुख–शांति और कल्याण की प्राप्ति होती है।

## वास्तु–पुरुष एवं वास्तु पीठ

कर्मकांड में वास्तु–पुरुष की पूजा के लिए अलग–अलग प्रकार के वास्तु पीठों की स्थापना का विधान है। जितनी जमीन पर घर का निर्माण करना हो उतनी जमीन से वास्तु–पुरुष की कल्पना की जाती है। इस प्रकार एक पद से लेकर हजार पद वाले वास्तु की पूजा होती है। प्राचीन ग्रंथ वास्तु राजवल्लभ में कहा गया है कि :–

**ग्रामें भूपति मंदिरे च नगरे पूज्यः चतुःषष्टिके,**
**एकाशीतिपदै समस्त भवने जीर्णो नवाद्धं शर्केः।**

**प्रसारे तु शतांशकैः तु सकले पूज्य तथा मण्डपे**
**कू पेषझनवचतुभाग–साहिनों वाण्यां तडागे वने।।**

अर्थात गांव बसाते समय और नगर या राजमहल बनाते समय 64 पद वास्तु की पूजा करनी चाहिए। वास स्थान घर के लिए 81 पद, जीर्णोद्धार के लिए 49, सर्व प्रकार के प्रासाद एवं मंडपों के लिए 100 पद तथा कुआं, तालाब एवं जलाशय के लिए 144 या 194 पद वाले वास्तु पीठ का पूजन करना चाहिए। शास्त्रों में यह भी कहा गया है कि :–

**दुर्गा प्रतिष्ठा विषये निवेशे तथा महार्चासु च कोटि होते।**
**मेरौच राष्ट्रेष्वपि सिद्धलिंगे वास्तुसहस्त्रेण पदे प्रपूज्यः।।**

अर्थात दुर्गा की प्रतिष्ठा, नगर निर्माण , यज्ञ, देशनिर्माण, राजधानी एवं सिद्ध शिवलिंग की प्रतिष्ठा के समय 1000 तालिका वाले वास्तु पीठ का पूजन करना चाहिए।

## ब्रह्म स्थान

ब्रह्म स्थान किसी भी भूखंड का केंद्र होता है। जिसे ऊर्जा का केंद्र बिंदु माना गया है। ब्रह्म स्थान वास्तु पुरुष की नाभि के आस पास के क्षेत्र पेट, गुप्तांग और जांघों का स्थान है। ब्रह्म स्थान वास्तु पुरुष और भूखंड के फेफड़े और हृदय स्थल का भाग है। अतः इस स्थान को खुला और भार रहित रखें। यदि घर में रहने वाले लोग सुख समृद्धि, स्वस्थ एवं खुशहाल रहते हुए अपना जीवन यापन चाहते हों तो ब्रह्म स्थान पर किसी भी तरह का निर्माण कार्य नहीं करना चाहिए।



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

| पद वाले | बीच के पदों में ब्रह्मा |
|---|---|
| 64 पद | 4 पदों में |
| 81 पद | 9 पदों में |
| 100 पद | 16 पदों में |
| 144 पद | 24 पदों में |
| 169 पद | 25 पदों में |
| 196 पद | 32 पदों में |
| 1000 पद | 100 पदों में |

ऊपर के चित्र के अध्ययन से पता चलता है कि वास्तु–पुरुष का प्रत्येक अंग भूखंड के किसी न किसी हिस्से का स्वामी होता है।

### वास्तु और देवता

वास्तु पुरूष के शरीर के भिन्न–भिन्न अंगों में कौन–कौन से देवता का आधिपत्य है।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

इस विषय में शास्त्रों में निम्न बातें लिखा गया है:–

**ईशा मुघ्नि समाश्रिता श्रवणयोपर्जच नामादितिः।**
**आपतस्य गले तदंशयुगले प्रोक्तों जयदूचारितिद।**

**उक्तावर्णत–मधरौ स्तनयुगे स्यादापवत्सो हदि,**
**पंचेंद्रादि सुराइच दक्षिणभुजे वामे नागादभः।।**

**सावित्रः सविताच दक्षिण करें वामे दस्वयंरूद्रतः**
**मृत्यु मैत्रगणस्तथारू विषये स्मान्नागिनपुष्ठे विधिः।।**

**मेद्रे शुक्र–जयौच जातु युगले तौ वाहिन–रोगौस्मृतौ।।**
**पूषानन्दिइच सप्तादि बुधार अल्पो पदों पैतृकाः।।**
**मैरौच राष्ट्रैष्वपि सिद्धलिंगे वास्तुसहस्त्रेण पदे प्रपूज्यः।।**

वास्तु पुरूष के विभिन्न अंगों में निम्न देवता बैठे हैं।

| शरीर के अंग | देवता का स्थान |
|---|---|
| मस्तक में | शिव |
| दोनों कानों में | पर्जन्य–दिति, |
| गले के ऊपर | आपदेव, |
| दोनों स्तनों पर | अर्यमा–पृथ्वीधर, |
| दोनों कंधो पर | जय–अदिति, |
| हृदय के ऊपर | आपवत्स, |
| दायें हाथ के पहुंचे तक | सावित्र–सविता, |
| दायीं कोहनी से पहुंचे तक | रुद्र, रुद्रदास, |
| जांघ पर | मृत्यु और मित्र |
| नाभि के पीछे | ब्रह्म उपस्थ |
| जननेंद्रिय स्थान पर | इंद्र–जय, |
| दोनों घुटनों के ऊपर | अग्नि–रोग, |
| एक पैर की नली पर | नंदी, सुग्रीव, पूषा, वरुण, असुर, शोण, पापयक्ष्मा |
| दोनों एड़ियों पर | पितृ देवता |

गृह वास्तु में 81 पद के वास्तु चक्र का निर्माण किया जाता है। 81 पदों में 45 देवताओं का निवास होता है। ब्रह्माजी को मध्य में 9 पद दिये गये है। चारों दिशाओं में 32 देवता व मध्य में 13 देवता स्थापित होते हैं। इनके नाम एवं मंत्र इस प्रकार हैं–



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

| क्रम | नाम | मंत्र |
|---|---|---|
| 1. | शिखी (ईश) | ॐ शिख्ये नमः |
| 2. | पर्जन्य | ॐ पर्जन्यै नमः |
| 3. | जयन्त | ॐ जयन्ताय नमः |
| 4. | इन्द्र | ॐ कुलिशयुधाय नमः |
| 5. | सूर्य | ॐ सूर्याय नमः |
| 6. | सत्य | ॐ सत्याय नमः |
| 7. | भृश | ॐ भृशसे नमः |
| 8. | अंतरिक्ष(आकाश) | ॐ आकाशाये नमः |
| 9. | अनिल(वायु) | ॐ वायवे नमः |
| 10. | पूषा | ॐ पूषाय नमः |
| 11. | वितथ | ॐ वितथाय नमः |
| 12. | बृहत्क्षत | ॐ बृहत्क्षताय नमः |
| 13. | यम | ॐ यमाय नमः |
| 14. | गन्धर्व | ॐ गन्धर्वाय नमः |
| 15. | भृंगराज | ॐ भृंगराजाय नमः |
| 16. | मृग | ॐ मृगाय नमः |
| 17. | पितृ | ॐ पित्रे नमः |
| 18. | दौवारिक | ॐ दौवारिकाय नमः |
| 19. | सुग्रीव | ॐ सुग्रीवाय नमः |
| 20. | पुष्पदंत | ॐ पुष्पदन्ताय नमः |
| 21. | वरूण | ॐ वरूणाय नमः |
| 22. | असुर | ॐ असुराय नमः |
| 23. | शेष | ॐ शेषाय नमः |
| 24. | पापयक्ष्मा | ॐ पापहाराय नमः |
| 25. | रोग | ॐ रोगहाराय नमः |
| 26. | नाग(अहि) | ॐ अहिये नमः |
| 27. | मुख्य | ॐ मुख्यै नमः |
| 28. | भल्लाट | ॐ भल्लाटाय नमः |
| 29. | सोम(कुबेर) | ॐ सोमाय नमः |
| 30. | भुजंग(सर्प) | ॐ सर्पाय नमः |
| 31. | अदिति | ॐ अदितये नमः |
| 32. | दिति | ॐ दितये नमः |
| 33. | आप | ॐ आप्यै नमः |
| 34. | सावित्री | ॐ सावित्रे नमः |

Future Point



www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

| | | |
|---|---|---|
| 35. | जय | ॐ जयाय नमः |
| 36. | रूद्र | ॐ रूद्राय नमः |
| 37. | अर्यमा | ॐ अर्यमाय नमः |
| 38. | सविता | ॐ सविताये नमः |
| 39. | विवस्वान | ॐ विवस्ते नमः |
| 40. | विबुधाधिप | ॐ विबुधाधिपाय नमः |
| 41. | मित्र | ॐ मित्राय नमः |
| 42. | राजयक्ष्मा | ॐ राजयक्ष्मयै नमः |
| 43. | पृथ्वीधर | ॐ पृथ्वीधराय नमः |
| 44. | आपवत्स | ॐ आपवत्साय नमः |
| 45. | ब्रह्मा | ॐ ब्रह्माय नमः |

**मर्म स्थान**

वास्तु में ब्रह्म स्थान के बीच का पांच क्षेत्र अतिमर्म स्थान के अंतर्गत आता है। उसके बाद भूखंड के अंदर बत्तीस क्षेत्र को मर्म स्थान माना जाता है। इस स्थान पर किसी भी तरह का निर्माण कार्य नही करना चाहिए। खंभे एवं दीवारों का निर्माण भी वर्जित है। अन्यथा वास करने वाले शारीरिक, मानसिक, आर्थिक एवं आध्यात्मिक रूप से पीड़ित रहेंगे। चित्र में गहरे बड़े बिंदु के द्वारा अतिमर्म एवं छोटे बिंदु के द्वारा मर्म स्थान को दर्शाया गया है।

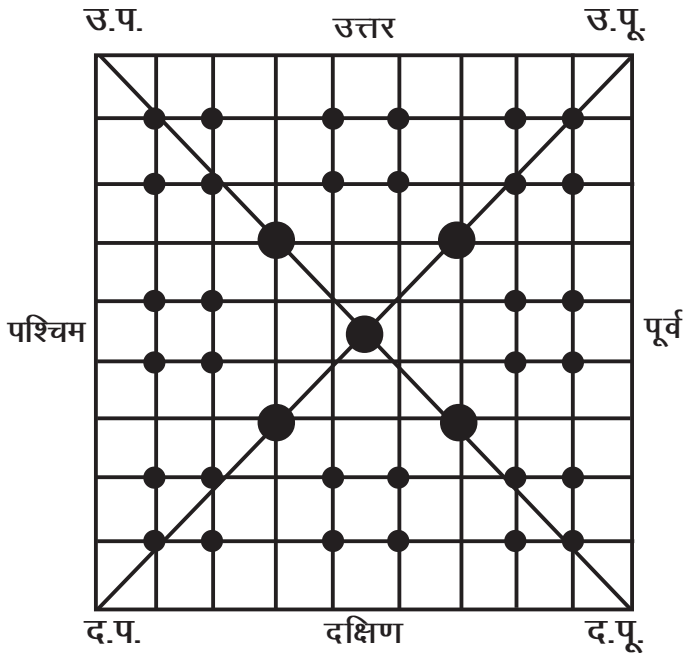




Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

मयमत के अनुसार ब्रह्म स्थान के बाद के तीन क्षेत्र देव, मनुष्य और पिशाच क्षेत्र है। जिनका संबंध सत्व गुण, रजस गुण और तमोगुण से है। देव क्षेत्र के अंतर्गत सोलह भाग आते हैं। मनुष्य क्षेत्र के अंतर्गत चौबीस भाग आते हैं। जबकि पिशाच क्षेत्र के अंतर्गत बत्तीस भाग आते हैं। देव और मनुष्य क्षेत्र में भवन का निर्माण करना चाहिए। जबकि पिशाच क्षेत्र में भवन का निर्माण करना उपर्युक्त नही होता। इस स्थान को अधिक से अधिक खुला हुआ रखना लाभदायक होता है।

**वास्तु पुरुष की स्थापना** :

भवन में सुख शांति एवं समृद्धि के लिए वास्तु शांति एवं वास्तु पूजा आवश्यक है। वास्तु पुरुष हर मकान का संरक्षक होता है। वास्तु शांति के समय वास्तु–पुरुष की प्रतिमा मकान की पूर्व दिशा में उचित स्थान पर विधिपूर्वक स्थापित करनी चाहिए लेकिन गोचर के सूर्य से विचार करना चाहिए कि वास्तु देव की पूजा किस समय किस दिशा में करना अत्याधिक लाभकारी एवं कल्याणकारी होगा। जब सूर्य वृष, मिथुन एवं कर्क राशि में हो तो आग्नेय कोण, सूर्य सिंह, कन्या, तुला राशि में हो तो नैऋत्य कोण वृश्चिक, धनु ,मकर राशि मकर का सूर्य हो तो वायव्य कोण एवं कुंभ, मीन, एवं मेष राशि में सूर्य हो तो आग्नेय कोण में वास्तु पुजा करने से कल्याण होता है। वास्तु शांति और पूजन के द्वारा नुकसान और दुर्भाग्य से गृहस्वामी की रक्षा होती है।

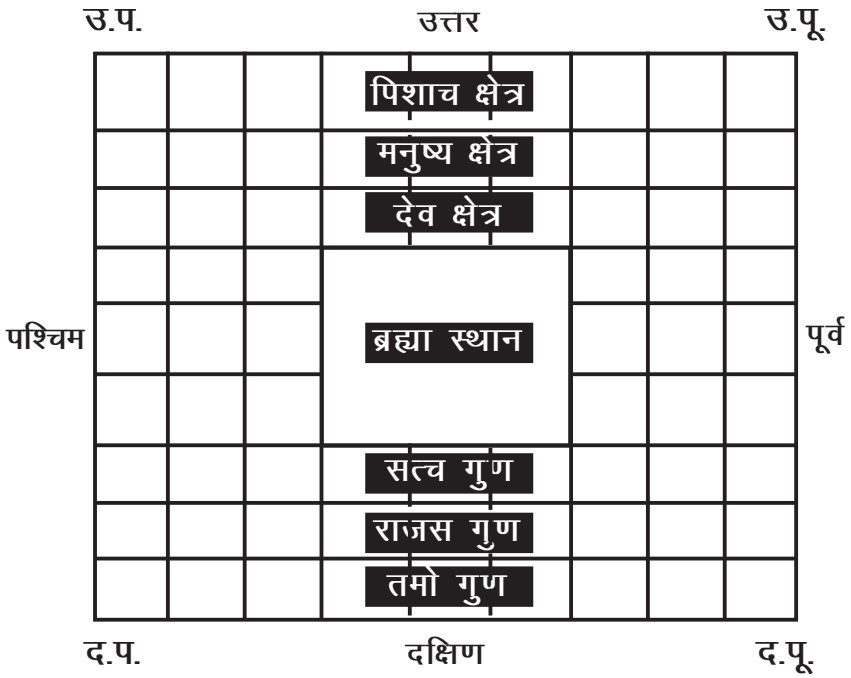




Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

वास्तु स्तुति में कहा गया है:–

**सशैल सागरां पृथ्वी यथावहसिमूर्धनि।**
**तथा मां वह कल्याण संपद् संतति भिः सह।।**

अतः जिस प्रकार आप बड़े–बड़े पर्वतों और महासागरों को धारण करने वाली पृथ्वी का भार वहन करते हैं उसी प्रकार मेरी संतान, मेरी धन संपदा तथा मेरी घर की रक्षा करें। वास्तु पुरूष के मुंह से हमेशा तथास्तु निकलता रहता है। इस कारण मकान या घर में कभी दुर्वचन या गलत बातें नहीं बोलनी चाहिए। हमेशा शुभ–शुभ बोलें। घर में राशन पानी नहीं है ऐसा कभी न बोलें। कारण, यह सुनकर वास्तु पुरुष के तथास्तु कहने से सचमुच ही उस मकान का अनाज खत्म हो जाएगा और घर में भुखमरी की हालत पैदा हो जाएगी। यही कारण है कि वास्तु पुरुष को नैवेद्य चढ़ाना चाहिए। नैवेद्य रोज न चढ़ा सकें तो कम–से–कम पूर्णिमा और अमावस्या के दिन तो वास्तु पुरुष को नैवेद्य अवश्य चढ़ाएं। 6 माह के भीतर इसका शुभ परिणाम दिखाई देगा। घर में सुख शांति में वृद्धि होगी। घर में वास्तु के निम्न मंत्रो से वास्तु देव का पूजन करना विशेष फलदायी होता है:–

**वास्तु देवा नमस्तेस्तु भूश यनिप्त प्रभो।**
**मद् गृहं धन धान्यादि समृद्धं कुरूसर्वदा।ऊँ।**

वास्तुशान्ति मंत्रः–

**ऊँ नमो भगवते वास्तु पुरूषाय**
**महाबल पराक्रममाय**
**सर्वाधिवासश्रित शरीराय ब्रह्मपुत्राय**
**सकल ब्रह्माण्ड धारिणे भूमारार्पितमस्तकाय**
**पुरपत्तन प्रासाद गृहवापी सरः कूपादेः**
**सन्निवेश सान्निध्य कराय**
**सर्वसिद्धिप्रदाय प्रसन्नवदनाय विश्वंभराय**
**परमपुरूषाय शक्रवरदाय वास्तेष्पते नमस्ते।।**

◆◆◆◆◆



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

# 3. वास्तु में दिशाओं का महत्व

वास्तुशास्त्र दिशात्मक ऊर्जा पर आधारित एक व्यवहारिक विज्ञान है। वास्तु विज्ञान में आठ दिशाओं अर्थात चार मुख्य दिशाएं उतर, पूर्व , दक्षिण और पश्चिम तथा चार कोणीय दिशाओं उतर–पूर्व (ईशान्य), दक्षिण–पूर्व (आग्नेय), दक्षिण–पश्चिम (नैऋत्य) और उतर–पश्चिम (वायव्य) के आधार पर पूरे वास्तु की गणना की जाती है। सभी कोणीय दिशाओं पर दोनो दिशाओं का संयुक्त प्रभाव रहता है। अतः वास्तुशास्त्र में प्रत्येक दिशा का अपना अलग महत्व होता है क्योंकि प्रत्येक दिशा पर अलग–अलग ग्रहों, देवताओं तथा विभिन्न दिशाओं से आने वाली ब्रह्मांडीय शक्ति , रश्मि एवं ऊर्जाओं का संयुक्त प्रभाव रहता है। इस कारण से हमारे ऋषि–मुनियों ने हजारों वर्ष पूर्व इस बात की आवश्यकता महसूस किया कि दिशाओं को ठीक रखना चाहिए ताकि अच्छे वास्तु के साथ मनुष्य सुख–शांति, समृद्धि एवं आरोग्य पूर्वक अपने जीवन को व्यतीत कर सके। वास्तु में दिशाओं का निर्धारण दिशा सूचक यंत्र के द्वारा भूखंड के केन्द्र में रखकर की जाती है।

**पूर्व दिशाः–**

चुम्बकीय कंपास के अनुसार 67 $1/2^0$ से 112 $1/2^0$ तक के क्षेत्र को पूर्व दिशा कहा गया है। इस दिशा का स्वामी ग्रह सूर्य एवं देवता इन्द्र हैं। सूर्य पूर्व दिशा में उगता है इस कारण से प्रथम स्थान दिया गया है। यह दिशा अच्छे स्वास्थ्य, बुद्धि, धन, भाग्य एव सुख–समृद्धि का द्योतक है। अतः भवन निर्माण के साथ पूर्व दिशा का कुछ स्थान खुला छोड देना चाहिए एवं इस स्थान को नीचा रखना चाहिए। अन्यथा पितृगण का आर्शीवाद नही मिल पायेगा। घर में मुखिया का स्वास्थ्य खराब रहेगा तथा आयु में कमी होगी। साथ ही वंश की हानि होने की संभावना बनी रहेगी। इस दिशा के दोषपूर्ण होने पर सिर, दॉत, जीभ, मुंह एवं ह्रदय संबंधी बीमारियां देखने को मिलती है।

| | | |
|---|---|---|
| उ.प.<br>$292\frac{1^0}{2}$-$337\frac{1^0}{2}$ | उ.<br>$337\frac{1^0}{2}$-$22\ \frac{1^0}{2}$ | उ.पू.<br>$22\ \frac{1^0}{2}$-$67\ \frac{1^0}{2}$ |
| प.<br>$247\frac{1^0}{2}$-$292\frac{1^0}{2}$ | **BRAHMA ASTHAN**<br>**ब्रह्मा** | पू.<br>$67\ \frac{1^0}{2}$-$112\frac{1^0}{2}$ |
| द.प.<br>$202\frac{1^0}{2}$-$247\frac{1^0}{2}$ | द.<br>$157\frac{1^0}{2}$-$202\frac{1^0}{2}$ | द.पू.<br>$112\frac{1^0}{2}$-$157\frac{1^0}{2}$ |



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

**पश्चिम दिशाः–**

चुम्बकीय कंपास के अनुसार 247 1/2$^0$ से लेकर 292 1/2$^0$ के मध्य क्षेत्र को पश्चिम दिशा कहा जाता है। इस दिशा का स्वामी ग्रह शनि एवं देवता वरूणदेव है। यह दिशा सफलता, प्रसिद्धि, संपन्नता तथा उज्जवल भविष्य प्रदान करती है। इस दिशा में गढ्ढा, दरार नीचा एवं दोषपूर्ण रहने पर मन चंचल रहता है, मानसिक तनाव बनी रहती है और किसी भी कार्य में पूर्ण रूप से सफलता नहीं मिल पाती है। साथ ही गुप्तांग एवं पेट से संबंधित परेशानियां पायी जाती है।

**उत्तर दिशाः–**

चुम्बकीय कंपास के अनुसार 337 1/2$^0$ से लेकर 22 1/2$^0$ के मध्य क्षेत्र को उत्तर दिशा कहा जाता है। इस दिशा का स्वामी ग्रह बुध एवं देवता कुबेर है। यह दिशा सभी प्रकार के सुख देती है। यह दिशा बुद्धि, ज्ञान, चिंतन, मनन विद्या एवं धन के लिए शुभ होती है। यह दिशा मातृ भाव का भी द्योतक है। उत्तर स्थान में खाली स्थान छोडकर भवन का निर्माण करने से माता का लाभ एवं सभी प्रकार के भौतिक सुख समृद्धि की प्राप्ति होती है। इस दिशा को ऊँचा एवं दोषपूर्ण रखने पर छाती, दिल एवं फेफड़े से संबंधित रोगों की अधिकता पायी जाती है।

**दक्षिण दिशाः–**

चुम्बकीय कंपास के अनुसार 157 1/2$^0$ से 202 1/2$^0$ के मध्य क्षेत्र को दक्षिण की दिशा कहा जाता है। इस दिशा का स्वामी ग्रह मंगल एवं देवता यम् है। यह दिशा सफलता, यश, पद, प्रतिष्ठा एवं धैर्य की द्योतक है। यह दिशा पिता के सुख का भी कारक है। यह दिशा बायां सीना एवं मेरूदंड का भी कारक है। इस दिशा को जितना भारी एवं ऊँचा रखेंगे उतना ही लाभदायी सिद्ध होता है। इस दिशा में दर्पण एवं पानी की व्यवस्था रखने पर बीमारी की संभावनायें बनी रहती है।

**आग्नेय क्षेत्रः–**

चुम्बकीय कंपास के अनुसार 112 1/2$^0$ से 157 1/2$^0$ के मध्य क्षेत्र को आग्नेय दिशा कहा गया है। इस दिशा का स्वामी ग्रह शुक्र एवं देवता अग्नि है। इस दिशा का संबंध स्वास्थ्य से है। साथ ही यह दिशा बायीं भुजा , घुटना एवं बायें नेत्र को प्रभावित करता है। यह दिशा परमात्मा की सृष्टि को आगे बढाता है अर्थात् प्रजनन क्रिया एवं काम जीवन पर इस दिशा का अधिकार है। यह दिशा निद्रा एवं उचित शयन सुख को भी दर्शाता है। यदि इस दिशा में किसी तरह का दोष हो जैसे आग्नेय दिशा में पानी व अंडरग्रउन्ड टैंक का होना बहुत बडी मुसीबतों को निमंत्रण देता है। स्त्री, पुरूषों के अपेक्षा ज्यादा नुकसान में रहती है। किसी न किसी रूप में स्वास्थ्य खराब रहता है। घर का कोई न कोई सदस्य बीमार रहता है और अन्य सदस्यगण आलसी हो जाते है। यह दिशा दोषरहित रहने पर घर में रहने वाले को उर्जावान बनाती है साथ ही घर के मुखिया को संतान एवं पत्नी का उत्तम सुख देती है।

**नैऋत्यः–**

चुम्बकीय कंपास के अनुसार 202 1/2$^0$ से लेकर 247 1/2$^0$ के मध्य के क्षेत्र को नैऋत्य दिशा कहते है। इस दिशा का स्वामी राहु एवं देवता नैऋति नामक राक्षसी है। यह दिशा असुर, क्रुर कर्म करने वाले



Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

व्यक्ति या भूत पिचास की दिशा है। इसलिए इस दिशा को कभी खाली या रिक्त नही रखना चाहिए। दक्षिण–पश्चिम का क्षेत्र पृथ्वी तत्व के लिए निर्धारित है। यह सभी तत्वों से स्थिर है। यह दिशा सभी प्रकार के विषमताओं एवं संघर्षों से जुझने की क्षमता प्रदान करती है। साथ ही स्थायित्व , सही निर्णय एवं किसी भी निर्णय को मजबूती से दिलवाने में मदद करती है। यह दिशा आयु अकस्मात् दुर्घटना, बाहरी जनेन्द्रीयां, बायां पैर, कुल्हा, किडनी, पैर की बीमारियां, स्नायु रोग आदि का प्रतिनिधित्व करती है। यदि इस क्षेत्र में गढ्ढा नीचा और पानी हो तो गृह स्वामी जीवित लाश बनकर रह जाता है। भाग्य सो जाता है। आकाल मृत्यु, दुर्घटना, पोलियो तथा कैंसर जैसे आसाध्य बीमारियों का सामना करना पड़ता है। जीवन में फटेहाली एवं गरीबी छा जाती है ।

**वायव्य क्षेत्रः–**

292 1/2$^0$ से लेकर 337 1/2$^0$ के मध्य के क्षेत्र को वायव्य कहा जाता है। इस दिशा में ग्रहों के रूप में चंद्र एवं देवताओं के रूप में पवनदेव का स्थान माना गया है। यह मित्रता एवं शत्रुता को बतलाता है। इस दिशा का संबंध अतिथियों एवं संबंधियों से है। यह दिशा मानसिक विकास एवं विद्वता की परिचायक है। साथ ही काल पुरूष के शरीर में नाभी, आँत, पिताशय, शुक्राणु, गर्भाशय, पेट का उपरी भाग, दायां पैर एवं घुटने का भी प्रतिनिधित्व करती है। यदि इस दिशा में किसी तरह का दोष हो जैसे वायव्य क्षेत्र का ईशान्य क्षेत्र के अपेक्षा नीचा रहना, वायव्य क्षेत्र में अत्यधिक ऊँची भवनों का निर्माण तथा वायव्य क्षेत्र को नैऋत्य एवं आग्नेय क्षेत्र के अपेक्षा ऊंचा होना शत्रु के संख्या में वृद्धि करेगा एवं स्त्रियों को रोग ग्रस्त बनाएगा। साथ ही नेत्र ज्योति में कमी, अस्थमा, गर्भाशय एवं पाचन शक्ति से संबंधित रोगो से सामना करना पडेगा।

**ईशान्यः–**

चुम्बकीय कंपास से 22 1/2$^0$ से 67 1/2$^0$ के मध्य के क्षेत्र को ईशान्य क्षेत्र कहा जाता है। इस दिशा का स्वामी ग्रह गुरू और परमपिता परमेश्वर स्वयं है। यह दिशा बुद्धि, ज्ञान, विवेक, धैर्य और साहस का सूचक है। इस दिशा को साफ सुथरा, खुला नीचा एवं कम से कम निर्माण कार्य करना चाहिए। इस दिशा के निर्दोष रहने पर अध्यात्मिक , मानसिक, एवं आर्थिक संपन्नता देखने को मिलती है। साथ ही वंश की वृद्धि एवं अच्छे वाणी बोलने वाले होते है। इस दिशा में शौचालय, सेप्टिक टैंक एवं कूड़े–करकट रखने पर सात्विकता में कमी, वंश वृद्धि में अवरोध, नेत्र, कान, गर्दन एवं वाणी में कष्ट होता है। अतः इस दिशा को ठीक रखना आवश्यक है।

## दिशा और देवता

वास्तु सिद्धांत के अनुसार चार प्रमुख दिशाओं के अलावा चार उपदिशाओं अर्थात् आठ दिशाओं के आधार पर पूरे वास्तु की गणनाएं की जाती हैं। सभी कोणीय दिशाओं पर दोनों दिशाओं का प्रभाव रहता हैं। अतः वास्तु शास्त्र में प्रत्येक दिशा का अपना अलग महत्व होता हैं। क्योकि प्रत्येक दिशा पर अलग–अलग देवताओं, ग्रहों एवं विभिन्न दिशाओं से आने वाली ब्रह्मांडीय शक्तियों एवं ऊर्जाओं का संयुक्त प्रभाव रहता हैं।



Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

**दिशा और देवता**

| | | |
|---|---|---|
| उ.प.<br>वायु | उ.<br>कुबेर | उ.पू.<br>शिव |
| प.<br>वरूण | **BRAHMA ASTHAN**<br>**ब्रह्मा** | पूर्व<br>इन्द्र |
| द.प.<br>नैऋति | द.<br>यम् | द.पू.<br>अग्नि |

**दिशा और ग्रह**

| | | |
|---|---|---|
| उ.प.<br>चंद्र | उ.<br>बुध | उ.पू.<br>गुरु |
| प.<br>शनि | **BRAHMA ASTHAN**<br>**ब्रह्मा** | पूर्व<br>सूर्य |
| द.प.<br>राहु | द.<br>मंगल | द.पू.<br>शुक्र |

**कंपास के द्वारा दिशाओं का निर्धारणः–**

वास्तु में दिशाओं का निर्धारण दिशा सूचक यंत्र के द्वारा भूखंड के मध्य भाग अर्थात् केन्द्र में रखकर की जाती है। दिशा सूचक यंत्र में एक चुंबकीय सुई होती है जो धुरी पर स्थित होती है इस सुई पर एक तरफ लाल निशान होता है जो उतरी भाग को सूचित करता है एवं दूसरी तरफ काला निशान होता है जो दक्षिणी दिशा को सूचित करता है। किसी भी भूखंड के मध्य में जाकर इस चुंबकीय कंपास को हथेली या जमीन के मध्य भाग पर एक मिनट तक स्थिर रखते है। चुंबकीय सुई के लाल भाग हमेशा अपने उतरी भाग की ओर स्थिर हो जाता है जो स्पष्ट रूप से उतर दिशा को दर्शाता है। तदुपरान्त चुंबकीय



www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

कंपास के लाल सुई को $0^0$ या $360^0$ पर स्थित करके पूरे दिशाओं की जानकारी प्राप्त हो जाती है। उतर दिशा के तरफ मुँह कर खड़े हो जायें और दोनो हाथ को दायें एवं बायें तरफ करें। दायें हाथ की तरफ पूर्व की दिशा एवं बायें हाथ की तरफ पश्चिम की दिशा हो जाएगी और आपकी अपनी पीठ की तरफ दक्षिण की दिशा होगी। इस तरह चुंबकीय कंपास के द्वारा सरल तरीके से दिशाओं का निर्धारण किया जा सकता है।

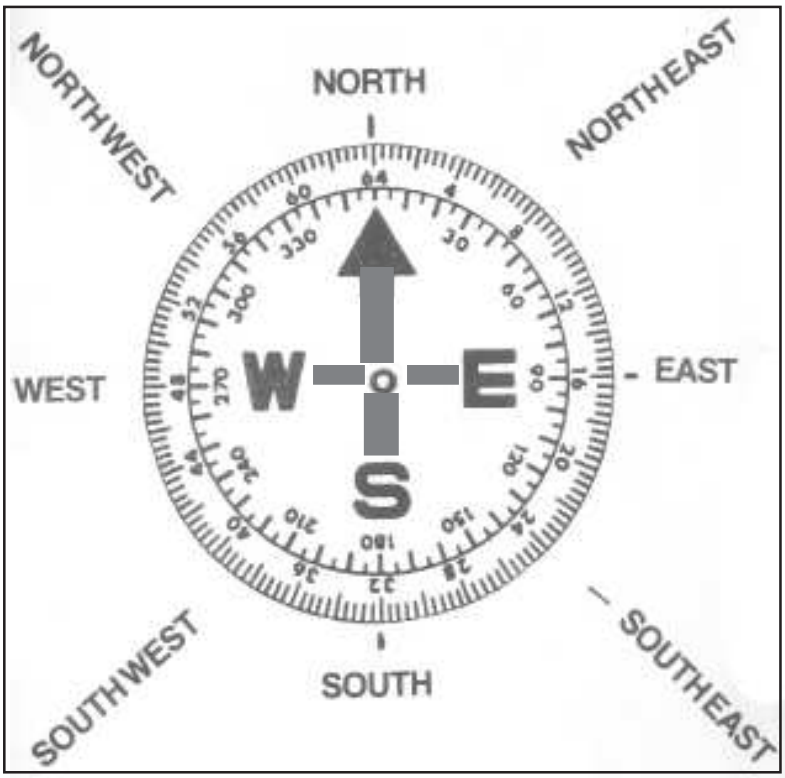


◆ ◆ ◆ ◆ ◆



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

# 4. पंचमहाभूतात्मक तत्व का वास्तु में महत्व
## Importance of five main elements in Vastu

Future Point

**पंचमहाभूत**

हम सभी जानते हैं की मनुष्य एवं ब्रह्माण्ड कि रचना पांच तत्वों – पृथ्वी, आकाश, जल, अग्नि तथा वायु से हुई है। मनुष्य के जीवन में इनका बड़ा महत्व है। इनके द्वारा हमारा शरीर कार्बोहाईड्रेट, प्रोटीन तथा वसा आदि आंतरिक शक्तिवर्धक तत्व और गर्मी, प्रकाश, ध्वनि एवं वायु द्वारा बाह्य शक्ति ग्रहण करता है। ये तत्व संतुलित रहें तो मानव जीवन सुख–शांति एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है, बुद्धि संतुलित रहती है। इसके विपरीत इनमें असंतुलन की स्थिति में अवसाद, तनाव, अस्वस्थता, शारीरिक व्याधि और मष्तिक में अशांति छा जाती है। इसी प्रकार का असंतुलन जब प्रकृति में उत्पन्न होता है, तो तूफान, बाढ़, अग्निकांड, भूकंप आदि अपना तांडव दिखाते हैं। इस संबंध में गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस में यह लिखा है किः–

**छिति जल पावक गगन समीरा। पंचरहित यह अधम शरीरा।।**

अर्थात यह मानव शरीर पांच तत्व से निर्मित है और पुनः पांच तत्व में विलिन हो जाता है। जब शारीरिक पंचतत्व एवं प्राकृतिक पंचतत्व संतुलित होंगें तभी जीवन सुचारू एवं व्यवस्थित रूप से चलेगा। भवन निर्माण की सामग्री भी इन्हीं पंचतत्वों से बनती है। अतः भवन में पांच तत्वों का संतुलित प्रभाव नही होने पर उसमें निवास करने वाले व्यक्ति को पंच तत्व के असंतुलित प्रभाव प्रभावित करेंगें। जिसके फलस्वरूप सामाजिक, मानसिक, अध्यात्मिक एवं आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। साथ ही स्वास्थ्य में कमी एवं विभिन्न प्रकार के समस्याओं से भी संघर्ष करना पड़ता है। अतः सुखमय जीवन के लिए इन तत्वों का संतुलित रहना आवश्यक है।

### वास्तु ऊर्जा

**(1) आकाश :**

ब्रह्मांड में ऐसी कोई जगह नहीं है जहां आकाश नहीं है। आकाश अनंत है। आकाश में गुरुत्वाकर्षण शक्ति, चुंबकीय बल, विकिरण और पराबैंगनी किरणें, इन्फ्रारेड किरणें, प्रकाश की किरणें, ग्रहों की किरणें इत्यादि विद्यमान हैं। इन सभी का प्रभाव हमारे जीवन एवं पृथ्वी पर पड़ता है। आकाश तत्वों से ही ध्वनि की उत्पत्ति होती है। आकाश के बिना ध्वनि संभव नहीं है। आकाश के शून्य होने के कारण पर्यावरण और हवा के माध्यम से ध्वनि उत्पन्न होती है। इस तरह ध्वनि का अमूल्य उपहार हमें आकाश से मिला है। मकान एवं दीवार की ऊंचाई के अनुरूप मकान को आकाश की प्राप्ति होती है। मंदिर, गुरुद्वारे के गुंबज एवं मस्जिद के मेहराब आकाश शक्ति की विपुलता का प्रतीक हैं। मकान की दीवारें छोटी हों तो



www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

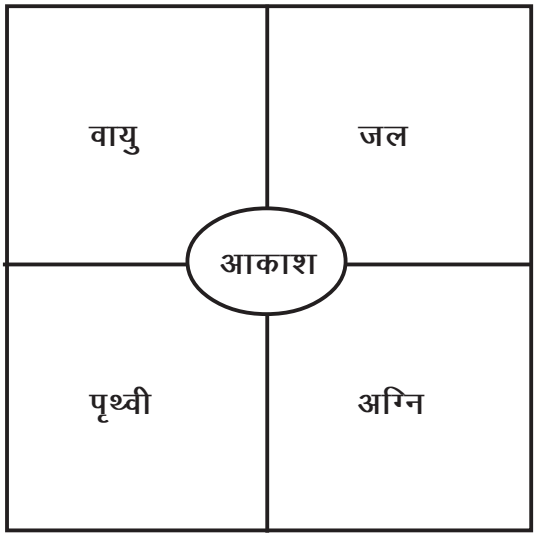


व्यक्ति को घुटन महसूस होती है। उसके शरीर में आकाश तत्व का समुचित विकास नहीं होता। इसलिए मकान इस तरह बनाना चाहिए ताकि प्रकृति से मिलने वाली दृश्य एवं अदृश्य सकारात्मक ऊर्जा और शक्ति का पूरा–पूरा लाभ मिलता रहे।

**2. वायु (हवा) :**

वनस्पति तथा जीव–जंतु वायु से जीवन प्राप्त करते हैं, जिससे पौरुष एवं प्राण शक्ति जाग्रत होती है। अर्थात जिस प्रकार वायु शरीर का संचालन करती है, उसी प्रकार भवन में वायु स्वस्थ वातावरण का संचालन करती है। पृथ्वी गैसीय आवरण से ढकी हुई है। इस गैसीय आवरण को वायुमंडल (Atmosphere) कहते हैं। वायुमंडल में विभिन्न गैस जैसे ऑक्सीजन, नाइट्रोजन, कार्बन डाइआक्साइड इत्यादि हैं। पृथ्वी के वातावरण में सर्वाधिक अंश नाइट्रोजन का है। यह 78% है, जो कि सभी वनस्पतियों के विकास के लिए आवश्यक है। वायुमंडल में ऑक्सीजन (प्राण वायु) की मात्रा 21% है जो लगभग 1/5 भाग है। अन्य ग्रहों पर ऑक्सीजन नहीं है, अतः वहां जीवन भी नहीं है। वायुमंडल में कार्बन बहुत अल्प मात्रा में 0.03%, कार्बन मोनोक्साइड (Co) तथा कार्बन डाइऑक्साइड ($Co_2$) इन दो स्वरूपों में मिलता है। इनके अतिरिक्त आर्गन 0.93%, हाइड्रोजन 0.01%, अन्य गैसें 0.01%। भारी और आवश्यक गैसों का जमाव पृथ्वी से 5 किमी.की ऊंचाई तक ही सीमित है। पृथ्वी की सतह से करीब 16 किमी. की ऊंचाई पर सूर्य की किरणों के प्रभाव से ऑक्सीजन ओजोन (Ozone) में बदल जाती है। ओजोन (O3) एक ऐसा अणु है जिसमें ऑक्सीजन के तीन परमाणु होते हैं और 23 किमी. की ऊंचाई पर इसकी परत सबसे मोटी होती है। ओजोन की यह तह काफी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह सूर्य द्वारा उत्सर्जित हानिकारक पराबैंगनी विकिरणों का अवशोषण करती है। ओजोन के फटने पर पृथ्वी का ताप (Temperature) बढ़ जाएगा जिससे बर्फ पिघलने लगेगा और उससे जलप्लावन का खतरा उत्पन्न हो जाएगा।



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

अधिकतर पेड़–पौधे दिन के समय वातावरण में व्याप्त कार्बन डाइऑक्साइड ($Co_2$) लेते हैं तथा ऑक्सीजन छोड़ते हैं। किंतु रात के समय इसके विपरीत क्रिया होती है और वे ऑक्सीजन लेते तथा कार्बन डाइऑक्साइड छोड़ते हैं। केवल पीपल का पेड़ इसका अपवाद है। कार्बन डाइऑक्साइड हमारे शरीर के लिए हानिकारक है, अतः रात को पेड़ों के पास सोना नहीं चाहिए।

**दूषित ईशान :**

वास्तु या भवन के ईशान कोण में अत्यंत मंगलदायी (शुभ) पराबैंगनी किरणें आती रहती हैं। यदि इस कोने में गंदगी रहे तो उससे निकलने वाली कार्बन डाइऑक्साइड, नाइट्रोजन तथा अन्य आवश्यक गैसें उन शुभ लौकिक किरणों को दूषित कर देंगी।

**भवन श्मशान के समीप नहीं होना चाहिए :**

मृतक शरीर की दाह क्रिया से निकलने वाले कार्बन तथा अन्य गैसें मानव जीवन पर बुरा प्रभाव डालती हैं।

**शब्द और स्पर्श वायु महातत्व के दो विशेष गुण हैं :**

स्पर्श से संवेदना, संवेदना से चेतना (स्पर्श ज्ञान) और चेतना से प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है। तभी तो हम जाड़े की सर्द या गर्मी की पछुआ हवा पर तुरंत प्रतिक्रिया कर बैठते हैं।

**वायु मनुष्य के लिए प्रकृति का एक अमूल्य उपहार है :**

वस्तुतः वायु मानवता को अनंत शक्ति से मिलने वाला एक अमूल्य उपहार है। मकान में वायु का प्रवेश द्वार एवं खिड़कियों से होता है। अतः मकान बनाने में वायु के प्रवेश का विशेष ध्यान रखना चाहिए। भारत में हवा के लिए उत्तर दिशा खुली होनी चाहिए। घर में रोशनदान और खिड़कियों द्वारा Cross Ventilation की व्यवस्था होनी चाहिए।

**3. अग्नि (Fire):**

सूर्य ऊर्जा का प्रमुख स्रोत है। सूर्य से हमें मुख्यतः गर्मी (उष्णता) एवं प्रकाश प्राप्त होते हैं। उष्णता अग्नि का एक स्वरूप है। पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर काटती है जिसके फलस्वरूप दिन और रात एवं मौसम में परिवर्तन होते हैं। वर्षा, हवा तथा सूर्य की गर्मी एवं प्रकाश से जीवधारी उत्साह, साहस एवं शक्ति प्राप्त करते हैं। विश्व की अधिकांश कॉलोनियां की बनावट ऐसी की गई हैं जिससे पर्याप्त मात्रा में घर के अंदर सूर्य ऊर्जा का प्रवाह हो सके। परंतु 'अति सर्वत्र वर्जयेत्' सूत्र के अनुसार सूर्य का तेज और उसकी तीक्ष्ण रश्मियां घर पर ज्यादा नहीं पड़ने चाहिए। पहाड़ी क्षेत्र में पूर्वाभिमुख मकानों में रहने वाले लोग परेशान रहते हैं। क्योंकि दोपहर तक तपते हुए सूर्य के कारण सारा घर गर्म हो जाता है। अतः आवासीय घर में अग्नि तत्व का सुखद आनुपातिक सम्मिश्रण होना चाहिए ताकि सर्दी में गर्मी एवं गर्मी में ठंडक महसूस हो सके।

**4: जल (Water):**

पृथ्वी पर जल एक महत्वपूर्ण तत्व है। जल से ही जीवन है। प्राणी हो या वनस्पति, जल के बिना जीवित



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

नहीं रह सकते। जल का साम्राज्य पृथ्वी के दो–तिहाई भाग पर है। झील, सागर और महासागर इसके विभिन्न रूप हैं जो धरातल के 71% भाग पर फैले हुए हैं। सौरमंडल में एकमात्र जलीय ग्रह पृथ्वी ही है। पर्यावरण की गर्म वायु ठंडी होकर तरल रूप में परिणत हो जाती है और फिर जल की बूदों के रूप में आकाश में छा जाती है। इसे बादल कहते हैं। इसी बादल से वर्षा होती है, जिससे नदियों, झीलों तथा समुद्र में जल संचित होता है। जल में भी एक अंश ऑक्सीजन विद्यमान है। इसी से जलीय जीव–जंतु जल में भी जिंदा रहते हैं क्योंकि उन्हें प्राण वायु ऑक्सीजन के रूप में जल से प्राप्त होती रहती है।

हमारे शरीर में भी कुल वजन का 3/4 भाग पानी का है। पानी की कमी हो जाने पर हम बीमार हो जाते हैं। केवल जीव–जन्तु, पेड़–पौधे को ही नहीं बल्कि मकान को भी इसकी प्रचुर मात्रा में आवश्यकता पड़ती है। स्वाद (Taste), स्पर्श (Feelings) एवं शब्द (Sound) जल की विशेषाताएं हैं।

घर बनाते समय इस बात का खास ख्याल रखना चाहिए कि उसमें पानी का पर्याप्त स्रोत हो। उत्तर–पूर्व भाग में दैनिक उपयोग में आने वाले पानी का स्रोत होना चाहिए। पानी में प्रदूषण शीघ्र होता है किंतु सूर्य ताप से वह शुद्ध होता रहता है। इस सिद्धांत को ''इलेक्ट्रोमैग्नेटिक स्पैक्ट्रम'' सिद्धांत कहते हैं। घर में नाली की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए, ताकि वर्षा से घर को नुकसान न हो। जल स्थान भी शुद्ध दिशा में रहे इसका खास ख्याल रखना चाहिए।

**5. पृथ्वी (Earth):**

पृथ्वी एक ग्रह है जिस पर हवा, पानी तथा अनेक खनिज पदार्थ इत्यादि पाए जाते हैं। पृथ्वी की ऊपरी सतह को मिट्टी कहते हैं। पत्थर, बालू, लौह, लाइम आदि मिट्टी के अंश हैं। पृथ्वी के गर्भ में निश्चित स्थान पर दक्षिण–उत्तर में स्थित चुंबक तथा पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति भी पृथ्वी के सभी जीवधारियों और निर्जीव पदार्थों पर अपना प्रभाव रखती है। पृथ्वी तथा अन्य ग्रहों से जीवन क्रम आरंभ हुआ इसलिए पृथ्वी को माता कहते हैं। भवन निर्माण करते समय भूमि पूजन का वास्तविक उद्देश्य यही है। पृथ्वी के बिना आवास और जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। पृथ्वी गुरुत्वाकर्षण और चुंबकीय शक्ति का केंद्र है। इन्हीं शक्तियों के कारण पृथ्वी अपनी धरातल पर बनने वाले भवनों को सुदृढ़ आधार देती है। पृथ्वी की सतह आकृति, मिट्टी, इत्यादि अलग–अलग जगहों पर अलग–अलग होती हैं। मिट्टी, सतह की आकृति, रूप, रंग, गंध आदि का जीवन पर क्या प्रभाव पड़ेगा, मकान बनाते वक्त इस बात का खास तौर पर ध्यान रखना चाहिए। पृथ्वी में स्पर्श, शब्द, रस और रूप के अतिरिक्त गंध रूपी विशेष गुण भी विद्यमान है।

## पंचतत्व का निवास स्थान

हमारे ऋषियों ने अपनी गहन साधनाओं एवं चिंतन के द्वारा पंच तत्वों के बारे में पता लगाया कि प्रत्येक दिशा पर इनका अलग अलग अधिकार है तथा शरीर के विभिन्न हिस्सों पर इनका एक अपना विशेष प्रभाव पड़ता है।

उन्होंने कहा कि पांच तत्वों का यह शरीर पुनः पांच तत्वों में विलीन हो जाता है।



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

आकाश + अग्नि + वायु + जल + पृथ्वी = निर्माण की क्रिया
वायु + जल + अग्नि + पृथ्वी + आकाश = ध्वंस प्रक्रिया

**शरीर में पांच तत्वों का वास**

| | | |
|---|---|---|
| मस्तिष्क में | : | आकाश |
| कंधों में | : | अग्नि |
| नाभि में | : | वायु |
| घुटनों में | : | पृथ्वी |
| पादांत में | : | जल |

**हाथों में पांच तत्वों का वास**

| | | |
|---|---|---|
| अंगुष्ठ में | : | आकाश |
| तर्जनी में | : | वायु |
| मध्यमा में | : | अग्नि |
| अनामिका में | : | जल |
| कनिष्ठा में | : | पृथ्वी |

पंचमहाभूतात्मक तत्वों का भवन के अंदर सम्यक तालमेल रहने से आवसीय भवन, दुकान, कार्यालय, होटल, बगीचा, उद्योग एवं व्यवसायिक परिसर समग्र उन्नति एवं विकास करते हुए दीर्घजीवी होती है। अतः पंचमहाभूतात्मक तत्वों का सही समिश्रण कर मकान बनाना चाहिए।

## भवन निर्माण में ब्रह्माण्डीय ऊर्जा का महत्व

हमारी प्रकृति में अनंत शक्तियां विद्यमान हैं, जिनसे सृष्टि, विकास और प्रलय की प्रक्रिया चलती रहती है। वास्तु शास्त्र में पंचमहाभूतों के साथ प्रकृति की तीन शक्तियों पर विचार किया जाता है।

1. गुरुत्व शक्ति
2. चुंबकीय शक्ति
3. सौर ऊर्जा

**1. गुरुत्व शक्ति :**

पृथ्वी में चुंबकीय तरंग एवं अन्य शक्तियों के कारण एक विशेष आकर्षण शक्ति है जिसके फलस्वरूप आकाश से गिरने वाली वस्तु को अपनी ओर खींच लेती है जिसे गुरूत्वाकर्षण शक्ति कहते हैं। इसी शक्ति के फलस्वरूप पृथ्वी पर सभी प्रकार के गतिविधियों का संचालन होता है। अन्यथा पृथ्वी पर हमसब तैरते या उड़ते हुए नजर आते। यह गुरूत्वाकर्षण शक्ति के कारण ही पृथ्वी पर स्थित भवनों में स्थिरता एवं स्थायित्व मिलता हैं। जिस स्थान की मिट्टी जितनी ठोस एवं सख्त होगी उस स्थान पर उतना ही स्थिर एवं स्थायी भवन का निर्माण होगा।



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

**2. चुंबकीय शक्ति :**

पृथ्वी एक विशालकाय चुंबक है। इसके गर्भ में लोहे का गर्म तरल पदार्थ है, जिससे विद्युतीय तरंगे उत्पन्न होती है। फलस्वरूप पृथ्वी के चारो ओर एक चुंबकीय क्षेत्र या तरंग का निर्माण होता है। इन्हीं चुंबकीय तरंगों के कारण ब्रह्माण्ड में स्थित ग्रह, नक्षत्र, तारे आदि एक निश्चित दूरी पर रहते हुए नियंत्रित एवं गतिशील हैं। चुंबक के दो ध्रुव होते हैं– उत्तरी और दक्षिणी। इसी प्रकार हमारे पृथ्वी के भी दो ध्रुव हैं – उतरी और दक्षिणी। चुंबकीय आकर्षण और विकर्षण से ही पूरी ब्रह्मांडीय शक्तियां संचालित होती है। यही कारण है कि हमारा शरीर भी इन चुंबकीय तरंगो से प्रभावित एवं नियंत्रित होता है। हमारे शरीर में भी सिर को उत्तरी ध्रुव और पैर दक्षिणी ध्रुव कहा जाता है। यही कारण है कि हमारा सिर जो उत्तरी ध्रुव का प्रतिनिधित्व करता है उसे उत्तर की ओर कर सोने की सलाह नही दी जाती है। क्योंकि पृथ्वी का उत्तरी क्षेत्र मानव के उतरी ध्रुव से विकर्षण करेगा और चुंबकीय प्रभाव अस्वीकार करेगा । जिससे शरीर के रक्त संचार के लिए उचित और अनुकूल चुंबकीय क्षेत्र का लाभ नही मिल सकेगा। फलस्वरूप मस्तिष्क में तनाव होगा और शरीर को शांतिमय निद्रा का अनुकूल अवस्था प्राप्त नही हो पाएगा । दक्षिण की तरफ सिर कर सोने से शरीर के अंदर उत्पन्न चुंबकीय तरंगों में किसी तरह का व्यवधान उत्पन्न नही होता। फलस्वरूप अच्छी नीद आती है तथा स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

**3. सौर ऊर्जा :**

पृथ्वी को मिलने वाली ऊर्जा का मुख्य स्रोत सूर्य है। सूर्य हमें प्रकाश और ऊर्जा देकर हमारे जीवन को संचालित एवं नियंत्रित करता है। सूर्य के प्रातःकालीन किरणों में विटामिन डी, एफ एवं ए का बहुमूल्य स्रोत है। भवन के उतर–पूर्व को अधिक से अधिक खुला एवं नीचा रखा जाता है। जिससे जीवनदायिनी एवं लाभप्रद सूर्य की किरणों का लाभ भवन को अधिक से अधिक मिलता रहे। मध्याह्न के पश्चात् सूर्य की किरणें रेडियोधर्मिता से ग्रस्त होने के कारण शरीर पर खराब प्रभाव डालती है। इन्हीं कारणों से भवन निर्माण करते समय भवन की बनावट इस प्रकार रखा जाती है, जिससे मध्याह्न के सूर्य की किरणों का प्रभाव शरीर एवं मकान पर कम से कम पड़े। यही कारण है कि भूखंड के दक्षिण–पश्चिम में कम से कम खिडकी एवं द्वार हैं। साथ ही दीवार मोटी एवं ऊँची रखी जाती है। ताकि सूर्य की गर्मी से बचा जा सके। फलस्वरूप गर्मी में ठंडक एवं सर्दीयों में गर्मियों का अनुभव किया जा सके।

◆ ◆ ◆ ◆ ◆



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

# 5. वास्तु का ज्योतिष से संबंध

वास्तु, ज्योतिष एवं मुहूर्त विज्ञान पर आधारित उच्च कोटि का व्यवहारिक विज्ञान है। ग्रहों और नक्षत्रों के बिना वास्तु का ज्ञान अधुरा प्रतीत होता है। क्योंकि मनुष्य का जीवन भाग्य और वास्तु दोनों से ही सामान रूप से प्रभावित होता है। मनुष्य का भाग्य अच्छा है लेकिन उनकी वास्तु खराब है तो प्रयासों के बावजूद पूर्ण सुख–समृद्धि नहीं मिल पाती है। यदि भाग्य खराब हो एवं वास्तु अनुकूल तो परेशानियां कम होगी लेकिन खत्म नहीं होगी। यदि भाग्य एवं वास्तु दोनों ही खराब हों, तो मनुष्य जीवन भर संघर्षपूर्ण स्थिति से निजात नहीं पा सकता। इसके विपरीत भाग्य के साथ–साथ वास्तु अच्छी रहने पर अधिकतम सुख सुविधा के साथ जीवन यापन करता है। मनुष्य अपने भाग्य को तो बदल नहीं सकता। परंतु वास्तु की सहायता से अपने प्रयत्नों के द्वारा इसे संवार सकता है। ग्रहों की प्रतिकूलता के परिणाम सभी को भोगने पड़ते हैं। जिस प्रकार मानव जीवन पर ग्रहों के शुभाशुभ परिणाम होते हैं उसी तरह अन्य सजीव एवं निर्जीव वस्तुऐं भी ग्रहों एवं रश्मियों के प्रभाव से प्रभावित होते हैं। जहां तक वास्तु का सवाल है भवन में दिशाओं का महत्व है तथा प्रत्येक दिशा किसी न किसी ग्रहों से शासित होता है। दिशाओं के शुभ और अशुभ रहने पर ग्रहों के प्रभाव में भी अंतर आता है। इसलिए कहा जाता है कि वास्तु में दिशाओं को ठीक रखें अन्यथा तत्संबंधी ग्रहों के प्रभाव में भी प्रतिकूलता आ जाएगी। कहा जाता है कि दिशा बदलो दशा बदलेंगी। यदि आपको अपनी दशा में बदलाव लानी है तो उस दिशा को ठीक कर डालिए। तत्पश्चात् आपकी दशा में अवश्य सुधार हो जाएगा। भारतीय ज्योतिष, 9 ग्रह, 12 राशि और 27 नक्षत्र पर आधारित है। सभी राशियों में पंचतत्वों में से किसी न किसी तत्व की प्रधानता रहती है और राशियां भी दिशाओं का प्रतिनिधित्व करता है।

**राशि तत्व एवं दिशा :–**

| राशि | तत्व | दिशा |
|---|---|---|
| मेष | अग्नि | पूर्व |
| वृष | पृथ्वी | दक्षिण |
| मिथुन | वायु | पश्चिम |
| कर्क | जल | उत्तर |
| सिंह | अग्नि | पूर्व |
| कन्या | पृथ्वी | दक्षिण |
| तुला | वायु | पश्चिम |
| वृश्चिक | जल | उत्तर |
| धनु | अग्नि | पूर्व |
| मकर | पृथ्वी | दक्षिण |
| कुंभ | वायु | पश्चिम |
| मीन | जल | उत्तर |



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

**नौ ग्रह और दिशा स्वामी :–**

प्रत्येक दिशा किसी न किसी ग्रहों के आधिपत्य में रहते हैं जिसका वर्णन नीचे किया जा रहा है।

| दिशा | स्वामी ग्रह | देवता |
|---|---|---|
| उतर | बुध | कुबेर |
| उतर–पूर्व | गुरू | शिव |
| पूर्व | सूर्य | इन्द्र |
| दक्षिण–पूर्व | शुक्र | अग्नि |
| दक्षिण | मंगल | यम् |
| दक्षिण–पश्चिम | राहु/केतु | नैऋति |
| पश्चिम | शनि | वरूण |
| वायव्य | चंद्रमा | वायु |

इस प्रकार देखने का मिलता है कि दिशाओं पर ग्रहों का पूर्ण आधिपत्य है। यदि जन्मपत्री में जातक के ग्रहों के स्थिति अच्छी नही है तो उसकी दशा एवं दिशा दोनों प्रभावित होती है। क्योंकि दोनों के बीच एक अन्योयाश्रय संबंध है। किसी जन्मपत्री में यदि चतुर्थ भाव की स्थिति दोषपूर्ण है तो वास्तु में निश्चित रूप से किसी न किसी दोष का सामना करना पड़ता है और पूर्ण वास्तु का सुख प्राप्त नहीं हो पाता।

◆ ◆ ◆ ◆ ◆



Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

# 6. मुहूर्त

ज्योतिष शास्त्र का प्रमुख स्तंभ मुहुर्त विचार है। संहिता ग्रंथो, मुहूर्त चिंतामणि आदि में मुहूर्त की विस्तार से चर्चा की गयी है। वास्तव में मुहूर्त की आवश्यकता किसी भी कार्य को निर्विघ्न संपन्न होने के लिए है। ग्रहों के द्वारा उनकी अपनी कक्षा में परिभ्रमण की गति के अनुसार प्रत्येक क्षण नये–नये संयोग बनते रहते है। उनमें कुछ अच्छे हेाते है कुछ खराब भी होते है। अच्छे संयोगों की गणना करके उनका उचित समय पर जीवन में इस्तेमाल करना ही शुभ मुहूर्त पर कार्य सम्पन्न होना होता है। समय किसी को भी बलवान एवं निर्बल बनाने की सामर्थ्य रखता है। किसी भी कार्य के आरंभ से पूर्व एक अच्छे समय या अवसर का चयन करते हैं ताकि बिना किसी परेशानी के वह कार्य पूरा हो सके। अतः उचित समय के चयन की प्रकिया ही मुर्हूत कहलाती है। मुहूर्त परिस्थितियां नहीं बदल सकता है परंतु उनकी दिशा अवश्य बदल सकता है। अतः शुभ मुहूर्त में कार्य करने से भविष्य को संवारा जा सकता है। विद्वानों ने समस्त कार्यो के लिए अलग–अलग शुभ मुहूर्तो की बात कही है। मुहूर्त काल गणना के अनुसार दिन एवं रात्रि में कुल 30 मुहूर्त होते है। 15 दिन में और 15 रात्रि में । इनका आधार 27 नक्षत्र है। इनमें आर्द्रा और रोहिणी नक्षत्र रात और दिन दोनों में हैं। आर्द्रा को दिन में गिरीश और रात्रि में शिव या रूद्र कहते है। रोहिणी को दिन में विधाता और रात्रि में धातृ स्वामी कहते है। अतः दिनमान को बराबर 15 भागों में बॉटने पर एक मुहूर्त की अवधि बनती है जैसे दिनमान 30/15 है इसमें 15 को भाग दिया तो 2/1 आया अर्थात एक मुहूर्त दो घटी और एक पल। एक घटी बराबर 24 मिनट और एक पल बराबर 24 सेंकेण्ड होते है। इस प्रकार एक मुहूर्त का समय 48 मिनट 24 सेकेण्ड हुआ। अथर्ववेद में शुभ मुहूर्त में कार्य प्रारंभ करने के विभिन्न सूत्र दिए गए हैं।

पुराणो में सर्वसिद्धिप्रद 15 मुहूर्तो का वर्णन है जिनमें 8 विशेष फलदायक है। अभिजित का प्रथम स्थान है इसे विजय मुहूर्त की संज्ञा दी गयी है। प्रत्येक दिन 11.45 से 12.30 तक का समय अभिजित मुहूर्त कहलाता है। नारद पुराण के अनुसार दिन के 11.36 से 12.24 तक का समय अभिजित मुहूर्त कहा गया है। अभिजित मुहूर्त में किए गए सभी कार्य सफल होते हैं। इसके लिए किसी भी शुद्धा शुद्धि का विचार आवश्यक नहीं है।

### शांति और पौष्टिक कार्य का मुहूर्त

**नक्षत्र** : अश्विनी, पुष्य, हस्त, उत्तराषाढ़ा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी, रेवती, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पुनर्वसु , स्वाति, अनुराधा, मघा।

**वार** : चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र

**तिथि** : 2, 3, 5, 7, 10, 11, 12, 13



Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

## गृहारंभ हेतु नींव (खात) के मुहूर्त

श्रवण, मृगशिरा, रेवती, हस्त, रोहिणी, पुष्य, अश्विनी, तीनों उत्तरा ये दस नक्षत्र खात मुहूर्त के लिए श्रेयस्कर हैं।

1. गुरु युक्त पुष्य नक्षत्र, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिरा, श्रवण, आश्लेषा इन नक्षत्रों में गुरुवार को प्रारंभ किया हुआ गृह, पुत्र और राज्य देने वाला कहा गया है।
2. अश्विनी, चित्रा, विशाखा, घनिष्ठा शतभिषा और आर्द्रा नक्षत्रों के साथ यदि शुक्रवार हो तो उस दिन किए गए शिलान्यास का मुहूर्त धन धान्य देने वाला एवं शुभ कहा गया है।
3. अश्विनी, रोहिणी, पूर्वाफाल्गुनी, चित्रा और हस्त इन नक्षत्रों में बुधवार को रखी गई नींव घर, सुख, संपन्नता और पुत्र देने वाली होती है।
4. जब गुरु, शुक्र, सूर्य तथा चंद्र अपनी उच्च स्थिति में हों बलवान हों, तो इनका बल लेकर गृहारंभ करना शुभ फलदायक होता है।
5. नींव रखे जाने के समय सूर्य का विभिन्न राशियों में प्रभाव

| | |
|---|---|
| मेष का सूर्य | प्रतिष्ठादायक |
| वृष का सूर्य | धन वृद्धि कारक |
| कर्क का | शुभ, |
| सिंह का | नौकर–चाकर में वृद्धिकारक |
| तुला का सूर्य | सुखदायक, |
| वृश्चिक का | धन वृद्धिकारक, |
| मकर का | धनदायक |
| कुंभ का सूर्य | रत्न का लाभ |

6. गृहारंभ में स्थिर या द्विस्वभाव लग्न होना चाहिए, जिसमें शुभग्रह बैठे हों या लग्न पर शुभग्रहों की दृष्टि पड़ती हो।
7. महर्षि पराशर के अनुसार चित्रा, शतभिषा स्वाति, हस्त, पुष्य पुनर्वसु, रोहिणी, रेवती, मूल, श्रवण, उत्तरा फाल्गुनी, धनिष्ठा, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, अश्विनी, मृगशिरा और अनुराधा नक्षत्रों में जो मनुष्य वास्तु पूजन करता है उसे लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।
8. सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार और शनिवार खात मुहूर्त के लिए श्रेष्ठ हैं। तिथि 3, 5, 11 और 13 खात मुहूर्त के लिए श्रेष्ठ हैं। खात मुहूर्त हमेशा प्रातः काल करना चाहिए। मध्याह्न में मुहूर्त करने से कर्ता को कष्ट एवं सायंकाल में मुहूर्त करने से कुटुंब में कलह होते हैं।



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

## गृहारम्भ किस दिन वर्जित है

1. 1, 2, 4, 6, 8, 10, 12, 15, एवं 30 तिथियां खात मुहूर्त के लिए अशुभ हैं।
2. शुक्ल पक्ष में 1, 4, 9, 14 इन चार तिथियों का त्याग करना चाहिए। व्यतिपात जैसे अशुभ योग भी त्यागने चाहिए।
3. रवि और मंगल को गृहारंभ न करें।
4. मेष, कर्क, तुला और मकर लग्न में गृहारंभ न करें।
5. गृहारंभ काल की कुंडली बनाएं। उसमें तीसरे, छठे और ग्यारहवें भाव में पापग्रह हों तो गृहारंभ नकरे
6. गृह–कुंडली में छठे, आठवें तथा बारहवें में शुभ ग्रह हों तो गृहारंभ न करें।
7. मंगल युक्त हस्त, पुष्य, रेवती, मघा, पूर्वाषाढ़ा और मूल नक्षत्रों को यदि मंगलवार हो तो उस दिन प्रारंभ किया गया घर अग्निभय, चोरी एवं पुत्र क्लेश का कारक होता है।
8. शनि युक्त पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, ज्येष्ठा, अनुराधा, स्वाति और भरणी नक्षत्रों में शनिवार को प्रारंभ किया हुआ घर राक्षसों और भूतों से युक्त रहता है।
9. गृहारंभ के दिन सूर्य निर्बल, अस्त, या नीच स्थान में हो, तो घर के स्वामी की असमय मृत्यु होती है।
10. गृहारंभ के दिन चंद्र निर्बल, अस्त या नीच का हो तो गृहस्वामिनी की अकाल मृत्यु होती है।
11. गृहारंभ के दिन बृहस्पति निर्बल, अस्त या नीच स्थान में हो तो धन का नाश होता है।
12. रिक्ता तिथि 4, 9 या 14 को गृहारंभ न करें।
13. मिथुन, कन्या, धनु और मीन के सूर्य में नवीन गृह का निर्माण न करें।

## गृह प्रवेश मुहूर्त

गुरु वशिष्ठ ने कहा है

माद्येऽर्थलाभः प्रथमप्रवेशे पुत्रार्थलाभः खलु फाल्गुने च।
चैत्रेऽर्थहानिर्धननधान्य लाभो वैशाखमासे पशुपुत्र लाभ।
ज्येष्ठे च मासेषु नूनं हानिप्रदः शत्रुभयप्रदश्च।
शुक्ले च पक्षे सुतरां विवृद्घ्ये कृष्ण ये यावद्दशमी च तावत।

अर्थात माघ मास में गृह प्रवेश करने से गृह पति को लाभ फाल्गुन मास में पुत्र एवं धन का लाभ होता है। वैशाख में धन–धान्य प्राप्ति और ज्येष्ठ में पशु एवं पुत्र लाभ होता है। अन्य मासो में (पौष–चैत्रादि) किया गया गृह प्रवेश हानिकारक एवं शत्रुभयदायक होता है। शुक्ल पक्ष में गृह प्रवेश से विशेष वृद्वि होती



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

है। और कृष्ण पक्ष में दशमी तिथि पर्यंत गृह प्रवेश करना शुभफलप्रद होता है। विश्वकर्मा के मत से कार्तिक और मार्गशीर्ष मास भी शुभ है।

गृह प्रवेश के लिए शुभ मुहूर्त इस प्रकार हैं :

**विहित मास** :

**उत्तम मास** : माघ, फाल्गुन, वैशाख और ज्येष्ठ।

**मध्यम मास** : कार्तिक, श्रावण, और मार्गशीर्ष।

**त्याज्य मास** : आषाढ़, भाद्रपद, आश्विन, पौष और चैत्र।

**विहित तिथि**

द्वितीया 2, तृतीया 3, पंचमी 5, षष्ठी 6, सप्तमी 7, दशमी 10, एकादशी 11,

द्वादशी 12, त्रयोदशी 13, एवं पूर्णिमा 15, गृह प्रवेश के लिए ये तिथियां प्रशस्त हैं।

**विहित वार**

सोमवार, बुधवार, गुरुवार एवं शुक्रवार। शनिवार को गृहप्रवेश मध्यम फल देने वाला होता है।

**विहित नक्षत्र**

रोहिणी, मृगशिरा, उत्तराफाल्गुनी, चित्रा, अनुराधा, पुष्य, उत्तराषाढ़ा, धनिष्ठा, शतभिषा, उत्तराभाद्र एवं रेवती नक्षत्र।

**लग्न**

**उत्तम** : द्वितीय, पंचम, अष्टम एवं एकादश (2, 5, 8, 11) ।

**मध्यम** : तृतीय, षष्ठ, नवम् एवं द्वादश (3, 6, 9, 12)।

**नवीन गृह द्वार अनुसार ग्रह नक्षत्र**

पूर्व में द्वार हो तो रेवती और मृगशिरा नक्षत्रों में गृह प्रवेश शुभ होता है।
दक्षिण दिशा में द्वार हो तो उतरा फाल्गुनी और चित्रा नक्षत्र में गृह प्रवेश शुभ होता है।
पश्चिम दिशा में द्वार हो तो अनुराधा और उतराषाढ़ नक्षत्रों में गृह प्रवेश शुभ होता है।
उतर दिशा में द्वार हो तो उतरा भादप्रद और रेवती नक्षत्र में गृह प्रवेश शुभ होता है।

**लग्न शुद्धि**

शुभ ग्रह लग्न से प्रथम, द्वितीय, तृतीय, पंचम, सप्तम्, नवम्, दशम् और एकादश स्थानों में शुभ होते हैं। तृतीय, षष्ठ एवं एकादश स्थानों में पापग्रह शुभ होते हैं। चतुर्थ एवं अष्टम स्थानों में कोई ग्रह नहीं होना चाहिए।

**गृह प्रवेश के समय वाम रवि विचार**

जिस लग्न में गृहप्रवेश करना हो, उससे रवि का विचार किया जाता है। लग्न कुंडली में 8वें से 12 व



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

भाव तक में से किसी भाव में यदि सूर्य हो तो पूर्व द्वार वाले घर में प्रवेश के लिए वाम होता है जो शुभ है। भाव 5 से 9 तक में से किसी में यदि सूर्य हो तो दक्षिण द्वार के घर में प्रवेश के लिए वाम होता है जो शुभ है। भाव 2 से छह तक में से किसी में यदि सूर्य हो तो पश्चिम द्वार के घर में प्रवेश के लिए वाम होता है जो शुभ है। भाव 11 से तीन तक में से किसी में यदि सूर्य हो तो उत्तर द्वार के घर में प्रवेश के लिए वाम होता है जो शुभ है।

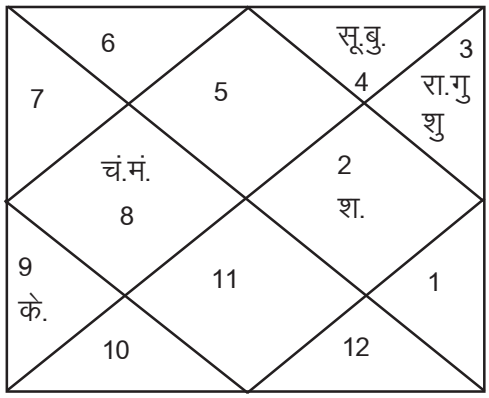


**उदाहरण :**

उपर्युक्त लग्न कुंडली में सिंह लग्न से रवि 12 वां है जो पूर्व द्वार एवं उत्तर द्वार वाले घर में प्रवेश के लिए वाम और शुभ है। पश्चिमाभिमुख घर में प्रवेश के लिए रवि वाम नहीं है क्योंकि सिंह लग्न से रवि 12 वां है। अतः इस घर में प्रवेश के लिए शुभ नहीं है।

### तिथियों से (प्रकारांतर से)

पूर्व द्वार के गृह में पूर्णा तिथियों (5, 10, 15) में, दक्षिण द्वार के गृह में नन्दा तिथियों (1, 6, 11) में, उत्तर द्वार के गृह में जया तिथियों (3, 8, 11) में और पश्चिम द्वार के गृह में भद्रा तिथियों (2, 7, 12) में गृह प्रवेश शुभ होता है।

इन मुहूर्तो के अलावा कुछ अन्य मुहूर्त है जिनका उपयोग वास्तु में किया जाता है।

### कुंआ खुदवाने का मुहूर्तः

कुंआ खुदवाने के लिए हस्ता अनुराधा, रेवती, उतराफाल्गुनी, उतराषाढा, उतराभाद्रपद, घनिष्ठा, शतभिषा, मघा, रोहिणी, पुष्य, मृगशिरा, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्रों में द्वितीया, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, दसवीं, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी एवं पूर्णिमा तिथियों में बुधवार, गुरूवार एवं शुक्रवार के दिन करनी चाहिए।

◆ ◆ ◆ ◆ ◆



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

# 7. भूमि चयन

वास्तु और भूमि में बड़ा घनिष्ट संबंध है। भवन निर्माण के लिए सबसे पहले भूमि का चयन किया जाता है। भारतीय संस्कृति में भूमि को माता का स्थान दिया गया है। आवास के प्रयोग के लिए भूखंड किस तरह का होना आवश्यक हैं। किस प्रकार की भूमि का क्रय करना चाहिए जो सुख और समृद्धि के मार्ग को प्रशस्त करें और किस प्रकार की भूमि को खरीदने से हमें बचना चाहिए जिसका ज्ञान होना परम आवश्यक है। आवासीय भूखंड हेंतु सदैव जीवित भूमि का क्रय करना चाहिए। ऐसी भूमि जिस पर उगे वृक्ष आदि हरे भरे रहते हों तथा अन्न (अनाज) आदि की उपज भी उतम हो उसे जीवित भूखंड समझना चाहिए। इसके अतिरिक्त अन्य भूमि अर्थात् अनउपजाऊ एवं बंजर भूमि को मृत भूखंड मानना चाहिए तथा जिस भूमि में दीमक, हड्डी हो अथवा जो भूमि फटी हुई हो उसे कभी भी आवासीय भवन निर्माण हेतु प्रयोग नही करना चाहिए। वृहत् संहिता में वर्णित हैं कि शल्ययुक्त भूमि कलेशकारी, फटी हुई भूमि मरण देने वाली, उसर भूमि धन का नाश करने वाली और उबड़–खाबड़ भूमि शत्रु को बसाने वाली होती है। अतः जिस प्रकार सात्विक भोजन शरीर के साथ ही मन को प्रफुल्लित कर देता है उसी प्रकार शुभ एवं आनन्दायक भूखंड मन को शीतलता प्रदान करता है।

इन संबंध में वृहत् संहिता में कहा गया है कि –

**शस्त्रोषधि द्रुम लता मधुरा सुगन्धा, स्निग्धा समा न सुषिरा च मही नराणाम।**
**अप्यध्वनि श्रम विनोदमुपागतानाम्, धत्ते श्रियं कियुत शाश्वत मन्दिरेषु।।**

अर्थात श्रेष्ठ भूमि वह है जो अनेक प्रकार के औषधी और वृक्ष तथा लताओं से सुशोभित, उतम सुगंध वाले, चिकने गड्ढे और छिद्रों से रहित हो जो मनुष्यों को आनंद देने वाली हो वैसी भूमि पर उत्तम मंदिर अथवा भवन क्यों न बनाया जाए अर्थात अवश्य ही बनाना चाहिए। जिस भूमि पर नेवले का वास हो वह भूमि मकान बनाकर रहने वालो के लिए श्रेष्ठ होती है। ऐसे भूमि पर बने मकान में रहने वालें को यश, लाभ, संपति एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। ऐसी भूमि भूत प्रेत तथा आसुरी शक्तियों से रहित होती है। इसका कारण नेवला है जो सूर्य का प्रतीक है। सूर्य से राहु की दुश्मनी हैं। नेवले और सॉप एक दूसरे के शत्रु है। नेवला सूर्य है तो सर्प राहु इसी कारण उस जमीन पर मकान बनाकर रहना हर प्रकार से शुभ फलदायी होता है। जिस जमीन पर अस्तबल हो वैसी भूमि भी शुभफलदायी होती है। ऐसी भूमि पर मकान बनाकर रहने से आरोग्य, संपदा की प्राप्ति होती है और हृदय रोग से छुटकारा मिलता है क्योंकि घोड़े को सूर्य का प्रतीक माना गया है। मेष, सिंह एवं धनु राशि वाले लोगों के लिए ऐसे भूमि विशेष फलदायी होती है। लाल रंग की गाय सूर्य का प्रतीक हैं, पीले रंग की गाय वृहस्पति का प्रतीक है। हिन्दु धर्म मतानुसार जिस जमीन पर गोशाला हो वह जमीन मकान के लिए सर्वश्रेष्ठ होता है परंतु गायों के चारागाह के स्थान पर मकान बनाना महापाप है। ऐसे चारागाह पर बने मकान में रहने वाला जीवन भर दुखी रहता है और मृत्यु के बाद नरक में जाता है। जिस भूखंड पर मधुमक्खी रहती हो वहॉ रहने वाले



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

मकान मालिक को धन का लाभ होता है। शहद वृहस्पति का प्रतीक है और वृहस्पति धन का कारक ग्रह है इसलिए ऐसा भूखंड काफी शुभफलदायी माना गया है। भूखंड में यदि गोश्रंग, शंख, कछुआ मिले तो उस भूमि को शुभ एवं लाभप्रद भूमि समझना चाहिए। भूमि खोदने पर पत्थर मिलने पर स्वर्ण लाभ, ईट मिलने पर समृद्धि, द्रव्य मिले तो तन सुख और ताम्र आदि धातुऐं मिले तो ऐश्वर्य और सुख मिलता है। जिस भूमि पर गृह बनाना हो उसे जोतवाकर उसमें यथासंभव सभी तरह के अनाज बो दें। यदि वे बीज तीन रात्रि में अंकुरित हो तो उस भूमि को उत्तम, पांच रात्रि में अंकुरित हो मध्यम और सात रात्रि में अंकुरित हो तो उस भूमि को अशुभ समझें। विभिन्न किस्म के बीज न उपलब्ध होने की स्थिति में चारों ओर धान बोना चाहिए। भूखंड के जिस भाग में बीज अंकुरित न हो उस भाग की भूमि पर मकान नही बनाना चाहिए। व्रीहि, मूँग, गेहू, सरसों, साठी, तिल, जौ ये सात औषधियां हैं। इन्हें सर्व बीज कहा जाता है। इन सभी बीजों को बोने के बाद इनके फलों को देखना चाहिए। जिस भूमि में स्वर्ण या तॉबे के रंग के पुष्प दिखायी दें वह भूखंड आवासीय भूंखड हेतु शुभफलदायी होती है।

जिस भूमि पर कुत्ते, सियार, सुअर जैसे अपवित्र और गंदे जानवर नियमित रहते या बैठते हैं। वह भूखंड अपवित्र मानी जाती है अतः ऐसी जमीन पर मकान बनाकर रहना लाभप्रद नही रहता है। साथ ही जिस भूमि पर सॉप और बिच्छु रहते हों ऐसी जमीन गृह निर्माण के लिए योग्य नही मानी जाती है। बिच्छु एवं सर्प राहु के प्रतीकात्मक हैं अतः जमीन राहु प्रधान कहलाती है जहॉ पर दुर्भाग्य एंव नाना प्रकार के अकस्मात् कष्टों का सामना करना पड़ता है घर के सदस्यों की असमय मृत्यु एवं अकस्मात् दुर्घटनाओं का सामना करना पड़ता है घर के सदस्य जुॅआ, सट्टा लॉटरी के चक्कर में फंसकर आर्थिक नुकसान पाते है साथ ही मॉस मदिरा का सेवन करने लगते है। जिस भूमि में कोयला, लोहा, सीसा जैसी काली धातुऐं निकलती है वह भूमि आसुरी भूमि कहलाती है। उसमें मकान बनाकर रहना अशुभ होता हैं ।

इसके साथ ही भूमि चयन के लिए अन्य बातों का भी ध्यान रखना चाहिए।

**भूमि परीक्षण**

यदि नया भूखंड खरीदना हो तो वास्तु विशेषज्ञों द्वारा भूमि परीक्षण करवाना चाहिए। भूमि परीक्षण के निम्नलिखित नियम बताए गए हैं।

(1) भूमि में 24 अंगुल गहरा गड्ढा खोद कर निकाली हुई मिट्टी उसी गड्ढे में भरें। यदि मिट्टी बढ़ जाए तो भूमि को उत्तम और गड्ढा बराबर हो तो मध्यम समझें किंतु यदि गड्ढा खाली रह जाए तो उसे अशुभ जानें।

(2) भूखंड के उत्तर दिशा में डेढ़ फुट गहरा गड्ढा खोदकर उसकी मिट्टी निकाल कर उसमें मुख तक पानी भर दें और उत्तर दिशा की ओर सौ कदम चलें या 120 सेकेंड के बाद गड्ढे के पास आकर देखें। गड्ढा पानी से पूरा भरा हो तो भूमि उत्तम, आधा भरा हो तो मध्यम और उसमें पानी नहीं बचा हो तो अधम अर्थात् अशुभ होती है।

(3) विश्वकर्मा प्रकाश में भूमि परीक्षण की इस रीति का वर्णन है। गड्ढे को चारों ओर से लीप कर उसमें कच्ची मिट्टी के चार दीपों में घी भरकर चारों दिशाओं की ओर जलाएं और देखें कि किस दिशा की बत्ती अधिक प्रकाश दे रही है यदि उत्तर दिशा का दीप अधिक प्रकाश दे रहा हो तो वह भूमि ब्राह्मण, पूर्व



Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

दिशा का अधिक प्रकाशमान हो तो क्षत्रिय, पश्चिम का दीप अधिक प्रकाश दे रहा हो तो वैश्य एवं दक्षिण के दीप में अधिक प्रकाश दे रहा हो तो शूद्र वर्ण वाले के लिए उपयुक्त होती है।

**भूमि के प्रकार :**

वास्तुशास्त्र के प्राचीन ग्रन्थों में भूमि का चार भागों में वर्गीकरण किया गया है :–

**(1) ब्रह्मामीणी भूमि :** ऐसी भूमि जिसका वर्ण श्वेत, गंध घी के समान, स्वाद मधु के समान एवं स्पर्श सुखद होता है ब्राह्मामीणी भूमि कहलाती है। इस प्रकार की भूमि पर कुश, दुर्वा एवं अन्य हवनीय वृक्ष होते हैं। ब्राह्ममीणी भूमि सभी प्रकार के आध्यात्मिक सुख देने वाली होती है। इस प्रकार की भूमि विद्यालयों, मंदिरों, धर्मशालाओं, साहित्यिक संस्थाओं आदि के निर्माण के लिए उपयुक्त होती है।

**(2) क्षत्रिय भूमि :** जिसका वर्ण रक्त, गंध रक्त के समान, स्वाद कसैला एवं स्पर्श कठोर होता है और जिसमें रक्तवर्णीय पुष्प एवं वृक्ष होते हैं क्षत्रिय भूमि कहलाती है। इस भूमि में सर्प भी पाए जाते हैं। क्षत्रिय भूमि राज्य, वर्चस्व एवं पराक्रम बढ़ाने वाली होती है। इस प्रकार की भूमि राजकीय कार्यालयों, सैनिक छावनियों, शस्त्रागारों, सैनिक कॉलोनियों आदि के निर्माण के लिए उपयुक्त होती है।

**(3) वैश्य भूमि :** जिसका वर्ण हरित–पीत (हरा–पीला), गन्ध मधु अथवा अन्न के समान एवं स्वाद अम्लीय होता है वैश्य भूमि कहलाती है। इस प्रकार की भूमि पर अन्न एवं फलयुक्त वृक्षादि होते हैं। वैश्य भूमि धन–धान्य एवं ऐश्वर्य में वृद्धि करने वाली होती है। इस प्रकार की भूमि व्यवासायिक प्रतिष्ठानों, दुकानों, व्यापारियों के निवास आदि के लिए उपयुक्त होती है।

**(4) शूद्र भूमि :** जिसका वर्ण कृष्ण (कालापन लिए हुए), गंध मदिरा के समान, स्वाद कड़वा एवं स्पर्श अति कठोर होता है शूद्र भूमि कहलाती है। इस प्रकार की भूमि पर झाड़–झंखाड़ आदि होते हैं। इस प्रकार की भूमि कलह एवं झगड़ा कराने वाली होती है। अतः ऐसे भूखंड पर आवासीय भवन नहीं बनाना चाहिए।

इस तरह रंग स्वाद आदि के आधार पर भूमि का जो वर्गीकरण किया गया है उसके अनुसार सैनिक छावनियों शास्त्रागारों के लिए क्षत्रिय भूमि, व्यवसायिक , प्रतिष्ठानों एंव व्यापारिओं के लिए वैश्य भूमि, विद्यालय, मंदिरों के लिए ब्राह्ाण भूमि उपयुक्त होता हैं। किन्तु वर्तमान समय में वर्गीकरण के आधार पर भवन निर्माण करना व्यवहारिक रूप से संभव नही है। अतः जिस मिटी में अच्छी पैदावार हो पानी की उचित उपलब्धता हो, मिट्ठी ठोस हो , वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं के परीक्षण में वह मिट्ठी स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद हो तथा जिस भूखंड पर भवन की स्थायित्व हो सके वर्तमान समय में ऐसी भूमि का चयन करना लाभप्रद एवं शुभफलदायी होगा।

**भूपृष्ठ से भूमि परीक्षा :** भूमि के मध्य वाले कठोर भाग को पृष्ठ कहते हैं।भूपृष्ठ के आधार पर भूखंड के निम्नलिखित भेद बताए गए हैं।

**(1) गजपृष्ठ :** जो भूमि दक्षिण, नैर्ऋत्य, पश्चिम और वायव्य कोण में ऊंची हो, उसे गजपृष्ठ कहते हैं। गजपृष्ठ भूमि पर बने मकान में लक्ष्मी का वास होता है तथा धन एवं आयु में निरंतर वृद्धि होती रहती है।



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

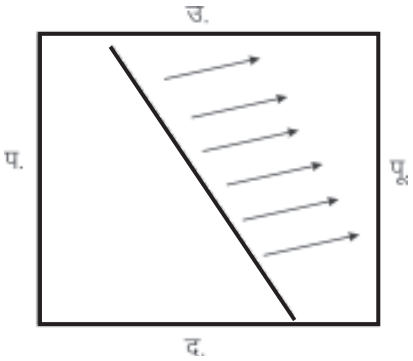


**(2) कूर्मपृष्ठ** : जो भूमि मध्य भाग में विशेष ऊंची और चारों दिशाओं में नीची हो उसे कूर्मपृष्ठ कहते हैं। ऐसी भूमि निवास योग्य होती है, जिस पर निवास करने से नित्य उत्साह की वृद्धि होती है और सुख और धन–धान्य की प्राप्ति होती है।

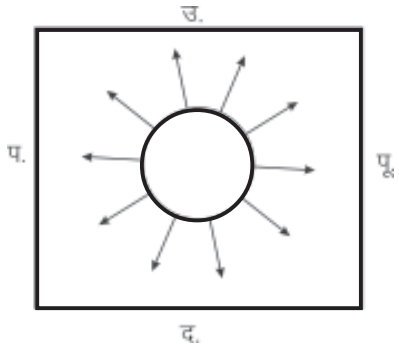


**(3) दैत्यपृष्ठ** : जो भूमि ईशान पूर्व और अग्नि कोण में ऊंची और पश्चिम में नीची हो, उसे दैत्यपृष्ठ कहते हैं। दैत्यपृष्ठ भूखंड पर बने मकान में लक्ष्मी नहीं आती तथा धन और पुत्र की निरंतर हानि होती रहती है।

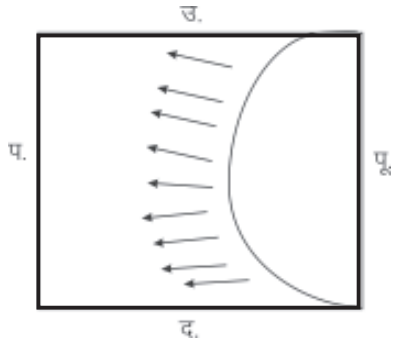




www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

**(4) नागपृष्ठ** : जो भूमि पूर्व और पश्चिम दिशाओं में लंबी तथा दक्षिण और उत्तर दिशाओं में ऊंची हो उसे नागपृष्ठ कहते हैं। नागपृष्ठ भूमि पर वास करने से परिवार के सदस्य मानसिक रोग से ग्रस्त और गृहस्वामी के शत्रुओं की संख्या में वृद्वि होती हैं। इस भूखंड पर बना मकान पत्नी और बच्चों के लिए अति नुकसानदायक होता है।

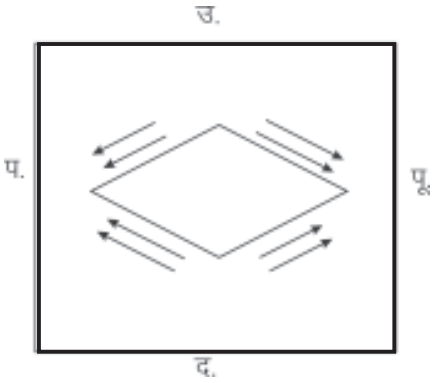


## भूमि की ढाल

भूमि का चयन करते समय भूमि किस दिशा में ऊंची एवं किस दिशा में नीची है अर्थात् भूमि की ढाल किस दिशा में है इसकी भी परीक्षा कर लेनी चाहिए।

**पूर्व की ढाल** :
यदि भूमि की ढाल पूर्व दिशा की ओर हो तो उस भूखंड पर बने भवन में वास करनेवाले को लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। यह भूखंड विकास एवं विस्तार के लिए अच्छा माना जाता है।

**उत्तर की ढाल** :
उत्तर दिशा की ओर ढाल वाले भूखंड पर बने भवन में वास करने वाले की वंश वृद्धि, धनागम एवं भाग्य में वृद्धि होती है।

**पश्चिम की ढाल** :
यदि ढाल पश्चिम दिशा की ओर हो तो उस भूखंड पर बने भवन में वास करने वाले के ज्ञान और धन का नाश होता है। साथ ही परिवार में कलह बना रहता है।

**दक्षिण की ढाल** :
ढाल दक्षिण दिशा की ओर हो तो ऐसी भूमि पर भवन बनाकर वास करने वाले को रोगादि का सामना करना पड़ता है और उसकी शीघ्र मृत्यु की संभावना रहती है।



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

**उत्तर पूर्व की ढाल** :
ढाल उत्तर पूर्व दिशा की ओर हो तो उस भूखंड पर बने भवन में वास करने वाले को सर्वत्र सफलता, भाग्य में वृद्धि, प्रतिष्ठा, यश एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

**उत्तर पश्चिम की ढाल** :
अगर यह उत्तर पूर्व से नीची हो तो उस पर वास करने वाले के अनेक शत्रु होते हैं, घर में आए दिन चोरियों होती रहती हैं एवं गृहस्वामी पर आक्रमण मुकदमों होते रहते हैं। परिवार के सदस्यों का स्वास्थ्य भी खराब रहता है।

**दक्षिण पूर्व का ढाल** :
अगर यह उत्तर पूर्व से नीची हो तब आग एवं शत्रु का भय बना रहता है। यह स्त्रियों एवं संतान के लिए अच्छा फल नहीं देती। साथ ही यह चोरी, धोखेबाजी, झगड़े, मुकदमे में वृद्धि करती है।

**दक्षिण पश्चिम की ढाल** :
यह बुरी आदतों को बढ़ाने वाली होती है। इसके फलस्वरूप बीमारी एवं मृत्यु भी होती है। आकस्मिक संकट एवं दुर्घटनाओं का सामना करना पड़ता है। भवन पर भूत–प्रेत आदि की छाया बनी रहती है। इसमें रहने वालों का चरित्र दूषित होता है तथा उनका शत्रु पक्ष प्रबल रहता है।

**निष्कर्ष**
अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भूखंड के नैर्ऋत्य क्षेत्र को सबसे उच्च और ईशान क्षेत्र को सबसे नीचा रखना चाहिए। वायव्य कोण (उत्तर–पश्चिम) ईशान कोण (उत्तर–पूर्व) से ऊंचा और आग्नेय कोण वायव्य कोण से ऊंचा होना चाहिए। ऐसे भूखंड पर वास करने से परिवार का विकास, धन–धान्य में वृद्धि और सुख समृद्धि की प्राप्ति होती है।

**नैर्ऋत्य > आग्नेय > वायव्य > ईशान**

दिशा से कम दक्षिण एवं इससे भी कम पश्चिम दिशा में रख सकते हैं।

◆ ◆ ◆ ◆ ◆



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

# 8. मार्ग विचार (Adjoining Roads)

भूखंड खरीदते समय यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वह किस दिशा की सड़क के समीप है क्योंकि दिशाओं के लाभ भिन्न–भिन्न होते हैं।

भूखंड जिसके एक ओर सड़क हो–

(1) उत्तर मार्गोन्मुखी भूखंड– ऐसे भूखंड पर बने मकान में रहने वाले धनी, समृद्ध और भाग्यशाली होते हैं।

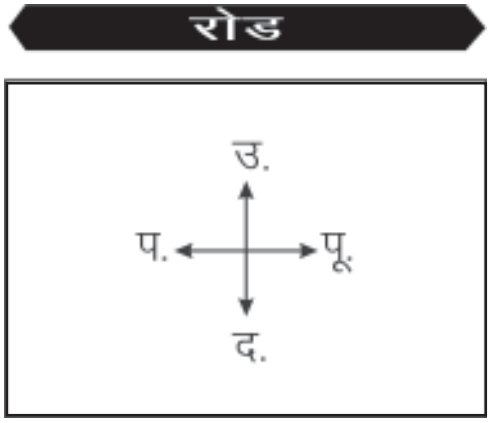


(2) पूर्व मार्गोन्मुखी भूखंड– यह भूखंड बहुत शुभ होता है। इस पर बने भवन में वास करने वाले को नाम, यश एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

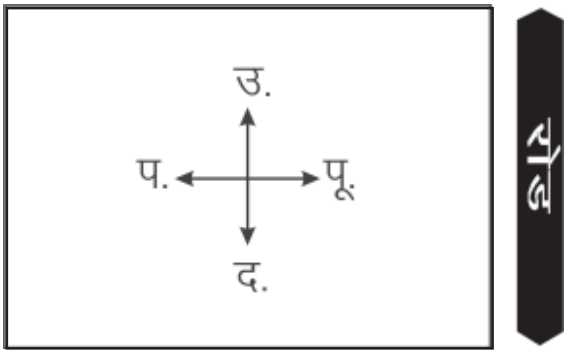




Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

(3) दक्षिण मार्गोन्मुखी भूखंड
Plot facing South Road
स्त्रियों के व्यापार के लिए अच्छा होता है।

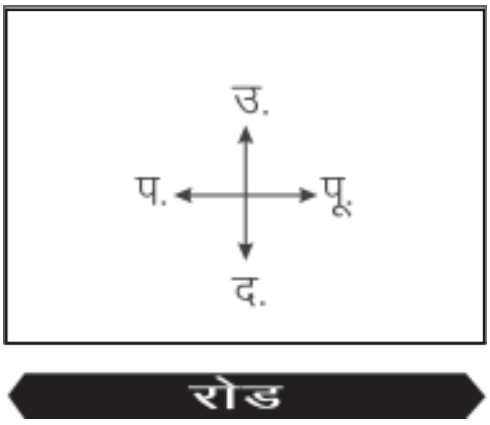


(4) पश्चिम मार्गोन्मुखी भूखंड
(Plot facing West Road)
Average (साधारण)

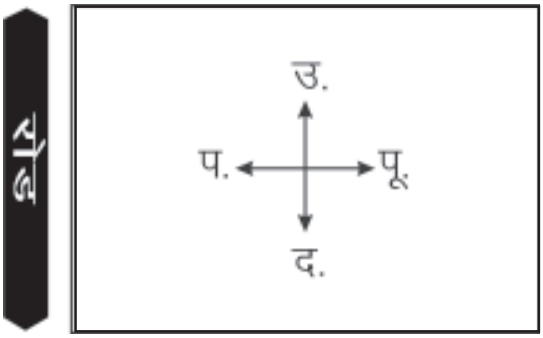


(5) दक्षिण–पश्चिम मार्गोन्मुखी भुखंड
(Plot facing South & West Road) Average (साधारण)

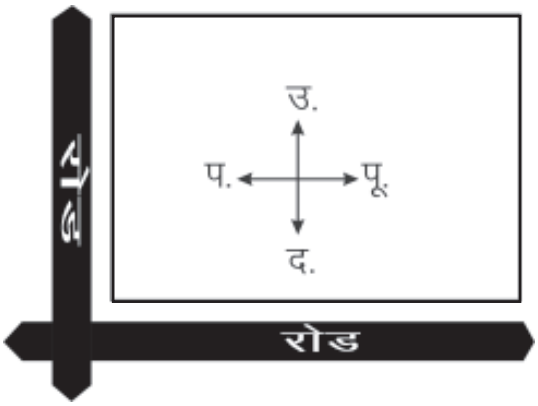




Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

(6) पश्चिम–उत्तर मार्गोन्मुखी भूखंड
(Plot facing West & North Road)
Good (अच्छा)

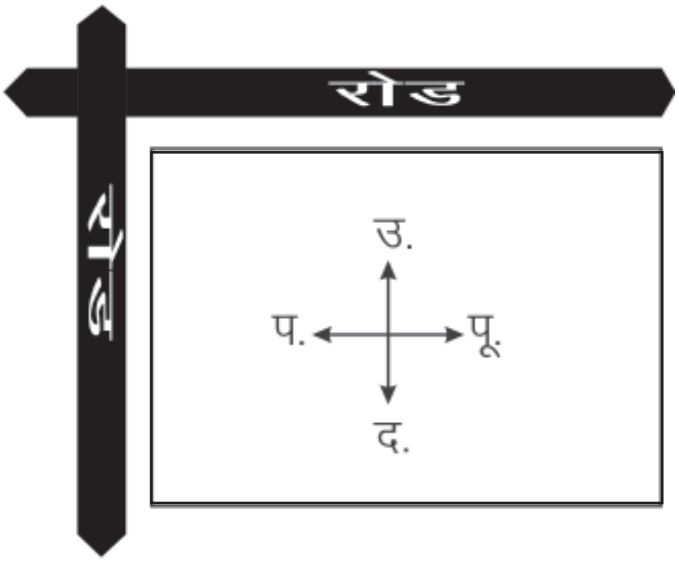


(7) उत्तर–दक्षिण मार्गोन्मुखी भूखंड
(Plot facing North & South Road) Average (साधारण)

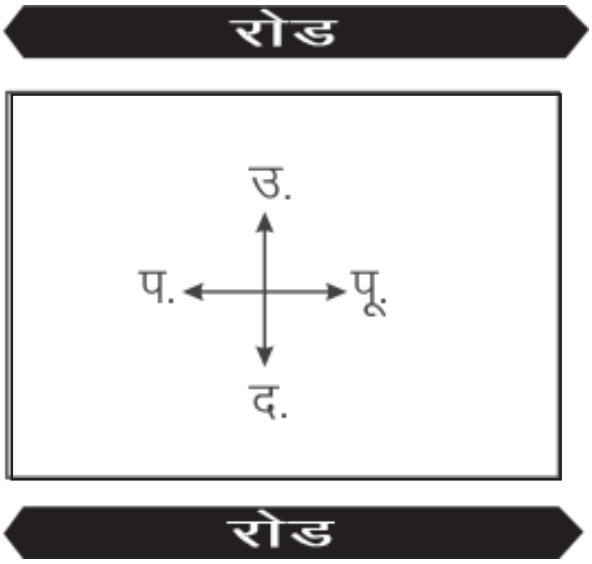




Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

(8) पूर्व–पश्चिमी मार्गोन्मुखी भूखंड
(Plot facing East & West Road) Good (अच्छा)

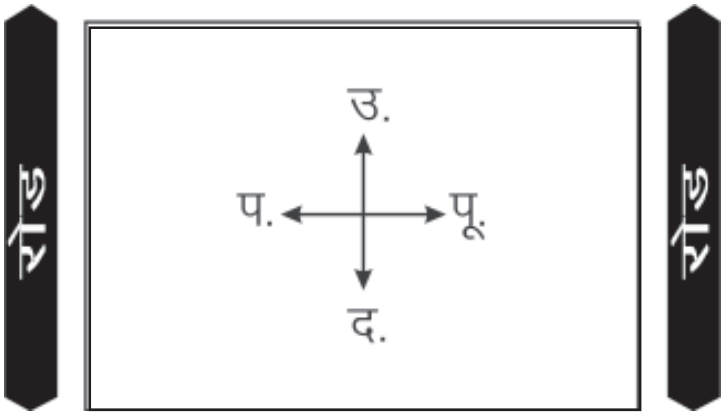


(9) उत्तर–पूर्व–दक्षिण मार्गोन्मुखी भूखंड (Plot facing North, East & South Road) Average (साधारण)

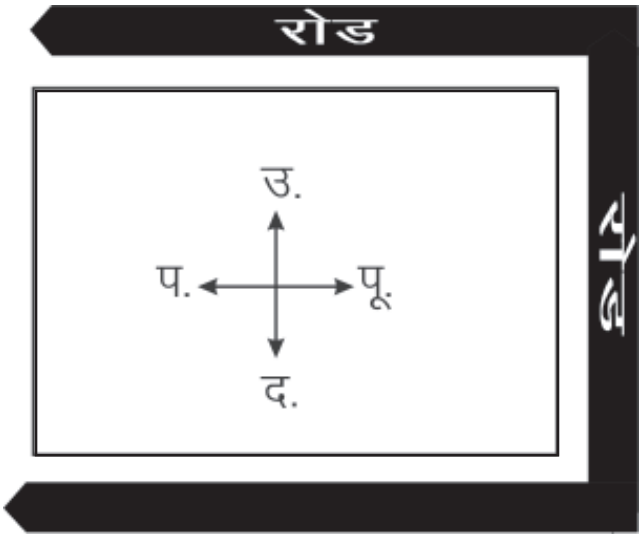




Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

(10) पूर्व–दक्षिण–पश्चिम मार्गोन्मुखी भूखंड (Plot facing East, South & West Road) Average (साधारण)

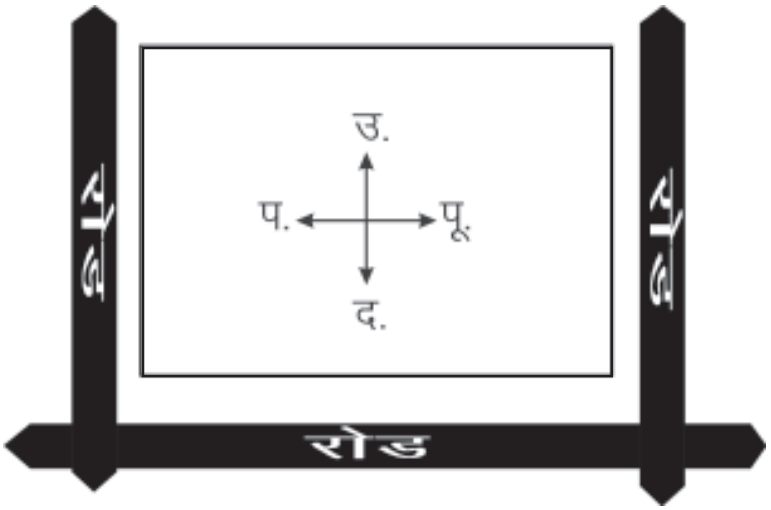


(11) पश्चिम–उत्तर–पूर्व मार्गोन्मुखी भूखंड (Plot facing West, North, & East Road) Average (साधारण)

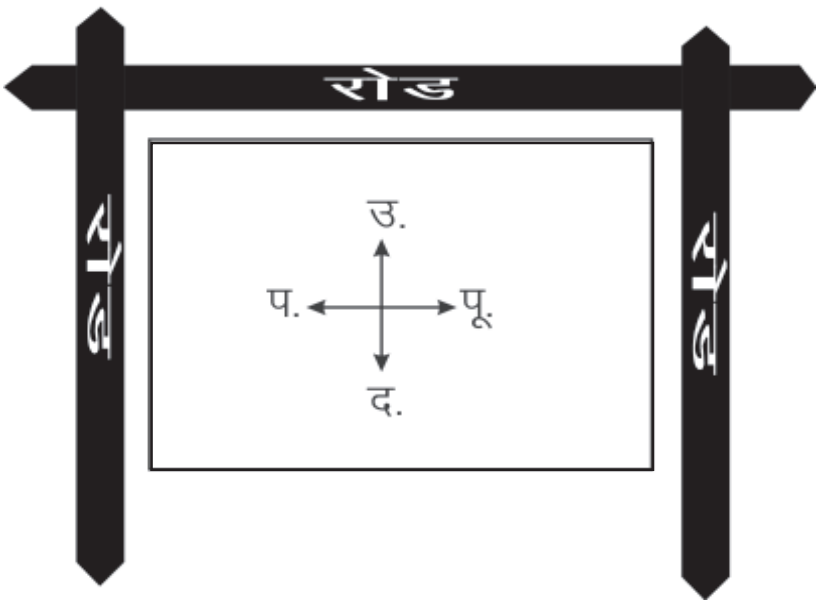




Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

(12) दक्षिण–पश्चिम–उत्तर मार्गोन्मुखी भूखंड (Plot facing South, West, & North, Road)
जिस भूखंड के तीन तरफ सड़कें हों, वह औसत या साधारण कहलाता है। इसके चौथे मार्गों में गलियारा निकाल कर इसमें सुधार किया जा सकता है।

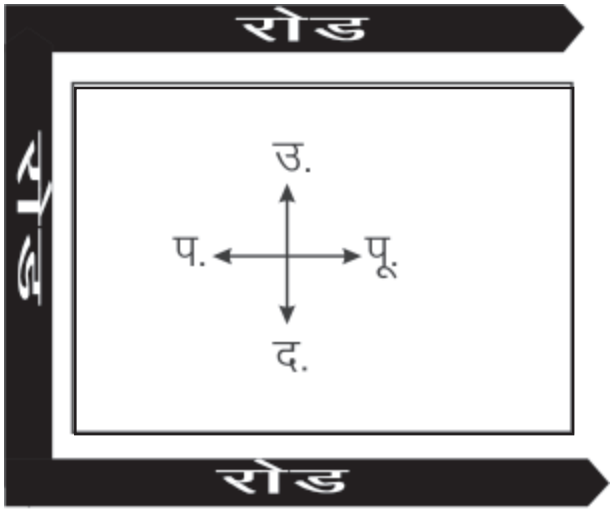


(13) भूखंड जिसके चारों ओर सड़कें हों (Plot Having Roads on all Side) जिसके चारों ओर सड़कें हों वह भूखंड सर्वोकृष्ट होता है।
जिस चौकोर भूखंड के चारों ओर सड़कें होती हैं। उसे ब्रह्म स्थल भूखंड कहते हैं। ऐसे भूखंड गृह स्वामी को अत्यंत संपत्तिवान तथा प्रभावशाली बनाता है। परिवार के सदस्य स्वस्थ रहते हैं एवं संपत्ति में निरंतर वृद्धि होती रहती है।

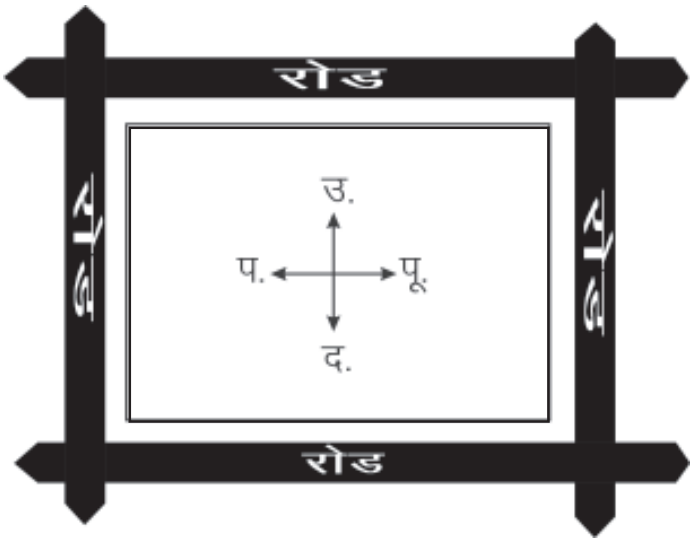




Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

(14) भूखंड जिसके सम्मुख अंग्रेजी के T अक्षर के आकार की सड़कें हों (Plot facing once side Road with T Junction.)

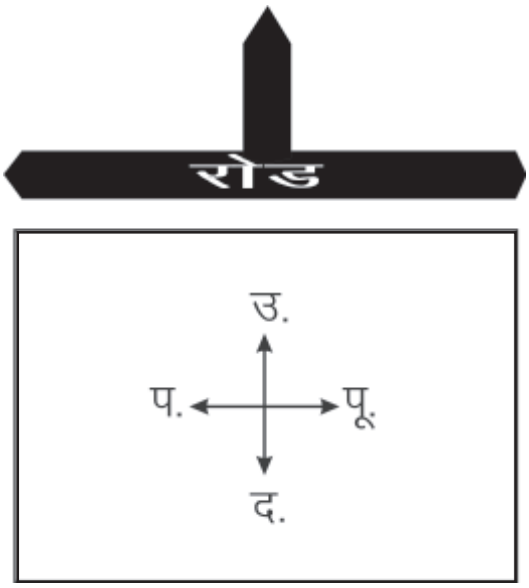


(15) भूखंड जिसके दो, तीन अथवा चारों तरफ T आकार की सड़कें हों (Plot facing two side Road, three side or all side Roads with T Junction)

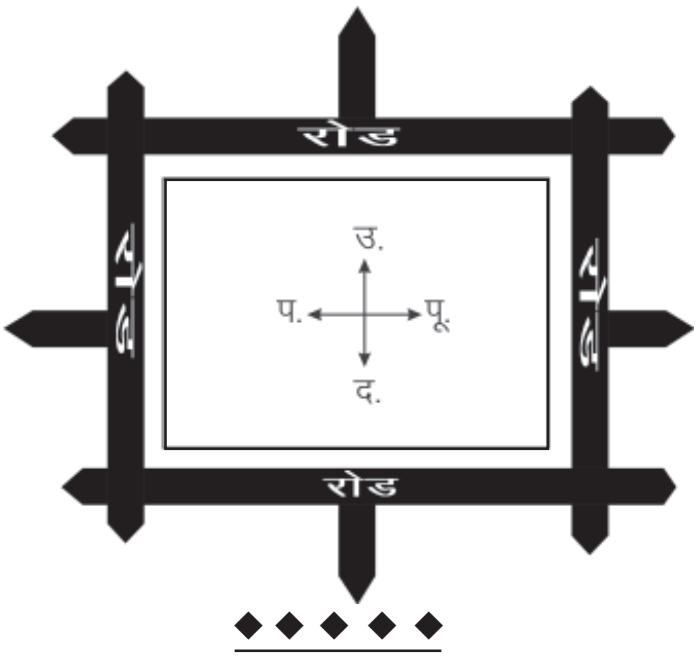




Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

# 9. भूखंड में ऊर्जा का स्तर

प्रत्येक भूखंड विचित्र प्रकार की ऊर्जा एवं चुंबकीय फील्ड से भरा होता है। यह ऊर्जा उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव की ओर चुंबकीय लहरों के रूप में लगातार प्रवाहित होती रहती है। इस ऊर्जा को विद्युत चुंबकीय प्रवाह कहते है। यदि भवन का उत्तरी भाग नीचा और दक्षिणी भाग ऊंचा हो तो यह ऊर्जा सहज ही भवन में प्रवेश कर उसमें वास करने वालों को शुभ प्रभाव देगी। किंतु उत्तरी भाग अधिक ऊंचा होगा तो ऊर्जा का यह प्रवाह रूक जाएगा जो नुकसानदायक रहेगा। भूखंड को चारदीवारी से घेर कर रखना चाहिए ताकि सकारात्मक ऊर्जा एवं विद्युत चुंबकीय लहरों का निर्माण होता रहे। जिस भूखंड में सकारात्मक ऊर्जा एवं विद्युत चुंबकीय लहरों का निर्माण होता है उस पर वास करने वाले सुख, शांति एवं समृद्विपूर्वक जीवन को व्यतीत करते हैं। वर्गाकार भूखंड में चुंबकीय प्रवाह का निर्माण समुचित रूप से होता है जबकि आयताकार भूखंड में ऊर्जा का स्तर साधारण पाया जाता है क्योंकि ईशान से नैर्ऋत्य तक चुंबकीय लहरों को प्रवाहित होने में काफी दूरी तय करनी पड़ती है। फलस्वरूप विद्युत–चुंबकीय ऊर्जा का प्रभाव क्षीण हो जाता है। आयताकार भूखंड की लंबाई–चौड़ाई का अनुपात 2:1 रहने पर सकारात्मक विद्युत–चुंबकीय ऊर्जा का निर्माण होता है। यदि इसकी लंबाई–चौड़ाई का अनुपात दुगने से ज्यादा रहे तो विद्युत चुंबकीय लहरों का प्रभाव काफी कम बन पाता है। ऐसी स्थिति में एक या दो दीवारें खड़ी कर इस दोष को दूर किया जा सकता है।

ऊपर वर्णित सारे नियम Magnetic Meridian दक्षिण–उत्तर दिशा भूखंड के बीच पड़ने पर लागू होंगे। यदि मुख्य दिशा भूखंड के कोने में पड़ती हो तो उस पर ऊर्जा एवं चुंबकीय फील्ड का प्रभाव मध्यम लाभ लिए रहेगा। यद्यपि भवन वास्तु शास्त्र के सिद्वांत के अनुरूप बनायी जाए तो 75% ही लाभ मिल पाता है। इस

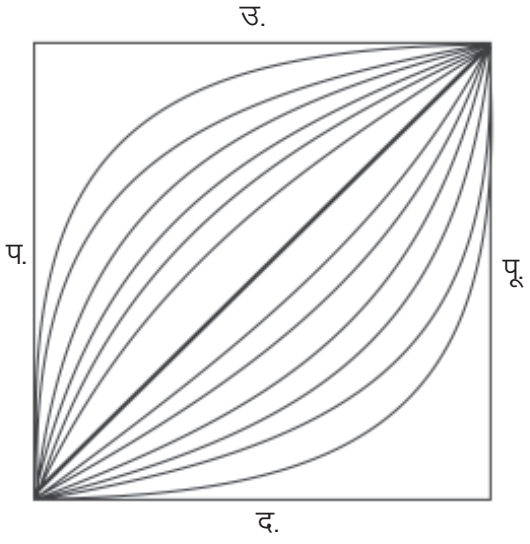




Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

प्रकार देखते हैं कि विद्युत–चुंबकीय ऊर्जा वर्गाकार और Cardinal direction वाले भूखंड में उत्तम प्रभाव देती है जैसा कि ऊपर चित्र में स्पष्ट किया गया है।

**विदिशा भूखंडः–**

किसी भूखंड पर जब सभी मुख्य दिशा चुंबकीय अक्ष के समानान्तर न पड़कर कोने में पड़ती हो तो इस तरह के भूखंड को विदिशा भूखंड कहते है। आमतौर पर ऐसे भूखंड को नही खरीदना चाहिए क्योंकि इस तरह की भूखंड में बनने वाले चुंबकीय क्षेत्र एवं ऊर्जा का स्तर साधारण होता है जिसके फलस्वरूप भूखंड पर निवास करने वाले को विशेष लाभ नही मिल पाता है। परंतु जिस विदिशा भूखंड के ईशान क्षेत्र में रोड हो तो उस भूखंड का इस्तेमाल आवासीय भूखंड के रूप में किया जा सकता है क्योंकि

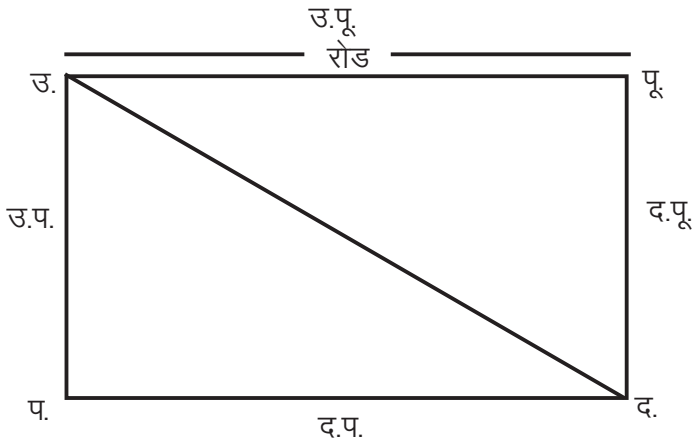


विदिशा भूखंड के ईशान क्षेत्र में स्थित रोड लाभदायक फल देता है। विदिशा भूखंड में भवन चारदीवारी के समानान्तर बनाना चाहिए। इसे मुख्य दिशाओं के समानान्तर भूलकर भी न बनायें। इस तरह की भूखंड में ईशान क्षेत्र में अधिक से अधिक जगह छोडकर निर्माण करें तथा सभी दरवाजे शुभ लाभदायक क्षेत्रो से बनायें। दक्षिण पश्चिम का कोण $90^0$ का रखें। तथा जमीन के सतह का ढाल उत्तर–पूर्व दिशा की ओर रखना चाहिए।

◆ ◆ ◆ ◆ ◆



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

# 10. भूखंड का आकृति मूलक वर्गीकरण
# Shape of the Land

(1) **वर्गाकार भूमि : Regular Shape**

Square Shape
AB=BC =CD =DA
AC=BD
सभी कोण समकोण ($90^0$)

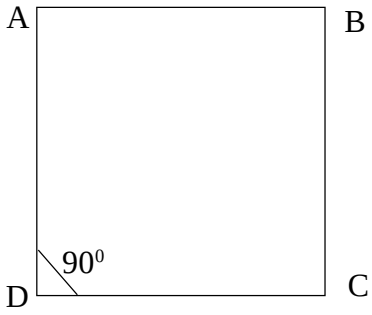


Prosperity (मानसिक शांति एवं आर्थिक संपन्नता अर्थात धनदायक एवं पुष्टिवर्धक)

(2) **आयताकार समकोण भूखंड** : आर्थिक विकास (Financial Growth)
इसमें रहने वाले सुखी सम्पन्न रहते हैं। यह धनदायक एवं पुष्टिवर्धक होता है।

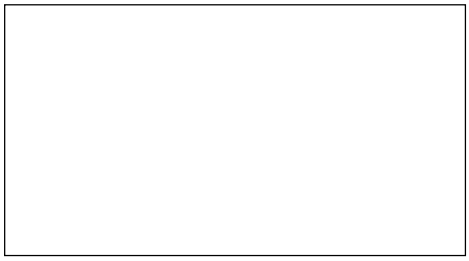



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

(3) **वृत्ताकार भूखंड (Circular Plot)**

ऐसा भूखंड धन एवं संपन्नता को रोके रखता है। परंतु वृत्ताकार या कुंभ वृत्ताकार भूखंड धन एवं संपन्नता का द्योतक हैं। दिल्ली में रिंग रोड के कनॉट प्लेस के गोल मार्केट, कमला नगर आदि क्षेत्र संपन्नता के जीवंत उदाहरण है।

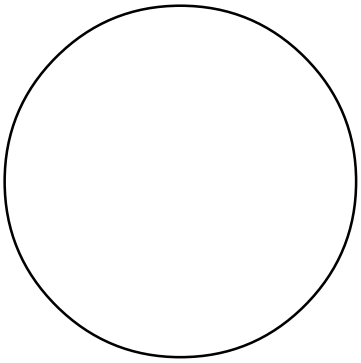

आधुनिक विद्वानों के अनुसार वृत्ताकार भूखंड के अंदर वृत्ताकार वास्तु का निर्माण आवासीय वास्तु के लिए अच्छा फल नहीं देता जबकि वर्गाकार भूमि के अंदर वर्गाकार वास्तु का निर्माण व्यावसायिक वास्तु के लिए अच्छा फल देता है। जैसे – खेल के मैदान, संसद भवन, बुद्ध तथा भारत के अन्य धर्मो के रूप।

(4) **अंडाकार भूखंड (Oval Plot) :**

अंडाकार अत्यंत कष्टदायक होता है। इस पर बने मकान में रहने वालों को हानियों एवं व्याधियों का

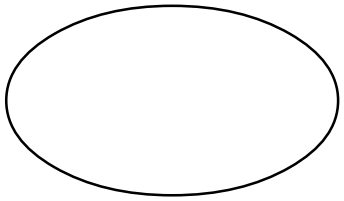

सामना करना पड़ता है। अतः ऐसे भूखंड पर आवासीय मकान नहीं बनाना चाहिए।

Varied problems can be used by Carving out the biggest rectangle and rejecting the portion out side the rectangle.

**(5) षट्कोण भूखंड (Hexagonal plot) :-** यह साधारण फल देने वाला होता है।



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Average can cause of govt. punishment can be used for construction by carring out the biggest square or rectangle and leaving the rest portion

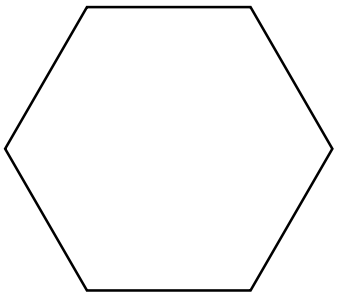

**(6) अष्टकोणीय लंबा भूखण्ड :–**

यह कष्ट एवं पीड़ा पहुंचाता है। इसमें वास करने वालों को कष्टों से परेशानियों का भय होता है। अतः ऐसे भूखंड पर आवासीय भवन नहीं बनाना चाहिए।

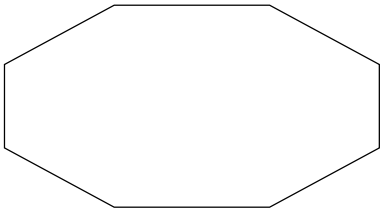

**(7) चक्राकार भूखंड (Wheel Shaped Plot) :-** धन–हानि का कारक

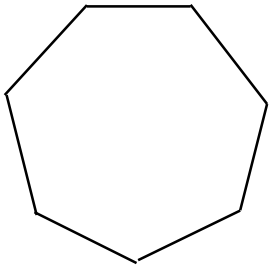

इसमें से वर्गाकार या आयताकार टुकड़ा काटकर उस पर भवन का निर्माण किया जा सकता है।

;**(8) त्रिभुजाकार भूखंड (Trianglular Shape)** – त्रिभुजाकार भूखंड अशुभ होता है।
यह मुकदमे, अग्नि के कारण हानि तथा सरकार की अस्थिरता आदि का कारक होता है। अतः इस पर



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

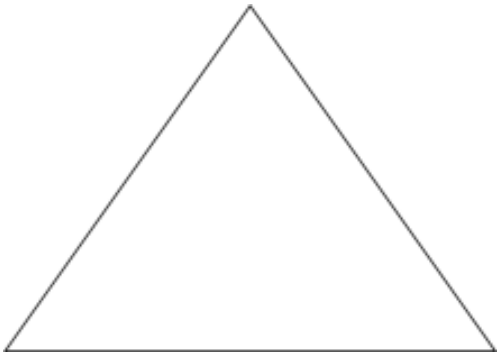

यथासंभव वर्गाकार अथवर आयताकार टुकड़ा काटकर भवन बनाना चाहिए।

**(9) अर्द्ध वृताकार भूखण्ड (Semi-circular Plot) :-** ऐसा भूखंड भी अशुभ होता है। इस पर बना भवन दुख, दरिद्रता आदि का कारक होता है। अतः इस पर यथासंभव आयताकार टुकड़ा काटकर भवन निर्माण करना चाहिए।

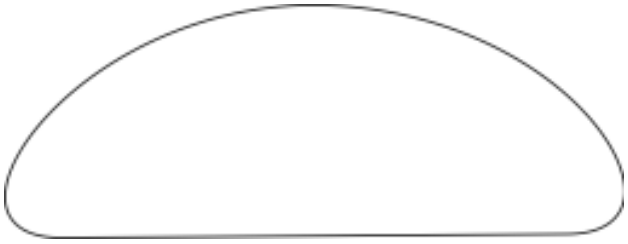

**(10) धनुषाकार भूखंड (Bow Shape Plot)** ऐसे भूखंड पर रहने वालों के अनेक शत्रु होते हैं। साथ ही उन्हें विभिन्न समस्याओं, भय आदि का सामना करना पड़ता है। अतः इन कष्टकारी एवं अशुभ स्थितियों से बचने के लिए धनुषाकार भूखंड पर यथासंभव आयताकार टुकड़ा काटकर भवन बनाना चाहिए।

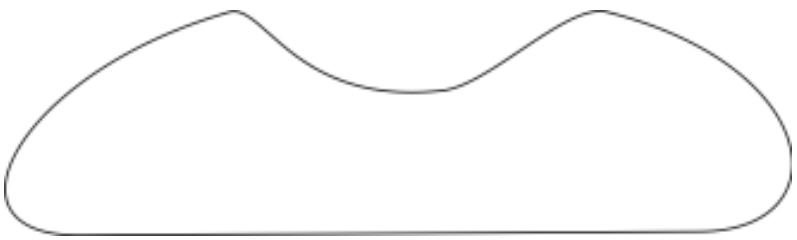



www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

**(11) रथ आकृति का भूखंड :–** **यह** भूखंड गृहस्वामी के लिए अत्यंत अशुभ होता है। अतः इस पर भवन निर्माण नहीं करना चाहिए।

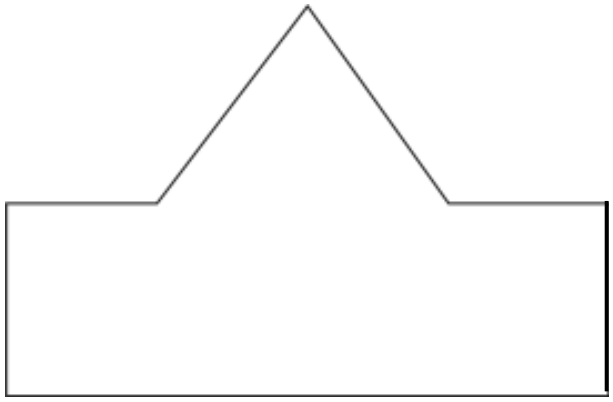

**(12) दो जुड़े हुए रथों की आकृति वा भूखंड :–**

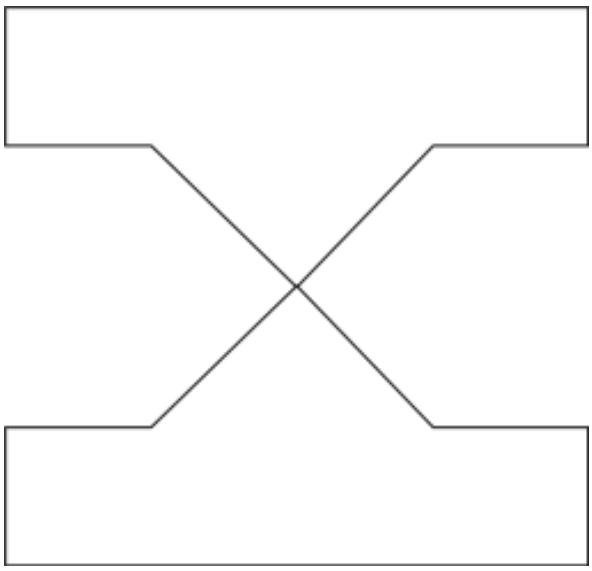

**यह** भूखंड भी अशुभ होता है। इसका स्वामी परेशानियों से घिरा रहता है। घर में चोरी होती रहती है, फलस्वरूप उसकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं रहती। अतः इस पर मकान बनाना श्रेयस्कर नहीं।



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

**(13) बाल्टीनुमा भूखंड :–**

इसमें निवास करने वाले ऋणग्रस्त रहते हैं।

**(14) मृदंगाकार भूखेड :–**

इस भूखंड पर बने भवन का स्वामी परस्त्री कामी होता है एवं घर के धन का इसी काम में अपव्यय करता है। इस तरह मृदंगार भूखंड अशुभ होता है, अतः इस पर आवासीय भवन नहीं बनाना चाहिए।

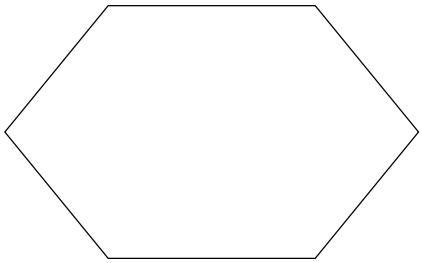

**(15) कोणीय भूखंड :–**

यह अच्छा नहीं माना गया है। इस पर बने भवन में रहने वाले पति एवं पत्नी के मध्य अक्सर कलह होता रहता है।

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

**(16) कैप्सूल के आकार का भूखंड**

यह मिश्रित फलदायक होता है। यहां वास करने वाला व्यक्ति धन संचय नहीं कर सकता।

**(17) ताराकार भूखंड (Star Shape plot) :-**

ताराकार भूखंड पर रहने वाले कनूनी अड़चनों और मुकदमों में घिरे रहते हैं। फलस्वरूप उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं रहती। अतः ऐसे भूखंड पर भवन बनाना श्रेयस्कर नहीं है।

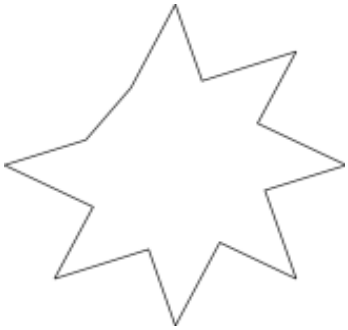

**(18) ढोल के आकार का भूखंड :–**

ढोल के आकार का भूखंड अशुभ होता है। ऐसे भूखंड पर रहने वाला दुर्बल होता है और उसकी पत्नी की असामाजिक मृत्यु होती है।

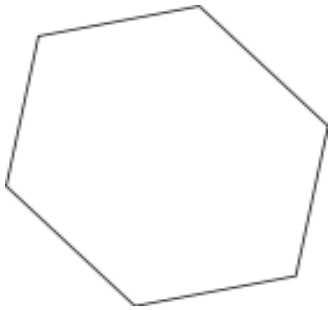



Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

**(19) हाथ के पंखे के आकार का भूखंड :–**

यह भूखंड अत्यंत अशुभ होता है। यह धन तथा मवेशी की हानि का कारक होता है। इस पर रहने वाले को भीख मांगने तक की नौबत आ सकती है। अतः ऐसे भूखंड पर आवासीय भवन नहीं बनाना चाहिए।

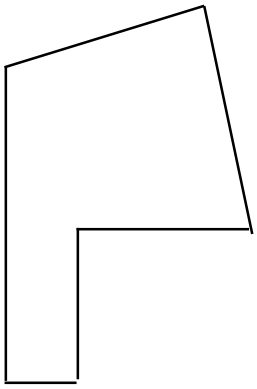

**(20) मंदिरनुमा भूखंड :–**

इस प्रकार के भूखंड पर वास करने वाले फक्कड़ किस्म के होते हैं। गृहस्वामी बैरागी बनकर गृह त्याग देता है। इस तरह सुखी पारिवारिक जीवन के लिए यह भूखंड उपयुक्त नहीं होता।

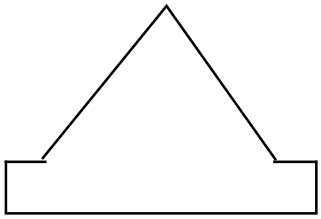

**(21) अंग्रजी के T अक्षर के आकार वाला भूखंड :–**

इस भूखंड पर बने मकान में रहने वाला चार या पांच वर्ष में मकान बेच देता है।किंतु इसका पांचवा खरीददार कुछ हद तक स्थिर रहता है।

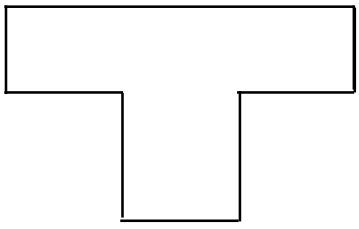



Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

**(21) गौमुखी भुखंड :–**

जो भूखंड आगे से संकरा एवं पीछे से चौड़ा हो उसे काकमुखी या गौमुखी भूखंड कहते हैं। यह भूखंड अच्छा फल देने वाला माना गया है। गौमुखी भवन वही शुभ होता है जिस का प्रवेश दक्षिण या पश्चिम दिशा से हो। चित्र में दिखाए गए गौमुखी भूखंड में उत्तर–पूर्व बढ़ा हुआ है। इस पर बने मकान में रहने वाले को यश, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, मानसिक एवं आर्थिक प्राप्ति होती है और उसका समुचित विकास होता है। इस तरह के भवन में सोए हुए भाग्य जाग जाते हैं। ऐसा भूखंड भाग्य से मिलता है। इस तरह के भवन में वास करने वाले की लोकप्रियता दूर–दूर तक फैली रहती है और उसकी सारी आकांक्षाएं पूरी होती हैं।

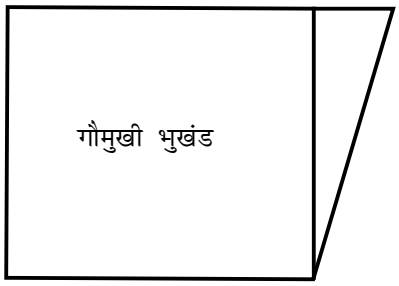


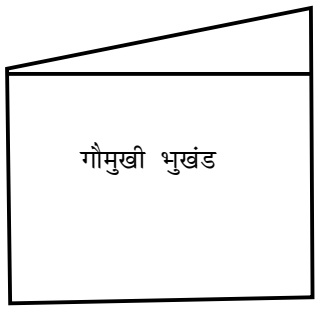


लेकिन प्रत्येक गौमुखी भूखंड अच्छा नहीं होता है। उत्तर–पूर्व से काटकर बना गौमुखी भवन तो शुभ फलदायक नहीं होता। घर में समृद्धि, सुख, चान्ति आदि की कमी बनी रहती है। दरिद्रता, दुर्घटनाएं आदि पीछा नहीं छोड़तीं। बीमारियों से ग्रस्त होते रहते हैं। कुछ अशुभ गौमुखी भूखंडों के चित्र यहां प्रस्तुत हैं।

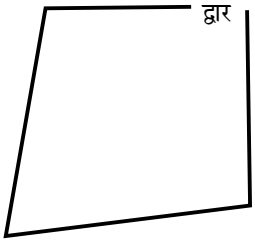


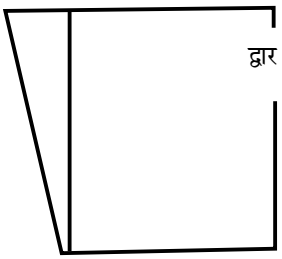


उक्त भूखंड अकस्मात दुर्घटना के कारक होते हैं। इन पर रहने वालों में आत्महत्या की प्रवृत्ति आ जाती है व मुकदमों में उलझे रहते हैं। अतः ऐसे भूखंड पर भवन बनाने से पूर्व उसे दोषमुक्त करना लेना चाहिए।



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

**(22) व्याघ्रमुखी भूखंड :**

जो भूखंड आगे से चौड़ा एवं पीछे से पतला होता है उसे व्याघ्रमुखी भूखंड या छाजमुखी भूखंड कहते हैं। यह रोग, शोक एवं दुख देने वाला होता है। इस बने भवन में रहने वाले को मुसीबतें, आपदाएं आदि घेरे रहती हैं। गरीबी, कर्ज, शोक, दुख आदि साथ नहीं छोड़ते। साथ ही भाग्य सो जाता है। अतः इस तरह के भूखंड का इस्तेमाल सुधार किए बिना नहीं करना चाहिए।

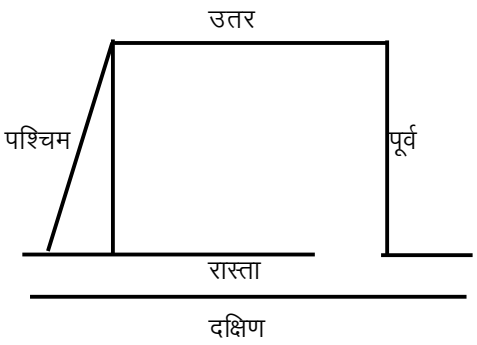


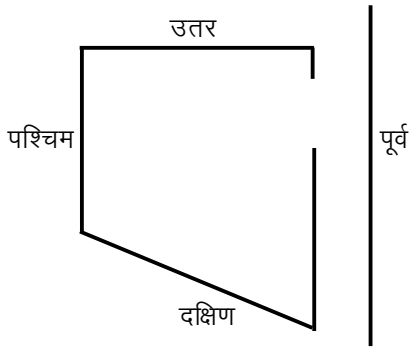


लेकिन उत्तर–पूर्व में बढ़ते हुए अगर व्याघ्रमुखी भूखंड बने तो वह सुख, समृद्धि एवं शांति देने वाला होगा।

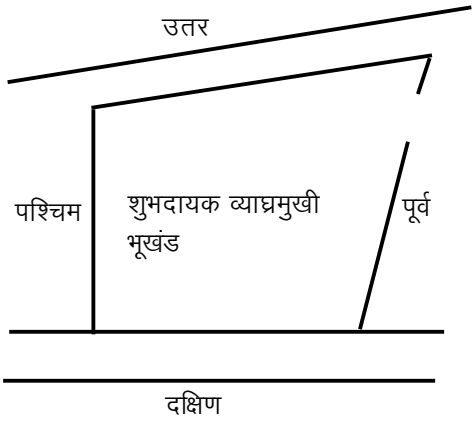


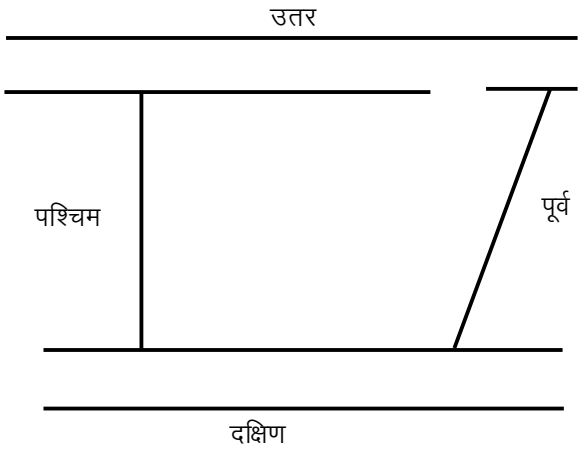


इस पर रहने वाले को यश, प्रतिष्ठा, मान सम्मान के साथ सभी सुखों की प्राप्ति होती है। उसका समुचित आर्थिक, शारीरिक, आध्यात्मिक एवं मानसिक विकास होता है। उसकी आध्यात्मिक कार्यों में रुचि होती है। जिस व्याघ्रमुखी भूखंड का ईशान बढ़ा हुआ हो, वह शुभ होता है।

◆◆◆◆◆



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

# 11. भूखंड का विस्तार
# Extention of the Plot

Future Point

जिस भूखंड के चारो कोण समकोण हो वह सर्वोत्कृष्ट भूखंड माना जाता है। लेकिन आमतौर पर वर्गाकार या आयताकार भूखंड मिलने में कठिनाई होती है। किसी भूखंड का कोई क्षेत्र बढ़ा हो तो उसका क्या फल होगा यह बात भूखंड के आकार प्रकार पर निर्भर करती है। कभी कभी कोई कोण 90 अंश से छोटा बड़ा भी होता है।

**ईशान वृद्धि भूखंड :–**

ईशान्य कोण मे जमीन बढी हुई हो इस वृद्धि को ईश वृद्धि या गुरू वृद्धि भूखंड कहते हैं। उतर पूर्व अर्थात ईशान क्षेत्र में परम पिता परमेश्वर अर्थात ईश्वर का वास माना जाता है। साथ ही ग्रहों में गुरू (वृहस्पति)

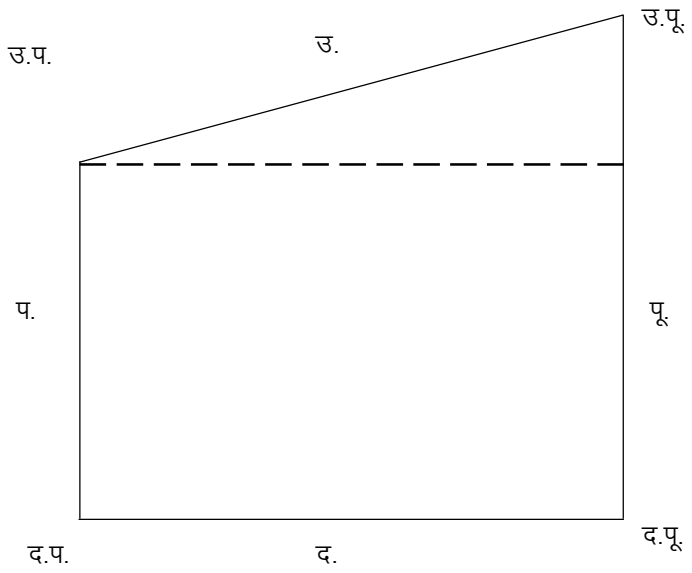


का वास भी यहॉ होता है। उतर–पूर्व की दिशा में जमीन बढ़ी हुई होने से अध्यात्मिक चेतना का विकास, होता है साथ ही धर्म, अर्थ, संतान, बुजुर्गों का सुख तथा सत्य गुणी कार्यो के कारक वृहस्पति के तरफ की जमीन बढी हुई होने पर वृहस्पति की कारक चीजों में वृद्धि होती है, तथा उसपर मकान बनाकर रहने वाले को ऐश्वर्य, समृद्धि और भाग्य की प्राप्ति होती है। इस तरह का भूखंड उच्च शिक्षा एवं प्रतिष्ठा देने वाला होता है। उतर दिशा में मनस चेतना के कारक ग्रह बुद्ध एवं कुबेर का वास होता है। इसलिए विस्तृत ईशान वाले भूखंड में ईशान कोण ही नही बल्कि उतर की ओर की जमीन भी बढ़ी हुई रहती



www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

है। जिसके फलस्वरूप घर में मानसिक विकास एवं खुशियॉ भी बनी रहती है। साथ ही अच्छे स्वास्थ्य एवं नाम, यश, मान–सम्मान के साथ लोग जीवन यापन करते है। हर कदम पर लोकप्रियता मिलती है। इसमें निवास करने वाले ईश्वर तुल्य समझे जाते है। घर में आने जाने वालों का तॉता लगा रहता है। साथ ही सभी ईच्छाए पूरी होती है। किसी तरह की कोई कमी नहीं रहती है। इस तरह के भूखंड पर निवास करने वाले लोग गुणों में धर्म, नैतिकता, त्याग, सात्विकता, ज्ञान एवं परोपकार के भावना से युक्त होते हैं। अतः ईशान वृद्धि भूखंड शिक्षक, न्यायविद्व, धर्मशास्त्र के ज्ञाता, अंतरिक्ष यात्री, इंजिनीयर ,गणितज्ञ, ज्योतिषी, मंत्री एवं उच्च पद को सुशोभित करने वाले के लिए विशेष लाभप्रद होता है। परंतु ऐसे भूखंड में रहने वाले में अहंकार की भावना भी रहती है। इसका कारण यह है कि वृहस्पति सात्विकता के साथ–साथ अहंकार भी देता है।

**वायव्य वृद्धि भूखंड :**

उतर–पश्चिम अर्थात वायव्य में चंद्र ग्रह का अधिकार एवं देवतओं में पवन देव का वास माना जाता है। वायव्य में भूमि बढ़ी होने से चंद्र की कारक वस्तुओं में वृद्धि होती है।**चंद्रमा मनसों जातः** अर्थात चंद्रमा व्यक्ति के मन का प्रतिनिधित्व करता है। चंद्रमा मातृस्नेह माता , स्नेह, संवेदना, स्वभाव, नम्रता आदि का कारक भी माना गया है। साथ ही जल एवं रक्त संचार का कारक है। ऐसे भूखंड पर बने मकान में

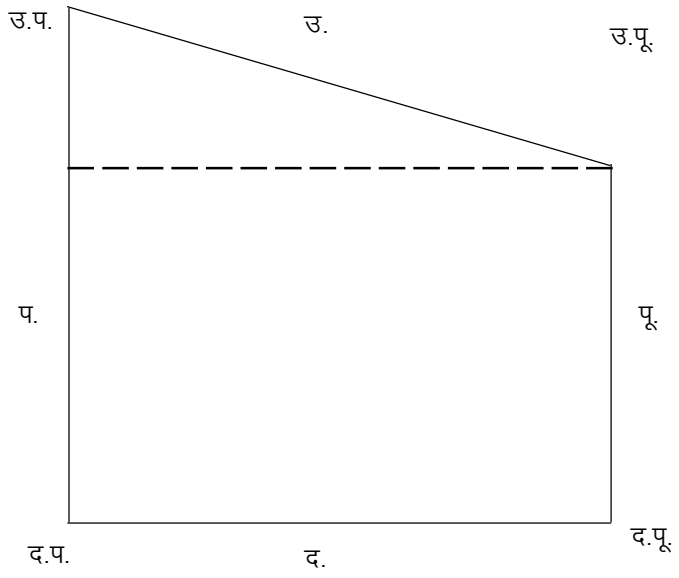


रहनेवालों को माता का उत्तम सुख मिलता हैं। चंद्र यात्रा और प्रवास का भी कारक है इस कारण ऐसे भूखंड पर बने मकान में रहनेवाले भ्रमणशील होते हैं। वे कार्यो के कारण बार–बार अपने आवास बदलते हैं । चंद्रमा के नौकरी के साथ संबंध होने से ऐसे मकान में रहने वालों को प्रायः अच्छी नौकरी मिलती है और परिवार के प्रायः सभी सदस्य घर के बाहर जाकर नौकरी करतें हैं। घर के बाहरी स्थानों से



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

भी इनका संबंध अच्छा रहता है। चंद्र औषधि का कारक है अतः ऐस भूखंड पर बने मकान में रहने वालों को चंद्र का शुभ प्रभाव प्राप्त होता है। उनके धन–धान्य में वृद्धि होती है। साथ ही घर में खाद्यय पदार्थो की नियमित व्यवस्था बनी रहती हैं।

चंद्रमा के बढे हुए प्रभाव होने के कारण घर में निवास करने वालों में रक्त विकार एवं चंचलता बनी रहती है। परिवार में आपस में मतभेद बना रहता है तथा गृहस्वामी के मन में उन्माद, उत्पात तथा चिंता बनी रहती है। पूर्णमासी के दिन कई व्यक्ति में पागलपन या उन्माद देखने को मिलता है। यही बात इस भूखंड पर बनी मकान में रहने वालों में भी दिखाई देती है। ऐसे मकान में रहने वाले लगनशील परंतु कल्पना एवं तर्क करने वाले होते हैं। वायव्य क्षेत्र में वायु देवता का वास होता है। वायु का स्वभाव चंचल होता है। शरीर में वायु गुण के कारण चिंता, उन्माद एवं मानसिक दुर्बलता की अधिकता रहती है। फलस्वरूप इस तरह के भूखंड पर निवास करने वाले का बाल असमय सफेद हो जाता है। बुढापे के लक्षण जल्द ही दिखाई पड़ने लगते हैं।

**आग्नेय वृद्धि भूखंड :**

ऐसे भूखंड का दक्षिण–पूर्व भाग का क्षेत्र बढा होता है। आग्नेय कोण में अग्नि देवता तथा शुक्र ग्रह का वास होता है। शुक्र ग्रह को कामवासना, विलास एवं सुखो का कारक ग्रह मानते है। इसके अलावा मौज–मस्ती, शयन कक्ष, संगीत, चित्रकारी, नृत्य आदि कला तथा श्रृगांर आदि पर शुक्र का कारकत्व है। शुक्र स्त्री वर्ग का भी कारक है। ऐसे भूमि पर बने मकान में रहने वाले कामासक्त होते हैं। ये मौज–मस्ती करने वाले होते हैं। इनमें ग्लैमर के प्रति आकर्षण तथा संगीत , गायन, नृत्य, सिनेमा, नाटक आदि कलाओं में रूची होती है। पहले राजा महाराजा भूखंड के आग्नेय कोण में ही नाट्यशाला, नृत्यशाला, संगीत कक्ष उद्यान तथा पुष्पवाटिका आदि बनाते थे। ऐसे भूखंड पर बने मकान में शुक्र क्षेत्र के बढे होने के कारण परिवार पर स्त्री का प्रभाव रहता है। अर्थात ऐसे घरो में रूपवान स्त्री या पत्नी की बात को ज्यादा तरजीह दी जाती है। साथ ही सुदंरता के कारक प्रत्येक उस पदार्थ जो सुदंरता को बढाता है

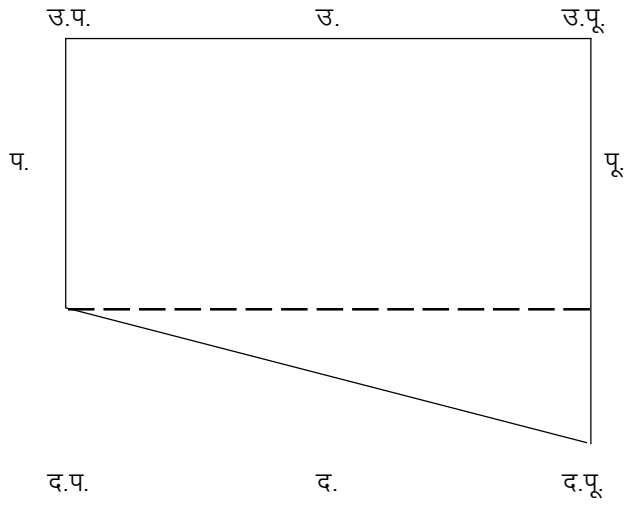




Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

जैसे पाउडर, लिप्स्टिक क्रीम, ब्यूटी पार्लर आदि से संबंधित कार्य के लिए यह क्षेत्र शुभफलदायक होता है। ऐसी भूमि पर बने मकान में रहने वाले पर राजसी वृतियों का प्रभुत्व रहता है। परंतु ऐसे भूखंड पर यम् की दक्षिण दिशा और आग्नेय क्षेत्र के बढे होने के कारण यहॉ रहने वाले को यम् एवं अग्नि का भय हमेशा बना रहता है। साथ ही ऐसे भूखंड पर रहने वालो को शत्रु वृद्धि, चोरो का भय एवं चिंता प्रायः बनी रहती है। झगडा झंझट, भारी खर्च, स्वास्थ्य में कमी एवं आर्थिक संकट का भी सामना करना पड़ता है। इस तरह से बच्चों की वृद्धि और स्त्रियों के विकास में बाधक होता है।

**नैऋत्य वृद्धि भूखंडः**

जिस भूखंड के दक्षिण–पश्चिम की भूमि बढी हुई हो उसे नैऋत्य वृद्धि भूखंड कहते है। नैऋत्य में राहु या नैऋृत्य नामक राक्षस का वास होता है। इस कोणों मे भूमि के बढे होने का अर्थ है तमोगुण में अधिकता क्योंकि राहु तमोगुणी ग्रह है। ऐंसे भूखंड पर भूत, प्रेत एवं आसुरी शक्तियों का वास होता है। क्योकि भूत–प्रेत का कारक राहु है। इस तरह के भूखंड पर रहने वाले लोगों में परस्पर वैमनस्य बनी रहती है। पति–पत्नी, पिता–पुत्र, माता–पुत्र में परस्पर मधुर संबंध नहीं रहते। परिवार के लोग अत्यंत क्रोधी एवं उग्र होते है। परिवार में आग, विषपान, शस्त्र प्रयोग एवं उग्रता आदि बातें अक्सर देखने को मिलती है। साथ ही आत्महत्या जैसी घटनाएं भी होती है। ऐसे भूखंड पर बने मकान में रहने वाले अंध

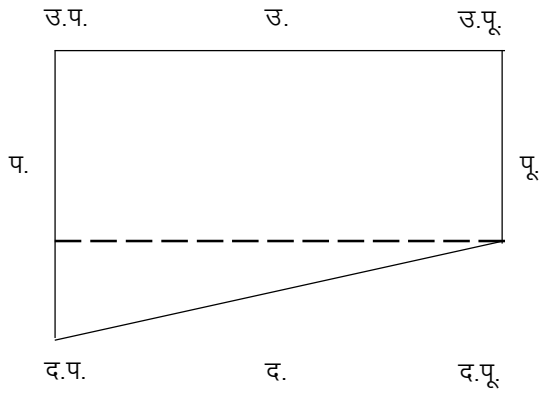


विश्वास के शिकार होते हैं तथा जादू टोना, तंत्र मंत्र पर अधिक विश्वास करते है। घर में भूत–प्रेत से संबंधित घटनायें होती रहती है। घर मे निवास करने वाले लोगों के बीच छल, कपट– प्रपंच ,झूठ एवं फरेबी में वृद्धि देखने को मिलती है। घर के लोग अनैतिक एवं अमर्यादित कार्यो में संलग्न होते है। संतान को मादक पदार्थ की लत लग जाती है। आकस्मिक घटना, दुर्घटनायें एवं आत्महत्या जैसे प्रवृति की वृद्धि हो जाती है। गृहस्वामी के दाम्पत्य जीवन में कलह एंव वेदना देखने को मिलती है। परिवार की सदस्यों को विभिन्न प्रकार के कष्ट एवं परेशानियॉ बनी रहती है। अतः इस तरह का भूखंड स्वास्थ्य में कमी, मानसिक खुशियों में कमी, धन में कमी तथा सुख–समृद्धि में कमी देता है। इस तरह के भूखंड पर बने



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

भवन हर तरह की मुसीबत, संकट और आफत देते रहते है। भाग्य सो जाता है, आपदाएं, संकट, महादरिद्री, कर्ज और ब्याज का बोझ से इसमें निवास करने वाले लोग दब जाते है। सभी तरफ के मुसीबतें अपने आप आकर्षित होते रहती है। इस भूखंड में दिए गए चित्र में बिंदु रेखा की दो सीमा तक ही भवन निर्माण करना चाहिए। बढ़े हुए नैर्ऋत्य की त्रिभूजाकार भूमि को खाली रखें तो भी कष्ट सहने होंगे। वास्तु निर्माण भले ही चौरस या लम्बचौरस जगह में करें, समग्र भूखंड का आकार ही भूमि निर्माण के लिए निषिद्ध है।

इस प्रकार चारो कोण में बढी हुई भूखंड को देखने से पता लगता है कि ईशान में बढा हुआ भूखंड विशेष शुभ और बिना दिक्कत देनेवाला होता है। इस तरह की भूखंड पर धन और धर्म दोनों की वृद्धि होती हैं। जबकि वायव्य एवं आग्नेय की वृद्धि वाले भूखंड मे शुभाशुभ दोनो प्रकार के फल की प्राप्ति होती है। नैऋत्य वृद्धि युक्त भूखंड में अनिष्ठ फल की प्राप्ति अधिक होती है। अतः इस तरह के भूखंड पर भवन निर्माण नही करना चाहिए।

◆ ◆ ◆ ◆ ◆



Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

# 12. छिद्रिल कोणयुक्त भूखंड
# Extention of the Plot

Future Point

कोण वृद्धि से विपरीत स्थिति कोणछेदी भूखंड की होती है। कोणवृद्धि भूखंड में किसी कोण के बढ़े होने से उस कोण से संबंधित ग्रह के देवता की शक्ति में वृद्धि होती है, जिससे ग्रह या देवता से संबंधित विषयों में वृद्धि देखने को मिलती है। इसके विपरीत कोण छेदन होने से उस कोण से संबंधित ग्रहों तथा देवताओं के प्रभाव में कमी देखने को मिलती है।

### ईशान छेदी भूखंड

भूखंड का ईशान कटा हुआ रहने पर धनागम में कमी, धर्म में कमी, गृहसुख या पितृसुख में कमी, दानशीलता एवं सात्विकता में कमी तथा वंश वृद्धि में अवरोध या संतान को कष्ट होता है। इसके अतिरिक्त ऐसे भूखंड पर रहने वालों की स्मरणशक्ति कमजोर होती है तथा दुख, निर्धनता, बीमारी,

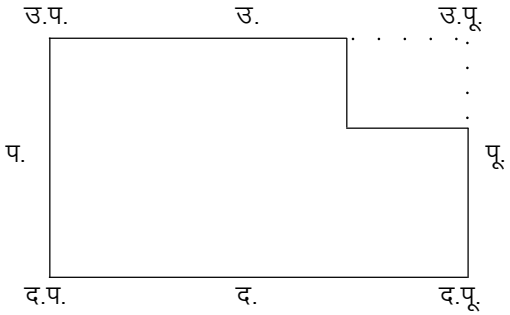


महापातकी घरों में प्रवेश कर जाती है। ईशान कोण में छेद रहने पर ईश या बृहस्पति भूखंड के बाहर रह जाते हैं। फलतः बृहस्पति की वस्तुओं में कमी रहती है। ऐसे भूखंड के कोण 6 होते हैं। वास्तुशास्त्र में चार कोनेवाले भूखंड के अलावा 3, 5 एवं 7 कोण के भूखंड निर्माण हेतु निषिद्ध माने गए हैं। इसलिए ऐसा भूखंड कभी नहीं खरीदना चाहिए। ईशान में ईश्वर का वास होता है, इसलिए इसके कटे होने पर सुख, शांति, ऐश्वर्य–वैभव आदि की प्राप्ति नहीं हो पाएगी। सभी ग्रहों में बृहस्पति का महत्व सर्वाधिक है। अन्य ग्रहों के अनिष्ट से बचाने की शक्ति केवल देवगुरु बृहस्पति में ही है। अतः यदि बृहस्पति का ही छेदन हो तो उस मकान में कष्टों से बचाव और शुभत्व की आशा कैसे की जा सकती है।

### छिद्रयुक्त नैर्ऋत्य वाला भूखंड

वास्तु शास्त्र चार से कम या अधिक कोणों से युक्त भूखंड को मकान के लिए उपयुक्त नहीं मानते।



www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

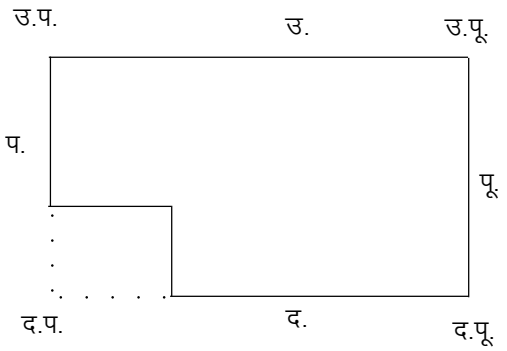


दक्षिण–पश्चिम अर्थात नैऋत्य का क्षेत्र जिसपर राहु ग्रह का आधिपत्य है पृथ्वी तत्व के लिए निर्धारित है। यह सभी तत्वों से स्थिर है। यह क्षेत्र के कट जाने से आयु में कमी, निर्णय लेने की क्षमताओं में कमी, भाग्य में कमी एवं प्रभाव में कमी देखने को मिलता है। नैऋत्य क्षेत्र के कट जाने से दक्षिणी ध्रुव से मिलने वाले चुंबकीय प्रभाव में कमी हो जाती है जिसके फलस्वरूप खुशहाली, समृद्धि, मान–सम्मान, यश् एवं प्रतिष्ठा सबकुछ देखते–देखते खत्म हो जाता है। बीमारियां, खर्च, दुख ये सभी साथ हो जाते हैं। घर में दुखों का पहाड टुट जाता है तथा जिंदगी जीने का मजा खत्म हो जाता है। यद्यपि नैर्ऋत्य के कट जाने पर आसुरी वृत्तियां एवं राहु से संबंधित अनिष्ट दूर हो जाते हैं और भूत–प्रेत भवन में प्रवेश नहीं कर पाते। अंधविश्वास से परिवार मुक्त रहता है। अनिष्ट दूर हो जाते हैं साथ ही राहु या नैऋत राक्षस की शक्तियां प्रभावहीन हो जाती हैं।

### छिद्रयुक्त वायव्य वाला भूखंड

वायव्य में चंद्र का वास होता है। चंद्र के मन का कारक होने के कारण ऐसे भूखंड पर बने मकान में रहनेवालों की मानसिक शक्ति क्षीण होती है। परिवार के लोगों में विषाद एवं पागलपन के लक्षण उत्पन्न होते हैं। यह दिशा के कट जाने से परिवार जनों के बीच आपसी संबंधो में टकराव देखने को मिलती

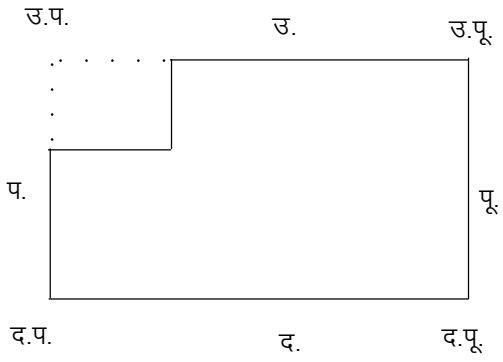




Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

है क्योंकि यह दिशा आपसी संबंध एवं मित्रता को दर्शाता हैं। चंद्र रक्त संचार का कारक भी है, इसलिए परिवार के एक से अधिक सदस्य निम्न रक्तचाप से ग्रस्त रहते हैं। चंद्र के जल तत्व का कारक होने से ऐसे भूखंड पर बने मकान में रहनेवालों को सर्दी–जुकाम, श्वासरोध, मूत्रविकार, मस्तिष्क ज्वर आदि होने की संभावना रहती है। उनकी दाहिनी आंख के नीचे काली छाई हो जाती है और किसी–न–किसी कारण से आंख की ज्योति क्षीण हो जाती है। चंद्र स्त्री या माता का कारक भी है। इसलिए घर की स्त्रियों को पागलपन, निराशा, मानसिक तनाव, गर्भाशय, मासिक धर्म या मूत्राशय संबंधी रोग होते हैं।

चंद्र के धन–धान्य का कारक होने कारण ऐसे मकानों में अनाज सड़ जाता है या उसकी कमी रहती है। वायव्य छेदी भूखंड पेड़–पौधे लगाने से उनका भी क्षय हो जाता है। वायव्य में वायु देवता का वास होता है। इसलिए इस कोण के कटे होने पर इसमें रहनेवालों को वात रोग नहीं होते किंतु कफ प्रकृति में वृद्धि होने के कारण वे क्रोधी तथा आलसी होते हैं।

### आग्नेय छेदी भूखंड

आग्नेय छेदी भूखंड शुक्र का कोण है। इस क्षेत्र के कटे होने पर शुक्र से संबंधि विषय जैसे आमोद–प्रमोद, मौज–मस्ती, शौक, शृंगार, स्त्री सुख, कामप्रवृत्ति आदि में कमी आती है। ऐसे भूखंड पर बने मकान में रहनेवाले पुरुष में पौरुष शक्ति की कमी होती है। पौरुष शक्ति का कारक शुक्र है, इसलिए

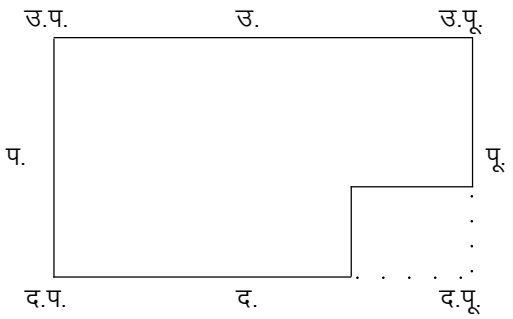


इस क्षेत्र के कटे होने की स्थिति में इस शक्ति का ह्रास होता है। अग्नि शरीर का प्राण है। अतः कटे हुए आग्नेय वाले भूखंड पर बने मकान में रहनेवाले की जठराग्नि तथा कामाग्नि मंद होती है। ऐसे लोगों में प्रायः शारिरिक कमजोरी रहती है। आग्नेय कटे हुए भूखंड स्त्रियों के स्वास्थ्य के लिए अच्छा नही होता। साथ ही समाज में उनकी मान–सम्मान एवं प्रभाव में कमी देखने को मिलती है।

ऐसा भूखंड पिस्तौल या कुल्हाड़ी सा प्रतीत होता है। वास्तु शास्त्र में ऐसा भूखंड अच्छा नहीं माना गया है।

◆◆◆◆◆



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

# 13. वेध
# Obstructions

Future Point

वेध का तार्त्पय है प्रकाश और वायु के मार्ग में रुकावट। मकान में वेध कई तरह के होते हैं। कुछ प्रमुख वेधों का विवरण यहां प्रस्तुत है।

1. **द्वार वेध :**

मुख्य द्वार के सामने किसी तरह की बाधा होती है उसे द्वार वेद्य की संज्ञा दी जाती है।

इस संबंध में वास्तु राजबल्लभ में कहा गया है –

**द्वावारां विद्धमशोभन्स्च तरूणा कोणभ्रमस्तम्भकैः।**
**उच्छायाद्वद्दिवगुणा विहाय पृथ्वी वेधो न भित्यन्तरे**
**प्राकारान्तर राजमार्गपस्तों वेधो न कोणद् वये।**

अर्थात द्वार के सामने वृक्ष, कोण, कोल्हु, खंभा, कुआं, आम रास्ता, मंदिर या कील वेध हो तो द्वार के लिए शुभ नही है। मुख्य द्वार के सामने बिजली या टेलीफोन के पोल, पेड–पौधे या पानी का टंकी होना भी द्वार वेद्य कहलाता है। मुख्य द्वार के सामने कुआॅ, हैंडपम्प या पानी की व्यवस्था हो तो मानसिक असंतुलन बना रहता है तथा घर में धन की कमी बनी रहती है। अतः इस वेद्य के कारण मकान में रहने वाले हमेशा परेशान रहते हैं। मुख्य द्वार के सामने वृक्ष वेद्य का होना बच्चों के विकास में बाधक होता है। विद्युत या टेलीफोन के खंभे रहने से भी घर में निवास करने वाले हमेशा परेशान रहते है तथा बेवजह रोगो का सामना करना पड़ता है तथा घर में लक्ष्मी का अभाव बना रहता है। परंतु मकान की ऊँचाई से दुगुनी ऊँचाई की दुरी पर कोई द्वार वेद्य हो तो उसे वेद्य नही माना जाता है। उदाहरणार्थ यदि किसी मकान की ऊँचाई 25 फीट हो और वेद्य 50 फीट की दुरी पर हो तो वह द्वार वेद्य नही कही जाएगी किन्तु वह 45 फीट की दुरी पर हो तो उसे द्वार वेद्य माना जायेगा। अतः भवन के मुख्य द्वार के सामने किसी भी तरह के रुकावट या व्यवधान नहीं होना चाहिए। द्वार के आंतरिक वेधों से बचने के लिए सभी प्रमुख द्वारों को एक दूसरे के ठीक सामने इस प्रकार नही बनाना चाहिए कि एक दूसरे को काट रहें हों। बडे द्वार के सामने छोटा द्वार तो कभी नही बनाना चाहिए। लेकिन दो सामान आकार के द्वार को एक दूसरे के सामने रखा जा सकता है। तीन द्वार एक दूसरे के सामने बिल्कुल नही रखना चाहिए चाहे वे एक दूसरे के सामान आकार के ही क्यों न हो।

**2. स्वर वेध :**

दरवाजा खोलते या लगाते समय कर्कश आवाज होना स्वर वेध कहलाता है। स्वतः दरवाजे का खुलना या बंद होना दरवाजे को दीवार या भूमि आदि से रगडते खुलना या बंद होना तथा दरवाजे के आर पार किसी भी तरह का छिद्र का होना यह अच्छा फल नही देता है। यह भवन में निवास करने वाले के लिए



www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

नाना प्रकार के विघ्न बाधा एवं संकट उत्पन्न करता है। अतः भवन को इस दोष से मुक्त होना चाहिए।

**3. कोण वेध :**

मकान में कोई कोण छोटा हो तो इसे कोण वेध कहते हैं। ऐसे मकान में रहने वालों को मृत्यु तुल्य कष्ट झेलना पड़ता है जो असमय ही जिन्दगी का नाश कर देता है। अतः मकान के चारों कोण समकोण होने चाहिए। यदि कोई कोण $90^0$ से छोटा हो तो उसमें अलमारी नहीं रखनी चाहिए । यदि मकान के 3, 5 या अधिक कोने हों तो भी कोण वेध होता है। ऐसे मकान में रहनेवालों को विभिन्न बीमारियां होने की संभावना रहती है।

**4. कूपवेध :**

भवन के मुख्य द्वार के सामने सेप्टिक टैंक, पानी की भूमिगत टंकी, हैंडपंप, नल, भूमिगत नाली या नहर का होना कूपवेध कहलता है। इसे वेध के फलस्वरूप धन की कमी बनी रहती है अतः भवन को इस दोष से मुक्त रखना चाहिए।

**5. ब्रह्मवेध :**

भवन के मुख्य द्वार के सामने तेल पेरने की अथवा गेहूं पीसने की मशीन आदि का होना ब्रह्मवेध कहलाता है। इस दोष से युक्त भवन में रहने वालों का जीवन अस्त व्यस्त तथा परिवार में कलह बना रहता है। फेंगसुई के द्वारा इस वेध को ठीक किया जा सकता है।

**6. कीलवेध :**

प्रवेशद्वार के पास गाय, बकरी या अन्य कोई जानवर बांधने की कील या खूंटा होना कीलवेध कहलाता है। इस वेध के कारण गृहस्वामी की प्रगति बाधित होती है।

**7. स्तंभवेध :**

मुख्य दरवाजे के सामने बिजली, डी पी या टेलीफोन के खंभे का होना एक गंभीर दोष है। इसे स्तंभवेध कहते हैं। इस वेध के फलस्वरूप परिवार के सदस्यों में वैमनस्य रहता है।

**8. वास्तुवेध :**

मुख्य द्वार के सामने स्टोर रूम, गैरेज, वाचमैन केबिन आदि का होना वास्तुवेध कहलाता है। इसके फलस्वरूप धन की कमी बनी रहती है।

**9.** मकान की लंबाई या चौड़ाई के बीचोंबीच मुख्य द्वार का होना एक वेध है। इसे इस स्थान से एक तरफ होना चाहिए।

**10.** मुख्य दरवाजे के सामने पानी का नल नहीं होना चाहिए क्योंकि इससे हमेशा पानी बहता रहेगा। नल की यह स्थिति संतान के लिए नुकसानदायक होती है तथा धन का अपव्यय करती है।

**11. चित्र वेध :**

मकान में बाघ, सिंह, कुत्ते, तेंदुए जैसे क्रूर या कौए, उल्लू, गिद्ध जैसे हिंसक पक्षियों एवं भूत–प्रेत, युद्ध आदि के चित्रों का होना चित्रवेध कहलाता है। ऐसे जानवरों के सींग आदि भी शो पीस के तौर पर नहीं



Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

रखने चाहिए। मकान में कबूतर का वास अशुभ होता है।

**12. शिल्पवेध :**

चित्रवेध में वर्णित क्रूर पशु–पक्षियों के शिल्प, मॉडल, मूर्तियों आदि का होना शिल्पवेध माना जाता है। राजतंत्र के समय में राजे महाराजे बाघ, सिंह आदि के शिकार कर उनकी खल में मसाले भरकर उन्हें अपने ड्राइंगरूम में सजाकर रखते थे। आज भी कई घरों में ये पाए जाते हैं। जानवरों की खालों का इस तरह रखा जाना शिल्पवेध है। इस वेध से युक्त मकान में रहनेवालों की आयु घटती है।

**13. समवेध :**

एक मंजिल पर दूसरी मंजिल बनानी हो और दोनों की ऊंचाई समान हो तो इसे समवेध कहते हैं। समवेध के कारण परिवार का विनाश हो जाता है इसलिए निचली मंजिल से ऊपर की मंजिल की ऊंचाई 1/12 हिस्से जितनी कम रखनी चाहिए।

**14 अंतरर्वेध :**

दो मकानों के बीच एक प्रवेश द्वार का होना अंतर्वेध कहलाता है। ऐसे मकान में रहने वाले क्रोधी होते हैं।

**15. छायावेध :**

मकान पर पेड़, मंदिर, पहाड़, ध्वजा आदि छाया नहीं पड़नी चाहिए। इसे छायावेध कहते हैं। यह मुख्यतः पांच प्रकार का होता है–

**(a)** **मंदिर छाया वेध**– भवन पर पूर्वाहन 10 बजे से अपराहन 3 बजे तक पड़ने वाली किसी मंदिर की छाया से होने वाले वेध को छायावेध कहते हैं। इसके फलस्वरुप परिवार में अशांति रहती है, व्यवसाय में नुकसान और बच्चों के विवाह एवं संतान में विलंव होता है।

**(b)** **ध्वज छाया वेधः**– मकान पर पड़नेवाली ध्वज छाया को छायावेध कहते हैं।शास्त्रों के अनुसार यदि मंदिर से 100 फीट के अंदर मकान का निर्माण किया जाए तो उसमें रहने वाले सदस्य ध्वज वेध से पीडित हो सकते है इसके फलस्वरूप हृदय रोग, मंद बुद्वि, उन्मनाद, लकवा आदि रोगों के शिकार हो जाते है। साथ ही इस वेध से युक्त घर में रहने वालों का स्वास्थ्य खराब रहता है ।

**(c)** **पर्वत छाया वेधः**– मकान के पूर्व स्थिति किसी पर्वत की छाया मकान पर पड़े तो यह पर्वत छाया वेध कहलाता है। यह प्रगति में रुकावट और ख्याति में कमी का कारक होता है। अतः ऐसे स्थान पर मकान नहीं बनाना चाहिए।

**(d)** **वृक्ष छाया वेधः**– मकान पर किसी वृक्ष की छाया 10 बजे से संध्या तीन बजे तक पड़े तो उसे वृक्ष छाया वेध कहते हैं। यह विकास को रोकता है। अतः किसी बड़े वृक्ष के समीप मकान नहीं बनाना चाहिए।

**(e)** **भवन छाया वेधः**– अगर मकान की छाया कुएं या बोरिंग पर पड़े तो इसे भवन छाया वेध कहते हैं। यह धन हानि का कारक होता है।



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

16. मकान के सामने बेर, खजूर, अनार, बबूल या किसी अन्य कटीले वृक्ष होना अशुभ होता है। इसके फलस्वरूप मकान मालिक का जीवन बरबाद हो जाता है।

(a) घर के सामने पलाश का वृक्ष हो तो गृहस्वामी हमेशा पराजित होता रहता है।

(b) प्रवेश द्वार के सामने इमली का पेड़ हो तो गृहस्वामी की मृत्यु आकस्मिक होती है।

(c) गूलर का पेड़ मकान के सामने हो तो उसमें रहने वाले नेत्र से पीड़ित रहते हैं।

(d) घर पर किसी पेड़ की छाया पड़ती हो तो उस पर निद्रा देवी का राज रहता है। ऐसे घर में रहने वाले तमोगुणी और अंध विश्वासी होते हैं। वे अस्थि पीड़ा, पित्तजन्य, कष्ट, तपेदिक सायटिका एवं संधिवात जैसे भयानक रोगों से पीड़ित रहते हैं। ऐसे मकान में रहनेवालों की बीमारी का निदान डॉक्टर भी नहीं कर पाते। अतः मकान पर किसी भी तरह की छाया नहीं पड़नी चाहिए।

(e) आंगन में दूध वाले वृक्ष धन नाशक होते हैं, इसलिए बरगद, आक, मदार आदि के पेड़ कभी नहीं लगाने चाहिए।

(f) केले, बादाम, खजूर, आम, अंगूर, बेर आदि के पेड़ भी आंगन में न लगाएं।

(g) देवताओं का वृक्ष भी आंगन में नहीं लगाना चाहिए। केला गंधर्व का पेड़ है तो लाल कनेर सूर्यदेव का। इसलिए ऐसे वृक्ष आंगन में नहीं होने चाहिए। पीपल एवं चंदन का पेड़ आंगन में लगा सकते हैं परंतु प्रवेश द्वार के सामने नहीं। तुलसी का पौधा अवश्य लगाना चाहिए। घर के पश्चिम में पीपल पूर्व में बरगद, दक्षिण में गूलर और उत्तर में कैथ का पेड़ लगाने का संकेत वास्तुशास्त्र में मिलता है। आंगन में धनिया लगाने से गृहस्वामी को स्थान परिवर्तन करना पड़ता है। यदि वह नौकरी पेशा हो, तो उसका तबादला हो जाता है।

**17. स्थिति वेध :**

कई बार ऐसा देखने को मिलता है कि किसी भी गली या सड़क आगे जाकर बंद हो जाती है और उस स्थान पर कई भूखंड होते है। अतः जो इस प्रकार के भूखंड होते है उनमें मार्ग के अंत वाला भूखंड बंद या कैदी भूखंड कहलाता है। यह भूखंड रिहायशी अर्थात अवासीय दृष्टिकोण से शुभ एवं उपयोगी नहीं होता अतः इस तरह के भूखंड को त्याग देना चाहिए।

**18. स्थान वेध :**

किसी मकान के सामने लोहार की भट्टी धोबी का घर आटा पिसने की चक्की या निःसंतान का मकान हो तो स्थान वेध कहलाता है। साथ ही घर के पास शमशान, कब्रगाह हो तो उसे स्थान वेध कहा जाता है। इस तरह के स्थान पर निवास स्थान नही बनानी चाहिए।

**19. दृष्टि वेध :**

मकान में प्रवेश करते ही मकान सुना–सुना या डर जैसी स्थिति महसूस हो तो ऐसे मकानों का दृष्टि वेधयुक्त मकान कहा जाता है। ऐसे भवन में रहने वाले लोग की आर्थिक एवं मानसिक स्थिति अच्छी नहीं



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

रहती है।

**मंदिर के पास मकान का फल :**

किसी मंदिर के समीपस्थ मकान के लोग बार–बार मंदिर में स्थित देवताओं के दोष में आते हैं जिसे देवालय वेध कहा जाता है। शिवपुराण के अनुसार मंदिर के आसपास 100 फूट के विस्तार में मकान नहीं होना चाहिए यदि ऐसा हो तो उसमें रहनेवालों को ध्वजदोष के कारण पीड़ा होती है। वास्तव में देखा जाए तो मकान मंदिर के समीप होने पर उस मकान के लोग बार–बार मंदिर में स्थित देवताओं के दोष में आते है। शास्त्रों में वर्णन है कि मंदिर के परिसर के 100 फीट तक मल–मूत्र का त्याग नहीं करना चाहिए ऐसा करने पर देव–दोष से पीडित होते है। किसी शिवमंदिर के पास रहना अशुभ होता है। रुद्र के साथ उनके गण, भूत–प्रेत भी मंदिर में वास करते हैं। वे मंदिर के पास रहनेवालों को कई प्रकार की पीड़ाएं पहुंचाते हैं। रुद्रदेव के उग्र होने से शिवालय के पास रहनेवालों का स्वभाव भी उग्र होता है। परिवार में भाई–भाई और पिता–पुत्र में कलह होता रहता है। अगर मंदिर, मठ, घर के भगवान उग्र स्वरूप के हो तो परिवार को अधिक कष्ट भोगने पड़ते हैं। हनुमान जी मंदिर के पास रहने वालों को शोक दुखः एवं दरिदता का शिकार होना पड़ता है। कालिका, चामुंडा जैसी देवियों तथा रुद्र जैसे भगवान का स्वरूप उग्र होता है इसलिए घर के भीतर मंदिर नहीं बनवाएं। लक्ष्मी और पार्वती जैसी देवियां और विष्णु, बालाजी जैसे भगवान सात्विक एवं शांत होते हैं। विष्णु, कृष्ण, राम–सीता जैसे शांत देवी–देवता के मंदिर अनुकूल होते हैं। शयन कक्ष में देवी देवताओं के फोटो या प्रतिमा नही रखनी चाहिए। अतः पूजा कक्ष को शयन कक्ष से अलग रखना चाहिए। घर में पूजा स्थल पर देवी देवता की प्राण प्रतिष्ठा कभी नहीं करनी चाहिए। इस स्थान का उपयोग मात्र पूजा–पाठ तथा चित्रादि रखने के लिए ही करना चाहिए।

◆◆◆◆◆



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

# 14. गृह वास्तु विचार

निर्माण से पूर्व जल की समुचित व्यवस्था कर लेनी चाहिए क्योंकि भूमि चयन के बाद पहली आवश्यकता जल है। निर्माण कार्य कि गति सुचारु रह सके इसके लिए उत्तर–पूर्व या उत्तर भाग में जल की व्यवस्था करनी चाहिए। भवन के उतर–पूर्व में गहरा तलाब, गढ्ढा, कुँआ या बहता दरिया हो तो उनके घर में समृद्धि एवं धन–दौलत की वृद्धि होती है तथा उस स्थान पर रहने वाले व्यक्ति प्रसिद्ध, सम्मानित, प्रतिष्ठित और सभी के प्यारे बन जाते हैं। ऐसे व्यक्तियों का सम्मान राजा, मंत्री एवं रईसों द्वारा होता है। घर में अतिथियों एवं मिलने वाले का अंबार लगा रहता है। घरों में बडे–बड़े योगी, तपस्वी साधारण वेश बदलकर अतिथि सत्कार प्राप्त करते हैं। इस दिशा में नल, ट्यूबवैल लगवाना, अंडरग्राउंड टैंक बनवाना बड़ी दौलत को अपने जीवन में भोगने के लिए आकर्षित करता है। गरीबी, कर्ज, महापातकी, बीमारी, धन संबंधी अनेक रूकावटें खत्म होती है और बिना किसी विलंब का समस्याओं का समाधान होता है। साथ ही प्रत्येक प्रकार के कर्ज, मुकदमे आदि की समस्या का तुरंत समाधान हो जाता है। थोडी सी मेहनत करने पर ज्यादा सफलता मिलती है। यदि घर का उतर–पूर्व का स्थल नीचा, खुला पानी भरा हो तो बड़े–बड़े सुख उस मकान में रहने वाले भोगते हैं। भवन के उत्तर और पूर्व दिशा में नल या टैंक हो तो लक्ष्मी प्रसन्न होकर सभी कुछ दे देती है। अर्थात् घर में मान–सम्मान, प्रतिष्ठा एवं सुखों की प्राप्ति होती है।

(1) ट्यूबवेल के लिए कौन सा स्थान उपुयक्त हो सकता है, यहां प्रस्तुत चित्र में दिखाया गया है। भूमिगत टंकी या बोरवेल का उत्तम स्थान मूल पूर्व, मूल उत्तर या ईशान का 75% हिस्सा है।

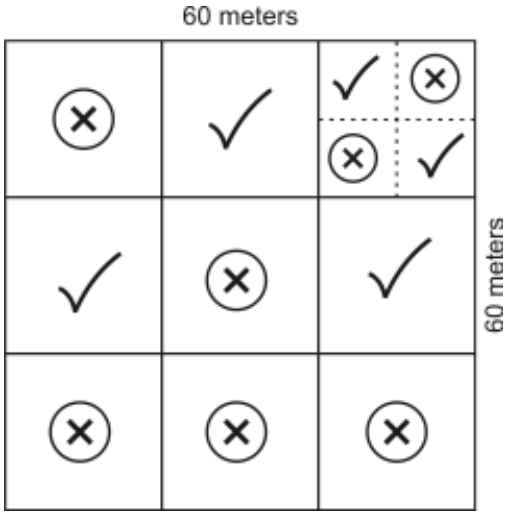




Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

परिवार में भाई–भाई और पिता–पुत्र में कलह होता रहता है। अगर मंदिर, मठ, घर के भगवान उग्र स्वरूप के हो तो परिवार को अधिक कष्ट भोगने पड़ते हैं। हनुमान जी मंदिर के पास रहने वालों को शोक दुःख एवं दरिद्रता का शिकार होना पड़ता है। कालिका, चामुंडा जैसी देवियों तथा रुद्र जैसे भगवान का स्वरूप उग्र होता है इसलिए घर के भीतर मंदिर नहीं बनवाएं। लक्ष्मी और पार्वती जैसी देवियां और विष्णु, बालाजी जैसे भगवान सात्विक एवं शांत होते हैं। विष्णु, कृष्ण, राम–सीता जैसे शांत देवी–देवता के मंदिर अनुकूल होते हैं। शयन कक्ष में देवी देवताओं के फोटो या प्रतिमा नहीं रखनी चाहिए। अतः पूजा कक्ष को शयन कक्ष से अलग रखना चाहिए। घर में पूजा स्थल पर देवी देवता की प्राण प्रतिष्ठा

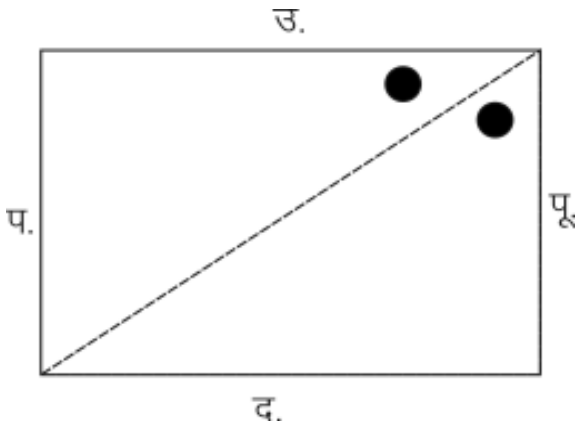


कभी नहीं करनी चाहिए। इस स्थान का उपयोग मात्र पूजा–पाठ तथा चित्रादि रखने के लिए ही करना चाहिए।

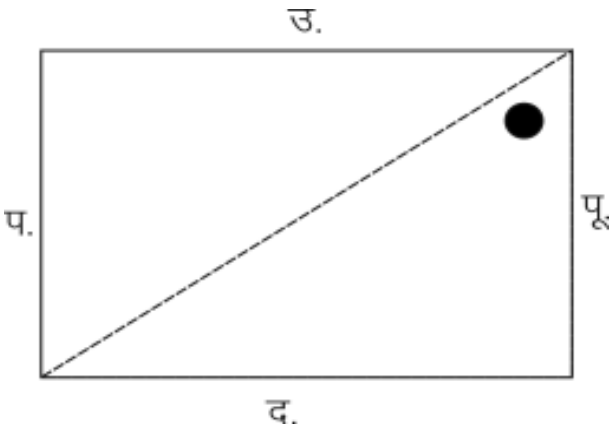




Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

साथ–साथ सुख–समृद्धि एवं भाग्य में भी वृद्धि देता है। वास करने वाले व्यक्ति सम्मानित, प्रतिष्ठित और सर्वप्रिय होते हैं। व्यक्ति का सम्मान राजा, मंत्री एवं रईसों द्वारा खूब होता है। साथ ही ऐसे व्यक्ति की ईश्वर की कृपा भी प्राप्त होती है।

(4) हैंडपंप या कुआं ईशान कोण के उत्तर तरफ हो तो धन वृद्धि कारक होता है। साथ ही इसमें रहने वाले की समाज में प्रतिष्ठा भी प्राप्ति होती है। इससे घर में सुख–शांति की वृद्धि होती है।

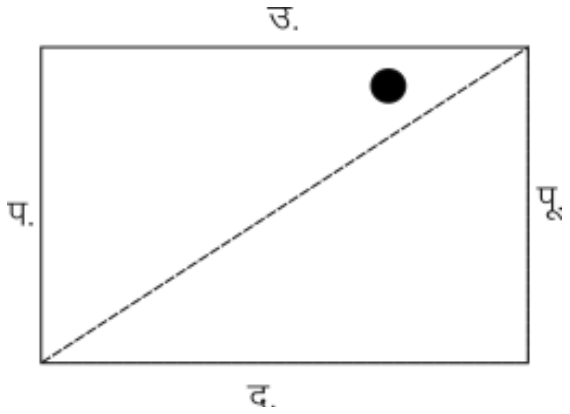


(5) कुआं, हैंडपंप, पानी की टंकी, जल संग्रह घर के पश्चिम भाग में भी उत्तम रहता है। घर में सुख–संपत्ति में वृद्धि होती है।

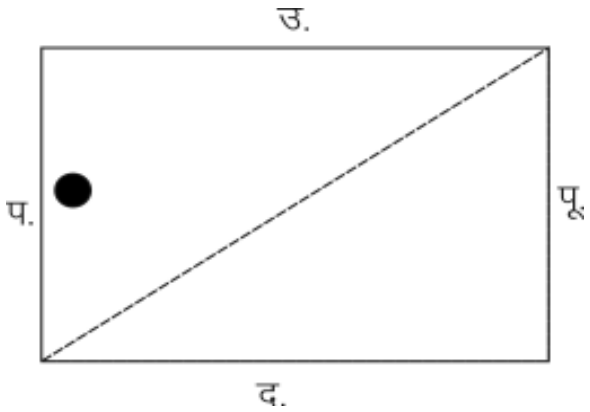


(6) कुआं, हैंडपंप या पानी की टंकी का दक्षिण दिशा में होना अशुभ होता है। इससे भवन में निवास करने वाले स्त्रियों को विभिन्न प्रकार शारीरिक कष्टों का सामना करना पड़ता है। गृहस्वामी की पत्नी की मृत्यु असमय होती है। साथ ही दुर्घटना, आत्महत्या आदि की संभावना बनी रहती है।



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

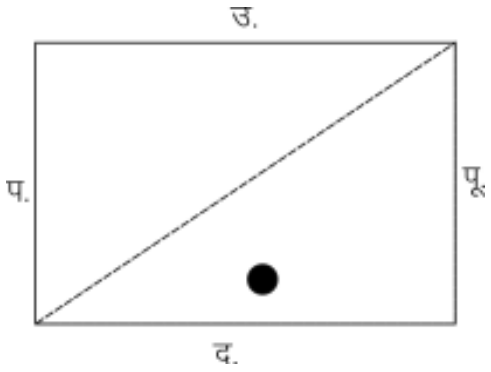

(7) कुआं, हैंडपंप या पानी की टंकी घर में यदि वायव्य दिशा में हो तो गृहस्वामी को शत्रुपीड़ा होती है एवं चोरी का भय बना रहता है। यदि ठीक वायव्य कोण में हो तो गृहस्वामी की स्त्री अकाल मृत्यु की शिकार होती है। इसके अतिरिक्त घर में कलह रहता है।

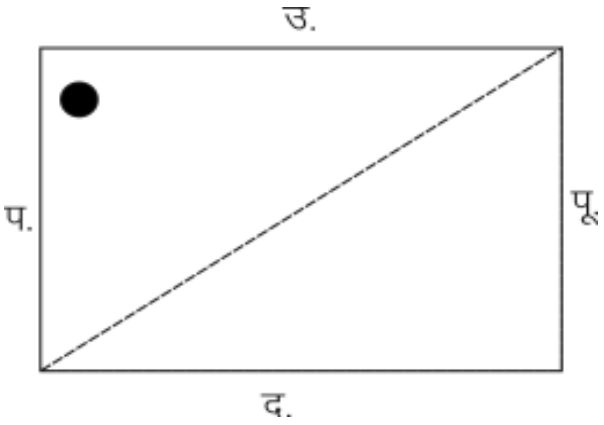

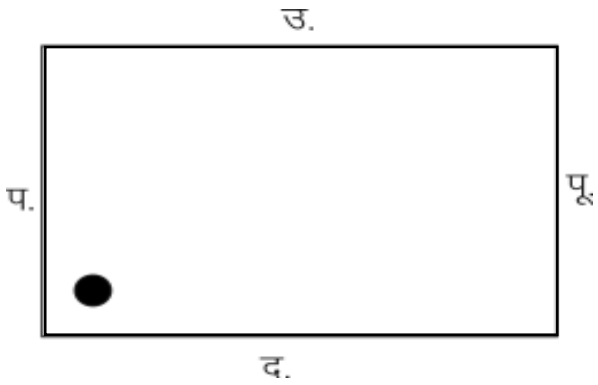




(8) पानी का स्थान नैर्ऋत्य दिशा में हो तो गृहस्वामी एवं उसके परिजनों की आसाध्य बीमारियों के






Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

कारण आकस्मिक मृत्यु होती है। झगड़े होते रहते हैं और हर कार्य में असफलता मिलती है। इसके अतिरिक्त धन में कमी के साथ–साथ आत्महत्या, दुर्घटना, कलह आदि के कारण परिवारजनों में बिखराव की स्थिति बनती हैं।

(9) कुआं, हैंडपंप या पानी की टंकी अगर आग्नेय कोण में हो तो संतान को खतरा, धन एवं प्रतिष्ठा

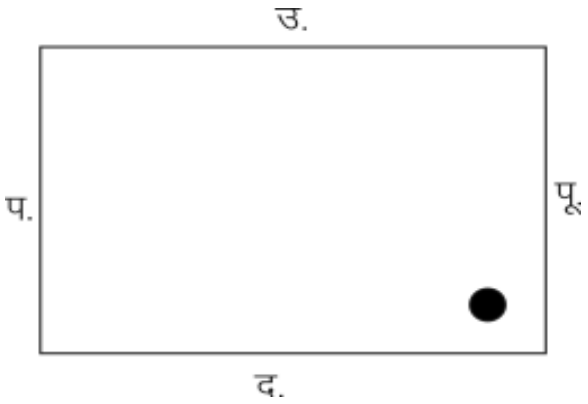


में नुकसान आदि की संभावना रहती है। पानी और आग दो विपरीत तत्व हैं जो एक साथ होकर जीवन को पूर्णतः कलह एवं परेशानियों से युक्त बना देते हैं। इस क्षेत्र में जल स्रोत का होना कर्ज में वृद्धि का कारक होता है। स्त्रियां, पुरुषों की अपेक्षा ज्यादा कष्ट में रहती हैं।

(10) घर के मध्य भाग में नीचा या पानी की व्यवस्था नहीं रखनी चाहिए। अन्यथा धन, काम–काज, कारोबार सब खत्म हो जाता है। गरीबी और कर्ज साथ देने लगते हैं। धोखा, छल–कपट, खून–खराबा, मुकदमा आदि का सामना करना पड़ता है। भगवान रूठ जाते हैं तथा भाग्य सो जाता है। परिवार का नाश होता है। कोई भी व्यक्ति उस स्थान पर दीर्घकाल तक नहीं रह सकता, जीवन अस्त–व्यस्त बना रहता है। उक्त सारे नियम न केवल आवासीय मकान के लिए बल्कि व्यवसाय एवं रोजगार वाले मकान, अस्पताल, मंदिर आदि पर भी लागू होते हैं।

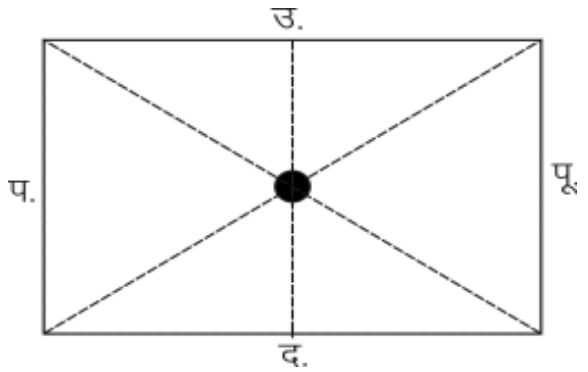


◆◆◆◆◆



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

# 15. छत पर पानी की टंकी
# Over Head Tank

Future Point

प्राचीन काल में प्रायः एक मंजिला मकान होते थे। उस समय जल स्थान जमीन पर रखा जाता था। किंतु आज बहुमंजलि इमारतों का युग है। ऐसे में सामान्यतया ओवरहेड जल स्थान की स्थापना की जाती है। ओवरहेड टैंक किस दिशा में और कहां होना चाहिए यह निम्नांकित चित्र में दर्शाया गया है।

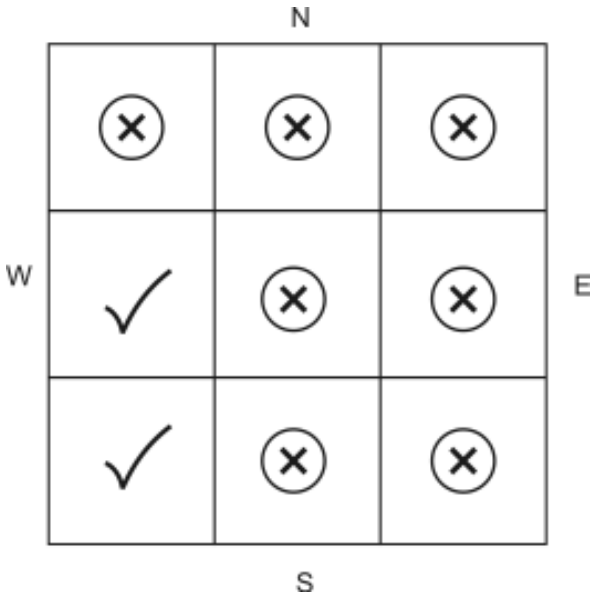


1. ओवरहेड टैंक हमेशा पश्चिम, पश्चिमी नैऋत्य, दक्षिणी नैऋत्य या पश्चिमी वायव्य की ओर रखना चाहिए। इन स्थानों पर ओवरहेड पानी का टैंक धन की स्थिरता एवं आय के नये स्रोत देने में मदद करता है। इसके आलावा कहीं पर भी यह अच्छा फल नहीं देता है।

2. छत के ऊपर पानी के टैंक मकान के बीचो–बीच अर्थात् ब्रह्म स्थान पर नहीं रखना चाहिए, अन्यथा जीवन असहाय सा महसूस होने लगता है। इसे ईशान क्षेत्र में भूल कर भी नहीं रखना चाहिए अन्यथा आर्थिक हानि एवं दुर्घटना का भय बना रहेगा। यदि किसी कारण इसी क्षेत्र में टैंक बनाना हो तो वायव्य, आग्नेय एवं नैर्ऋत्य क्षेत्र में निर्माण कार्य अपेक्षाकृत ऊंचा करना चाहिए इससे ईशान क्षेत्र के दुष्परिणामों से काफी हद तक बचा जा सकता है। उत्तर में पानी का टैंक कर्ज में वृद्धि करता है साथ ही आर्थिक रूप से फटेहाल एवं तंगहाल बना देता है।



www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

3. संभव हो तो पानी का टैंक प्लास्टिक का नहीं रखना चाहिए। अगर किसी कारणवश प्लास्टिक का टैंक रखना ही पड़े तो काले या नीले रंग का रखना चाहिए क्योंकि यह सूर्य की किरणों को अवशोषित कर पानी को दूषित होने से बचाता है। उजली टंकी सूर्य की किरणों को परावर्तित कर देती है जिसके फलस्वरूप पानी के दूषित होने की संभावना बनी रहती है। संभव हो तो टॉयलेट के लिए अलग पानी का टैंक बनवाना चाहिए।

4. पश्चिमी नैर्ऋत्य, पश्चिम, पश्चिमी वायव्य एवं दक्षिणी नैर्ऋत्य को छोड़कर किसी अन्य कोण में ओवरहेड टैंक का होना अशुभ होता है। इसके सामाधान के लिए ओवरहेड टैंक की ऊंचाई से थोड़ी ज्यादा ऊंचाई का एक कमरा नैर्ऋत्य के क्षेत्र में बनाना चाहिए।

5. छत पर पानी की टंकी दो तीन फीट ऊंचा चबुतरा बनाकर रखनी चाहिए। इसे कभी भी सीधे तौर पर छत की सतह पर न रखें अन्यथा घर में रहने वाले लोगों के मानसिक तनाव में वृद्धि होती है।

6. बहुमंजिले ईमारतों में ओवरहेड टैंक के लिए जहां पानी जमीन से ऊँचा भेजा जाता है वहां पर इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि पानी की पाईप लाईन जब भी घुमे वह दाहिने घुमते हुए छत पर जाए। यह काफी शुभफलप्रद होता है।

◆ ◆ ◆ ◆ ◆



Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

# 16. भवन का मुख्य द्वार

चारदीवारी के पश्चात् घर में प्रवेश करने वाले प्रथम प्रवेश द्वार को मुख्य द्वार, प्रधान द्वार या सिंह द्वार कहते हैं। यह घर के अन्य द्वारों के अपेक्षा ज्यादा बड़ा, मजबूत एवं आकर्षक होता है। मुख्य प्रवेश द्वार का दोषरहित होना पुरे घर के समृद्धि एवं विकास के लिए आवश्यक है। भवन में रहने वालों की खुशहाली में उसके द्वारों की स्थिति महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यदि द्वार गलत दिशा में हो या किसी वेध से प्रभावित हो तो घर के स्वामी तथा अन्य सदस्यों को विभिन्न प्रकार के कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है साथ ही साथ गंभीर बीमारियां एवं दुर्घटनाएं होती रहती है। इसके विपरीत द्वार का सही दिशा में होना गृहस्वामी को सुख–समृद्धि एवं सफलता की ओर ले जाती है। वास्तु शास्त्र में प्रत्येक भूखंड एवं भवन में कुछ स्थान शुभ होने के कारण ग्राह्य एवं कुछ स्थान अशुभ होने के कारण त्याज्य माने जाते हैं। मुख्य द्वार या भवन के अन्य द्वार को लाभदायक स्थान पर बनाना चाहिए जिसे लाभदायक ग्रीड या उच्च श्रेणी का द्वार कहा जाता है। आधुनिक विद्वानों के मतानुसार पूरे भूखंड को नौ बराबर भागों में बांटकर लाभदायक स्थान पर शुभफलदायक द्वार बनाना चाहिए।

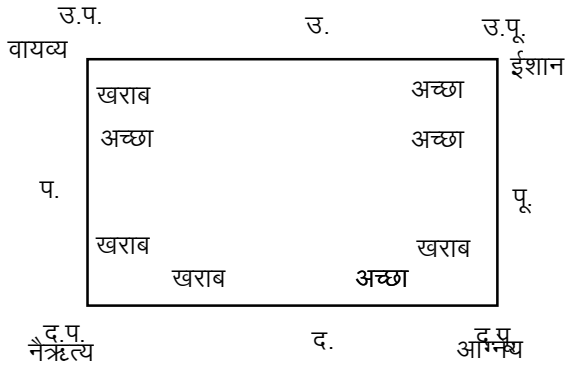


**शुभफलदायक द्वार या उच्च कोटि का द्वार (Auspicious Grid Door) :**

प्रत्येक भूखंड के चारों ओर चार दिशाएं होती हैं– पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण। भूखंड के पूर्वी विस्तार के मध्य बिंदु से ईशान कोण तक के भाग उच्च कोटि का होता है। किसी भी भवन में **पूर्व** की द्वार यश् प्रतिष्ठा, मान–सम्मान एवं स्वास्थ्य में वृद्धि देने वाली होती है। इसे विजय द्वार भी कहते हैं। **उत्तरी ईशान** अर्थात ईशान क्षेत्र के उत्तर दिशा की मुख्य द्वार देव कृपा और सौभाग्य देने वाली होती है। अध्यात्मिक चेतना का विकास, ज्ञान और शिक्षा की प्राप्ति होती है। इस तरह के द्वार के फलस्वरूप दुर्भाग्यवश आपदाएं, संकट या बिमारियां भवन में निवास करने वालों पर आने वाली होगी या आती है तो वह स्वतः दूर हो जाती है। उत्तरी ईशान में मुख्य द्वार बनाने से भारी समान स्वतः ही दक्षिण एवं पश्चिम दिशा में रखे जाएंगे तथा उत्तर पूर्व का भाग दक्षिण एवं पश्चिम से हल्का हो जाएगा जो कि वास्तु



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

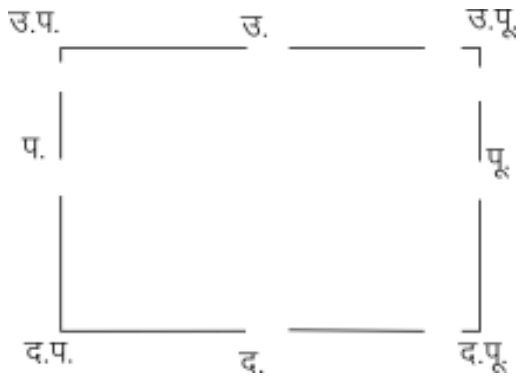


शास्त्र का एक आधारभूत सिद्धांत है। **पूर्वी ईशान** में मुख्य द्वार भी उच्च कोटि का माना जाता है। यह द्वार संतान सुख में वृद्धि करता है और कृति को चार चांद लगाता है। ऐसे द्वार से युक्त भवन में निवास करने वाले अत्यंत मेघावी, ज्ञानवान एवं विद्वान होते हैं। यह भवन मालिक के साथ ही साथ इसमें निवास करने वाले प्रत्येक प्राणी को लाभान्वित करती है। पूर्वी ईशान में मुख्य द्वार होने से भारी समान दक्षिण में रखे जाते हैं तथा आने जाने का रास्ता उत्तर की तरफ होता है साथ ही ईशान का पूर्वी भाग बिल्कुल खुला रहता है जिसे वास्तु के दृष्टिकोण से शुभ फलदायक माना जाता है। **दक्षिणी–आग्नेय** में मुख्य द्वार भी उच्च कोटि का होता है। यह द्वार घर के स्त्रियों के लिए शुभ कहा जाता है। **दक्षिण** का द्वार गृहस्थों के लिए लाभदायक होता है। **पश्चिमी–वायव्य** में बना मुख्य द्वार शुभ फलदायक एवं कल्याणकारी होता है। **उत्तर** में बना मुख्य द्वार भवन में निवास करने वाले के लिए प्रगतिकारक होता है। **पश्चिम** का मुख्य द्वार क्षेमदायक होता है।

**अशुभ फलदायक द्वार (Inauspicious Grid Door):–**

**पूर्वी–आग्नेय** का मुख्य द्वार निम्न कोटि का होता है। इस दिशा में द्वार का होना अशुभ फलदायक माना गया है। भवन में बीमारी, चोरी तथा अग्निकांड होने की संभावना बनी रहती है। **दक्षिणी–नैऋत्य** में मुख्य द्वार भी निम्न कोटि का होता है। इस क्षेत्र में बने मुख्य द्वार में रहनेवालों को आर्थिक हानि होती है व घर की स्त्रियों के स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं होता है जिसके कारण उनकी आयु में कमी बनी

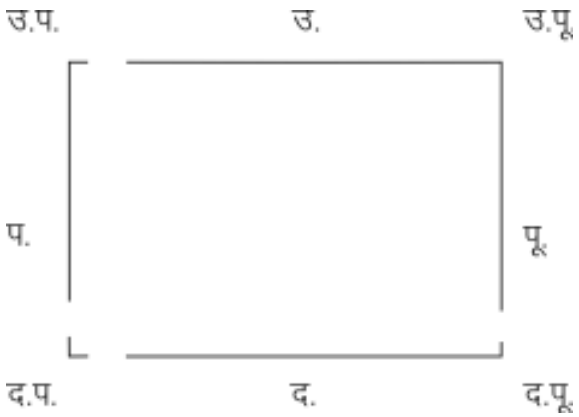




Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

रहती है। **पश्चिमी–नैऋत्य** में बना मुख्य द्वार भी निम्न कोटि का होता है। इस दिशा में द्वार का होना पुरूषों के स्वास्थ्य एवं आयु में कमी लाता है। अतः भूखंड के इस भाग में द्वार का होना वर्जित माना जाता है। **उत्तरी–वायव्य** का मुख्य द्वार भी निम्न कोटि का है। इस तरह के भवन में निवास करने वाले की मनः स्थिति सदैव अस्थिर बनी रहती है, साथ ही रहने वाले लोग चंचल एवं अधैर्यशाली बने रहते हैं।

**वास्तु चक्र के अनुसार मुख्य द्वार की स्थिति :–**

भूखंड को 9"x9" बराबर भागों में बांटकर 81 पदों का परम शायिका मंडल बनाकर मुख्य द्वार की शुभ स्थिति की जानकारी प्राप्त करते हैं। वास्तु चक्र में मुख्य द्वार की शुभ स्थितियां निम्न हैं–

**विभिन्न पदों में मुख्य द्वार की स्थापना का फलः–**

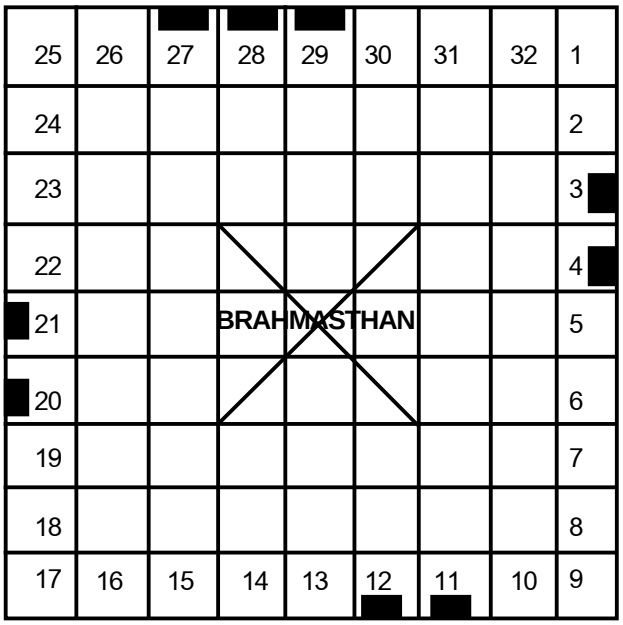


1. अग्नि विस्फोट एवं दुर्घटना
2. परिवार में कन्या संतति की अधिकता
3. समृद्धि और धन लाभ
4. राजपक्ष से लाभ एवं विजय की प्राप्ति
5. मानसिक अशांति एवं वैमनस्यता
6. स्त्रियों के लिए नुकसान
7. शत्रु भय, निर्दयता
8. चोरों से नुकसान
9. अग्नि से नुकसान एवं दुर्घटना, वंश वृद्धि में बाधक



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

10. परिवार का कष्ट एवं दुर्भाग्य
11. शुभ फलदायक
12. धन एवं पुत्र लाभ
13. मृत्यु, ऋण एवं कर्ज की प्राप्ति
14. यश एवं प्रतिष्ठा का नुकसान
15. आर्थिक क्षति
16. रूकावटें एवं पुत्र कष्ट
17. मुकदमा, कानूनी अड़चने एवं आय से ज्यादा खर्च
18. कान का रोग
19. आर्थिक क्षति एवं निर्धनता
20. सुख समृद्वि की प्राप्ति
21. धन, आरोग्य एवं शांति
22. राजपक्ष एवं पिता से नुकसान
23. गरीबी एवं धन–हानि
24. रोग एवं दुर्घटना
25. रोग दुर्घटना एवं मृत्यु
26. मुत्यु, शत्रु वृद्धि एवं मुकदमेबाजी
27. समृद्धि, खुशियां एवं आराम
28. धन की वृद्धि एवं प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति
29. स्वास्थ्य के साथ सुख समृद्धि की प्राप्ति
30. पारिवारिक सदस्यों के साथ वैमनस्यता
31. स्त्री कष्ट
32. असफलता, निर्धनता एवं प्रत्येक कार्यों में बाधा

किसी भी भवन का मुख्य द्वार मकान की लंबाई या चौड़ाई के ठीक बीचो–बीच नहीं होना चाहिए। भूखंड के मध्य में बना मुख्य द्वार आवास तथा व्यापारिक प्रतिष्ठान के लिए अशुभ होता है।

**मध्ये द्वार न कर्तव्य मनुजानां मध्ये द्वारे कृते तय कुलनाश प्रजायते।**

अर्थात् भवन के मध्य में बनी द्वार वंश के नाश का सूचक होता है। केवल धर्म स्थलों का मुख्य द्वार भूखंड के मध्य में रखा जा सकता है। मुख्य द्वार को कभी भी भूखंड के बढ़े या कटे हुए भाग में स्थापित नहीं करनी चाहिए। भवन का मुख्य प्रवेश द्वार घर के अन्य द्वारों की अपेक्षा बड़ा होना चाहिए। मुख्य द्वार को साफ–सुथरा एवं सुंदर रखना चाहिए। द्वार को दो पल्ले का रखना चाहिए। यदि सभी द्वार को ऐसा रखना संभव न हो तो कम से कम मुख्य द्वार, पूजा कक्ष और गृहस्वामी के शयनकक्ष के द्वार को अवश्य ही दो पल्ले वाला रखना चाहिए। द्वार की किवाड़ हमेशा अंदर की ओर खुलनी चाहिए। कम से कम मुख्य प्रवेश द्वार के दरवाजे की किवाड़ बाहर खुलने वाली न बनाई जाए अन्यथा मुसीबतों का सिलसिला हमेशा जारी रहेगा। साथ ही घर का पूरा वातावरण अशांत हो जाएगा तथा बच्चे झगड़ालू एवं जिद्दी



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

बन जाएंगे। मुख्य प्रवेश द्वार पर मंगलकारी चिन्ह, स्वास्तिक, घंटियॉ, शंख, कौडियॉ, लक्ष्मी ,सरस्वती और गणपति के चित्र आदि लगाने चाहिए। दरवाजे को पुरी तरह दीवार से सटाकर नहीं बनाना चाहिए। दरवाजे या दीवार के बीच कम से कम चार इंच या फुट भर की गद्दी बनाकर चौखट पर लगाना चाहिए। द्वार मनुष्य के औसत लंबाई से एक फुट ऊँचा होना चाहिए। साधारण नियम यह है कि चौड़ाई से दुगुनी ऊँचाई रखनी चाहिए। वास्तव में यह एक वैज्ञानिक माप विधान है। परंतु यहां एक सावधानी बरतनी चाहिए कि चौड़ाई चार फुट या कम से कम साढ़े तीन फुट अवश्य हो। दरवाजे खुलने या बंद होने वक्त आवाज नही होना चाहिए अन्यथा बच्चो के बीच एकता में कमी आती है। दरवाजे में हमेशा नई लकडी का प्रयोग करना चाहिए। पुराने मकानों से निकले दरवाजे, लकडी, मंदिर–मस्जिद की लकडी का प्रयोग वास्तु के लिए कतई नही करनी चाहिए। दरवाजा बंद करते समय आवाज निकलती हो तो उससे भय पैदा होता है। अतः दरवाजा खोलते या बंद करते समय आवाज नही होना चाहिए। दरवाजे की लकडी मे दरार न हों अन्यथा दरिद्र होने की संभावना बनती है। सामान आकार के द्वार को एक दूसरे के सामने रखा जा सकता है। तीन द्वार एक दूसरे के सामने बिल्कुल नही रखना चाहिए चाहे वे एक दूसरे के सामान आकार के ही क्यों न हो। जिस प्रकार अनावश्यक द्वार मकान में रहने वालों को हानि पहुँचाता है ठीक उसी तरह आवश्यकता के अनुसार द्वारों का न होना भी रहनेवालों को कष्ट पहुँचाता है। भवन में सभी दरवाजों का कार्य एक समान होना चाहिए। विभिन्न नापों के दरवाजों का होना अच्छा नही होता है। भवन में द्वार का आवश्यकता से अधिक बडा होना गृहस्वामी को राज्यपक्ष से दंडित होने का कारण बनता है तथा बच्चे क्रूर और जिद्दी हो जाते है। इसी प्रकार अत्यंत छोटा द्वार होने से चोरो और लुटेरों का भय बना रहता है तथा परिवार के सदस्यों में तनाव उत्पन्न होता है साथ ही घर में असंतुलन की स्थिति पैदा हो जाती है। भवन में द्वारों की संख्या हमेशा सम रखनी चाहिए परंतु दरवाजो की संख्या 10,20,30 अच्छे नही मानी जाती है क्योंकि शून्य को वास्तु में अच्छा नही मानते। अतः भवन में सदा उचित एवं अच्छे माप का द्वार रखना लाभप्रद होता है। द्वार हमेशा भवन के लाभदायक ग्रीड में बनानी चाहिए जिसे उच्च श्रेणी का द्वार भी कहते है। जिसके फलस्वरूप भवन में निवास करने वाले को सुख–शांति एवं समृद्धि की प्राप्ति होती है।

**चारदीवारी आवश्यक है**

आवासीय मकान या औद्योगिक प्रतिष्ठान के चारों तरफ चारदीवारी बनाना आवश्यक है। चारदीवारी मकान की सुरक्षा तो करती ही है, उसमें रहनेवालों को वास्तुदोष से भी बचाती है। चारदीवारी का दक्षिण एवं पश्चिम भाग पूर्व एवं उत्तर की अपेक्षा मोटा होना चाहिए। इसके अतिरिक्त उसे मुख्य द्वार के अनुकूल रखने के लिए निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए।

1. पूर्वोन्मुखी मकान के प्रवेशद्वार के सामने चारदीवारी में बना द्वार शुभ होता है। इसे अधिक प्रभावी बनाने के लिए भवन की बगल में उत्तर दिशा में छोड़ी गई उत्तरी खाली जगह के सामने चारदीवारी में पूर्वी ईशान में दूसरा द्वार बनाना चाहिए।

2. दक्षिणोन्मुखी मकान के पूर्व की ओर छोड़ी गई खाली जगह के सामने दक्षिणी आग्नेय में मुख्य द्वार बनाना चाहिए। यदि चारदीवारी में पहले से ही घर के प्रवेश द्वार के सामने द्वार बना हुआ हो तो भी दूसरा द्वार बनाना आवश्यक होता है।



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

3. भूखंड के चारदीवारी की विस्तार के बीचोबीच बने मकान के प्रवेश द्वार का मुंह चाहे जिस दिशा में हो वास्तु दोष से मुक्त रहता है और उसमें उच्च कोटि के भाग में दूसरा द्वार बनाने की जरूरत नहीं रहती।

4. पश्चिमोन्मुखी मकान के प्रवेश द्वार के सामने चारदीवारी में द्वार हो तो उसकी उत्तर दिशा की खाली जगह के सामने पश्चिमी वायव्य में एक और द्वार बनवाना चाहिए। इसके बिना प्रथम द्वार अशुभ रहेगा।

5. उत्तरोन्मुखी भवन में भी प्रवेश द्वार के सामने चारदीवारी में द्वार होने पर उत्तरी ईशान में एक द्वार और बनवाना चाहिए। इसके बिना प्रथम द्वार प्रभावी नहीं होगा।

6. भवन की चारदीवारी में निर्मित उच्च कोटि के भाग के द्वार का उपयोग अवश्य करें। इसका अच्छा परिणाम आएगा।

7. पूर्वोन्मुखी या उत्तरोन्मुखी भवन में चारदीवारी मुख्य द्वार की उंचाई के बराबर या नीची बनाई जा सकती है।

8. अगर चारदीवारी दक्षिणी या पश्चिमी नैर्ऋत्य अथवा पूर्वी आग्नेय या उत्तरी वायव्य में टूट–फूट जाए तो वास्तु के बुरे प्रभाव से बचने के लिए उसे तुरंत ठीक करवा लेना चाहिए।

9. चारदीवारी में एक ही द्वार परेशानियों का कारक होता है।

10. चारदीवारी द्वार दक्षिण एवं पश्चिम में ऊंचा एवं अधिक मोटा हो तो आरोग्य और धन की प्राप्ति होती है।

11. नैर्ऋत्य दिशा में चारदीवारी का द्वार ऊंचा हो तो मान–सम्मान, धन एवं सुख की प्राप्ति होती है।

12. वास्तु एवं चारदीवारी की दीवार में अंतर होना आवश्यक है।

13. चारदीवारी के अंदर उत्तर एवं पूर्व की तरफ दक्षिण एवं पश्चिम की अपेक्षा अधिक से अधिक स्थान खाली रहना चाहिए। भूखंड का आकार यदि अनावश्यक रूप से बड़ा हो तो वह लक्ष्मी बंधन करता है। भूखंड में कवर्ड एरिया से चार गुने से अधिक स्थान खाली नहीं होना चाहिए। एक सामान्य आवास 1500 से 2000 वर्गफुट के कवर्ड एरिया में होता है इसके अनुसार 8000 से 10000 वर्ग फुट का भूखंड ही शुभ होता है। जो लोग आर्थिक सफलता प्राप्त करने के बाद सामान्यतः बड़े भूखंड में भवन निर्माण कर चार गुणा से अधिक जमीन खाली छोड़कर भवन निर्माण करते हैं, उनकी बीती सफलता कहानी बनकर रह जाती है। बहुत से आवासों में विशाल भूखंड में भवन के अलावा उद्यान भी रखा जाता है, अशुभ होता है। यदि उद्यान रखना ही हो तो भवन और उद्यान को एक निश्चित दीवार से अलग कर दोनों के मध्य के द्वार आवासीय बना देना चाहिए। भूखंड में उद्यान तभी बनाना चाहिए जब उसका आकार सामान्य हो। यदि उद्यान विशाल बनाना हो तो मुख्य आवासीय परिसर से अलग होना चाहिए। उद्यान में प्रवेश का द्वार भी बाहर से रखा जा सकता



Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

है। उद्यान और आवास को आंतरिक द्वार से जोड़ना हो तो द्वार उत्तर या पूर्व में रखना चाहिए। यह तभी संभव हो सकता है जबकि उद्यान आवास से उत्तर या पूर्व में हो। यदि दक्षिण या पश्चिम में हो तो उसका द्वार बाहर होना चाहिए। भूखंड में उद्यानों को तब तक अधिक अशुभ फलदायी नहीं मानना चाहिए जब तक कि वह भूखंड की तुलना में विशाल न हो। आमतौर पर शहरों में आवासीय भूखंडों में जो छोटे उद्यान होते हैं, वे अशुभ फल नहीं करते हैं।

Future Point

◆◆◆◆◆



www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

# 17. भवन की खिड़कियां

भवन की खिड़कियां वायव्य एवं आग्नेय कोण में होनी चाहिए। किंतु कोण पर सवा–सवा हाथ छोड़कर खिड़कियां बनवानी चाहिए। खिड़कियों का आकर एक सा हो। इनकी संख्या सम जैसे 2, 4, 6 या 8 होनी चाहिए।

1. उत्तर दिशा में अधिक खिड़कियां होने पर परिवार में धन धान्य की वृद्वि होती है।
2. खिड़कियां कभी भी दीवार में ऊपर नीचे न बनवाकर एक ही कतार में बनवानी चाहिए।
3. खिड़कियां अंदर की ओर खुलनी चाहिए।
4. खिड़कियां दो पल्लों की होनी चाहिए, एक या तीन पल्लों की नहीं।
5. खिड़कियां और झरोखे मकान के दाहिनी तरफ बनाए जाने चाहिए, बाएं मध्य में नहीं। देव मंदिर में इन्हें बाएं भाग में बनाया जा सकता है।

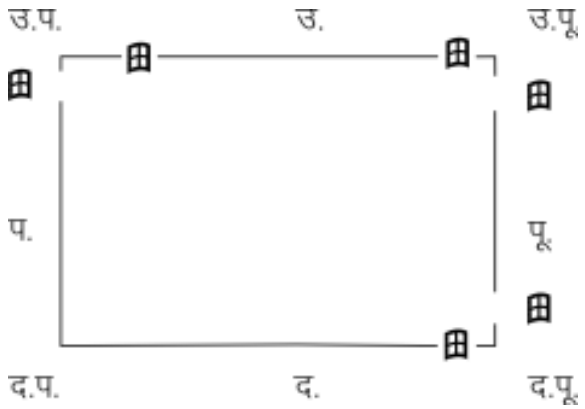


**दहलीज**

आजकल दरवाजे की दहलीज नहीं होती, जो शास्त्रसम्मत नहीं है। कम से कम प्रमुख दरवाजे की दहलीज अवश्य होनी चाहिए। चौखट तो चार लकड़ियों से ही बनता है। हम मकान में जाने से पहले मंदिर की दहलीज को स्पर्श करते हैं। तब भगवान के दर्शन करते हैं। मंदिर की दहलीज पवित्र एवं महत्वपूर्ण मानी जाती है। हमारा मकान भी एक प्रकार का मंदिर ही है। फिर मकान में दहलीज क्यों नहीं ! प्रवेश द्वार पर दहलीज से एक लाभ यह है कि बाहर से आनेवाली विपत्तियां, तकलीफें आदि दहलीज तक ही सीमित रहती हैं। सांप, छिपकलियां आदि भी घर में प्रवेश नहीं कर पाते हमारे यहां महिलाएं भी दहलीज की पूजा करती हैं। उसे हल्दी, कुंकुम चढ़ाकर मकान के अंदर रहनेवालों की खुशहाली के लिए कामनाएं करती हैं एवं मन्नतें मांगती हैं। नव वधू का गृह प्रवेश भी दहलीज के पूजन के उपरांत होता है। अतः घर के मुख्य प्रवेश द्वार पर दहलीज होना नितांत आवश्यक है।

◆◆◆◆◆



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

# 18. सीढ़ी बनाने के मुख्य नियम

भवन में सीढ़ियां वास्तु नियमों के अनुरूप बनानी चाहिए। सीढ़ियों के लिए भवन के मूल पश्चिम, मूल दक्षिण या नैर्ऋत्य का क्षेत्र सर्वाधिक उपयुक्त होता है। सीढ़ियां यदि नैर्ऋत्य कोण में बनी हो तो अति शुभ होती हैं। क्योंकि भवन के नैर्ऋत्य क्षेत्र का उठा हुआ और इस पर भारी वजन का होना शुभ माना जाता है। दूसरे विकल्प में सीढ़ियां दक्षिण पश्चिम या पश्चिमी वायव्य  की तरफ यथासंभव पूर्वी या उत्तरी दीवार से हटकर बनानी चाहिए।

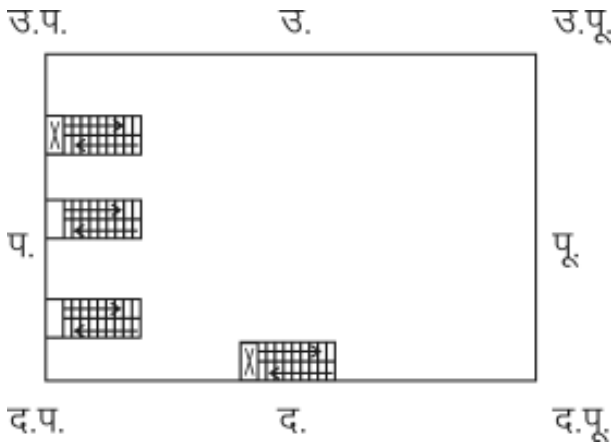


ईशान कोण में सीढ़ियां नहीं बनानी चाहिए। इस क्षेत्र में सीढ़ियां अर्थ तथा व्यवसाय को नुकसान पहुंचाती हैं और गृहस्वामी को कर्ज में डाल देती हैं।साथ ही स्वास्थ्य के लिए काफी नुकसानदायक होती है। जगह की कमी की स्थिति में आग्नेय या उत्तरी वायव्य में सीढ़ी बनाने पर संतान का स्वास्थ्य खराब रहता है। इस जगह पर सीढ़ियां बनाना अनिवार्य हो तो हल्की बनानी चाहिए। सीढी को पूर्व से पश्चिम एवं उत्तर से दक्षिण चढ़ते हुए बनाना चाहिए। जिस भवन में सीढी दक्षिण से उतर की ओर चढ़ते होता है उस भवन के निवासियों की सुख समृद्धि एवं शांति देर सबेर खत्म हो जाती है। अतः दक्षिण की ओर उतरते एवं उत्तर की ओर चढते हुए सीढियों का निर्माण भूलवश भी नही कराना चाहिए। यदि किसी पुराने घर में सीढ़ियां उत्तर–पूर्व दिशा में बनी हों तो उसके वास्तु दोष को दूर करने के लिए दक्षिण–पश्चिम दिशा में एक कमरा अवश्य बनाना चाहिए।

### सीढ़ियों की संख्या

सीढ़ियां हमेशा विषम संख्या में बनानी चाहिए। संख्या ऐसी हो कि उसे 3 से भाग दें तो 2 शेष रहे जैसे 5, 11, 17, 23, 29 आदि। सीढ़ियों की संख्या के अंत में शून्य (0)का होना वर्जित है। जैसे 10,20,30,40



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

आदि नही रखनी चाहिए। सीढ़ियों के प्रारंभ और अंत में दोनों स्थानों पर मजबूत दरवाजे होने चाहिए। नीचे के दरवाजे से ऊपर का दरवाजा 12 भाग कम होना चाहिए अर्थात् नीचे के दरवाजे ऊपर के दरवाजे से बड़ा या उसके बराबर हो।

**सीढियों की आदर्श बनावटः–**

सीढियों की घुमाव सदैव घडी की दिशा में होना चाहिए। अर्थात् चढ़ते समय सीढ़ियां हमेशा दायीं ओर मुड़नी चाहिए। सीढ़ियां घड़ी की सूई की दिशा में उत्तर से दक्षिण अथवा पूर्व से पश्चिम की तरफ मुड़नी चाहिए। सीढ़ियां चढ़ते समय मध्य बिंदु तक व्यक्ति का मुख पश्चिम या दक्षिण की ओर ऊपर जाकर

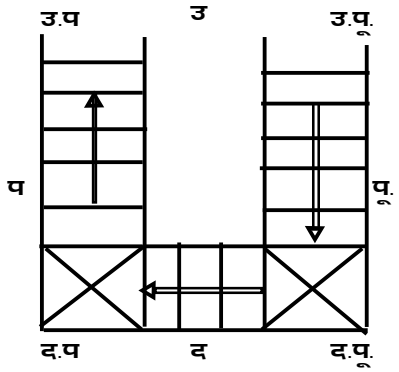


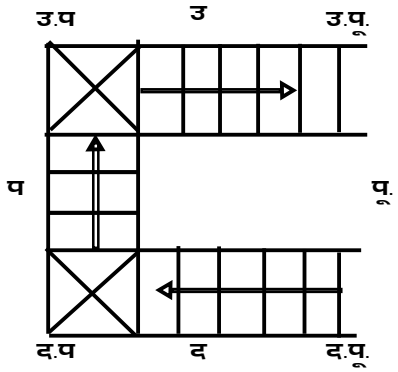


उत्तर या पूर्व की ओर होना चाहिए। इसी प्रकार सीढ़ी उतरते समय अंत में उत्तराभिमुखी या पूर्वाभिमुखी होना चाहिए।

प्रवेश द्वार के सामने, घर के मध्य में या घर में प्रवेश करते ही एकदम ऊपर जाती हुई न दिखाई दें अन्यथा घर में आते ही तनाव की संभावना रहती है। चीनी मान्यता के अनुसार ऐसी स्थिति वाली सीढ़ियों के कारण मकान का चुंबकीय तारतम्य (ci) नष्ट हो जाता है और उसका प्रतिकूल प्रभाव गृहस्वामी पर पड़ता

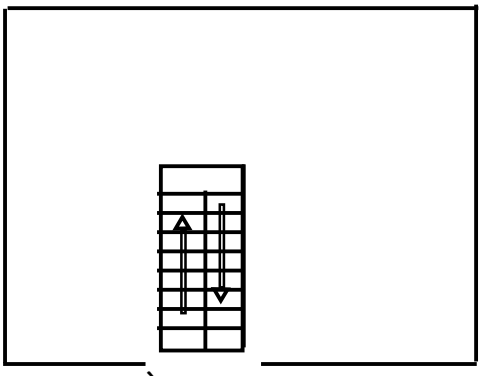

प्रवेश द्वार



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

है। ऐसी सीढ़ियां होने पर दोनों तरफ पौधे के गमले रखने चाहिए। एक सीढ़ी से दूसरी सीढ़ी के मध्य 9 इंच तक का अंतर आदर्श माना जाता हैं। इससे अधिक अंतर ठीक नहीं होता है। यदि सीढी के मध्य अंतर 9 इंच का हो तो एक सीढी की चौडाई (पैर रखने की जगह) 11 इंच का होना चाहिए। इस प्रकार 2 इंच का अंतर से चौडाई एवं ऊँचाई का अनुपात रखें। यदि भवन बडा हो जैसे 2500 वर्ग फीट से अधिक तब सीढ़ियों की आदर्श चौडाई 4 फीट रखनी चाहिए। जबकि भवन 1000 वर्गफीट से लेकर 2500 वर्गफीट तक का हो तो सीढ़ियों की चौडाई 3 फीट का तथा भवन छोटा हो तो अर्थात 1000 वर्गफीट से कम रहने पर सीढी की चौडाई ढाई फीट तक ली जा सकती है। यद्यपि इससे कम चौडाई की सीढियॉ नही रखनी चाहिए। क्योकि यह व्यवहारिक कठिनाईयां उत्पन्न करती है। सीढ़ियों के दोनों ओर रेलिंग लगनी चाहिए। सीढ़ियों का प्रारंभ त्रिकोण सीढ़ियों से नहीं करनी चाहिए। सीढियों को अत्यधिक सर्पिलाकार या घुमावदार लपटते हुए नहीं रखनी चाहिए। उनके नीचे शयनकक्ष, बैठक, पूजा घर या शौचालय नहीं होना चाहिए। साथ ही साथ सीढियों के नीचे सोना नही चाहिए। सीढ़ियों का प्रारंभ या अंत पूजा कक्ष, तिजोरी कक्ष, रसोई या स्टोर से नहीं होना चाहिए अन्यथा घर के सदस्यों को कब्ज, मस्से एवं बदहजमी की संभावना रहती है। अनिवार्यता की स्थिति में सीढ़ियों के नीचे स्नानगृह बनाया जा सकता है। सीढ़ियों के नीचे खुला स्थान बच्चों की शिक्षा में सहायक होता है।

**सीढ़ियों की सही स्थितिः–**

सीढ़ियां हमेंशा दायीं ओर घुमनी चाहिए, अगर वे विपरीत दिशा में घुमती हों तो एक सीढ़ी चढ़ने की दिशा के दायीं ओर लगा देनी चाहिए। यह सीढ़ी उत्तर दिशा में चढ़कर पश्चिम दिशा में घूम रही है। यह घुमाव चढ़ते हुए व्यक्ति के लिए बायीं ओर होगा। अतः प्रारंभ बिंदु पर एक या दो सीढ़ियां लगाकर इसे दायीं ओर का घुमाव दिया जा सकता है।

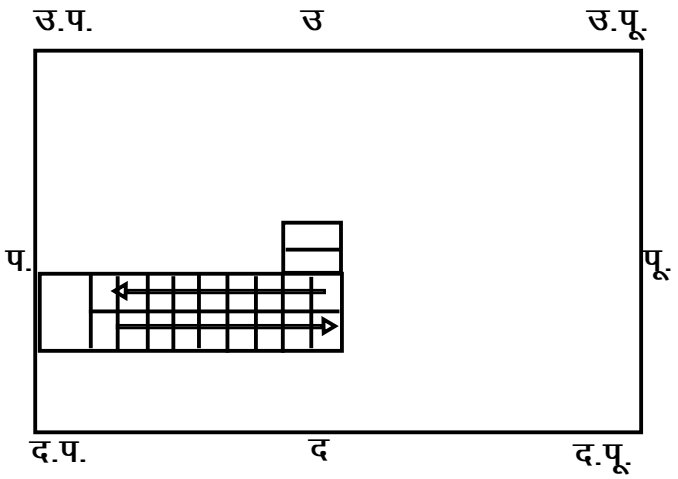


◆◆◆◆◆



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

# 19. आवास कक्षों का शुभ आकार

शयन कक्ष और भोजन कक्ष निम्न आकार के होने चाहिए।
10′10′, 11′10′, 11′11, 10′16′, 11′16′, 16′16′, 17′11′, 17′17′, 20′16′ 21′16, 21′21′, 22′10′, 22′11′, 22′16′, 29′11′, 29′16′

**रसोई घर का आकार**
रसोई घर निम्न आकर का होना चाहिए:–
8′ 8′, 8′10′, 10′10′

**स्नान घर का आकार**
स्नान घर का आकार 8′ 8′, 8′ 10′ या 10′ 10′ होना चाहिए।

**शौचालय का आकार**
शौचालय, जिसमें स्नानागार न हो, 4′ 4′ या 6′ 4′ आकार का हो सकता है।

**वास्तु के अनुसार शुभ आकार**
6′, 8′, 10′, 11′, 16′, 17′, 20′, 21′, 22, 24′, 26′, 27′, 28′, 29′, 30′, 31′, 32′, 33′, 35′, 36′, 37′, 39′, 41′, 42′, 45′, 52′, 56′, 60′, 64′, 66′, 68′, 70′, 71′,

72′, 73′, 74′, 77′, 79′, 80′, 84′, 85′, 87′, 88′, 91′, 92′, 93′, 97′, 99′, 100′ 101′, 102′, 106′, 107′, 108′, 109′, 110′, 111′, 112′, 113′, 115′,

116′,117′ एवं 119′

**वास्तु के अनुसार कमरे के शुभ ऊँचाई**
6′, 8′, 10′, 14′, 16′, 17′, 20′, 21′, 22′, 25′, 27′, 28′, 29′ एवं 30′

**वास्तु के अनुसार अशुभ आकार**
आवास कक्ष का निम्नलिखित में से किसी भी आकार का होना अशुभ होता है।
5′, 7′, 9′, 12′, 13′, 14′, 15′, 18,′ 19′, 23′, 25′

**भवन का निर्माण करते समय ध्यान देने योग्य बातें**

1. प्रथम तथा द्वितीय के बीच के तल को मेजनाइन फ्लोर कहते हैं जो भवन के नैर्ऋत्य या पश्चिम दक्षिण नैर्ऋत्य की ओर होना चाहिए।
2. भवन की लंबाई–चौड़ाई का अनुपात 1:1.5 अति उत्तम 1:1.2 सामान्य होता है।
3. कक्ष में अलमारियां या भारी सामान दक्षिणी या पश्चिमी दीवारों से सटाकर रखें। किताबों के लिए रैक भी इसी दिशा में रखें।



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

4. पूर्व और उत्तर दिशाओं में वजनी सामान न रखें। छोटा और हल्का सामान भी पूर्वी उत्तरी दीवारों से सटा कर न रखें।
5. नौकरों के लिए आवास, भूखंड के वायव्य या आग्नेय दिशा में बनाना चाहिए। ध्यान रखें कि निर्माण करते समय ये आवास भवन की पूर्वी और उत्तरी दिशाओं की चार दीवारी से अलग रहे। आवास की उंचाई मुख्य भवन की ऊंचाई से अधिक न हो। यह आवास चारदीवारी से कम से कम साढ़े 3 फुट दूर हो तो उत्तम है।
6. मकान में खिड़कियों और दरवाजों की संख्या सम होनी चाहिए। अंक ज्योतिष में 30, 50, 70 आदि की संख्या विषम मानी जाती है। खिड़कियां मकान की उत्तर और पूर्व दिशाओं में अधिक और दक्षिण और पश्चिम में कम से कम होने चाहिए। सीढ़ियों की संख्या विषम होनी चाहिए।
7. भवन में द्वार हमेशा पूर्वी ईशान, उतरी ईशान, मूल उत्तर, पश्चिमी वायव्य,पश्चिम, दक्षिण, एवं दक्षिणी आग्नेय जैसे लाभदायक ग्रीड से रखें। दरवाजे पश्चिमी नैऋत्य, दक्षिणी नैऋत्य, पूर्वी आग्नेय एवं उतरी वायव्य से नही रखें। आवासीय भवन में मुख्य प्रवेश द्वार, भूमि या भवन के मध्य में नही रखना चाहिए। अन्यथा अतिथियों का जमावड़ा लगा रहता है।
8. चार दीवारी दक्षिण और पश्चिम में थोड़ी उंची और मोटी तथा पूर्व और उत्तर में थोड़ी नीची और पतली होनी चाहिए।
9. भवन में बरामदा पूर्व या उत्तर दिशा में बनवाना चाहिए। बरामदे की छत भवन की छत से थोड़ा नीचे या समान होनी चाहिए। दक्षिण और पश्चिम की तरफ बरामदा नहीं होना चाहिए। यदि बरामदा दक्षिण की ओर हो तो उसे शीशे से ढक दें। बरामदा को हमेशा प्रकाशित रखना चाहिए। अंधकारयुक्त बरामदा भवन में निवास करने वाले लोगों को जल संबंधी रोगों में वृद्धि करता है।
10. बाहर के कमरे भवन के वायव्य या आग्नेय कोण में बनाएं। परंतु वह उत्तरी और पूर्वी चारदीवारी को न छूएं। बाहर के कमरे की ऊंचाई मुख्य भवन से कम रखनी चाहिए। अन्य क्वार्टर अगर उत्तर या पूर्वी दीवार से जुड़े हों तो मजदूर या पदाधिकारी मालिक का बात नहीं मानेंगे।
11. वास्तु के अनुसार जो भवन चारों दिशाओं और चारों कोणों में खुला हो, जिसकी परिक्रमा की जा सके, वह सभी प्रकार से मंगलदायक होता है। भूखंड के मध्य बना भवन मंगलदायक होता है।
12. यदि भवन भूखंड के पश्चिम–दक्षिण से उत्तर–पूर्व में अधिक खाली छोड़ते हुए बना हो तो अति उत्तम और मंगलदायक होता है।
13. भूखंड के उत्तर या पूर्व की ओर बना भवन अशुभ होता है।
14. गाड़ियों के लिए गैरेज, वायव्य अग्नि कोण में बनाना चाहिए। परंतु उत्तरी या उसे पूर्वी दीवारों से कम से कम साढ़े तीन फुट अलग और दक्षिणी एवं पश्चिमी दीवारों से सटा होना चाहिए।

◆◆◆◆◆



Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

# 20. भवन में पूजा कक्ष की व्यवस्था

पूजा घर हमेशा उत्तर–पूर्व दिशा अर्थात् ईशान कोण में ही बनाना चाहिए। क्योंकि उतर–पूर्व में परमपिता परमेश्वर अर्थात ईश्वर का वास होता है। कहा जाता है कि देवी लक्ष्मी, भगवान विष्णु के साथ उतर–पूर्व में निवास करती है। साथ ही ईशान क्षेत्र में देव गुरू वृहस्पति का अधिकार है जो कि अध्यात्मिक चेतना का प्रमुख कारक ग्रह है। ईशान कोण में जगह नही रहने पर पूजा कक्ष या मंदिर उत्तर, पूर्व या पश्चिम दिशा में बनाया सकता है। यह स्थान दैनिक पूजा के लिए उपयुक्त होता है। पर्व आदि पर विशेष पूजा, कथा, हवन आदि घर के मध्य स्थान, आंगन आदि में आयोजित किए जा सकते हैं।

पूजा गृह कभी भी शयनकक्ष में नहीं बनाना चाहिए। क्योंकि शयनकक्ष पर शुक्र का आधिपत्य होता है

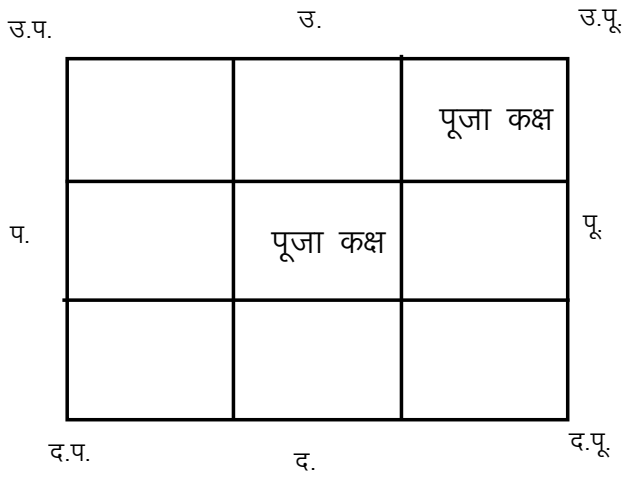


जो भौतिकवादी ग्रह है। इसके विपरीत पूजा घर, वृहस्पति के आधिपत्य में आता है जो कि सात्विक ग्रह है। यह सात्विक गुणों में वृद्धि करता है। शयनकक्ष में पूजा घर रहने पर शयन कक्ष के स्वामी शुक्र, वृहस्पति के प्रभाव में कमी लाएगा जिसके फलस्वरुप आध्यात्मिकता में कमी आएगी और पूजा का जो लाभ मिलना चाहिए वह नहीं मिल पाएगा। वृहस्पति संतान एवं सांसारिक सुखों का भी कारक है। शयनकक्ष में पूजाघर बनाने से वृहस्पति अपने शत्रु से पीड़ित होगा जिसके फलस्वरूप संतान सुख, सांसारिक सुख एवं धन में कमी आएगी। अतः शयनकक्ष या बैठककक्ष के अंदर पूजाघर नहीं बनाना चाहिए। अगर जगह की कमी हो तो अध्ययन कक्ष के साथ पूजाघर बनाया जा सकता है। पूजाघर कभी भी रसोईघर के साथ नहीं बनाना चाहिए। प्रायः लोग रसोईघर में ही पूजाघर बना लेते हैं जो उचित नहीं है। रसोईघर में प्रयोग होनेवाली वस्तुएं मिर्च–मसाला, गैस, तेल, कॉटा, चम्मच, नमक आदि मंगल की प्रतीक वस्तुएं हैं। मंगल का वास भी रसोईघर में ही होता है। उग्र ग्रह होने के कारण मंगल उग्र प्रभाव



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

में वृद्धि कर पूजा करने वाले की शांति एवं सात्विकता में कमी लाता है। अतः रसोईघर में पूजा करने से आध्यात्मिक चेतना का विकास नहीं हो पाता। पूजाघर टॉयलेट के सामने नहीं होना चाहिए क्योंकि टॉयलेट पर राहु का अधिकार होता है जबकि पूजा स्थान पर वृहस्पति का अधिकार है। राहु अनैतिक संबंध एवं भौतिकवादी विचारधारा का सृजन करता है। साथ ही राहु की प्रवृतियां राक्षसी होती हैं जो पूजाकक्ष के अधिपति ग्रह वृहस्पति के सात्विक गुणों के प्रभाव को कम करती है। जिसके फलस्वरूप पूजा का पूर्ण अध्यात्मिक लाभ व्यक्ति को नहीं मिल पाता। पूजा कक्ष सीढियों के नीचे भी नही रखना चाहिए।

पूजा कक्ष के उतरी भाग में ऊँचे भवन या ऊँचे फर्श रखने पर देवताओं का आर्शीवाद उस भवन को नही मिल पाता है। साथ ही प्रकृति से मिलने वाले शुभ एवं अलौकिक रश्मियों से भवन वंचित हो जाता है। पूजा घर में हमेशा साफ सुथरी प्रतिमा, यंत्र या तस्वीर रखनी चाहिए। मूर्तियों को हमेशा धातु, पत्थर या मिट्टी का रखना चाहिए। मिट्टी के मूर्तियां शुभ होती हैं लेकिन इन्हें अंदर से खोखला नहीं होना चाहिए। प्लास्टर ऑफ पेरिस की मूर्तियां अक्सर खोखली होती हैं। इन मूर्तियों को पूजा कक्ष में नहीं रखना चाहिए। सामान्यतः घरों में मूर्तियों की प्रकृति खड़ी रहने की अपेक्षा बैठी रहना शुभ है। पूजा कक्ष में मूर्ति का आकार नौ इंच से अधिक नहीं रखना चाहिए। अर्थात घर के पूजा घर में बड़ी मूर्तियां या प्रतिमा नहीं रखनी चाहिए। देवताओं को ठोस धरातल पर सामान्य भूमि से थोड़ा ऊपर कर स्थापित करना चाहिए। मूर्ति के पीछे ठोस दीवार रखना आवश्यक है। पूजाघर में किसी प्राचीन मंदिर से लाई गई मूर्ति नहीं रखना चाहिए। किसी भी प्रकार से अंश मात्र भी इष्ट प्रतिमा खंडित हो गयी हो तो कितनी ही बहुमूल्य क्यों न हो पूजन योग्य नहीं होती। ऐसी स्थिति होने पर उन्हें पवित्र जल में विधि विधान से विसर्जित कर देना चाहिए। देवी देवताओं की प्रतिमा पर से उतरे हुए सुखे पुष्प, माला तथा हवन ध ाूप आदि की राख, सफाई में निकला अवशेष जल, नारियल के टुकड़े, पुराने वस्त्र आादि को अनावश्यक समझ फेंकने के बजाय तेज बहते जल में विसर्जित कर देना चाहिए। पूजाघर में हवन कुंड आग्नेय कोण में बनना चाहिए। लेकिन हवन करते समय मुंह पूर्व दिशा में रखना चाहिए।

पूजाघर पिरामिड के आकार का हो तो काफी लाभप्रद रहता है क्योंकि पिरामिड में व्यवस्था को अक्षुण बनाए रखने की क्षमता होती है। जिसके फलस्वरूप विखंडन की क्रियाएं नहीं होती। इसका कारण उसमें उत्पन्न होने वाली अग्नि एवं आकाशीय ऊर्जाओं का होना है। यह स्थान ध्यान एवं चिंतन के लिए उत्तम होता है जो आत्मिक एवं मानसिक शांति के लिए आवश्यक है। भवन में पूजाघर का निर्माण पृथक रूप से अवश्य करें क्योंकि ईश्वर की आराधना पवित्र एवं पृथक स्थानों पर ही की जानी चाहिए। वहां का माहौल सात्विक होना आवश्यक है। पूजाघर में ब्रह्मा, विष्णु, शिव, कार्तिकेय, सूर्य एवं इन्द्र को इस तरह स्थापित करना चाहिए कि पूजा करते समय व्यक्ति का मूंह पूर्व या पश्चिम की ओर हो। अर्थात् इन सभी देवी देवताओं की स्थापना की सही दिशा पूर्व या पश्चिम है। देवी देवताओं की मूर्तियां उत्तर दिशा वाली दीवार पर नहीं लगानी चाहिए अन्यथा वे दक्षिणाभिमुख हो जाएंगी। साथ ही उत्तर में उत्तर ध्रुव होता है, अतः दोनों का एक दिशा में रहना ठीक नहीं रहेगा। कुबेर का स्थान उतर दिशा है लक्ष्मी उतर–पूर्व में रहती हैं। सरस्वती पश्चिम दिशा में निवास करती हैं। इसलिए इन दिशाओं में बैठकर लक्ष्मी पूजा की



Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

जा सकती है। लक्ष्मी पूजा हमेशा पूर्व दिशा या पश्चिम दिशा की ओर मुख करके करना चाहिए। लक्ष्मी पूजन में बेल और कमल के पते बड़े लाभदायक होते है। कमल के पते का आसन, कमल के पते पर मीठी खीर का भोग लक्ष्मी जी को लगाना, कमल गट्टे की माला से श्रीसूक्त, लक्ष्मी सूक्त या कनकधारा स्त्रोत का जाप करना घर में धन–दौलत एवं समृद्धि को बढाने में सहायक होता है। लक्ष्मी या किसी भी देवता की मूर्ति दक्षिणामुखी न हो अर्थात उतर की द्वार पर इसे नही टॉगनी चाहिए। गणेश जी की स्थापना दक्षिण दिशा में करनी चाहिए। इससे उनकी दृष्टि उतर की तरफ रहेगी, उत्तर में हिमालय पर्वत है और उसपर गणेश जी के माता–पिता अर्थात् शंकर–पार्वती जी का वास स्थान है। गणेश जी को अपने माता पिता की तरफ देखना बड़ा अच्छा लगता है इसलिए गणेशजी की मूर्ति दक्षिण दिशा में रखी जानी चाहिए। गणेश जी की स्थापना पश्चिम दिशा में कभी नहीं करनी चाहिए क्योंकि गणेश जी मंगल के प्रतीक और पश्चिम दिशा का स्वामी शनि है। इस तरह मंगल व शनि एक साथ हो जाएंगे जिससे घर में परेशानियां एवं मुसीबतें खड़ी हो जाएगी। पूर्व में भगवान का मंदिर तथा पश्चिम में देवी मंदिर नाम, ऐश्वर्य एवं धन–दौलत देने वाला बनता है। घर में विष्णु, लक्ष्मी, राम–सीता, कृष्ण, एवं बालाजी जैसे सात्विक एवं शांत देवी देवता का यंत्र, मूर्ति एवं तस्वीर रखना लाभप्रद होता है। पूजा घर में मूर्तियां एक दूसरे की ओर मुख करके नहीं रखनी चाहिए। भवन में रखें देवी देवतओं की प्राण प्रतिष्ठा नहीं करनी चाहिए। इस स्थान का उपयोग पूजा–पाठ तथा चित्र आदि रखने के लिए अच्छा होता है। भवन में रखे देवी देवताओं की प्राण प्रतिष्ठा करने पर नियमित रूप से शास्त्र निर्देशित पूजा, भोग, संध्या बंदन आदि आवश्यक है।

पूजा कक्ष में हमेशा स्नान करके शुद्ध एवं पवित्र होकर ही प्रवेश करें। रात्रि में जो वस्त्र पहनकर सोएं अथवा जो वस्त्र पहनकर टॉयलेट जाएं वह वस्त्र पहनकर पूजा कक्ष में न जाएं। साथ ही उसे पहनकर देवताओं की आराधना न करें। पूजागृह को सदैव शुद्ध एवं पवित्र रखें। इसमें झाड़ू, कचड़ा कोई अपवित्र और वजनदार वस्तु न रखें। अर्थात झाड़ू एवं कूड़ेदान आदि भवन के ईशान कोण और पूजा गृह के निकट नहीं रखना चाहिए। जिस प्रकार गंदगी रहने से मनुष्य के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है उसी प्रकार पूजन कक्ष में साफ सफाई न होने पर अध्यात्मिक ऊर्जा का क्षय होता है तथा इष्ट उपासना का पर्याप्त लाभ नहीं मिल पाता। पूजा गृह एवं घर के अन्य कक्षों को साफ करने के लिए झाड़ू एवं पोछा अलग–अलग होने चाहिए।

पूजा स्थान को सदैव सुगंधित पुष्प, सुगंधित पदार्थ, एवं धूप–दीप आदि का अर्पण नित्य करते रहना चाहिए। पूजाकक्ष में खंडित मूर्तियां एवं सौंदर्य प्रसाधन की वस्तुएं न रखें। कागज, अल्यूमुनियम या कांच की मूर्ति भी इस कक्ष में न रखें क्योंकि इनसे दर्शन लाभ तो हो सकता है परंतु इष्ट बल नहीं बढ़ता है। इष्ट देव की मूर्तियां या चित्र टेबल की दराज में न रखें। साथ ही पूजा कक्ष में मूर्तियों के सिवा कुछ न रखें। दो शिवलिंगों, दो शालिग्रामों, दो शंखों, तीन देवी प्रतिमा और तीन गणेश की मूर्तियों को पूजा कक्ष में एक साथ नहीं रखना चाहिए।

पूजा कक्ष का आकार वर्गाकार या आयताकार रखना अत्यधिक शुभ फलप्रद होता है। लेकिन आयतकार रखने पर इसके लंबाई को चौडाई के दुगने से अधिक नही रखना चाहिए। पूजा कक्ष की ऊँचाई को अन्य



Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

कक्षों की तुलना में कम नही रखना चाहिए। जहॉ तक संभव हो पूजा सहित सभी कक्षों की छते एक समान हो जिस प्रकार पूजा कक्ष की ऊँचाई कम रखना अशुभ होता है, उसी प्रकार पूजा कक्ष की ऊँचाई को ज्यादा रखा जाना भी अनिष्टकारी होता है। पूजा कक्ष का कोई भी कोना ज्यादा या कम नही होना चाहिए। पूजा कक्ष के उतर पूर्व में पानी या अंडर ग्राउंड टैंक हो तो लक्ष्मी प्रसन्न होकर सुख समृद्धि देती हैं। उस स्थान पर रहने वाले व्यक्ति प्रसिद्ध सम्मानित एवं प्रतिष्ठित होते हैं। पूजन कक्ष के छत एवं फर्श का ढलान उतर–पूर्व की ओर रखना चाहिए क्योंकि उतर की ओर निकलने वाला पानी धन में वृद्धि करता है। पूजा कक्ष का द्वार हमेशा द्वार के मध्य में स्थित होना चाहिए। लेकिन मूर्तियॉ द्वार के ठीक सामने है तो द्वार पर परदा रखना आवश्यक है। पूजा कक्ष का प्रवेश द्वार पूर्व की ओर तथा निकास उत्तर दिशा की ओर होना चाहिए। जिसके फलस्वरूप उस घर में निवास करने वाले लोगो का नाम और यश में वृद्धि होती है तथा विशिष्ट व्यक्तित्व रूप में उनकी पहचान बनती है। यदि पूजा कक्ष का द्वार उतर–पूर्व दिशा में हो तथा उसमें आना जाना उतर–पूर्व दिशा से ही होता हो तो सूर्य कि किरणों और चुंबकीय प्रभाव से धन दौलत के साथ–साथ चहुंमुखी सुख की प्राप्ति होती है। क्योंकि कुछ देवी देवता इन्द्र के रास्ते पूर्व से पूजन कक्ष या मंदिर में प्रवेश करना पसंद करते है, तथा कुछ देवी देवता उत्तर या उत्तर–पूर्व के रास्ते पूजन कक्ष में प्रवेश करना पसंद करते हैं। वरूण एवं वायु देवता हमेशा पश्चिम–उतर के रास्ते प्रवेश करते हैं इसलिए इन स्थानों से भी प्रवेश द्वार रखना शुभ फलदायी है। दक्षिण–पूर्व कें रास्ते यज्ञ के देवता अग्नि देव प्रवेश करते हैं अतः इस कारण से इस ओर का द्वार भी अच्छा माना गया है। इन सिद्धांतों को अपनाने से पूजन कक्ष की गरिमा बढ़ती है तथा वहां पर देवी देवता शुभ फल प्रदान कर मानसिक एवं अध्यात्मिक सुख समृद्धि प्रदान करते हैं। पूजा कक्ष में दो पल्लों के दरवाजे लगाने चाहिए और इन्हें पूजा कक्ष की अंदर की तरफ खुलना चाहिए। पूजा स्थल में द्वार में दहलीज अवश्य लगाएं। पूजा के उपयोग में सोना, चॉदी, तॉबा, पीतल या मिट्टी के बर्तनों का प्रयोग शुभ होता है। लेकिन पूजन में लोहा के बर्तनों का उपयोग नहीं करना चाहिए। पूजा स्थल का फर्श यदि सफेद संगमरमर पत्थर का हो तो उत्तम होता है दीवार का रंग सफेद, हल्का पीला या हल्का नीला होना चाहिए। पूजा कक्ष में खिड़कियां उत्तर की ओर होनी चाहिए।

### घर मे पूर्वजों की तस्वीर कहां होनी चाहिए ?

पूर्वजों की प्रतिमा या चित्र लगाने का सबसे सही स्थान नैऋत्य का क्षेत्र है। घर में मृतात्मा पूर्वजों के चित्र पूजन कक्ष में देवी देवताओं के साथ नहीं लगाने चाहिए। पूर्वज हमारे आदर और श्रद्धा के पात्र हैं पर, वे हमारे इष्ट देवता का स्थान नहीं ले सकते हैं। मनुष्य मृत्यु के पश्चात् पंचतत्वों में विलीन हो जाता है जबकि ईश्वर का अस्तित्व अजर और अमर है। अतः कभी भी भगवान तथा मनुष्य को बराबर नही माना जा सकता। ईशान में देवी देवताओं की प्रतिमा तथा उसके ठीक सामने पूर्वजों या मृतात्माओं के चित्र होने से दोनों की कृपा दृष्टि हमेशा भवन स्वामी पर बनी रहती है। जिससे शक्ति, प्रेरणा एवं ऊर्जा की प्राप्ति होती है। मृतात्मा पूर्वजों की पूजा विधि–विधान से उनके श्राद्ध एवं मृत्यु तिथि के दिन अवश्य करनी चाहिए।



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

पूर्वजों की तस्वीर

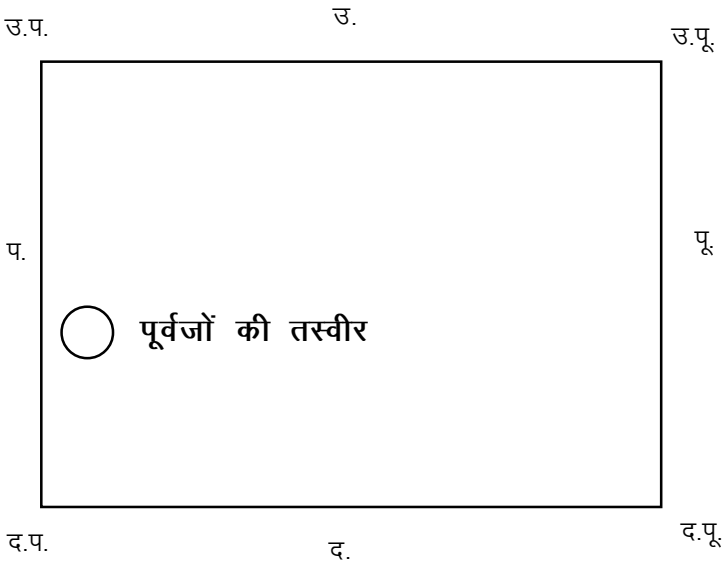


Future Point

◆ ◆ ◆ ◆ ◆



www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

# 21. रसोई घर

मंगल अग्नितत्व ग्रह और रसोईघर अग्नि स्थान है। चूंकि रसोई का अधिपति मंगल है इसलिए मंगल का वास रसोईघर में होता है। मिर्च–मसाला, भोज्य पदार्थ रसोई के लिए प्रयुक्त किरोसिन, गैस, छुरी, कांटे, इत्यादि मंगल की वस्तुएं हैं। ये सभी वस्तुएं रसोईघर में रहती हैं और मंगल का वास भी रसोईघर में होता है। मंगल उग्र ग्रह होने के कारण Food poisoning, अग्निभय, जख्म एवं दुर्घटना का कारक होता है। अतः रसोईघर का उचित स्थान पर होना आवश्यक है। वास्तु के अनुसार भवन में रसोईघर बनाने का सबसे उपयुक्त स्थान दक्षिण–पूर्व अर्थात् आग्नेय क्षेत्र है। आग्नेय दिशा का स्वामी शुक्र ग्रह है जो भगवती अन्नपूर्णा के प्रतिनिधि भी है। अतः इस स्थान पर रसोईघर बनाने से भोजन की कभी कमी नही होती तथा भोजन स्वादिष्ट बनती है । भवन में निवास करने वाले लोगों की पाचन शक्ति ठीक रहती है अगर यह संभव न हो तो उत्तर–पश्चिम क्षेत्र में रसोईघर बनाया जा सकता है। परंतु इस भाग में बने रसोईघर में खाना बनाने का प्लेटफार्म या गैस चूल्हा दक्षिण–पूर्व में रखना आवश्यक होगा। अन्यथा खर्च की अधिकता एवं अग्नि से दुर्घटना का भय बना रहता है।

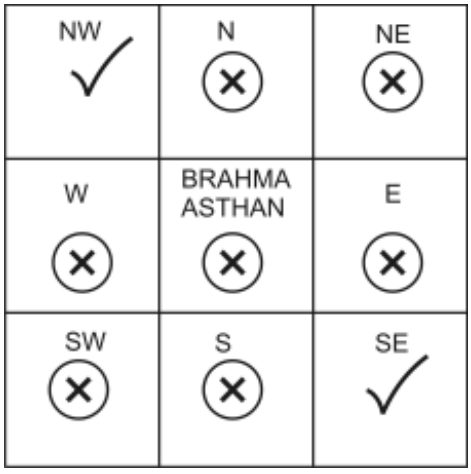


रसोईघर में खाना बनाने का मुख्य प्लेटफार्म पूर्व और दक्षिण–पूर्व कोने में होना चाहिए। स्टोव या गैस बर्नर पूर्व की दीवार पर रखना चाहिए। मसाले तथा अन्य भोजन बनाने से संबंधित सामग्री दक्षिण या पश्चिम दिशा में रखें। हल्की वस्तुएं पूर्व एवं उत्तर की तरफ रख सकते हैं। गैस बर्नर रसोईघर के मुख्य दरवाजे के ठीक सामने नहीं होनी चाहिए। हल्की वस्तुएं पूर्व एवं उत्तर की तरफ रख सकते हैं। दक्षिण की दीवार की तरफ के प्लेटफार्म पर Micro oven, Mixer Grinder आदि रखें– यह काफी लाभप्रद होगा।

खाना बनाते वक्त गृहणियों का मुंह पूर्व की ओर होना चाहिए– इससे स्वास्थ्य अच्छा रहता है। पश्चिम



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

या दक्षिण की तरफ मुंह करके रसोई बनानेवाले गृहिणी का स्वास्थ्य बार–बार बिगड़ता रहता है। शरीर में दुर्बलता महसुस होती है। स्फूर्ति एवं उत्साह की कमी रहती है तथा मन भी अशांत रहता है। साथ ही परिवार में दरिद्रता का आगमन होता है। गैस बर्नर रसोईघर के मुख्य दरवाजे के ठीक सामने नहीं होना चाहिए। कुकिंग प्लेटफार्म, कमरे के ठीक मध्य उत्तर–पूर्व में न रखें, यह बहुत ही अशुभ होता है। इसके उत्तर दिशा में होने पर आर्थिक हानि तथा दिवालियेपन का भय रहता है। यह यदि नैर्ऋत्य के दक्षिण में हो तो स्वास्थ्य की समस्याएं बनी रहती हैं तथा घर के लोग पेट की बीमारियों से ग्रस्त रहते हैं, वायव्य में होने पर भी कुकिंग प्लेटफार्म भी अच्छा फल नहीं देता है लोगों को कभी भी विश्राम का समय नहीं मिलता है तथा परिवार में तनाव का माहौल हमेशा बना रहता है। रसोईघर यदि पश्चिम दिशा में हो और पश्चिम मुखी खाना बनाने की व्यवस्था हो तो खाना हमेशा बनता रहता है, क्योंकि अतिथियों का आवागमन निरंतर उस भवन में बना रहता है।

रसोई घर के प्लेटफार्म के उत्तर पूर्व कोने में बेसिन या सिंक प्लेटफार्म से अलग हटकर लगाएं। रसोईघर में बर्तन धोने के लिए वाश–बेसिन को वायव्य में लगाना चाहिए। वायव्य में इसकी जगह न रहने पर इसे रसोईघर के बाहर भी लगाया जा सकता है।

रसोईघर के उत्तर–पूर्व दिशा में होने पर मानसिक अशांति, भारी खर्च, घर में कलह, धन की बर्बादी, दिवालियापन, खाद्य पदार्थों की बर्बादी या कमी एवं स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। रसोईघर के दक्षिण–पश्चिम की ओर होने से घर में कलह होता रहता है, जिसके फलस्वरूप जीवन दुखमय हो जाता है। उत्तर की ओर रसोईघर अत्यंत अशुभ होता है क्योंकि यह स्थान कुबेर का है। इसके दूषित होने से आवश्यकता से अधिक खर्च की संभावना रहती है।

रसोई घर के प्लेटफार्म के उत्तर पूर्व कोने में बेसिन या सिंक प्लेटफार्म से अलग हटकर लगाएं। रसोईघर में बर्तन धोने के लिए वाश–बेसिन को वायव्य में लगाना चाहिए। वायव्य में इसकी जगह न रहने पर इसे रसोईघर के बाहर भी लगाया जा सकता है।

रसोईघर, टॉयलेट, या शयनकक्ष के साथ या ऊपर अथवा नीचे नहीं होना चाहिए। शयनकक्ष में रसोईघर कदापि नहीं बनाना चाहिए और न ही रसोईघर में सोना चाहिए। इसके पीछे दो कारण हैं रसोईघर पर मंगल ग्रह का और शयन एवं कामक्रीड़ा पर शुक्र का प्रभाव होना। यह शुक्र एवं मंगल युत्ति का सूचक है। जो ऐसे घर में रहने वालों के लिए अशुभ हो सकती है। रसोईघर के पास टॉयलेट नहीं रखने का मुख्य कारण शौच है। शौच एवं गंदगी का कारक राहु है। अतः राहु और मंगल की युत्ति होगी जिसके कारण घर में अग्निभय, अक्समात् दुर्घटना, रक्तविकार आदि का भय बना रहेगा।

रसोईघर के साथ पूजा कक्ष नहीं रखना चाहिए। रसोईघर में प्रयोग होने वाली मंगल की प्रतीक वस्तुएं मिर्च, मसाला, तेल, किरासन, गैस आदि हैं। मंगल उग्र ग्रह होने के कारण उग्र प्रभाव में वृद्धि कर पूजा करने वालों की शांति एवं सात्विकता में कमी लाता है। अतः रसोईघर में पूजा करने से अध्यात्मिक, आत्मिक एवं मानसिक चेतना का विकास नही हो पाता है। साथ ही भगवान भाव एवं सुगंध के भूखे होते हैं। रसोईघर से निकलने वाले छौंक एवं अन्य गैस भगवान के सात्विकता में कमी लाता हैं जिसके फलस्वरूप भगवान, भगवती आदि अप्रसन्न होते हैं और उनका शुभ फल घर में रहने वाले लोगो को नहीं



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

मिल पाता।

रसोईघर में वाश–बेसिन को खाना बनाने वाले प्लेटफार्म के ठीक समानांतर नही रखना चाहिए। क्योंकि रसोईघर में आग और पानी का एक सीध में होना बीमारी और धन की हानि का कारक होता है। अतः यह ध्यान रखें कि आग और पानी एक सीध में न रहे। अगर ऐसा संभव न हो तो बीच में एक पार्टीशन लगा दें लाभ होगा। यह पार्टीशन 2'X 3' का लगाएं। रसोईघर में पत्थर तथा पानी के बीच में एक दो फुट उंचा विभाजन करने तथा पत्थर के ऊपर दीवार पर 4'X4' शीशा लगाने से भी 30 प्रतिशत लाभ होगा। रसोईघर में हमेशा 15 वाट का पीला बल्ब जलता रहना काफी लाभप्रद रहता है।

इसका प्रवेश द्वार किसी कोने से नहीं बल्कि पूर्व, उत्तर या पश्चिम की ओर होना चाहिए हवा के प्रवेश के लिए एक या दो खिड़कियां या छेद (holes) पूर्व और पश्चिम दिशा में होने चाहिए। खाना बनाने वाले गृहणियों के पीठ के पीछे द्वार न रखें अन्यथा कमर की दर्द, गर्दन की दर्द या स्पोंडेलाइसिस जैसे बीमारिओं का सामना करना पड़ता है।

डायनिंग टेबल रसोईघर में रखनी हो तो उत्तर–पश्चिम या पश्चिम दिशा की ओर रखनी चाहिए। मेजनाइन छत पश्चिम या दक्षिण की ओर रखनी चाहिए। रसोईघर की छत एवं दीवार का रंग पीला, नारंगी, गुलाबी, चॉकलेटी या लाल रखें। जहां तक संभव हो, इसे काला न रखें।

अगर रसोईघर में फ्रिज रखना हो तो आग्नेय या वायव्य की तरफ रखें। इसे भूलकर भी ईशान्य या नैऋत्य में नही रखें। दक्षिण पश्चिम दिशाओं में फ्रिज रखा जाता है तो प्रायः खराब रहता है। यदि दक्षिण–पश्चिम में रखना आवश्यक हो तो कोने से 1 फुट दूर रखें।

भोजन बनने के उपरांत पके हुए भोजन को सर्वप्रथम अग्नि देवता को अर्पित करना चाहिए। साथ ही रात्रि में सोने से पहले रसोईघर तथा जूठे बर्तनों को अच्छी तरह साफ कर लेना चाहिए। इससे घर में सुख–शांति एवं समृद्धि की प्राप्ति होती है।

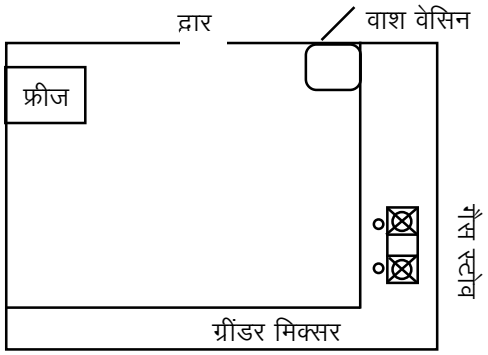


◆◆◆◆◆



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

# 22. भोजन कक्ष (Dinning Room)

डाइनिंग रूम पश्चिम दिशा में सबसे अच्छा माना जाता है। दूसरा अच्छा स्थान उत्तर एवं पूर्व दिशा की ओर माना जाता है। अगर रसोईघर दक्षिण–पूर्व में हो तो भोजन कक्ष रसोईघर के पूर्व या दक्षिण की ओर बनाएं। अगर रसोईघर उत्तर–पश्चिम में हो तो भोजनकक्ष पश्चिम की ओर बनाएं, परंतु यदि जगह की कमी हो तो उत्तर की ओर बना सकते हैं।

खाना खाते वक्त घर के गृहस्वामी का मुंह पूर्व तथा अन्य सदस्यों के मुंह पूर्व, उत्तर या पश्चिम की ओर होना चाहिए। पूर्व दिशा की ओर मुंह करके भोजन करने से व्यक्ति की प्राण शक्ति बढ़ती है और वह दीर्घायु होता है। पश्चिम दिशा की ओर मुंह करके भोजन करने से धन की प्राप्ति होती है जबकि उत्तर दिशा की ओर भोजन करने से सत्य की प्राप्ति होती है। किंतु दक्षिण की ओर मुंह करके भोजन करने से आपस में मतभेद एवं झगड़े में वृद्धि होती है। साथ ही बदहजमी, पेट में गर्मी, मुंह के छाले आदि होने की संभावना रहती है।

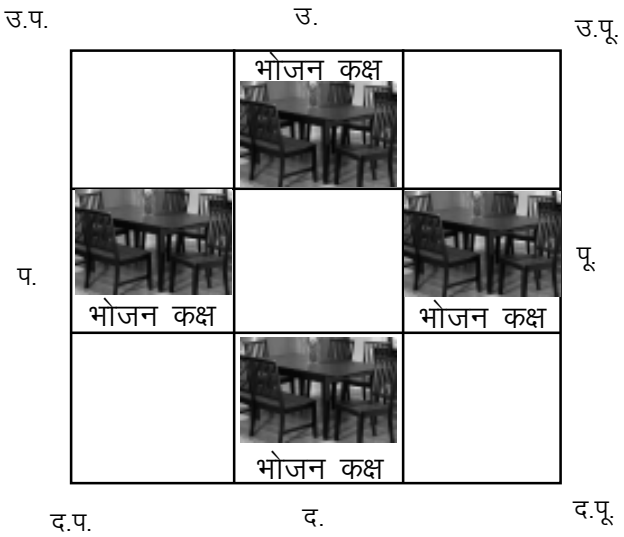


डाइनिंग टेबल गोल अंडाकार अष्टभुजकार अथवा अनियनिताकार में नहीं बल्कि वर्गाकार अथवा आयाताकार होना चाहिए। भोजन कक्ष में टेबल का आकार उसके एक भाग से दूसरा भाग दूगने से अधिक नही होना चाहिए। जैसे यदि चौडाई 4 फीट है तो उसकी लंबाई अधिकतम 8 फीट तक रखी जा सकती है। डाइनिंग टेबल को विषम माप में नही रखनी चाहिए। क्योंकि विषम माप (जैसे चौडाई 3 फीट, लंबाई 7 फीट)होने से उपयोग करने वालों में परस्पर वैमनस्यता उत्पन्न होती है।आजकल कई



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

डाइंनिंग टेबल में कोने तीखे एवं नुकीले होते है। यदि डाइनिंग टेबल के कोने तीखे एवं नुकीले हों तो उसे थोडा गोल कर दें। क्योंकि नुकीले एवं तीखे कोने वाले टेबल पर खाना खाने से आपस में लोगों के बीच मनमुटाव एवं तकरार में वृद्धि होती है। साथ ही बात–बात पर गुस्सा एवं वैमनस्यता में वृद्धि होती है। जिसके फलस्वरूप परिवार में तनाव जैसा माहौल देखने को मिलता है।

डाइनिंग टेबल के साथ सम संख्या में कुर्सियां लगाएं। भोजनकक्ष के उत्तर पूर्व में पानी रखें। वाश बेसिन भी उत्तर या पूर्व की तरफ लगाएं। पीने वाले पानी का बर्तन या मटका ईशान कोण में रखना श्रेष्ठ होता है, लेकिन गैस के ऊपर नीचे या सामानांतर न रखें। अन्यथा भवन में सुख शांति एवं समृद्धि खत्म हो जाएगी तथा कलह एवं अशांति की वृद्धि होने लगेगी। शौचालय को भोजन कक्ष के साथ जुड़ा हुआ नही रखें। परंतु कपड़े धोने की जगह रख सकते हैं। भोजन कक्ष में फ्रिज आग्नेय दिशा में रखें। भोजन कक्ष के दरवाजा को घर के मुख्य दरवाजे के सामने न रखें।

भोजनकक्ष का दरवाजा पूर्व, पश्चिम या उत्तर की ओर शुभ लाभदायक ग्रीड से रखना चाहिए। भोजन कक्ष के दरवाजे बृहस्पति के पीले रंग से रंगवाना चाहिए क्योंकि इस कक्ष पर गुरु का आधिपत्य है। भोजन कक्ष के दीवार का रंग हल्का पीला, क्रीम, नारंगी, या हल्के उजले रंग का करना शुभफलप्रद होता है। लटकते हुए बीम के नीचे डाइंनिंग टेबल नहीं रखनी चाहिए। अन्यथा भोजन करते वक्त तनाव में वृद्धि होगी।

◆ ◆ ◆ ◆ ◆



www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

# 23. स्नानागार (Bath Room)

भवन में स्नानागार के लिए सबसे उपयुक्त स्थान पूर्व दिशा है। स्नानागार घर के मध्य, दक्षिण पूर्व एवं दक्षिण पश्चिम क्षेत्र में नहीं बनाएं । साथ ही स्नानागार को सीढ़ीयों के नीचे नही बनाना चाहिए। सीढीयॉ बुध ग्रह के अंतर्गत आती है जबकि स्नानागार में जल के अधिक उपयोग होने के कारण चंद्रमा के अधिपत्य में आता है।बुध ग्रह से चंद्र ग्रह की शत्रुवत संबंध होने के कारण सीढ़ी के नीचे भूलकर भी स्नानागार नही बनाना चाहिए। स्नानागार के जमीन का ढाल उतर–पूर्व में रखें। फर्श से निकलने वाला पानी हर हालत में उत्तर–पूर्व, पूर्व या उत्तर से बहते हुए निकलना चाहिए। नल, झरना आदि उत्तर या पूर्व में रखें। खिड़कियां ऊँचाई पर उत्तर या पूर्व की ओर रखें । गीजर दक्षिण–पूर्व कोने में रखा जा

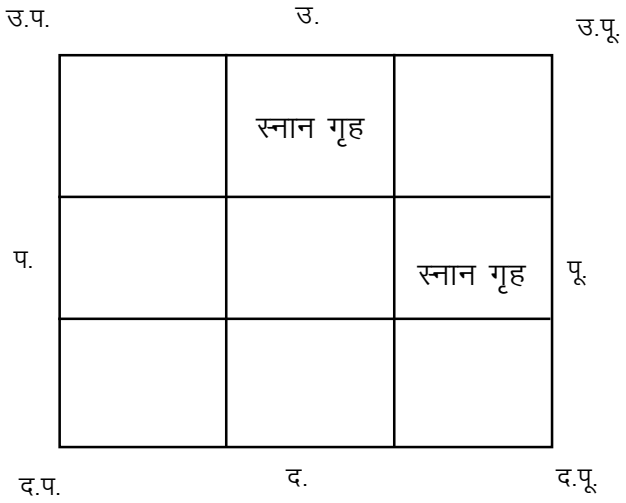


सकता है। दर्पण और बेसीन उत्तर या पूर्व की दीवार पर लगाएं। स्नानागार के दक्षिण–पश्चिम में दरवाजा न लगाएं। कपड़े धोने की मशीन को उत्तर पश्चिम या दक्षिण–पूर्व के कोने में रखा जा सकता है। गंदे कपड़े धोने की जगह स्नानागार के उत्तर–पश्चिम क्षेत्र में होनी चाहिए। कपड़े बदलने का कमरा स्नानागार में ही बनाना हो, तो पश्चिम या दक्षिण दिशा की ओर बनाए। स्नानागार में दुर्गंध, नल में रिसाव, दरवाजे में दरार आदि धन में कमी लाते है अतः इनसे बचें। स्नानागार में हल्के रंग का इस्तेमाल करना चाहिए। इसकी दीवारों पर नीले रंग की विभिन्न किस्मों का उपयोग किया जा सकता है। दर्पण स्नानागार के अंदर अवश्य लगाएं। इस बात का खास ख्याल रखें कि दर्पण हमेशा उत्तर या पूर्व की दीवार पर रहे। शयनकक्ष से सटा शौचालय युक्त स्नानागार बनाना हो तो उसके उत्तर–पश्चिम में



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

बनाना चाहिए । इसे शयनकक्ष के उत्तर–पूर्व या दक्षिण–पश्चिम की ओर नहीं बनाना चाहिए। स्नानगृह में बाथ टब पूर्व, उत्तर अथवा ईशान कोण में रखा जाना चाहिए। बाथ टब को इस तरह व्यवस्थित करें कि नहाते वक्त मुंह उतर या पूर्व दिशा में रहें। स्नानागार का द्वार पूर्व अथवा उत्तर में होना चाहिए। इसे पश्चिम या दक्षिण में भी रखा जा सकता है। सभी द्वार शुभ लाभदायक ग्रीड में ही रखने चाहिएं। स्नानगृह की दीवारों का रंग सौम्य रंग होना चाहिए जैसे आसमानी, सफेद या हल्का नीला आदि। इसे हमेशा साफ–सुथरा रखें। निम्नांकित चित्रों में एक आदर्श स्नानगृह दर्शाया गया है, जिसके उत्तर में दर्पण एवं टैप की व्यवस्था एवं स्नान करने के लिए हैंड शॉवर उत्तर पूर्व में रखी गयी है।

◆◆◆◆◆



www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

# 24. प्रसाधन कक्ष (The Toilet)

शौचालय और स्नान–घर एक साथ नहीं बनाने चाहिए। यह पद्वति भारतीय संस्कृति के अनुकूल नहीं है। अगर दोनों साथ बनाने हों तो बीच में एक दीवार अवश्य खड़ी कर लें। शौचालय भवन के मध्य स्थान, ईशान कोण, आग्नेय कोण या नैर्ऋत्य की ओर नहीं बनाएं। भवन के मध्य में टॉयलेट पूर्णतः वर्जित है। यह पूरी व्यवस्था को छिन्न–भिन्न कर डालता है। प्रगति अवरूद्ध हो जाती है तथा भवन में निवास करने वाले लोग बीमारियों के शिकार हो जाते है। शौचालय भवन के दक्षिण पश्चिम में रहने पर गृहस्वामी के स्वास्थ्य एवं जीवन के लिए अच्छा फल नहीं देता है। ईशान क्षेत्र में बना शौचालय आर्थिक परेशानियां एवं मानसिक रूप से रुग्ण बनाए रखता है। शौचालय भवन के उत्तरी वायव्य एवं पश्चिमी वायव्य की तरफ बनाना चाहिए। दूसरी प्राथमिकता नैर्ऋत्य एवं दक्षिण के मध्य का क्षेत्र है। इस स्थान पर भी शौचालय बनाया जा सकता है।

भवन में शौचालय की सीट पश्चिमी वायव्य या दक्षिण में रखें। यथासंभव सीट को उत्तर दक्षिण Axis पर रखें। शौचालय का इस्तेमाल करते समय चेहरा उत्तर या दक्षिण होना चाहिए। इसका इस्तेमाल पश्चिम की तरफ मुंह करके भी किया जा सकता है।

शौचालय में कमोड का नैर्ऋत्य एवं दक्षिण में होना उत्तम है। कमोड पर बैठते समय चेहरा उत्तर या पूर्व की तरफ रखा जा सकता है। इस तरफ चेहरा कर शौचालय का इस्तेमाल करने से कब्ज, गैस और मस्से की बीमारी नहीं होती। टॉयलेट सीट भूमि तल से एक या दो फुट ऊंची होनी चाहिए क्योकि शौचालय का भूमितल शेष भूमि की तल से नीचा रहने पर भवन में निवास करने वाले लोग रोगो की आर्थिक,

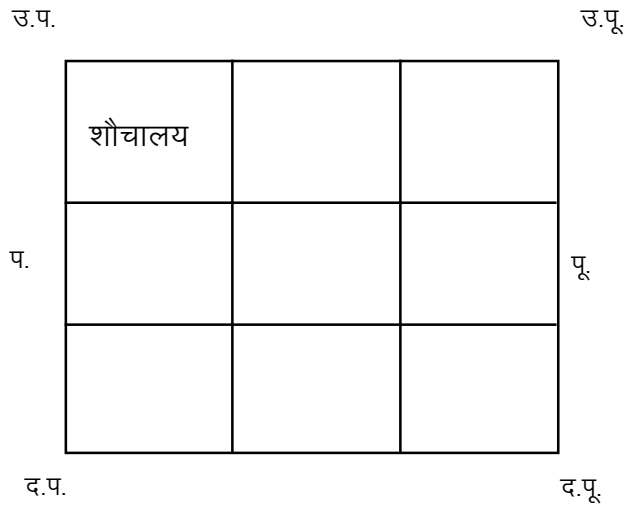




Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

शारीरिक एवं मानसिक स्थिति अच्छी नही रहती है। टॉयलेट का दरवाजा पूर्व या उत्तर की ओर रखना चाहिए। साथ है एक छोटी खिड़की पूर्व, पश्चिम या उत्तर में रखनी चाहिए। शौचालय में पानी की टंकी या नल पूर्व, उत्तर या उत्तर–पूर्व कोने में होना चाहिए। इसे कभी भी दक्षिण–पूर्व एवं दक्षिण पश्चिम में नहीं रखना चाहिए। शौचालय की छत एवं जमीन का ढाल और आउट लेट पूर्व या उत्तर की ओर रखें।

दीवार का रंग अपनी पसंद के अनुसार हल्का रखें। वर्तमान समय में पश्चिमी सभ्यता के शौचालय के साथ–साथ बाथ टब, स्नान करने के लिए फव्वारा आदि संयुक्त रूप से लगे रहते हैं, जैसे निम्न चित्रों में दिखाया गया है।

घर में प्रवेश करते ही सामने शौचालय होने से सेहत खराब रहती है, विशेषतया पेट से संबंधित बीमारियां होती हैं। ऐसी स्थिति में शौचालय के मुख्य द्वार पर 4"x4" का शीशा लगाएं।

ईशान कोण में शौचालय होने से घर या व्यवसाय की आर्थिक हानि और लोगों में मानसिक असंतुलन, असहनीय बीमारी तथा झगड़े की संभावना रहती है। शौचालय की उत्तरी दीवार पर छत के एकदम नीचे शीशे की 1 फुट चौड़ी पटट्ी लगाना लाभदायक रहेगा। शौचालय और स्नानागार संयुक्त हों और रसोई के साथ हों अर्थात् शौचालय या स्नान–घर में जाने के लिए रसोई घर से गुजरना पड़ता हो तो इस को दूर करने उपाय के लिए शौचालय की चौखट के फर्श पर दहलीज की तरफ 4 इंच चौड़ा पीला पेंट कर लें। और शौचालय की तरफ वाली दीवार, जो रसोई के साथ है, उस पर नकारात्मक उर्जा को रोकने हेतु तीन हरे पिरामिड लगाएं। शौचालय के अंदर sea salt, ceramic bowl आदि को उत्तर–पूर्व या दक्षिण–पूर्व कोने में रखें। यह नकारात्मक ऊर्जा को रोके रखता है।

◆◆◆◆◆



www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

# 25. सेप्टिक टैंक (Septic Tank)

Future Point

सेप्टिक टैंक, उत्तर दिशा को 9 बराबर भागों में बांटकर तीसरे भाग एवं पश्चिम दिशा के भी तीसरे भाग में बनाना चाहिए।जगह के कमी रहने पर वायव्य के मूल कोण से 1.5 फीट छोड़कर उत्तरी वायव्य और पश्चिमी वायव्य की और बनाई जा सकती है। अर्थात् सेप्टिक टैंक को पश्चिमी वायव्य और उत्तरी वायव्य के पास मूल कोण को छोड़ते हुए बनाना चाहिए।

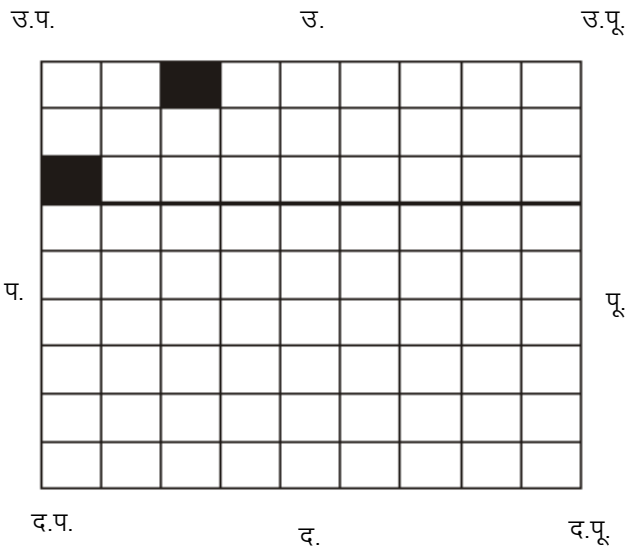


सेप्टिक टैंक दक्षिण–पूर्व, उत्तर–पूर्व या दक्षिण–पश्चिम कोने में न रखें। उत्तर दिशा में बना सेप्टिक टैंक धन एवं समृद्धि में कमी लाता है। ईशान कोण में हो तो आर्थिक विपन्नता के साथ–साथ मानसिक अशांति भी देता है। आग्नेय कोण का सेप्टिक टैंक स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छा नहीं होता है। दक्षिण में हो तो जीवन साथी के लिए हानिकारक होता है। नैर्ऋत्य कोण में होने पर घर के प्रमुख व्यक्ति के लिए अशुभ होता है और पश्चिम दिशा में होने पर मानसिक शांति को भंग करता है।

सेप्टिक टैंक चारदीवारी या भवन की नींव से सटा नहीं होना चाहिए। यह कम से कम एक या दो फुट दूर हो किंतु जमीन के तल से ऊंचा न हो। सेप्टिक टैंक के उत्तर या पूर्व में आउट लेट रखें ।

सेप्टिक टैंक की लंबाई पूर्व–पश्चिम दिशा में एवं चौड़ाई उत्तर–दक्षिण दिशा में होनी चाहिए।



www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

## विभिन्न दिशाओं में सेप्टिक टैंक के अशुभ प्रभाव

(1) उत्तर – धन की हानि
(2) उत्तर–पूर्व – व्यापार में हानि
(3) पश्चिम – मान प्रतिष्ठा में कमी
(4) दक्षिण–पूर्व – धन की हानि
(5) दक्षिण – पत्नी शोक
(6) दक्षिण–पश्चिम – आयु में कमी
(7) पश्चिम – मानसिक शांति में कमी

## नाली

(1) नाली, ऊपरी मजिंलों में भी, दक्षिण पश्चिम में न रखें ।

(2) आउटलेट दक्षिण की ओर नहीं रखना चाहिए। अगर यह दक्षिण में हो तो उसे घुमाकर पूर्व एवं उत्तर की ओर करना चाहिए।

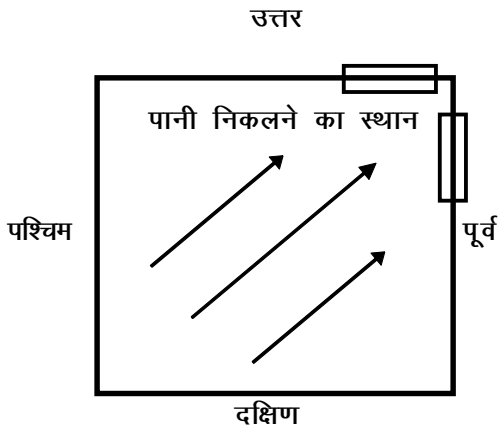


(3) प्रसाधन कक्ष और स्नानघर का पाइप पश्चिम या उत्तर–पश्चिम तरफ से मोड़कर पूर्व या उत्तर तरफ रखें।

(4) शौचालय में प्रयोग किया हुआ जल वायव्य दिशा की ओर से रखना चाहिए। स्नान घर,रसोई घर, पेड–पौधे की सिंचाई एवं फर्श आदि की धुलाई किए गए जल को ईशान क्षेत्र से बाहर निकालना चाहिए।

◆ ◆ ◆ ◆ ◆



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

# 26. शयन कक्ष का स्थान
# General Location of the Bedrooms

उत्तर–पूर्व की दिशा परम पिता परमेश्वर की दिशा है जिस पर देव गुरु बृहस्पति का आधिपत्य होता है। अतः इस दिशा में शयन–कक्ष नहीं बनाना चाहिए क्योंकि भोग विलास और शयन सुख पर शुक्र का आधिपत्य है। यह दिशा अर्थात् गुरु के क्षेत्र में शयन कक्ष होने पर गुरु शुक्र के प्रभाव में कमी लाएगा जिसके फलस्वरूप उचित शयनसुख नहीं मिल पाएगा। आपसी प्रेम में कमी एवं तकरार की स्थिति बनी रहेगी। साथ ही लंबी गंभीर बीमारियों का सामना भी करना पड़ता है परंतु सत्तरह–अठारह साल तक के बच्चे के लिए ईशान क्षेत्र में शयनकक्ष बनाया जा सकता है। इस दिशा में शयनकक्ष रहने पर बच्चे अनुशासित और मर्यादित बने रहेंगे क्योंकि ज्ञान के स्वामी गुरु एवं बुद्धि के स्वामी बुद्ध ग्रह का संयुक्त प्रभाव इस क्षेत्र पर बना रहता है। इसके अतिरिक्त इस क्षेत्र में जल तत्व की अधिकता रहती है जो बच्चों के विकास के लिए आवश्यक है। घर में वृद्ध जन जो सांसारिक कार्यों से विरक्त हो गए हैं उन्हें ईशान क्षेत्र में सुलाया जा सकता है।

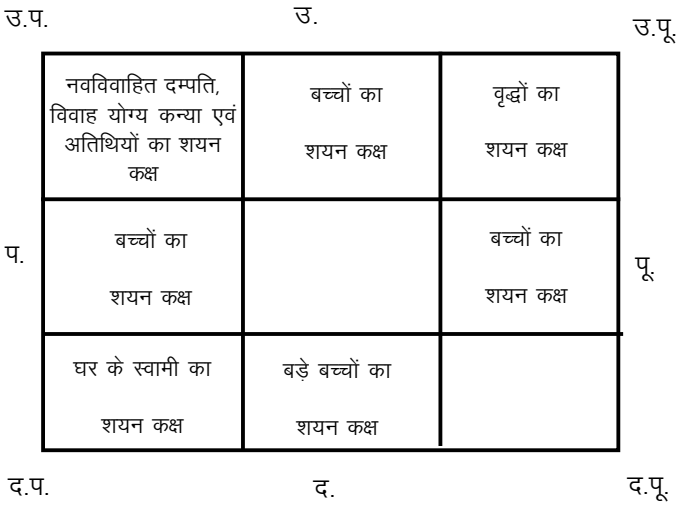


सत्तरह अठारह साल के बाद के बच्चों के लिए दक्षिण–पूर्व में शयनकक्ष बनाया जा सकता है। परंतु जो बच्चे आक्रमक एवं झगड़ालु प्रवृत्ति के हों उन्हें दक्षिण–पूर्व के कमरे में नहीं सुलाना चाहिए क्योंकि यह क्षेत्र अग्निशासित होता है। ऐसे में उन्हें इस दिशा के किसी कक्ष में सुलाने से उनके क्रोधी और झगड़ालू हो जाने का भय रहता है। नवविवाहित दम्पति को भी इस क्षेत्र में नहीं रहना चाहिए। गर्भवती



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

महिला के लिए भी यह क्षेत्र अच्छा नहीं है। यह दाम्पत्य जीवन में तनाव एवं नींद में कमी लाता है। परंतु वैसे नव दम्पति को जिनमें संतान उत्पन्न करने की इच्छा कम हो इस क्षेत्र में शयनकक्ष देना चाहिए क्योंकि दक्षिण–पूर्व पर शुक्र का आधिपत्य एवं अग्नि का वास होता है। प्रेम संबंधों में वेग और ऊष्मा के लिए यह क्षेत्र उपयुक्त होता है। इस दिशा में शयन कक्ष होने पर ऊर्जा और स्फूर्ति का संमुचित संचार होता है जिसके फलस्वरूप संतान उत्पन्न करने की इच्छा बलवती होती है। परंतु जिस महिला को बार–बार गर्भपात होता हो उसे इस क्षेत्र में नहीं रहना चाहिए।

दाम्पत्य संबंधो में प्रगाढ़ता, आपसी प्रेम तथा खुशियों के लिए भवन में नव विवाहित दम्पतियों के लिए उत्तर–पश्चिम के क्षेत्र में अर्थात् वायव्य की ओर शयनकक्ष बनाना चाहिए । इसे नव दम्पति वंश वृद्वि के इच्छा रखने पर भी इस्तेमाल कर सकते है। संतान की इच्छा रखने पर सिर दक्षिण या पूर्व की ओर कर सोये काफी मदद मिलेगी। गर्भवती हो जाने पर दम्पति को दक्षिण की तरफ शयन कक्ष में सुलाया जा सकता है। अच्छे दाम्पत्य सुख के लिए पति के बायें पत्नी को सोना चाहिए।

घर के बड़े व्यक्ति या मुख्य व्यक्ति का शयनकक्ष भवन के दक्षिण–पश्चिम में बनाना चाहिए। इसे मुख्य शयनकक्ष भी कहते हैं। यह दिशा पृथ्वी तत्व का द्योतक है। यह घर को स्थायित्व देती है एवं ठोस निर्णय लेने में गृहस्वामी की मदद करती है। इस कक्ष में बेड दक्षिण या पश्चिम की तरफ नैर्ऋत्य कोण में रखें। दक्षिण–पश्चिम के कमरे का इस्तेमाल गृहस्वामी और बड़े व्यक्ति को करना चाहिए इससे वे अपने आप को सुखी महसूस करते हैं। दक्षिण में बड़े बच्चों का शयनकक्ष भी हो सकता है।

अविवाहित बच्चों या मेहमानों के लिए उत्तर–पश्चिम का भाग शयनकक्ष के लिए उपयुक्त होता है शीघ्र विवाह होने की संभावना रहती है। क्योंकि चन्द्र इस दिशा का स्वामी है जो शीघ्र विवाह एवं स्थान परिवर्तन करवाता है। अतः जो लड़कियां विवाह योग्य हों उन्हें उत्तर–पश्चिम के कमरें में शयनकक्ष देने से उनका विवाह शीघ्र होने की संभावना रहती है। यह जगह मेहमानों के लिए भी उपयुक्त होती है। वे आते तो अवश्य हैं परंतु शीघ्र ही चले भी जाते हैं, क्योंकि यह क्षेत्र चन्द्र के साथ–साथ वायु द्वारा



www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

शासित होता है जो गतिशीलता का द्योतक है। बच्चों के कमरे उत्तर–पश्चिम में नहीं होने चाहिए अन्यथा उनमें चंचलता बढ़ जाएगी और पढ़ाई के प्रति एकाग्रता में कमी आएगी।

शयनकक्ष घर के मध्य स्थान में न रखें । ब्रह्म स्थान बहुत सारी ऊर्जा को खिंचता है इसलिए आराम एवं शांति के लिए यह स्थान उपयुक्त नहीं रह पाता है।

सोते समय पैर पूर्व की तरफ रहने पर नाम, यश एवं भाग्य और पश्चिम की तरफ रहने पर मानसिक शांति एवं धार्मिक प्रवृत्ति में वृद्धि होती है । उत्तर की ओर पैर कर सोने से धन एवं भाग्य की वृद्धि होती है किंतु दक्षिण की ओर पैर कर सोने पर अच्छी नींद नहीं आती। मनुष्य के सिर को उतरायण और पैर को दक्षिणायन माना गया है। यदि सिर को उतर की ओर रखेंगे तो पृथ्वी क्षेत्र का उतरी ध्रुव मानव के उतरी ध्रुव से घृणा कर चुबंकीय प्रभाव को अस्वीकार करेगा जिससे शरीर में रक्त संचार हेतु उचित और अनुकूल चुबंकीय क्षेत्र का लाभ नही मिल सकेगा। जिस कारण मस्तिष्क में तनाव होगा और शरीर को शांतिमय निंद्रा का अनुकूल अवस्था प्राप्त नही होगी। साथ ही बुरे स्वप्न अत्यधिक दिखाई पड़ेगें। छाती में दर्द एवं जकड़न महसुस होगी । यह भाग यम स्थान के नाम से भी जाना जाता है इसी कारण मरे हुए व्यक्ति का पैर दक्षिण की तरफ रखा जाता है। अतः सिर दक्षिण दिशा में रखकर सोना अत्यधिक लाभप्रद है क्योंकि सिर दक्षिण दिशा में रखकर सोने से चुंबकीय परिक्रमा पूरी होने के कारण चुबंकीय तरंगों के प्रभाव में रूकावट नही होने से अच्छी नींद आयेगी।

कुछ भवन सही ढंग से उत्तर, दक्षिण, पूर्व एवं पश्चिम में नहीं होते । ऐसे भवन में शयन कक्ष अपने उचित दिशाओं में हीं बनाना चाहिए। शयनकक्ष में साथ हीं बाथरूम, बाथटब, टॉयलेट, चेंज रूम आदि रखने हों तो पश्चिम या उत्तर की तरफ बनाएं शयनकक्ष में दक्षिण–पश्चिम एवं पश्चिम कोना कभी खाली न रखें।

पति पत्नी विशेषतया नवविवाहित दम्पति के कमरे में दर्पण का प्रयोग अत्याधिक हानिकारक होता है। अतः इसका इस्तेमाल भूलकर भी न करें। टी० वी० और कम्प्यूटर कमरे में होने से दाम्पत्य जीवन में धीरे–धीरे तनाव एवं अलगाव शुरू हो जाता है। अतः इस वस्तुओं को शयन कक्ष में न रखें। यदि ड्रेसिंग टेबल की आवश्यकता हो तो उसे उत्तरी या पूर्वी दीवार पर इस तरह रखें कि सोते समय अपना प्रतिबिंब या शरीर का कोई हिस्सा उसमें दिखाई न पड़े अन्यथा वह हिस्सा पीड़ित रहेगा।

शयन कक्ष में पलंग की स्थिति कभी भी इस तरह नही रखनी चाहिए जिससे सोने वाले का सिर अथवा पैर सीधें द्वार की तरफ हो। ऐसी स्थिति में रहने पर सोने वाले को हमेशा मृत्यु समान भय बना रहता है। साथ ही दाम्पत्य जीवन सुखमय नही रहता है। अतः शयन कक्ष में पलंग द्वार के विपरित कोने में रखें। पलंग से द्वार दिखता रहें इस बात का ध्यान रखें। पलंग को किसी दीवार के साथ लगा कर रखें यह स्थिति दाम्पत्य जीवन में स्थिरता लाती है। पलंग को कभी भी उभरे हुए बीम के नीचे न रखें। बीम दोनों के मध्य आता हो तो उससे आपसी संबंध खराब रहता है और शरीर को काटते हुए रहने के कारण स्वास्थय के लिए घातक होता है।



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

शयन कक्ष का बिस्तर अगर डबल बेड हो और उसमें गद्दे अलग–अलग हों तथा पति पत्नी अलग अलग गद्दे पर सोते हों तो उनके बीच तनाव रहता है और आगे चलकर वे अलग हो जाते हैं। अतः इस कारण ऐसा शयन कक्ष में ऐसा बिस्तर रखें जिसमें पुरा एक ही गद्दा हो।

मुख्य शयनकक्ष के छत का सतह अन्य कक्षों की तुलना में नीचा नही होना चाहिए। इसे भवन के परिसर के अन्य छतों के स्तर के समान या ऊँचा रखा जा सकता है। इसी तरह मुख्य शयनकक्ष के जमीन की सतह भवन के अन्य कक्षों के सतहों की अपेक्षा ऊँचा रखना विशेष लाभप्रद होता है।

शयन कक्ष का दरवाजा एक पल्ले का होना चाहिए। इसे उत्तर–पूर्व एवं पश्चिम की तरफ रखें। छोटी खिड़कियां पूर्व एवं उत्तर की तरफ रखें। आलमारी, शोकेस आदि दक्षिण या पश्चिम की दीवार की तरफ रखें। मैगजीन दक्षिण या पश्चिम की तरफ रखें। शयन कक्ष में बिजली का सामान एवं उपकरण दक्षिण पूर्व कोनें में रखें।

शयनकक्ष में पूर्वजों के चित्र युद्ध के दृश्य, हिंसक पशु–पशुओं के चित्र अशुभ परिणाम देते हैं। अतः शयनकक्ष में इन चित्रों को नही लगाना चाहिए।

शयन कक्ष में पढ़ाई–लिखाई पश्चिम की तरफ करनी चाहिए। इसे पूर्व की तरफ भी रख सकते है। पढ़ाई पूर्व की ओर मुँह करके करना विशेष लाभप्रद होता है।

शयन कक्ष की दीवार हल्के गुलाबी, भूरे, चॉकलेट या हरे रंग की होनी चाहिए। और कमरे में सफेद संगमरमर नहीं लगाना चाहिए।

शयन कक्ष के बाहर दरवाजे पर बागुआ दर्पण लगाना चाहिए यह नकारात्मक ऊर्जा को दूर करता है। यह दर्पण लाल घागे में बांध कर लटकाना चाहिए।

◆◆◆◆◆



www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

# 27. अध्ययन कक्ष
# Study Room

Future Point

अध्ययन कक्ष का सबसे उपयुक्त स्थान पश्चिम दिशा है क्योंकि इस दिशा पर विद्या की देवी मां सरस्वती का वास होता है। इसके अलावे उत्तर, पूर्व एवं ईशान क्षेत्र में भी अध्ययन कक्ष बनाया जा सकता है। उत्तर दिशा पर मनस चेतना के कारक ग्रह बुध, ईशान क्षेत्र पर ज्ञान के ग्रह गुरु एवं पूर्व पर आत्म कारक सूर्य का अधिकार होता है। अतः इन क्षेत्रों में अध्ययन कक्ष रखने से बच्चों के अध्ययन में काफी लाभ मिलता है। जिन बच्चों की जन्मपत्री में बुध एवं गुरु कमजोर हो उनके लिए अध्ययन कक्ष ईशान या उत्तर के क्षेत्र में बनाना चाहिए। जो बच्चे सुस्त एवं आलसी हों उनका अध्ययन कक्ष पूर्व की ओर रखें। अध्ययन कक्ष भूल कर भी दक्षिण–पश्चिम या उत्तर–पश्चिम में न बनाएं। पढ़ाई करते वक्त मुंह उत्तर या पूर्व की ओर होना चाहिए। इससे बच्चे विलक्षण प्रतिभा के धनी एवं ज्ञानवान होंगे।

किताबों के लिए रैक दक्षिण–पश्चिम या उत्तर पश्चिम के कोने में नहीं होना चाहिए। अगर यह उत्तर–पश्चिम के कोने में हो तो किताबें चोरी हो जाया करेंगी। अगर वे दक्षिण पश्चिम में रहे तो उसका अधिकतम इस्तेमाल न हो पायेगा। इसलिए Small Cup Board में इसे पूर्व या उत्तर तरफ रखें। अध्ययन कक्ष की खिड़की पूर्व, पश्चिम एवं उत्तरी दीवार की तरफ रखें। अध्ययन कक्ष का दरवाजा उत्तर–पूर्व, उत्तर, पूर्व या पश्चिम में रखें। इसे दक्षिण–पूर्व, उत्तर–पश्चिम और दक्षिण पश्चिम कोने में न रखें। बच्चों के अध्ययन कक्ष का रंग हल्का सात्विक कलर और पर्दों का रंग हल्का हरा, हल्का आसमानी या क्रीम रंगो का होना चाहिए। जिन बच्चों में एकाग्रता एवं मनश्चेतना में कमी रहे उन्हें हल्के हरे रंग के रंगों की दीवार एवं पर्दों का इस्तेमाल अधिक से अधिक करना चाहिए। सुंदर फूल, मां सरस्वती का चित्र पूर्वी

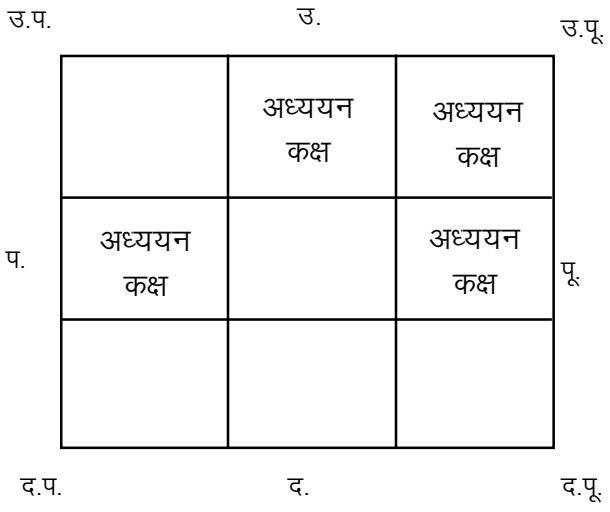




www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

दीवार पर लगाना चाहिए। संभव हो सके तो अध्ययन कक्ष के ईशान कोण में सरस्वती यंत्र लगाए जाऐ। बच्चों का कमरा साफ–सुथरा अवश्य रखें ताकि तनाव मुक्त होकर एकाग्रता पूर्वक अध्ययन कर सकें। कमरे के ईशान कोण में कम से कम सामान रखें। लटकता हुआ बीम के ठीक नीचे अध्ययन नही करना चाहिए इससे एकाग्रता में कमी आती है। बच्चों को बैठकर अध्ययन करते समय पीठ के पीछे ठोस दीवार का होना सर्वोतम होता है। इससे आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। बच्चों की टेबल पर कम से कम सामग्री रखी जाए एवं एकाग्रता पूर्वक अध्ययन करने के लिए टेबल पर सामने पिरामीड एवं Education tower रखना विशेष लाभप्रद होता है।

◆ ◆ ◆ ◆ ◆



www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

# 28. तिजोरी कक्ष
# The Strong Room

वास्तु शास्त्र में धन रखने के लिए सबसे उपयुक्त एवं शुभ स्थान उतर दिशा को माना गया है। क्योंकि इस दिशा का स्वामी कुबेर हैं । कुबेर समृद्धि के देवी मॉ लक्ष्मी के खजांची है। इसलिए स्ट्रांग रूम उत्तर में रखने की सलाह दी जाती है। ताकि धन एवं समृद्धि का प्रवाह भवन में निरंतर बना रहे। जिस आलमारी में रूपये एवं आभूषण–जेवरात रखने हो उसे उत्तर दिशा के कमरे में दक्षिण की दीवार से सटाकर रखनी चाहिए । इस प्रकार रखने से आलमारी उतर दिशा की ओर खुलेगी जो काफी शुभफलप्रद मानी जाती है। ईशान एवं पूर्वी दिशा के कमरे में भी आभूषण जेवरात एवं रूपये रखना अच्छा माना गया है। इससे धन में वृद्वि होती है तथा गृहस्वामी को इसकी कमी महसूस नही होती है। आग्नेय दिशा में धन संपति रखने से कर्ज की स्थिति बनी रहती है जबकि दक्षिण दिशा में धन, आभूषण एवं जेवरात रखना लाभप्रद नही रहता। क्योंकि दक्षिण में यम् एवं दुर्गुणी आत्मा का वाश होता अतः इनकी ओर आलमारी की पीठ रखना ही शुभ होगा। आलमारी को नैऋत्य दिशा की ओर रखने पर धन संपति स्थायी रूप से रहती है परंतु इस बात का पता चलता है कि यह धन संपति नजायज ढंग से कमाया हुआ है। पश्चिम दिशा की ओर धन संपति रखने पर साधारण लाभ मिलता है। परंतु घर का मुख्य व्यक्ति अपने मित्रों के सहयोग के बावजूद अत्यधिक कठिनाई के साथ धन कमा पाता है। जीवन में लाभ–हानि समय समय पर आते रहते है। वायब्य दिशा में धन जेवरात रखने पर आमदनी के अपेक्षा खर्च अधिक

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

होता है ऐसे व्यक्ति का बजट हमेशा गड़बड़ाया रहता है तथा उसपर कर्ज का बोझ बना रहता है। यदि किसी कारणवश धन संपति एवं जेवरात को उतर दिशा में नहीं रखी जा सके तो तिजोरी या आलमारी को घर के किसी भी भाग में उसे दक्षिण की दीवार पर इस तरह सटाकर रखना चाहिए कि खुलने वक्त उसका मुँह उतर की ओर रहे। सीढ़ियों के नीचे तथा सामने तिजोरी या आलमारी नही रखनी चाहिए तथा साथ ही स्नान घर के सामने भी न रखें। तिजोरी वाले कमरे में कबाड़ या गंदगी नही होनी चाहिए अन्यथा धन संपत्ति में वृद्वि नही होती साथ ही घर में तंगहाली एवं बदहाली की स्थिति बनी रहती है। स्ट्रांग रूम में तिजोरी दक्षिण की दीवार से 1 इंच जगह छोड़कर रखनी चाहिए। स्ट्रांग रूम का दरवाजा उत्तर एवं पूर्वी दीवार पर काफी लाभप्रद होता है। तिजोरी उत्तरी दरवाजे के सामने न रखें, न ही इसके समीप रखें। दक्षिण–पूर्व, दक्षिण–पश्चिम, उत्तर–पश्चिम, पश्चिम एवं दक्षिण की तरफ स्ट्रांग रूम का दखाजा न रखें।तिजोरी, कीमती सामान, सोना, चांदी, एवं गहना (Jewellery) आदि कमरे के पश्चिम या दक्षिण की तरफ रखें।तिजोरी, चबूतरे पर नहीं बल्कि सतह (Floor) पर ही रखें।तिजोरी, को उसकी टांगों पर रखना चाहिए। तिजोरी कक्ष का दरवाजा केवल एक होना चाहिए, जिसके पल्ले दो हों। तिजोरी कक्ष के कमरे का रंग हल्के क्रीम या हल्के हरे रंग का रखें।

Future Point

◆ ◆ ◆ ◆ ◆



www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

# 29. बेसमेंट / सेलर
# The Basement/Cellar

Future Point

आवासीय भूखंड में **बेसमेंट** नहीं बनाना चाहिए क्योंकि **बेसमेंट** सूर्य की किरणों के लाभ से वंचित रहता है। अगर अनिवार्य हो तो उत्तर–पूर्व में **ब्रह्म** स्थान को बचाते हुए बनाना चाहिए।इस स्थान पर बनाया बेसमेंट भूस्वामी एवं उनके संतानों के लिए शुभ फलप्रद होता है। साथ ही **बेसमेंट** के आकार के 1/4 या इससे अधिक सतह पर प्रातःकालीन किरणें खासकर 7:00 से 10:00 बजे के बीच पड़नी चाहिए। **बेसमेंट** की ऊंचाई कम से कम 9 फुट और भूमि से कम से कम 3 फुट ऊपर हो ताकि प्रकाश और हवा आवागमन बना रहे। तहखाने एवं बेसमेंट का विस्तार दक्षिण एवं पश्चिम दिशा की अपेक्षा उत्तर एवं पूर्व दिशा की ओर अधिक होना चाहिए। पश्चिम दक्षिण दिशा में तहखाना भूलकर नहीं बनाना चाहिए। इन जगहों पर बनाने से परिवार के लोगों के स्वास्थय एवं आयु में कमी भाग्य में कमी तथा आपदाओं का सामना करते देखा गया है। साथ ही क्लेश, कर्ज, महापातकी एवं गरीबी पीछा नहीं छोडता। पोलियों तथा कैंसर जैसी आसाध्य बीमारियों को अक्सर होते देखा गया है। भाग्य सो जाता है तथा रोजी–रोटी के लिए मोहताज होने लगते है।अतः दक्षिण–पश्चिम में भूलकर भी तहखाने या बेसमेंट का निर्माण न करायें। तहखाने या बेसमेंट को कभी भी शयनकक्ष के रूप में उपयोग नही करना चाहिए। इसका प्रयोग लिविग रूम, मीटिंग रूम, पूजा गृह अध्ययन कक्ष आदि के रूप में किया जा सकता है। परन्तु भोजन कक्ष, शौचालय और स्नानगृह के रूप में इसका प्रयोग नही करना चाहिए।

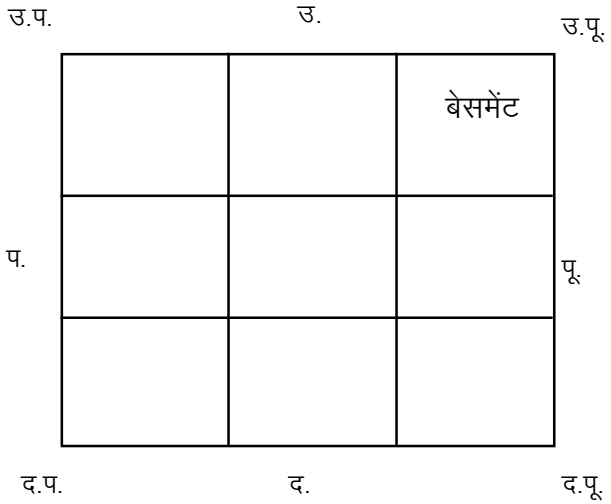




www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

बीमार व्यक्ति को **बेसमेंट** में नहीं रहना चाहिए अन्यथा वह जल्द ठीक नहीं हो पाता है। **बेसमेंट** का इस्तेमाल व्यापार के लिए किया जाता है अतः इसे स्टोर के रूप में प्रयोग करना चाहिए। कितना भी प्रयास किया जाए **बेसमेंट** में **व्यवसाय** का 60% लाभ ही प्राप्त होता है। **बेसमेंट** में व्यवसाय चलने पर इनवॉइस वहीं पर काटनी चाहिए परंतु कैश काउंटर भूमि तत्व पर रखना चाहिए। इसे **बेसमेंट** में न रखें। **बेसमेंट** में व्यवसाय उत्तर–पश्चिम में अच्छा होता है। परंतु अकस्मात् व्यवसाय में हानि और चोरी की संभावना बनी रहती है। उत्तर की ओर मुंह करके बैठना व्यवसाय के लिए लाभप्रद होता है। साथ ही उत्तर की तरफ बड़ा सा Ventilation रखना चाहिए। **बेसमेंट** का दरवाजा एवं खिड़की उत्तर एवं पूर्व में रखना चाहिए। बोरवेल या जल स्रोत उत्तर पूर्व में रखा जाएं यह काफी लाभप्रद रहता है। यह धन में वृद्धि करता है। **बेसमेंट** में होटल दक्षिण–पूर्व की तरफ सफलता पूर्वक चलता है लेकिन इसके लिए रसोईघर को वास्तु के अनुरूप रखने की आवश्यकता होती है। **बेसमेंट** के अंदर का भाग मंदिर चुंबकीय शक्ति से भरा होता है एवं दूसरी शक्ति संतों द्वारा उत्पन्न होती है, जहां वे पूजा करते हैं। अतः **बेसमेंट** में पूजा करना लाभप्रद होता है। तहखाने के ईशान क्षेत्र में पूर्वी दीवारों पर देवी देवताओं की मूर्ति लगाना विशेष शुभफलप्रद होता है। तहखाने में रोशनी की पूर्ण व्यवस्था होनी चाहिए। तहखाने में जल निकासी का मुकम्मल व्यवस्था होनी चाहिए। अन्यथा गृहस्वामी को कष्टों का सामना करना पड़ता है। तहखाने में आलमारी,सोफा, पलंग, टेबल–कुर्सी आदि दक्षिण पश्चिम भाग में रखनी चाहिए। तहखाने में पर्दे, चादरें, दिवारों के रंग हल्का गुलाबी या हल्का आसमानी रखनी चाहिए।

◆ ◆ ◆ ◆ ◆



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

# 30. गैरेज और बरामदा
# Garages & Verandah

Future Point

गैरेज वायव्य में ही बनाना चाहिए। इस क्षेत्र में जगह नहीं रहने पर आग्नेय बनाया जा सकता है। इसे दक्षिण–पश्चिम की ओर नहीं बनाना चाहिए। गैरेज Compound Wall या मुख्य भवन से सटा नहीं होना चाहिए। यदि गाड़ी पार्किंग के लिए पोर्टिको बनाना हो तो उसे उत्तर–पूर्व एवं उत्तर, पूर्व में रखना चाहिए पोर्टिको के छत की ऊँचाई मुख्य भवन के छत से एक या दो फीट नीचे रखनी चाहिए।

पोर्टिको की छत के सहारे के लिए उत्तर–पूर्व पर पिलर न बनाएं। इसके बदले कैन्टीलीवर डिजाइन पर छत बनाएं जो मुख्य छत से थोड़ा नीचे रहे। पार्किंग वाहन का मुंह उत्तर–पूर्व की ओर हो। बाहर जाते समय वाहन का पहला मोड़ दाईं तरफ होना चाहिए। बेसमेंट में उत्तर और पूर्व दिशा पार्किंग के लिए उपयुक्त स्थान है। पोर्च या गैरेज उजले, पीले या अन्य हल्के रंग का होना चाहिए। इसे काला या भूरा रंग नहीं करें।गैरेज के सतह का ढाल उतर पूर्व की तरफ रखें। यात्रा करते समय दिक्शूल का ख्याल रखें ताकि यात्रा सुखमय हो। वाहन के अंदर डेस्क बोर्ड पर मारूति यंत्र या वाहन दुर्घटना नाशक यंत्र लगायें। इससे दुर्घटना का भय नही रहता। साथ ही पिरामीड रखें इससे वाहन के अंदर निरंतर सकारात्मक ऊर्जा बनी रहती है। जो गाडी चलाने एवं यात्रा करने वाले के लिए लाभप्रद होता है।

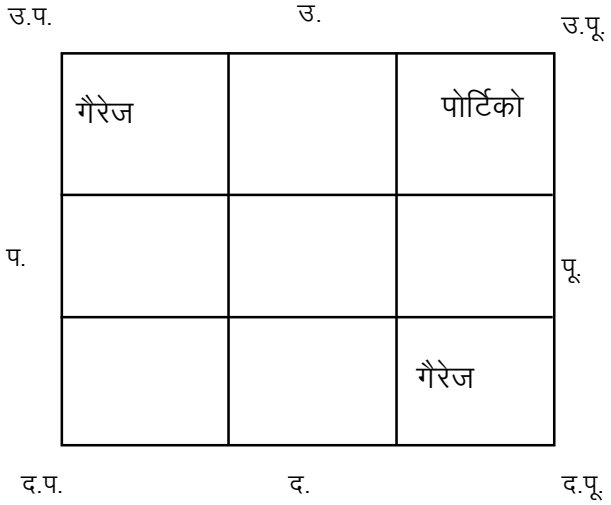




www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

# बरामदा (Verandah)

बरामदा मुख्य भवन में पूर्व उत्तर की ओर बनाना चाहिए। यह घर का अर्द्ध निजी क्षेत्र होता है। यहां पर आगंतुकों को बैठाया जा सकता है। जिन्हें घर में ले जाना उचित न हो उन्हें बरामदा में बैठाया जा सकता है। घर के स्वागत कक्ष के रूप में इसका उपयोग कर सकते हैं। इसे घर के उत्तर एवं पूर्व में रखना लाभप्रद रहता है। बरामदे की छत मुख्य भवन की छत से थोड़ी नीचे एवं छत का झुकाव पूर्व या उत्तर की तरफ रखना चाहिए जो कि लाभप्रद होता है। दक्षिण पश्चिम की ओर बने बरामदे को छत के सतह से थोडा ऊँचा एवं जमीन के सतह का ढाल उतर पूर्व की ओर रखना चाहिए। वायव्य एवं आग्नेय दिशा की ओर निर्मित बरामदे की छत को भवन के छत के समानांतर रखना शुभफलप्रद होता है। बरामदा के सामने छोटे–छोटे खुबसूरत पौधे एवं घास लगायें जो कि पर्यायवरण के दृष्टिकोण से लाभप्रद होता है। साथ ही मन को प्रफुल्लित करते हैं। घर को साफ एवं स्वच्छ रखना हो तो बरामदे के उत्तर पश्चिम में जूते, चप्पल को रखने के लिए Shoe rack या Shoe Cabinet लगा दें। वहां पर जूते खोल कर रख दें और वहां से घर में पहनी जाने वाली चप्पल पहनकर प्रवेश करें। बरामदे में छोटा वास बेसिन और टॉवेल स्टैंड उत्तर पूर्व में रखें। बरामदे में बैठने के लिए दक्षिण या पश्चिम की तरफ व्यवस्था करें। बरामदे में खिड़कियां अधिक होनी चाहिए ताकि हवा का उचित प्रवाह हो सके। शीशे की खिड़कियां उत्तर और पूर्व की ओर लगा सकते हैं। Heavy furniture और Heavy plants दक्षिण और पश्चिम की तरफ और हल्के फर्नीचर और फूलों के गमले उत्तर और पूर्व दिशाओं की ओर रखें।

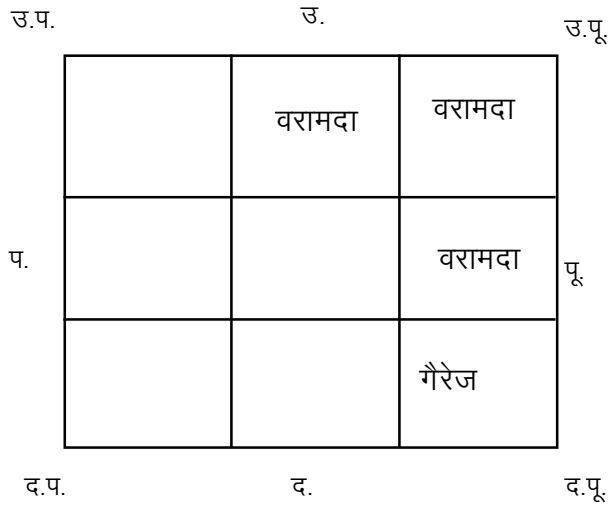


◆ ◆ ◆ ◆ ◆



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

# 31. भंडार कक्ष
# The Store Room

Future Point

मुख्य भवन के वायव्य क्षेत्र में खाद्य पदार्थ अर्थात अनाज रखने के लिए भंडार गृह बनाना चाहिए। वायव्य में रखने से पूरे भवन में अनाज की नियमित आपूर्ति हमेशा बनी रहती है। अतः प्रत्येक दिन इस्तेमाल की जाने वाली वस्तुओं का भंडार उत्तर पश्चिम के कोने में करना चाहिए। इसे यथासंभव साफ–सुथरा रखें इसके दरवाजे उत्तर एवं पूर्व में रखें। खिड़कियां भी कमरे के उत्तर एवं पूर्व में रखें। भारी मशीन, औजार, लकड़ी काटने के औजार, लकड़ी रखने का कमरा आदि मुख्य भवन के दक्षिण–पश्चिम में खुली जगह या भवन के दक्षिण–पश्चिम के कोने में रखें। भंडार कक्ष खुली जगह में दक्षिण–पश्चिम में बनाना हो तब इसे चारदीवारी और मुख्य भवन के बीच दक्षिण–पश्चिम कोने में चारदीवारी के सपोर्ट पर रखना चाहिए। चारदीवारी के सपोर्ट पर सिर्फ दक्षिण पूर्व क्षेत्र में ही रखें। इस स्थान पर भारी समान रखें। किसी भी तरह की दरार या सीलन कमरे की दीवार या छत में न हो। इस कमरे को किराए पर किसी को न दें। दक्षिण पश्चिम में दरवाजे न रखें। तेल, घी, गैस सिलेंडर, किरोसिन आदि भंडार कक्ष के दक्षिण या आग्नेय कोण में रखें। छोटे परिवार के लिए भंडार कक्ष दक्षिण पश्चिम या उत्तर–पश्चिम रहने पर भारी बक्सों एवं भारी सामान को दक्षिण और पश्चिम की दीवार की तरफ रखें। खाद्य सामग्री उतर एवं पश्चिम तरफ रखें। तेल, घी, गैस सिलेंडर, किरोसिन आदि दक्षिण पूर्व कोने में रखें। भंडार गृह में खाद्य सामग्री के पात्र को पुरी तरह से खाली नही होने देना चाहिए। जबतक नवीन सामग्री उन में भर नही जाती तब तक पिछला अन्न या सामग्री कुछ न कुछ शेष रहने देना चाहिए। भंडार गृह के द्वार उतर एवं पूर्व की तरफ शुभलाभदायक ग्रीड में रखें। घर के अनुपयोगी एवं भारी वस्तुओ के लिए भंडार गृह नैऋत्य क्षेत्र में बनाना चाहिए। नैऋत्य क्षेत्र के भंडार गृह में पानी या दीवारों पर नमी या सीलन नही होनी चाहिए।

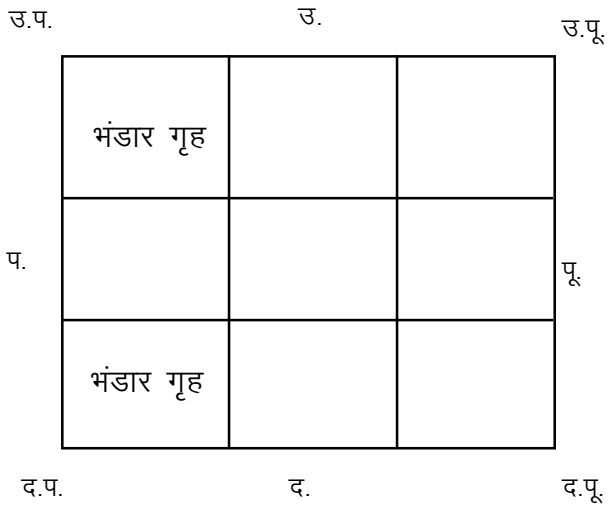




www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

# 32. फ्लैट, अपार्टमेंट और आवासीय परिसर

Future Point

आजकल जमीन की कमी एवं बढ़ती कीमत के कारण महानगरों में जमीन लेकर वास्तु सम्मत मकान बनाना एक स्वप्न जैसा है। असंख्य लोग इन्हीं कारणों से अपार्टमेंट में रहते हैं। वास्तु शास्त्र का लाभ फ्लैट और अपार्टमेंट में रहने वालों को भी समान रूप से लेना चाहिए ताकि वे प्रकृति के इस तत्त्वों का सही उपयोग कर अपने जीवन में सुख, समृद्धि, सफलता एवं खुशहाली ला सकें। इसके लिए यहां कुछ तथ्य प्रस्तुत हैं–

1. जहां पर अपार्टमेंट और फ्लैट बनाने हों सर्वप्रथम वहां की मिट्टी की जांच करनी चाहिए।
2. फ्लैट समान आकार अर्थात् वर्गाकार और आयताकार होना चाहिए।
3. किसी तरह भूखंड में वृद्धि या छिद्र नहीं होना चाहिए।
4. भूखंड का ब्रह्म स्थान खुला एवं साफ–सुथरा होना चाहिए। इस क्षेत्र में मंदिर या पार्क बना सकते हैं। पानी का भूमिगत टैंक, स्विमिंग पुल और लिफ्ट ब्रह्म स्थान में नहीं होना चाहिए।
5. भूखंड मुख्य दिशाा की ओर उन्मुख होना चाहिए।
6. मुख्य प्रवेश द्वार एवं Compound gate शुभ स्थान पर बनाना चाहिए। प्रवेश द्वार पूर्वी ईशान (East of north east), उत्तरी ईशान (Nort of north east) , पूर्व, उतर, दक्षिणी आग्नेय (South of south east) पश्चिमी वायव्य के तरफ शुभ होता है। जबकि (West of north west) दक्षिणी नैर्ऋत्य (South of south west) , पश्चिमी नैर्ऋत्य (West of south west), पूर्वी आग्नेय एवं उतरी वायव्य में कभी भी न रखें।
7. सुरक्षा प्रहरी का मुख्य द्वार पूर्व एवं उत्तर दिशा तरफ रखें।
8. द्वार पर किसी भी तरह की रुकावट न होनी चाहिए जैसे बिजली का खंभा, पेड़ या मंदिर।
9. उत्तरी–पूर्व में जगह खुली रखें। जलापूर्ति की पाइप, बूस्टर पंप, पानी का भूमिगत टैंक, बैरवेल, स्विमिंग पुल आदि भूखंड में उत्तर–पूर्व के क्षेत्र रखें।
10. लॉन, पौधे खुली पार्किंग आदि, उत्तर पूर्व या उत्तर–पूर्व में रखें। बड़े पेड़ भूखंड के दक्षिण, पश्चिम और दक्षिण–पश्चिम में रखें।
11. अपार्टमेंट या फ्लैट अंग्रेजी के L आकार में नहीं होना चाहिए। अगर भवन इस आकार का हो उत्तर–पूर्व में खुला रखें तथा आकार के भवन में भवन निर्माण करें।

    यह स्वास्थ्य और समृद्धि में वृद्धि करेगा। L आकार के भवन में ज्यादा निर्माण उत्तर और पूर्व में करें एवं दक्षिण–पश्चिम, दक्षिण–पूर्व या उत्तर–पूर्व में खुला रखें तो यह हानिकारक होगा।



www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

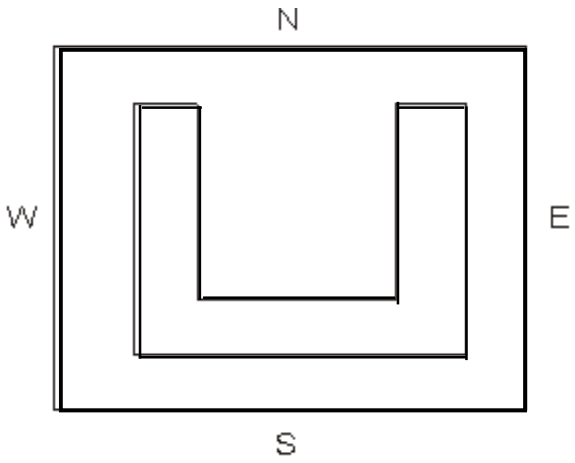


हिरण्य त्रिशला
Hiranya Trishala
शुभ

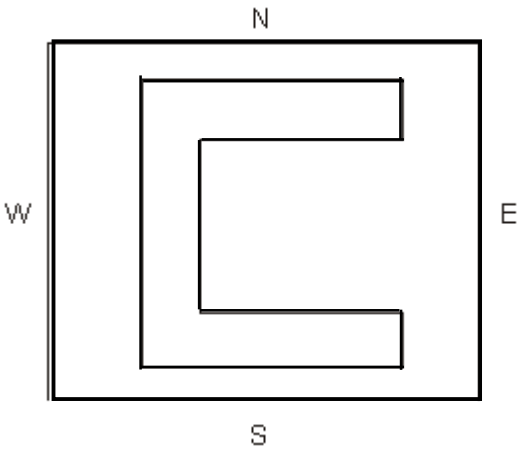


शुक्षेत्र त्रिशला
Sukshetra Trishal
शुभ

12. U के भवन में उत्तर, पूर्व और उत्तर–पूर्व में खुला रखना लाभप्रद होता है।

13. अगर जो भवन अंग्रजी के U आकार का हो और जिसमें उत्तर तथा पूर्व की दिशाएं बंद और दक्षिण

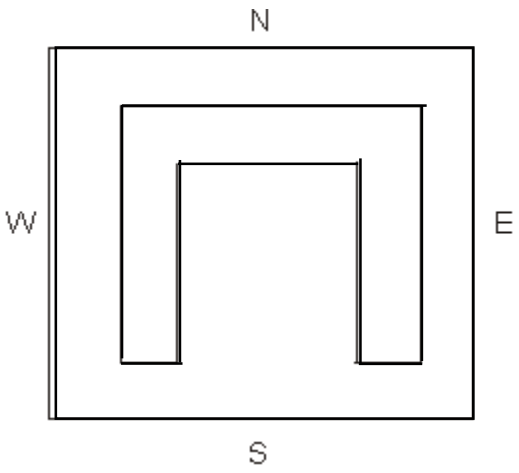


Chuli Trishala
चुल्ली त्रिशला अशुभ

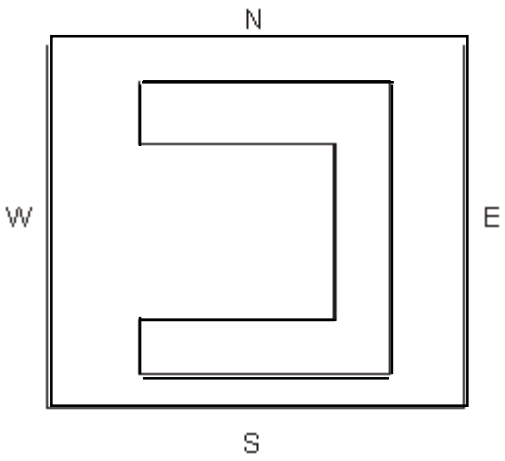


Pakshganga Trishala
पक्ष गंगा त्रिशला अशुभ



www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

और पश्चिम की रवुली हों उसे अच्छा नहीं मानते।

14. पानी की टंकी अपार्टमेंट की छत पर पश्चिम दिशा की ओर होना चाहिए। इसमें कहीं भी छिद्र नहीं रहे। इसे उत्तर–पूर्व, दक्षिण–पूर्व, कोने या बीच में न रखें।
15. जेनरेटर, बिजली आपूर्ति भूखंड के दक्षिण–पूर्व में रखें। बिजली का स्विच बोर्ड व्यक्तिगत अपार्टमेंट दक्षिण–पूर्व दिशा में भूमितल पर रखें।
16. अपार्टमेंट के घर के भीतर जल स्त्रोत उतर पूर्व में ईशान में रखने पर लक्ष्मी प्रसन्न होती है। व्यक्ति की मान–सम्मान और प्रसिद्वि में वृद्वि होती है। प्रत्येक व्यक्ति इस बात को मानते है तथा संतान की कभी कमी नही रहती है। व्यक्ति संतान और पुत्र पौत्र होता है। ऐसे व्यक्ति ईश्वरीय कृपा के पात्र होते है। फर्श के ढाल उतर पूर्व में रहने पर सदबुद्वि एवं धन में वृद्वि में होती है। किसी न किसी कारण से अथाह धन संपति की वृद्वि की होती है।
17. किसी भी आवासीय परिसर के बाहर यदि उत्तर की ओर तालाब, झील, गढ्ढा या बहता दरिया हो तो ऐसे मकानों में रहने वाले के घर में धन की दिनों दिन वृद्वि होती है। इस दिशा में नल,ट्यूबेल, अंडरग्राउंड टैंक बनवाना या पानी से भरे रखना जीवन में सुख ऐश्वर्य एवं धन समृद्वि की वृद्वि कराता है। उस स्थान पर निवास करने वाले लोगों को दिन दुनी रात चौगुनी प्रगति होती है। साथ ही सोया भाग्य जाग जाता है।
18. आवासीय परिसर के दक्षिण पश्चिम दिशा में पहाड या बडे चट्टाने हो तो इसका सुखद परिणाम लोगों को मिलता है।
19. उपर के मंजिलों का निर्माण इस तरह से करें कि प्रातःकालीन सूर्य की रोशनियों एवं प्राकृतिक प्रदत ऊर्जाएँ एवं किरणे सभी आवासों को प्राप्त हो और वायु का समुचित प्रभाव सभी कमरों में मिलता रहे।
20. बहुमंजिला भवन कितना भी मंजिल का क्यों न हो यह आवश्यक है कि नीचे के मंजिल से उपर की मंजिल की ऊँचाई में थोडी कमी रखी जाये। वास्तु के अनुसार पहले फ्लोर की ऊँचाई से ऊपरी फ्लोर की ऊँचाई को 12 वॉ हिस्सा कम रखना चाहिए तभी रहने वाले को लाभ मिलता है तथा इससे धरती की शक्ति और भार के पकड में संतुलन बना रहता है।

    इस प्रकार फ्लैट अपार्टमेंट या बहुमंजिली इमारतों में वास्तु के नियमों को अपनाकर सुख समृद्वि एवं शांति पूर्वक जीवन यापन किया जा सकता है।

◆◆◆◆◆



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

# 33. वास्तु के शाश्वत नियम

1. आकार या आयताकार भूखंड सर्वोत्कृष्ट होता है।
2. भूखंड मुख्य दिशा अर्थात् उत्तर, पूर्व, पश्चिम दक्षिण में रखें।
3. चारदीवारी के चारों तरफ रखें भवन के चारों तरफ जगह छोड़ें।
4. सबसे अधिक खुली जगह भवन के उत्तर एवं पूर्व में रखें।
5. भवन के उत्तर–पूर्व में कुआं या बोरवेल रखें।
6. मुख्य दरवाजा भवन के अन्य दरवाजों से बड़ा होना चाहिए। इसे दो पल्लों का रखें।
7. भवन भाग को एवं भूखंड के मध्य भाग में कोई भारी सामान, बीम, पिलर या कुआं नहीं रखें।
8. भवन या चारदीवारी के दक्षिण–पश्चिम भाग को खुला न रखें। कभी भी मुख्य द्वार भवन या चारदीवारी में दक्षिण–पश्चिम की तरफ न रखें।
9. उत्तर–पश्चिम भाग को खुला एवं साफ सुथरा रखें।
10. मुख्य शयनकक्ष घर के दक्षिण–पश्चिम में रखें।
11. अच्छे स्वास्थ्य के लिए सिर को दक्षिण तरफ रख कर सोएं।
12. बच्चों का शयन कक्ष पश्चिम या पूर्व में रखें उनका सिर पूर्व की ओर रहे।
13. रसोईघर दक्षिण–पूर्व में रखें। खाना बनाते समय गृहणी का चेहरा पूर्व की ओर हो। गैस स्टोव रसोईघर के दक्षिण–पूर्व की ओर रखें।
14. दर्पण पूर्व या उत्तर की तरफ लगाएं।
15. दक्षिण और पश्चिम की तरफ का भवन उत्तर एवं पूर्व से ऊंचा होना चाहिए।
16. पूजा कक्ष उत्तर–पूर्व क्षेत्र में रखें। दवाएं उत्तरी ईशान की तरफ रखें।
17. मुख्य द्वार के सामने किसी तरह की रुकावट या वेध न रहे।
18. उत्तर एवं पूर्व की दिशाओं की ओर मुंह करके बैठने की आदत डालें क्योंकि ये दिशाएं शुभ होती हैं।
19. भवन या कमरे के उत्तर–पूर्व में वजन न डालें।
20. जमीन जायदाद के दस्तावेज, कीमती समान, नकद, सोना, चांदी आदि दक्षिण–पश्चिम में मुख्य शयनकक्ष में रखें। कब्बड़्र्स उत्तर की ओर खुलने चाहिएं।
21. बाल्कनी उत्तर या पूर्व में रखें और दक्षिण–पश्चिम की बाल्कनी को रंगीन शीशा लगा कर बंद रखें।
22. रसोईघर और टॉयलेट आमने–सामने न रखें।
23. मुख्य द्वार के सामने रसोईघर न रखें।



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

24. टूटा शीशा रुकी हुई या बंद घड़ी घर मे न रखें।
25. गजलक्ष्मी या शुभ चिह्न जैसे स्वास्तिक या ऊँ मुख्य द्वार पर लगाएं।
26. छात्र पूर्व या उत्तरामुखी होकर अध्ययन करें।
27. बीम के नीचे बैठकर न काम करें और न सोएं।
28. कांटेदार या दूध वाला पौधा घर में नहीं लगाएं।
29. बरसात के पानी या नाली का निकास उत्तर, पूर्व या उत्तर–पूर्व की ओर रखें।
30. तुलसी और अन्य जड़ी–बूटियों के पौधे उत्तर–पूर्व में लगाएं।
31. लाभदायक वृक्ष जैसे अशोक, अनार, नीम, नीबू, बेल आदि घर के दक्षिण–पश्चिम में लगाएं।
32. मकान बनाने के पूर्व शुभ मुहूर्त में भूमि पूजन करें और गृह में रहने के पूर्व शुभ मुहूर्त में गृह प्रवेश अवश्य करें।
33. सीढ़ी के नीचे पूजा कक्ष या टॉयलेट न बनाएं। इस जगह को गोदाम के रूप में इस्तेमाल कर सकते हैं।
34. घर के बीचोबीच कुआं अशुभ फल देता है।
35. टॉयलेट या आग के स्थान को उत्तर–पूर्व के कोने में रखने से आर्थिक संकट मानसिक तनाव और आपसी झगड़े परिवार के सदस्यों के बीच बने रहते हैं।
36. अगर द्वार ठीक स्थान पर नहीं बना हो तो सुख समृद्धि में कमी हो जाती है।
37. घर या कमरे के दक्षिण, पश्चिम और दक्षिण पश्चिम में भारी समान रखें जैसे अलमारी, कब्बर्ड, भारी फर्नीचर, आदि।
38. फोटो, भगवान के चित्र (Painting) आदि पूर्व की दीवार पर रखें।
39. पूर्वजों के चित्र पूजाघर में नहीं बल्कि दक्षिण की दीवार पर रखें।
40. युद्ध, मृत्यु, रोग आदि के चित्र या पैंटिग घर में न लगाएं।
41. घर के अंदर की सीढ़ी मुख्य द्वार के ठीक सामने नहीं होनी चाहिए।
42. बाहरी सीढ़ी मुख्य द्वार या मुख्य रास्ते के सामने न हो।
43. घर को साफ सुथरा रखें। पुराने कपड़े, समाचार पत्र आदि समय–समय पर घर से हटाते रहें।
44. घर में खिड़कियां तथा दरवाजे उत्तर और पूर्व में अधिक तथा दक्षिण और पश्चिम में कम रखें।

◆ ◆ ◆ ◆ ◆



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

# 34. वास्तु में रंगों का महत्व

ज्योतिष, वास्तु एवं अंकशास्त्र के दृष्टिकोण से रंगो का हमारे दैनिक जीवन में काफी प्रभाव पड़ता है। प्रत्येक दिशा किसी न किसी रंगो से शासित होती है। अंकविज्ञान के अनुसार हम अपने जन्म तिथि के अनुसार लाभप्रद अंक एंव रंगो की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। जैसे 25 जून 1968 इसके लिए हम सिर्फ जन्म तारीख पर विचार करते हुए इसके मूलांक को निकालते हैं। 2+5 = 7, यहां 7 लाभप्रद अंक और इसके अनुकूल रंग चितकबरा है।

नीचे दिए गये चार्ट से हम अंको एवं उनसे संबंधित रंगो को अच्छी तरह समझ सकते हैं।

| लाभप्रद अंक | ग्रह | रंग |
|---|---|---|
| 1. | सूर्य | ताम्र रंग, गुलाबी, चॉकलेटी रंग |
| 2. | चंद्रमा | उजला |
| 3. | बृहस्पति | पीला, केशर जैसा रंग, क्रीम |
| 4. | राहु | नीला |
| 5. | बुध | हरा |
| 6. | शुक्र | सफेद |
| 7. | केतु | चितकबरा |
| 8. | शनि | काला, ग्रे |
| 9. | मंगल | लाल |

सभी दिशा के स्वामी एवं ग्रहों का अपना रंग होता है। वे अपनी दिशा में शुभफल प्रदान करते हैं। जिनका वर्णन इस प्रकार हैं–

| दिशा | स्वामी | रंग |
|---|---|---|
| पूर्व | सूर्य | ताम्र रंग |
| दक्षिण–पूर्व | शुक्र | सफेद |
| दक्षिण | मंगल | लाल |
| दक्षिण–पश्चिम | राहु | नीला |
| पश्चिम | शनि | नीला/काला |
| उत्तर–पश्चिम | चंद्रमा | सफेद |
| उत्तर | बुध | हरा |
| उत्तर–पूर्व | बृहस्पति | पीला |



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

# दिशा और उनके रंग

**पूर्व दिशा :**
वास्तु में पूर्व की दिशा में दोष रहने पर ऑख, हड्डी एवं हृदय से संबंधित बीमारियां होती है। इस दिशा के दोष को दूर करने के लिए सुनहला पीला, गुलाबी, ताम्र रंग का इस्तेमाल करना लाभप्रद होता है। इन रंगो का इस्तेमाल करने पर पराक्रम, प्रतिष्ठा, स्वाभिमान एवं पदो में वृद्वि होती है।

**उत्तर–पूर्व :**
वास्तु में उत्तर–पूर्व में दोष रहने पर लीवर की बीमारियां, ज्ञान, वंश की वृद्वि में कमी देखने को मिलती है। इसके उपाय हेतु केशर रंग, पीला रंग एवं क्रीम रंग का इस्तेमाल करना चाहिए।

**उत्तर :**
वास्तु में उत्तर की दिशा में दोष रहने पर बुद्धि, विवेक एवं वाणी में कमी बनी रहती है। साथ ही धन एवं भौतिक समृद्धि में भी कमी देखने को मिलता है। इस कमी को दूर करने के लिए उत्तर के दिशा में हरे रंग का इस्तेमाल करना चाहिए।

**उत्तर–पश्चिम :**
वास्तु में उत्तर–पश्चिम की दिशा में दोष रहने पर मानसिक अशांति, तनाव एवं सर्दी–खॉसी जैसे बीमारिओं का सामना करते देखा जाता है। इस कमी को दूर करने के लिए सफेद रंग का अधिक से अधिक इस्तेमाल करना लाभप्रद होता है। जिसके फलस्वरूप मानसिक शांति, सौम्यता, शालीनता एवं व्यवहार कुशलता में वृद्धि होती है।

**पश्चिम :**
पश्चिम दिशा दोष रहने पर वात एवं गठिया जैसे बीमारियां देखने को मिलती है। साथ ही मानसिक अशांति एवं दाम्पत्य जीवन में तनाव पाया जाता है। इसके निवारण हेतु काला एवं ग्रे रंग का इस्तेमाल करना शुभफलप्रद होता है।

**दक्षिण–पश्चिम :**
वास्तु में दक्षिण–पश्चिम की दिशा दोष रहने पर स्नायु तंत्र, लकवा एवं पोलियो जैसे असाध्य बीमारियां होती है। साथ ही अकस्मात् दुर्घटना एवं घटनाओं में वृद्धि होते देखा गया है। ऐसे स्थिति में नीला रंग का इस्तेमाल करना शुभफलदायक होता है।

**दक्षिण :**
वास्तु में दक्षिण दिशा दोष रहने पर स्फूर्ति, उत्साह में कमी एवं अस्थिमज्जा में विकार देखने को मिलता है। इस कमी को दूर करने के लिए चमकीला लाल एवं नारंगी रंग का अत्यधिक उपयोग करना चाहिए।

**दक्षिण–पूर्व :**
वास्तु में दक्षिण–पूर्व दिशा दोष रहने पर शौक श्रृंगार में कमी, प्रजनन शक्ति में कमी, मूत्र विकार, गुर्दे का रोग एवं गुप्तांगों से संबंधित रोग की संभावना बनी रहती है। इस कमी को दूर करने के लिए सफेद रंग का इस्तेमाल करना काफी अच्छा होता है।

◆ ◆ ◆ ◆ ◆



Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

# 35. वृक्ष का वास्तु में महत्व

पर्यावरण को ठीक रखने के लिए घर के आस पास पेड़ पौधों का होना आवश्यक है। कौन सा पौधा हमारे जीवन के लिए उपयोगी है और कौन सा पौधा लगाने से वास्तु दोष ठीक किया जा सकता है। इसकी जानकारी के लिए कुछ तथ्य यहाँ प्रस्तुत है।

**अशोक वृक्ष का वास्तु में महत्व**

इस वृक्ष को घर के उत्तर में लगाना विशेष शुभ होता है। इसे घर में लगाने से घर में लगे हुए अन्य अशुभ वृक्षों का दोष समाप्त होता है।

**केले का वास्तु में महत्व**

घर की चारदीवारी में केले का वृक्ष शुभ होता है। यह वृक्ष ईशान क्षेत्र अत्यधिक शुभ होता है। केले के पास ही तुलसी का पौधा हो तो यह और अधिक शुभ फल देने वाला होता है। ईशान क्षेत्र में लगे हुए केले के पौधे के नीचे अध्ययन करने से वह अध्ययन व्यर्थ नहीं जाता है।

**आक (श्वेतार्क)**

श्वेतार्क का पौधा दूध (Latex) वाला होता है। वास्तु सिद्धांत के अनुसार में दूध से युक्त पौधों का घर की सीमा में होना अशुभ होता है। किंतु आर्क इसका अपवाद है। श्वेतार्क का पौधा रोपें नहीं बल्कि यदि वह गृह सीमा में स्वतः उग आए तो इसे निकालने की बजाय हल्दी, अक्षत और जल से इसकी सेवा करें। ऐसा करने से इस पौधे की बरकत से उस घर के रहने वालों को सुख शांति प्राप्त होती है। ऐसी भी मान्यता है कि जिसके घर के समीप श्वेतार्क का पौधा फलता फूलता है वहां सदैव बरकत बनी रहती है। उस भूमि में गुप्त धन होता है।

**कमल का वास्तु में महत्व**

घर के ईशान क्षेत्र में, मूल कोण को छोड़कर एक छोटा सा तालाब बनाकर उसमें कमल का पोषण करने से उस घर में लक्ष्मी का वास होता है और ईश्वर की कृपा से अमन–चैन बना रहता है।

**पीपल, गूलर व पाकड़ का वास्तु में महत्व**

घर में पीपल का वृक्ष पश्चिम दिशा में श्रेष्ठ फल देने वाला माना गया है। जो लोग घरों में गमले में पीपल लगा कर उसकी पूजा करते हैं, उन्हें भी गमला घर के पश्चिम दिशा की तरफ रखना चाहिए। इसी प्रकार दक्षिण में गूलर और उत्तर दिशा में पाकड़ का पेड़ मंगलकारी होता है। इसके विपरीत दिशा में रहने पर ये वृक्ष विपरीत फल देने वाले होते हैं।

**पपीता**

वास्तु शास्त्र में पपीते के वृक्ष का घर में होना अशुभ कहा गया है। अतः घर में यदि यह उग आए तो प्रारंभ में ही इसे खोद कर अन्यत्र स्थानांतरित कर देना चाहिए। किंतु बड़ा हो जाने पर इसे काटें नहीं बल्कि उस समय का इंतजार करें जब इसमें फूल आना बंद हो जाए। जब इसमें फल लगना बंद हो



Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

जाएं तब इसके तने में एक छेद करके उसमें थोड़ी सी हींग भर दें। इससे यह स्वतः सुख जाएगा। इस कार्य के बदले किसी एक शुभत्व प्रदान करने वाले पौधे का रोपन अवश्य करें।

**नारियल**

नारियल के वृक्ष का घर की सीमा में होना शुभ होता है। घर की सीमा में इस वृक्ष के रहने से वहां के रहने वालों की मान प्रतिष्ठा एवं उन्नति में वृद्वि होती है।

**अनार**

घर में फल देने वाला अनार का पौधा शुभ होता है। किंतु इसे घर के आग्नेय और नैर्ऋत्य कोणों में नहीं होना चाहिए। कुछ स्थानों पर अनार के वृक्ष का घर में होना अशुभ कहा गया है। किंतु यह नियम केवल बंजर जाति के अनार पर लागू होता है।

**हल्दी**

इसका घर की सीमा में होना अशुभ होता है। शास्त्रों में यहां तक कहा गया है कि स्वतः उत्पन्न हुए हल्दी के पौधों को भी घर की सीमा में नही होना चाहिए।

**बरगद**

वास्तु की दृष्टि से यह एक और महत्वपूर्ण वृक्ष है। किसी भी भवन अथवा प्रतिष्ठान के पूर्व में वट वृक्ष का होना अत्यंत शुभ होता है सारी कामनाएं पूरी करता है। परंतु भवन पर इसकी छाया नहीं पड़नी चाहिए। वट वृक्ष का घर या प्रतिष्ठान के पश्चिम की तरफ होना अशुभ कहा गया है।

**सीता फल**

सीता फल के पौधे का घर की सीमा में होना शुभ नहीं होता किंतु यदि यह घर की सीमा में उग आए तो इसे काटें नहीं बल्कि घर की सीमा में ही एक आंवले का एवं एक फल देने वाले अनार का पौधा लगा दें, इससे इसका अशुभत्व नष्ट हो जाता है।

**आंवले**

वास्तु की दृष्टि से आंवले के वृक्ष का घर की सीमा में होना शुभ होता है। इस वृक्ष को लगाने से अशुभ वृक्षों का अशुभ फल भी नष्ट होता है।

**जामुन**

वास्तु की दृष्टि से जामुन के वृक्ष का घर की सीमा के दक्षिण में होना शुभ कहा गया है। अन्य दिशाओं में इसका होना समफलदायी होता है। घर के उत्तर में जामुन वृक्ष होने से उसके साथ एक अनार अथवा आंवला भी अवश्य लगाएं।

**आम**

वास्तु की दृष्टि से आम का वृक्ष घर की सीमा में शुभ नहीं माना गया है। फिर भी यदि यह हो तो इसे काटना नहीं चाहिए बल्कि नित्य इसकी जड़ों में काले तिल डाल कर जल चढ़ाना चाहिए। साथ ही घर की सीमा में ही निर्गुंडी का एक पौधा लगा देना चाहिए। ऐसा करने से इसका अशुभत्व समाप्त हो जाता है।



Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

**नीम**

घर के वायव्य कोण में नीम के वृक्ष का होना अति शुभ होता है। इस प्रकार जो व्यक्ति नीम के सात पेड़ लगाता है उसे मृत्योपरांत शिवलोक की प्राप्ति होती है। जो व्यक्ति नीम के तीन पेड़ लगाता है वह सैकड़ों वर्षों तक सूर्य लोक में सुखों का भोग करता है।

**मेहंदी**

मेहंदी के पौधे का घर में होना अशुभ होता है।

**बिल्व**

बेल के वृक्ष का घर की सीमा में होना अति शुभ होता है। भगवान शिवजी का परम प्रिय बेल का वृक्ष जिस घर में होता है वहां धन संपदा की देवी लक्ष्मी पीढ़ियों तक वास करती हैं।

**पलाश**

वास्तु की दृष्टि से पलाश के वृक्ष का घर की सीमा में होना अशुभ होता है।

**शुभ वृक्ष**

घर की सीमा में अशोक, मौलश्री, शमी, चंपा, अनार, सुपारी, कटहल, केतकी, मालती, कमल, चमेली, नारियल, केला आदि के वृक्ष होने से घर में लक्ष्मी का विस्तार होता है। और उनकी कृपा बनी रहती है।

**बबूल**

बबूल का घर में होना अशुभ होता है। जिस घर में बबूल होता है वहां बहुत क्लेश होते हैं।

**बांस**

बांस का घर में होना अत्यंत अशुभ होता है। परंतु चीनी मान्यता के अनुसार बांस शुभ फल देता है।

**अरंडी**

वास्तु की दृष्टि से अरंडी के पौधे का घर की सीमा में होना अत्यंत ही अशुभ माना गया है। इसकी उपस्थिति से रहने वालों के कामों में रुकावटें आती है।

**गुलाब**

वास्तु में शूल वाले पौधे का घर में होना अशुभ माना गया है। किंतु गुलाब का पौधा अशुभ नहीं होता। घर में बेलिया गुलाब अर्थात् ऐसा गुलाब जो बेल के रूप में होता है, का होना शुभ नहीं होता है।

**वृक्षों लगाने की कुछ खास बातें**

1. मूल द्वार को लताओं, फूल, पौधों आदि से सदैव सुशोभित रखना चाहिए। ऐसा करने से उस स्थान पर रहने वाले सुख एवं शांति का अनुभव करते हैं।
2. भवन में उद्यान अथवा वृक्षों का उसकी सीमा में उत्तर या पश्चिम दिशा में होना शुभ होता है।
3. मुख्य द्वार के समक्ष किसी पौधे का होना द्वार वेध का द्योतक हो है और अतः, इस स्थान पर कोई पौधा न लगाएं।



Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

4. घर के द्वार और पिछवाड़े को मिलाने वाले घर के माध्य अक्ष तथा उसके समकोणीय अक्ष की ठीक सीध में भी किसी पौधे का रोपण न करें। ऐसा पौधा प्रतिकूलता देता है।

5. किसी भी तरह का मरुस्थलीय पौधे का रोपण एवं पोषण भूखंड की सीमा में कतई न हो। ऐसा पौधा घर में लगाने से उस घर में तनाव में वृद्धि होती है। और आपसी संबंधों में कड़वाहट रहती है। हालांकि कई लोग कैक्टस को बड़े शौक से गमले में लगाते हैं, जो वर्जित है।

6. बेर का वृक्ष जिस घर की सीमा में लगा होता है उस घर के लोगों की अन्य लोगों के साथ शत्रुता रहती है और शत्रु परेशान करते हैं।

7. घर की सीमा में तुलसी का पौधा शुभ होता है।

8. ब्राह्मण और शैक्षिक कार्य से जुड़े अन्य लोगों को घर की सीमा में आंव, पाकड़, पारस, पीपल एवं गूलर एक या अधिक पेड़ लगाकर उनका पोषण अवश्य करना चाहिए परंतु भवन पर इन पौधों की छाया न पड़े। ये पेड़ ऊपर वर्णित शुभ दिशा में लगाने चाहिए।

9. व्यापारी वर्ग के लोगों तथा वैश्यों को शिरीष, नीम एवं बेल के वृक्षों का पालन पोषण करना चाहिए। ये वृक्ष भी शुभ दिशाओं में हों।

10. ब्राह्मणों, वैश्यों एवं क्षत्रियों को छोड़कर वर्णों के घर की सीमा में अमलतास और मौलश्री के वृक्ष तथा पान के पौधे लगाने चाहिए।

11. क्षत्रिय वर्ग के लोगों को गृह सीमा में पवित्र तुलसी, सुदर्शन, महुआ, पनस और यूक्लिप्टस के वृक्षों में जो उपयुक्त प्रतीत हो उसे लगाना चाहिए।

12. किसी भी भूखंड की सीमा में पश्चिम की ओर लगाया गया और पोषित बेल का वृक्ष वहां रहने वालों के लिए सुखदायक होता है।

13. भूखंड के निर्माण के पश्चिम में महुआ का वृक्ष उस भूखंड पर रहने वालों के लिए उन्नति का कारक होता है। यही फल गूलर अथवा पनस के दक्षिण दिशा में होने से प्राप्त होता है।

14. घर के अंदर अथवा भूखंड की सीमा में कहीं भी ऊपर बढ़ने वाली लता शुभ होती है। इसी प्रकार यदि घर में कोई मनी प्लांट हो तो उसका आरोहण शुभ होता है।

15. घर मे कांटे या दूध वाले वृक्ष से स्त्री और संतान की हानि होती है। परंतु गुलाब पर यह नियम लागू नहीं होता है।

16. अशुभ वृक्ष को काटना संभव न हो तो उसके समीप अन्य शुभदायक वृक्षों को लगा देने से उसका दोष दूर हो जाता है। परंतु यह नियम कांटेदार कैक्टस के पौधों पर लागू नहीं होता है।

◆ ◆ ◆ ◆ ◆



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

# 36. वास्तु और रोग

वास्तु अर्थात् घरों में सभी दिशाओं पर अलग–अलग ग्रहों का प्रतिनिधित्व माना गया है। प्रत्येक दिशा का काल पुरुष के विभिन्न अंगों पर प्रभाव पड़ता है। वास्तु भी ज्योतिष की तरह ग्रहों की शक्ति एवं नक्षत्रों के प्रभाव से संचालित होता है। जिस प्रकार जन्मपत्री के आधार पर हम किसी भी बीमारी का पता लगा लेते हैं, उसी प्रकार वास्तु के अनुसार भी किसी भी दिशा में उत्पन्न दोषों के आधार पर हम जान सकते हैं कि घर में वास करने वाले का कौन सा अंग किस बीमारी से प्रभावित होगा तथा किन बीमारियों से लोग अधिक प्रभावित होंगे। उदाहरण के लिए यदि भवन की उत्तर दिशा ऊंची हो तथा उस दिशा में शौचालय हो तो उसमें वास करने वालों को हृदय, फेफड़े एवं छाती में अकस्मात किसी भी तरह का विकार उत्पन्न होने की संभावना रहती है। इसी तरह अनुभव में आया है कि किसी भी भवन के पूर्व की दिशा में दिशा दोष रहने पर उसमें वास करने वाले अधिकांश सदस्यों का स्वास्थ्य प्रभावित रहता है। अतः हम वास्तु के सिद्धांतों के गहन अध्ययन से बीमारियों पूर्व ज्ञान समय रहते प्राप्त कर सकते हैं तथा तत् संबधी वास्तु दिशा दोषों को दूर कर बीमारियों के विषय में से बचाव कर सकते हैं, अर्थात वास्तु को दिशा दोष रहित रखने पर हम सुख–शांति पूर्वक जीवन यापन कर सकते हैं।

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

# 37. दिशा का ग्रहों से संबंध एवं दोष–निवारण के उपाय

Future Point

वास्तु शास्त्र का मुख्य आधार ज्योतिष शास्त्र है। जिस प्रकार ग्रहों के अनुकूल और प्रतिकूल प्रभाव मानव जीवन पर पड़ते हैं उसी प्रकार ग्रह अपने शुभ और अशुभ प्रभाव से वास्तु की दिशाओं को प्रभावित कर उस मकान में रहने वाले के तत्संबंधी प्रभाव में कमी या वृद्धि करते हैं।

### पूर्व दिशा दोष

पूर्व दिशा का स्वामी इंद्र एवं प्रतिनिधि ग्रह सूर्य हैं। सृष्टि के सृजन में सूर्य का विशेष महत्व हैं। इनसे ही समस्त सृष्टि में प्राणियों और वनस्पतियों की उत्पत्ति पोषण प्रलय होते हैं। सूर्य ही ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश की एकीकृत मूर्ति त्रिमूर्ति का प्रतिक हैं। जिस घर के मुख्य द्वार बड़ा हो, उसमें बड़ी–बड़ी खिड़कियों एवं झरोखों से सूर्य का प्रकाश आता हो तथा पूर्व की दिशा में किसी प्रकार का दोष नहीं हो तो उसमें वास करने वाले को अच्छे स्वास्थ्य, पराक्रम, तेजस्विता, सुख–समृद्धि एवं गौरवपूर्ण जीवन की प्राप्ति होती है। घर के पूर्वी भाग में कूड़ा–कचरा पत्थर और मिट्टी के ढेर हो तो संतान की हानि होती है। साथ ही इस दिशा में दोष होने पर व्यक्ति के सांसारिक एवं आध्यात्मिक विकास में कमी आ जाती हैं। पिता के सुख में कमी, पुत्र संतान की कमी, विकलांग संतान का जन्म, एवं यश और प्रतिष्ठा में कमी आती है। इसके अतिरिक्त इस दिशा के दोषपूर्ण होने पर धन क अपव्यय, ऋण, मानसिक अशांति, नेत्र विकार, लकवा, रक्तचाप, सिर दर्द या सिर से संबंधित रोग, हड्डी के टूटने आदि रोग की संभावना बनती है।

### उपाय

1. दिशा दोष निवारणार्थ सूर्य यंत्र की स्थापना करें।
2. सूर्य को अर्घ्य दें एवं उनकी उपासना करें।
3. पूर्व दिशा का प्रतिनिधि ग्रह सूर्य है। यह काल पुरूष का मुख है। अतः पूर्वी द्वार पर सूर्य यंत्र स्थापित करें और वास्तु मंगलकारी तोरण लगाएं।
4. आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ करें।
5. पूर्व में पानी का जलकुंड बनाएं और उसमें लाल कमल लगायें। पानी की टंकी और कुआँ खुदवाएं।

### पश्चिम दिशा दोष

पश्चिम दिशा का स्वामी वरुण, आयुध पाश एवं प्रतिनिधि ग्रह शनि है। शनि काल है, शनि अवधि है। शनि दुर्भाग्य एवं सौभाग्य दोनों का प्रतिनिधित्व करता है। शनि को अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए कोई व्यग्रता या घबराहट नहीं होती है। वह निश्चयपूर्वक निर्मोही की तरह काल चक्र में अपने शिष्यों को डाल कर उनके अहं उनकी आसक्तियों तथा उनकी दुर्बलताओं को शनैः शनैः हटा कर उन्हें आध्यात्मिक विकास



www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

के लिए सक्षम बनाता है। पश्चिम दिशा कालपुरुष के अनुसार सप्तम स्थान से जुड़ा हुआ है। पत्नी सुख, वैवाहिक सुख, व्यवसाय में प्रगति, साझेदारी का व्यवसाय, कोर्ट कचहरी के मामले, गुप्तांग एवं जननांग का विचार इसी स्थान से किया जाता हैं। भवन में या घर में वर्षा का जल पश्चिम से होकर बाहर जा रहा हो तो पुरूष लम्बी बीमारीयों के शिकार होते है। इस दिशा में दोष रहने पर नपुंसकता, पैरों में तकलीफ, कुष्ठ रोग, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, गठिया, स्नायु एवं वात संबंधी रोगों की संभावना रहती है। यदि घर की पश्चिम दिशा में दरारें हो तो गृहस्वामी की गुप्तांग में बीमारी होती है तथा आमदनी अव्यवस्थित रहती है। यदि पश्चिम दिशा में अग्नि स्थान हो तो गर्मी, पित्त और मस्से की शिकायतें होगी। यदि घर का प्रवेश द्वार पूर्व में हो और वह पूर्ण स्वच्छ और साफ हो तथा पश्चिम में मिट्टी, पत्थर, चट्टान आदि हों तो गृहस्वामी की आमदनी ठीक रहेगी।

**उपाय**

1. पश्चिम दिशा जनित दोष निवारण हेतु घर में वरुण यंत्र की स्थापना करें।
2. यदि पश्चिम दिशा बढी हुई हो तो उसे काटकर वर्गाकार या आयताकार बनाए।
3. शनिवार को खेजड़ी के वृक्ष को पानी से सींचे।
4. शनि व्रत करें तथा शनि यंत्र के समक्ष शनि स्तोत्र का पाठ करें।
5. पश्चिम की चारदीवारी को ऊँचा करें तथा पश्चिम में भारी वृक्ष लगायें।

**उत्तर दिशा दोष**

उत्तर दिशा का स्वामी कुबेर, आयुध गदा एवं प्रतिनिधि ग्रह बुध है। बुध उत्तर दिशा का स्वामी माना गया है। बुध जिस ग्रह के साथ होता है उसी के अनुसार अपना फल देता है अर्थात शुभ ग्रहों के साथ हो तो शुभ और अशुभ ग्रहों के साथ हो तो अशुभ होता है। उत्तर दिशा से काल पुरुष के हृदय एवं सीने का विचार किया जाता है। जन्म कुंडली का चौथा भाव इसका कारक स्थान है। यह दिशा मां का स्थान है। इस दिशा में खाली जगह छोड़ने से ननिहाल पक्ष लाभान्वित होता है। यह दिशा शुभ होने पर व्यक्ति को विद्या तथा बुद्धि की प्राप्ति और उसमें कवित्व शक्ति तथा विभिन्न प्रकार के आविष्कारों की क्षमता का विकास होता है। साथ ही नौकर–चाकर, मित्र, घर एवं विभिन्न प्रकार के सुखों की प्राप्ति होती है। उत्तर दिशा दोषपूर्ण हो तो गृहस्वामी की कुंडली का चौथा भाव निश्चित बिगड़ा हुआ होगा। ऐसे जातक के मातृ सुख, नौकर–चाकर के सुख, भौतिक सुख आदि की कमी रहती है। साथ ही हर्निया, हृदय तथा चर्मरोग, गाल ब्लेडर की बीमारी, पागलपन, हैजे, फेफड़े एवं रक्त से संबंधित बीमारियों की संभावना रहती है।

**उपाय**

1. दिशा दोष निवारणार्थ पूजा में बुध यंत्र कुबेर यंत्र के साथ लगाए।
2. यदि उतर दिशा का भाग कटा हो तो उतरी दीवार पर एक बड़ा दर्पण लगाएं।
3. घर की दीवारों को हरा रंग करें। तथा घर के उतर दिशा की तरफ तोते का चित्र लगाए।
4. मरगज श्री यंत्र के समक्ष श्री सूक्त का नित्य पाठ करें।



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

## दक्षिण दिशा दोष

दक्षिण दिशा का स्वामी यम, आयुध दंड एवं प्रतिनिधि ग्रह मंगल है। मंगल सांसारिक कार्यक्रम को संचालित करने वाली विशिष्ट जीवनदायिनी शक्ति है। यह सभी प्राणियों को जीवन शक्ति देता है और उत्साह और स्फूर्ति प्रदान करता है। किंतु इसके बुरे प्रभाव से शारीरिक, भावनात्मक, मानसिक एवं आध्यात्मिक व्यग्रता बनी रहती है। यह धैर्य तथा पराक्रम का स्वामी होता है। दक्षिण दिशा से कालपुरुष के सीने के बाएं भाग, गुर्दे एवं बाएं फेफड़े का विचार किया जाता है। कुंडली का दशम् भाव इसका कारक स्थान है। यदि घर के दक्षिण में कुंआ, दरार, कचरा, कुड़ादान एवं पुराना कबाड़ हो तो ह्रदय रोग, जोड़ो का दर्द, खून की कमी, पीलिया आदि की बीमारियॉ होती है। यदि दक्षिण में कुआं या जल हो तो अचानक दुर्घटना से मृत्यु होती है। दक्षिण द्वार नैऋत्याभिमुख हो तो दीर्घ व्याधियॉ एवं अचानक मृत्यु होती है।साथ ही दिशा दोषपूर्ण होने पर स्त्रियों में गर्भपात, मासिक धर्म में अनियमितता, रक्त विकार, उच्च रक्तचाप, बवासीर, दुर्घटना, फोड़े–फुंसी, अस्थि मज्जा, अल्सर आदि से संबंधित बीमारियाँ देती है तथा नौकरी–व्यवसाय में नुकसान, समाज में अपयश, पितृ सुख में अवरोध, पिता के व्यसनी होने सरकारी कामों में असफलता आदि की संभावना रहती है।

### उपाय

1. यदि दक्षिण दिशा बढा हुआ हो तो उसे काटकर आयताकार या वर्गाकार बनाए।
2. दिशा दोष के निवारणार्थ दक्षिण द्वार पर मंगल यंत्र लगाएं।
3. दक्षिणावर्ती सूंडवाले गणपति के चित्र अथवा मूर्ति द्वार के अंदर–बाहर लगाएं।
4. दरवाजे पर वास्तु मंगलकारी तोरण लगाएं।
5. भैरव या हनुमान जी की उपासना करें।
6. गणेश जी का पूजन करें।
7. दक्षिणामुखी घर का भी जल उतर पूर्व दिशा से बाहर निकालें।

## ईशान दिशा दोष

ईशान दिशा का स्वामी रुद्र, आयुध त्रिशूल एवं प्रतिनिधि ग्रह बृहस्पति है। बृहस्पति को सर्वाधिक शुभ ग्रह कहा गया है। खासकर आध्यात्मिक विकास के लिए प्रयत्नशील जिज्ञासुओं के लिए बृहस्पति अति शुभ होता है। इसका प्रभाव सर्वदा सात्विक होता है। यह प्रत्येक उस वस्तु को, जिससे इसका संबंध हो, बड़ा बनाता है। यही कारण है कि गुरु वृद्धिकारक है और परिवार की वृद्धि के प्रतीक पुत्र का कुंडली में प्रतिनिधित्व करता है। बड़ा होने से ही बृहस्पति बड़े भाई का प्रतिनिधि है। साथ ही बड़ा होने से बृहस्पति स्त्री की कुंडली में उसका पति है। जन्म कुंडली का द्वितीय एवं तृतीय भाव ईशान में आते हैं। अत्यधिक पवित्र दिशा होने के कारण इसकी सुरक्षा अनिवार्य है। यदि ईशान दिशा में दोष हो तो पूजा पाठ के प्रति रुचि की कमी, ब्राह्मणों एवं बुजुर्गों के सम्मान में कमी, धन एवं कोष की कमी एवं संतान सुख में कमी बनी रहती है। साथ ही वसा जन्य रोग और लीवर, मधुमेह, तिल्ली आदि से संबंधित बीमारियां आदि होने की संभावना रहती है।यदि उतर पूर्व में रसोई घर हो तो खॉसी, अम्लता, मंदाग्नि, बदहजमी, पेट में गड़बड़ी और ऑतो के रोग आदि होते है।



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

**उपाय**

1. यदि ईशान्य दिशा का उत्तरी या पूर्वी भाग कटा हो तो उस कटे हुए भाग पर दर्पण लगाए। साथ ही कटे ईशान्य क्षेत्र के दुष्प्रभाव को कम करने के लिए बुजुर्ग ब्राह्मण को बेसन के लड्डु खिलाए।
2. इस दिशा में पानी का फव्वारा, तालाब या बोरिंग कराए।
3. ईशान दिशा को पवित्र रखें। तथा ईशान दिशा में नियॉन बल्ब लगाएं।
4. ईशान्य क्षेत्र में भगवान शंकर की ऐसी तस्वीर जिसमें सिर पर चंद्रमा हों तथा जटाओं से गंगा जी निकल रहीं हो लगाए।
5. भगवान विष्णु के समक्ष विष्णु सहस्त्रनाम् स्तोत्र का पाठ करें।
6. धातु के श्रीयंत्र के समक्ष श्रीसूक्त का पाठ करें।
7. गुरु यंत्र के समक्ष बृहस्पति के बीज मंत्र का जप करें।

**वायव्य दिशा दोष**

वायव्य दिशा का स्वामी वायु एवं आयुध अंकुश है। इस दिशा का प्रतिनिधि ग्रह चंद्र है। चंद्र में शुभ और अशुभ तथा सक्रिय एवं निष्क्रिय दोनों प्रकार की क्षमता होती है। जब चंद्र शुभ होता है तब जातक को सुकीर्ति और यश मिलता है। उसका समुचित मानसिक विकास होता है, पारिवारिक जीवन सुखमय होता है और मातृ सुख का अनुभव होता है। वह देश विदेश का भ्रमण करना है। वह विद्वान, कीर्तिवान, वैभवशाली एवं सम्मानित होता है और उसे राज–सम्मान की प्राप्ति होती है। परंतु चंद्र के अशुभ होने से जातक निर्धन, मूर्ख, उन्मादग्रस्त तथा कदम–कदम पर ठोकरें खाने वाला होता है।यह काल पुरुष के घुटनों एवं कोहनियों को प्रभावित करता है। जन्म कुंडली का पांचवां एवं छठा भाव वायव्य के प्रभाव में आते हैं। वायव्य कोण मित्रता एवं शत्रुता का जन्मदाता है। यदि इस कोण में दोष रहेंगे तो जातक को पेट में गैस, चर्म रोग, छाती में जलन, दिमाग के रोग और स्वभाव में क्रोध रहता है साथ ही जातक को शत्रु अधिक होंगे। लेकिन इसके दोष रहित होने पर उसके अनेक होंगे मित्र होंगे जो उसके लिए लाभदायक सिद्ध होंगे।

अग्निकांड का शिकार हुए घरों को देखें तो स्पष्ट होगा कि इसके पीछे मुख्य कारण नैर्ऋत्य और ईशान की अपेक्षा आग्नेय तथा वायव्य का बढ़ाव अधिक होना है। घर के अहाते या बरामदों में भी वायव्य ईशान की अपेक्षा नीचा हो तो शत्रुओं की संख्या में वृद्धि होती है, स्त्रियां रोग ग्रस्त और घर भय ग्रस्त रहता है। वायव्य के दोषपूर्ण होने पर फेफड़े, हृदय, छाती, थूक, सर्दी–जुकाम, निमोनिया, मानसिक परेशानियां, अपेंनडिसाइटिस, डायरिया, स्त्रियों में मासिक धर्म की अनियमितता एवं अन्य स्त्री जन्य रोग होने की संभावना रहती है।

**उपाय**

1. वायव्य दिशा का क्षेत्र यदि बढा हुआ हो तो उसे आयताकार या वर्गाकार बनाए। यदि यह भाग कटा हुआ हो तो पूर्णिमा के, चंद्रमा के तस्वीर लगाए। साथ ही दोष निवारण हेतु घर मे चंद्र यंत्र लगाएं।
2. द्वार पर आगे–पीछे श्वेत गणपति रजतयुक्त श्रीयंत्र के साथ लगाएं।
3. दीवारों पर क्रीम रंग करें।



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

4. माता का यथासंभव आदर सत्कार करें एवं आर्शिवाद लें।
5. सोमवार का व्रत रखें।
6. स्फटिक शिवलिंग पर नित्य दूध चढ़ाएं।

### आग्नेय दिशा दोष

आग्नेय का स्वामी गणेश, आयुध शक्ति एवं प्रतिनिधि ग्रह शुक्र है। शुक्र समरसता तथा परस्पर मैत्री संबंधों का ग्रह माना जाता है। शुक्र से प्रभावित जातक आकर्षक, कृपालु, मिलनसार तथा स्नेही होते हैं। शुक्र का संबंध संगीत, कला, सुगंध, भोग–विलास, ऐश्वर्य एवं सुंदरता से है। शुक्र का प्रधान लक्ष्य परमात्मा की सृष्टि को आगे बढ़ाना हैं। इसका जीव मात्र की प्रजनन क्रिया और काम जीवन पर अधिकार बताया गया है, जिसके फलस्वरूप यह क्रियात्मक क्षमता के द्वारा विकास क्रम में योगदान देता हैं। इसकी स्थिति से पत्नी, कामशक्ति, वैवाहिक सुख, सांसारिक एवं पारिवारिक सुख का विचार किया जाता हैं। यह कालपुरुष की बायीं भुजा, घुटने एवं बाएं नेत्र को प्रभावित करता हैं। जन्म कुंडली के एकादश एवं द्वादश भावों पर इसका असर रहता हैं। इस दिशा में दोष रहने पर दाम्पत्य सुख में, मौजमस्ती एवं शयन सुख में कमी बनी रहती हैं। साथ ही नपुंसकता, मधुमेह, जननेंद्रिय, रति, मूत्राशय, तिल्ली, बहरापन, गूंगापन और छाती आदि से संबंधित बीमारियों की संभावना रहती हैं।

### उपाय

1. घर के द्वार पर आगे–पीछे वास्तु दोष नाशक हरे रंग के गणपति को स्थान दें।
2. स्फटिक श्रीयंत्र के समक्ष श्री सूक्त का पाठ करें।
3. शुक्र यंत्र के समक्ष शुक्र के बीज मंत्र का जप करें।

### नैर्ऋत्य दिशा दोष

नैर्ऋत्य दिशा का स्वामी राहु है। राहु एक शक्तिशाली छाया ग्रह है। इसके प्रभावों का कोई निवारण नही है। इस ग्रह की शांति करके इसके प्रत्यक्ष रूप में अनिष्टकारी फल दूर नही किए जा सकते हैं। केवल ज्ञान तथा बुद्धिपूर्वक इससे सहयोग करके ही इसके दुष्प्रभावों को कम किया जा सकता है। यह काल पुरुष के दोनों पावों की एड़ियां एवं बैठक है। जन्म कुंडली का आठवां एवं नौवां स्थान नैर्ऋत्य के प्रभाव में रहते हैं। यदि घर के नैर्ऋत्य में खाली जगह, गड्ढा, भूतल, जल की व्यवस्था या कांटेदार वृक्ष हो तो गृहस्वामी बीमार होता है, उसकी आयु क्षीण होती है, शत्रु पीड़ा पहुंचाते हैं तथा संपन्नता दूर रहती है। नैर्ऋत्य दिशा से पानी दक्षिण के परनालों से बाहर निकलता हो तो स्त्रियों पर तथा पश्चिम के परनालों द्वारा पानी निकलता हो तो पुरुषों पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। नैर्ऋत्य के होने पर अकस्मात दुर्घटनाएं, अग्निकांड एवं आत्महत्या जैसी घटनाएं होती रहती हैं। इसके अतिरिक्त परिवार के लोगों त्वचा रोग, कुष्ठ रोग, छूत के रोग पैरों की बीमारियों, हाइड्रोसील एवं स्नायु से संबंधित बीमारियों की संभावना रहती है।

### उपाय

1. नैऋत्य दिशा बढा हुआ हो तो इसे काटकर आयताकार या वर्गाकार बनाए।
2. दिशा दोष निवारणार्थ पूजास्थल में राहु यंत्र स्थापित कर उसका पूजन करें।



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

3. मुख्य द्वार पर भूरे या मिश्रित रंग वाले गणपति लगाएं।
4. राहु के बीजमंत्र का जप एवं राहुस्तोत्र का पाठ करें।
5. यदि नैऋत्य दिशा में अधिक खुला क्षेत्र हो तो यहां ऊँचे – ऊँचे पेड–पौधे लगाए। साथ ही भवन के भीतर नैऋत्य क्षेत्र में गमलों में भारी पेड़–पौधे लगाएं।

## वास्तु दोष निवारणार्थ सिद्ध गणपति प्रयोग

14 प्रकार के महाविद्याओं के आधार पर चौदह प्रकार की गणपति प्रतिमाएं बताई गई हैं। जिनका वर्णन यहां प्रस्तुत है।

**1. संतान गणपति :**
संतान गणपति की मन्त्रपूरित विशिष्ट प्रतिमा अपने द्वार पर पूर्ण भक्ति एवं श्रद्धा के साथ शुभ मूहूर्त में लगाएं, इससे एक वर्ष के अंदर संतान की प्राप्ति होती है।

**2. विघ्नहर्त्ता गणपति :**
जिस परिवार में निरंतर कलह, विघ्न क्लेश एवं मानसिक संताप रहता है उस परिवार के लोगों को प्रवेश द्वार पर विघ्नहर्ता गणपति की मूर्ति लगाना चाहिए।

**3. विद्या प्रदायक गणपति :**
जिस घर में बच्चे उद्दंड हों, जिनका पढ़ाई मन नहीं लगता हो, पढ़ते बहुत हों पर कुछ याद नहीं रहता हो उस परिवार के स्वामी को प्रवेश द्वार पर शुभ मुहूर्त में विद्या प्रदायक गणपति की मूर्ति शुभ मुहूर्त में स्थापित करनी चाहिए।

**4. विवाह विनायक :**
कई घरों में लड़के–लड़कियां बड़े हो जाते हैं पर उनके विवाह विलंब होता है। कई बार मांगलिक कुंडलियां भी बाधक होती हैं। इस समस्या के निवारण हेतु गृह द्वार पर विवाह विनायक गणपति की स्थापना करनी चाहिए।

**5. धनदायक गणपति :**
जिन्हें अपने परिश्रम का पूरा लाभ नहीं मिल पाता हो, धन की बरकत नहीं होती हो, उन्हें अपने घर में धनदायक गणपति की स्थापना करनी चाहिए।

**6. चिंता नाशक गणपति :**
जिन लोगों को निरंतर कोई न कोई चिंता बनी रहती है, जो लगातार मानसिक तनाव से ग्रस्त रहते हों, चिंता नाशक गणपति की प्रतिमा लगानी चाहिए।

**7. सिद्धिदायक गणपति :**
कार्यों में सफलता पाने के लिए सिद्धिदायक गणपति की मूर्ति लगानी चाहिए।

**8. आनंददायक गणपति :**
घर में आनंद एवं प्रेम की वर्षा के लिए आनंददायक गणपति की प्रतिमा लगानी चाहिए।



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

**9. विजय सिद्धि गणपति :**
कोर्ट केस मुकदमे में विजय और शत्रु को परास्त करने के लिए विजय सिद्धि गणपति की मूर्ति लगानी चाहिए।

**10. ऋणमोचन गणपति :**
कर्ज से मुक्ति के लिए ऋणमोचन गणपति की मूर्ति लगानी चाहिए।

**11. रोग नाशक गणपति :**
विभिन्न प्रकार के रोगों के शमन हेतु रोगनाशक गणपति की प्रतिमा लगानी चाहिए।

**12. नेतृत्व शक्ति विकासक गणपति :**
नेता, अभिनेता, मंत्री, सांसद, विधायक आदि बनने तथा राजनीति में उच्च पद प्रतिष्ठा की प्राप्ति हेतु नेतृत्व शक्ति विकासक गणपति की प्रतिमा लगानी चाहिए।

**13. सोपारी गणपति :**
सोपारी गणपति के मांत्रिक प्रयोग से भारतीय अध्यात्म में वृद्धि होती है।

**14. शत्रुहंता गणपति :**
गणपति की यह मूर्ति विभिन्न रंगों से बनी होती है। इसे शयनकक्ष के बाहर दरवाजे पर आनंद एवं अच्छे शयन सुख के लिए लगाते हैं।

## वास्तु दोष निवारक कुछ प्राचीन यंत्र

**1. मारुति यंत्र :**
यह वाहन सुरक्षा के लिए काफी लाभदायक यंत्र है। यह मारुति नन्दन श्री हनुमान जी का यंत्र है। विवादास्पद जमीन का विवाद सुलझाने एवं उसकी अच्छे दामों में बिक्री के लिए इसका उपयोग किया जाता है।

मंत्र : ॐ हं हनुमते नमः

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

**2. काली यंत्र :**

यह महाकाली का यंत्र है जो फैक्ट्री–उद्योग की भट्ठी, बॉयलर, ट्रांसफॉर्मर एवं जेनरेटर पर स्थापित किया जाता है ताकि फैक्ट्री–उद्योग में अग्नि का संचार संतुलित बना रहे। यह यंत्र शनि के दुष्प्रभाव को दूर करता है। इस यंत्र का उपयोग वशीकरण एवं मोहन के लिए भी किया जाता है। यह काले जादू के कुप्रभाव से बचाता है। यह रक्तचाप लकवा एवं नसों से संबंधित असाध्य बीमारियों से भी रक्षा करता है।

मंत्र : ॐ क्रीं कालिकायै नमः।

**3. सूर्य यंत्र :**

जिनकी जन्मपत्री में सूर्य की स्थिति कमजोर हो जिन्हें, सरकारी तंत्र द्वारा बार–बार परेशान किया जाना हो अथवा अन्य कोई राजकीय या प्रशासनिक परेशानी हो उन्हें प्रतिदिन सूर्य यंत्र के समक्ष सूर्य मंत्र का जप करना चाहिए।

मंत्र : ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

**4. इंद्राणी यंत्र :**

सभी प्रकार के उपाय एवं प्रयत्न के बावजूद व्यावसायिक नुकसान हो रहा हो तो वास्तुविद् से परामर्श लेकर इंद्राणी यंत्र की स्थापना करें।

**इंद्राणी यंत्र**

यह एक सुरक्षा कवच है

**व्यापारे संभवेत् हानिः कृते यत्ने निरन्तरम्।**
**इन्द्राणीयन्त्रमास्थाप्यं विधिवद् वास्तुविद् धृतम्।।**

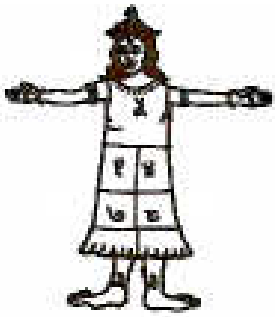

**5. दिक्दोषनाशक यंत्र :**

यह वास्तु दोष के शमन के लिए लगाया जाता है। यदि वास्तु गलत दिशा में बना हो और उसे सुधारना कठिन हो तो इस यंत्र से निश्चित लाभ मिलता है।

**6. दुर्गा बीसा यंत्र :**

यह जगदम्बा का यंत्र है। इसे लगाने से विपत्तियों से छुटकारा मिलता है तथा शत्रुओं का विनाश होता है। इस तरह यह यंत्र शक्ति का परिचायक है।



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

मंत्र : ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै।

**7. श्री यंत्र :**

माहापुराणों में श्री यंत्र को देवी महालक्ष्मी का प्रतीक कहा गया है। श्री यंत्र में 2816 देवी देवताओं की सामूहिक अदृश्य शक्ति विद्यमान रहती है इसलिए इसे यंत्रराज, यंत्रशिरोमणि एवं षोडशी यंत्र कहा जाता है। यह आर्थिक सुख–समृद्धि एवं खुशहाली देता है। कहा जाता है कि जिस घर में श्री यंत्र के समक्ष श्री सूक्त, लक्ष्मी सूक्त एवं ललिता सहस्रनाम का पाठ हो वहां पर लक्ष्मी का निरंतर वास होता है। एकाक्षी नारियल, श्वेतार्क गणपति, कमलगट्टे की माला, चौदह मुखी रुद्राक्ष एवं दक्षिणावर्त शंख के साथ इस यंत्र को रखना लक्ष्मी एवं सुख समृद्धि की प्राप्ति होती है।

मंत्र : ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ऊं महालक्ष्म्यै नमः।

**8. वास्तु यंत्र :**

यह यंत्र भवन में वास्तु संबंधी सभी प्रकार के दोषों के निवारण एवं सुख समृद्धि के लिए लगाया जाता है। यह एक अत्यंत उपयोगी यंत्र है।



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

मंत्र : ॐ वास्तुपुरुषाय नमः।

**9. कृत्यानाशक वास्तु यंत्र :**

यदि किसी दुश्मन ने आपके मकान को बांध रखा हो तो इस यंत्र को लगाएं लाभ होगा।

**10. द्वार दोषनाशक तोरण :**

यह एक विशिष्ट प्रकार का तोरण है जो द्वार संबंधी दोषों का शमन करने के साथ–साथ घर को बाहरी विपदाओं से बचाता है।

**11. वरुण यंत्र :**

यदि भवन में जल स्थान, नलकूप, पानी की टंकी आग्नेय या गलत दिशा में बनाई गई हो तो इस वरुण यंत्र को उस स्थान पर स्थापित करने से जल संबंधी सभी दोष नष्ट हो जाते हैं।

**12. मत्स्य यंत्र :**

इस यंत्र को बाधामुक्ति यंत्र भी कहा जाता है। यह घर की सभी बाधाओं एवं विपदाओं को दूर भगाता है तथा घर को काले जादू एवं बुरे प्रभावों से बचाता है।

मंत्र : ॐ क्लीं मत्स्यरूपाय।



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

**13. महामृत्युंजय यंत्र :**

यह भगवान शिव का यंत्र है। इसकी पूजा करने से स्वास्थ्य लाभ मिलता है।

जब डॉक्टर किसी मरीज को बचा नहीं पाता तब इस यंत्र के समक्ष महामृत्युंजय मंत्र का जप कर उसकी प्राण रक्षा की जाती है।

मंत्र : ॐ त्र्यम्बकम् यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम् उर्वारुकमिवबन्धनान् मृत्योर्मुक्षीयमाऽमृतात्।

**14. कुबेर यंत्र :**

कुबेर को लक्ष्मी का खजांची कहा जाता है। जिस परिवार को धन की कमी, आर्थिक विपन्नता, गरीबी, कर्ज इत्यादि का सामना करना पड़ता हो तो उस परिवार के लोगों को कुबेर यंत्र का पूजन करना चाहिए, इससे सम्पन्नता, आर्थिक समृद्धि एवं सुखों की वृद्धि हो है।

मंत्र : ॐ कुबेराय नमः



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

**15. सुख समृद्धि यंत्र :**

जिस परिवार में आपसी संबंध अच्छा न रहता हो, सुख शांति की कमी रहती हो, उस परिवार के लोगों को सुख समृद्धि यंत्र के समक्ष लक्ष्मी एवं गणेश के मंत्रों का जप करना चाहिए

इससे आपसी संबंधों में मधुरता आएगी और परिवार सुख शांति का संचार होगा।

मंत्र : ॐ मंगलमूर्तये नमः।

**16. प्रेमवृद्धि यंत्र :**

यह यंत्र पति और पत्नी के बीच परस्पर संबंधों में मधुरता और अपनापन बनाए रखने में मदद करता है। जिन घरों में पति और पत्नी के बीच अच्छे संबंध न रहते हों, उन्हें इस यंत्र के समक्ष निम्न मंत्र का जप करना चाहिए इससे अप्रत्याशित लाभ मिलेगा।

मंत्र : क्लीं कामदेवाय नमः



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

**17. संतान गोपाल यंत्र :**

जब दम्पति को संतान होने में विभिन्न प्रकार के बाधायें आती हो तो वैसी स्थिति संतान गोपाल यंत्र के समक्ष संतान गोपाल स्त्रोत का नियमित पाठ करनें से निश्चित रूप से प्रतिभावान और दीर्घायु संतान का जन्म होता है।

मंत्र : ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं जीं ओं भूर्भुवः स्वः ॐ देवकीसुतगोविंद वासुदेवजगत्पते। देहि में तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॐ ॐ स्वः भुवः भूः जीं ह्रीं त्वीं ॐ।

**18. नवग्रह यंत्र :**

यह यंत्र सभी नव ग्रहों एवं उनसे संबंधित सभी दिशाओं का प्रतिनिधत्व करता है

इस यंत्र के पूजन करने से सभी नवग्रहो की कृपा एवं आर्शिवाद प्राप्त होती है। साथ ही उनसे संबंधित दिशाओं में भी शुभता की प्राप्ति होती है।

मंत्रः– ॐ ब्रह्मामुरारी त्रिपुरान्तकारी भानुशशी भूमिसुतौ बुधश्च गुरूश्च शुक्र शनि राहु केतवः सर्वे ग्रहा शान्तीकरा भवन्तु।

**19. श्री गणपति यंत्र :**

श्री गणपति यंत्र सभी प्रकार के विध्न और बाधाओं को दूर करने वाला सिद्धिप्रदायक, सुख–शांतिप्रदायक,



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

ऋण को हरने वाला तथा समस्त कामनाओं को पूरा करने वाले होते है। गणपति यंत्र की पूजा करने से रीद्धि (धन), सिद्धि (सफलता) और बुद्धि के प्राप्ति होती है। गणेश जी के पूजा करने के उपरांत किसी भी कार्य को प्रारंभ करने से वह कार्य निर्विघ्न संपादित होते हैं। इस कारण इन्हें विघ्नेश्वर भी कहा जाता है। इसके साथ ही इन्हें गणपति, विनायक, गजमुख तथा बुद्धि का देवता भी कहा जाता है। गुरू आदि शंकराचार्य ने कहा है किसी भी प्रवेश द्वार के बाहर और भीतर गणेश जी की प्रतिमा लगाने से सभी प्रकार के विघ्न बाधाओं एवं बुरी प्रभाव से भवन को बचाया जा सकता है।

मंत्रः– ॐ गं गणपतये नमः।

**20. सरस्वती यंत्रः**

मां सरस्वती का यंत्र विद्या, बुद्धि, एकाग्रचितता एवं ज्ञान को देने वाला होता है। यह यंत्र विद्यार्थी को मानसिक अशांति दूर कर विद्या अध्ययन में सफलता दिलाता है। यदि किसी घर में विद्यार्थी को पढने में मन नही लगता हो, विद्या अध्ययन में सफलता नही मिल पाती हो ऐसे स्थिति में सरस्वती यंत्र के समक्ष निम्न मंत्रों का जाप लाभप्रद होता है।

मंत्र – ॐ ऐं महासरस्वत्यै नमः।



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

**21. महालक्ष्मी यंत्र :**

महालक्ष्मी यंत्र का प्रयोग करने से घर में दूर्दिन, दूर्भिक्ष, गरीबी एवं कर्ज से मुक्ति मिलती है। वास्तव में यह यंत्र, धन, समृद्धि एवं सफलता प्राप्त करने का एक उत्कृष्ट यंत्र है। इस यंत्र के समक्ष लक्ष्मी सूक्त का पाठ या निम्न मंत्रो का जाप करना विशेष लाभप्रद होता है।

मंत्रः– ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ऊँ महालक्ष्मयै नमः।

**22. कमला यंत्र :**

इस यंत्र के समक्ष पूजा करने से गरीबी, कर्ज, महापातकी, दूर्भिक्ष, बिमारी एवं तनाव खत्म होता है। घर में सुख–शांति एवं समृद्धि की वृद्धि हो जाती है। यह लक्ष्मी प्राप्ति का एक शक्तिशाली यंत्र है।

मंत्रः– ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्प्रसूत्यै नमः।

**23. बगलामुखी यंत्र :**

शत्रु के प्रभाव को मर्दन कर विजय दिलाना इस यंत्र का मुख्य कार्य है। यह शक्ति और पराक्रम में वृद्धि कर शत्रुओं को परास्त करता है। पीले वस्त्र धारण कर इस यंत्र के समक्ष निम्न मंत्रों के नित्य जाप करने से मुकदमा, कोर्ट–कचहरी आदि में विजय की प्राप्ति होती है।



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

मंत्रः– ॐ ह्रीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय। जिव्हाम् कीलय कीलय बुद्धिं विनाशय ह्रीं ऊँ स्वाहा।।

**24. मातंगी यंत्र :**

इस यंत्र के पूजन करने से दाम्पत्य जीवन में मधुरता आती है एवं जीवन में सभी प्रकार के सुख सुविधाओं की प्राप्ति होती है।

मंत्रः– ॐ ह्रीं क्लीं हूं मातंग्यै फट् स्वाहा।

◆◆◆◆◆



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

# 38. फेंगशुई
# Feng-Shui

Future Point

चीनी भाषा में वास्तु शास्त्र को फेंग सुई कहा गया है, जो दो शब्दों का सम्मिश्रण (Wind-Water) है और जिसका शाब्दिक अर्थ जल एवं वायु है। फेंगशुई अपने देश के भौगोलिक परिस्थितियों के आधार पर जल, अग्नि , पृथ्वी लकडी और धातु को पंचतत्व माना है।

फेंगशुई के पांचो तत्व कुछ विशेष महत्व रखते हैं और इनका कुछ खास दिशाओं पर स्वामित्व भी होता है।

| तत्व | दिशा पर स्वामित्व |
|---|---|
| लकडी | पूर्व |
| धातु | पश्चिम |
| जल | उतर |
| अग्नि | दक्षिण |
| पृथ्वी | दक्षिण पश्चिम |

हमारे चारों तरफ जो ऊर्जायें प्रवाहित हो रही हैं उसका उपयोग एक खुशनुमा स्वस्थ और समृद्व जीवन के लिए किया जाए यही फेंगशुई का सिद्वांत है। फेंगशुई चीन देश का वास्तु शास्त्र है यह एक रहस्यमयी चीनी कला है जो ताओ सिद्वांत पर आधारित है यह हमारे व्यक्तिगत वातावरण के सामंजस्य को संतुलित करता है। फेंगशुई के मूल ग्रंथ चीनी भाषा में है अंग्रेजी में इन ग्रंथो का अनुवाद किया गया है। पुनः अंग्रेजी से भारतीय भाषा में अनुवाद हुए है और हो रहे है। मूलतः यह भारतीय वास्तु विधा का शास्त्र है जो भारतीय दर्शन पर ही आधारित है यह भारत से तिब्बत के रास्ते हुए चीन पहुॅचा और वहॉ इसका प्रचार –प्रसार हुआ अर्थात फेंगशुई भारतीय संस्कृति से काफी प्रभावित है विशेषकर बौद्व धर्म से। चीनी लोग मानवीय जीवन में प्राप्त होने वाले यश या अपयश को पृथ्वी से प्राप्त होने वाली शक्तियों से जोड़ते हैं। वे मानवीय कृतियों को विशेष महत्व नहीं देते। समृद्धि, आरोग्य एवं दैव ये तीनों बातें पृथ्वी से प्राप्त होने वाली हवा और पानी से जुड़ी हुई हैं।

पृथ्वी पर एक अदृश्य शक्ति विद्यमान है जिसका वर्णन आधुनिक विज्ञान में गुरूत्वाकर्षण एवं विद्युत चुम्बकीय बलों के रूप में किया गया है इस अदृश्य शक्ति के कारण उर्जा सदैव सभी जगहों पर प्रवाहित होते रहती है। इस उर्जा प्रवाह को चीनी भाषा में की (Qi) कहते है। इस अदृश्य शक्ति को दो भागों में विभाजित किया गया है। यिन (Yin) ऋृणात्मक (-) और यांग (yang) धनात्मक (+) ये दोनो



www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

एक दूसरे के पूरक हैं साथ ही दोनों की अपनी अपनी गुरूत्वाकर्षण हैं और दोनों का एक दूसरे के बिना कोई अस्तित्व नही है। धनात्मक भूगर्भीय शक्ति को यांग और ऋणात्मक भूगर्भीय शक्ति को यिन कहते है। इन भूगर्भीय शक्ति को वे एक चुंबकीय कंपास के माध्यम से खोज निकालते हैं जिसे वे लूओपान (Luopan) कहते हैं। यिन (yin) और यांग (yang) संपूर्ण ब्रह्मांड का नियमन करने वाली पौराणिक शक्ति है। यिन और यांग विरोधी तत्व की दो विभिन्न शक्तियां हैं। यिन अंधकार का प्रतीक है तो यांग संवेदनशील प्रकाश तत्व है। यिन स्त्री तत्व है तो यांग पुरुष तत्व। चीनी डॉक्टर के अनुसार शरीर के भीतर यिन तत्व और शरीर के बाहर यांग तत्व विद्यमान रहता है। जब शरीर में विकार होता है तब यिन और योंग में से किसी तत्व में विकार आ जाता है। जिस प्रकार पृथ्वी में चुंबकीय शक्ति होती है, उसी प्रकार प्रत्येक मनुष्य के शरीर में भी चुंबकीय तरंगें होती हैं। चीनी मान्यताओं में इस शक्ति को 'की' (Qi) कहते हैं।

मानवीय शरीर में 'की' (Qi) भी धनात्मक एवं ऋणात्मक दोनों प्रकार की होती है। किसी के शरीर में इसका सही संतुलन उसे स्वस्थ रखता है। एक तरफ मानवीय की (Qi) मनुष्य को शक्ति, सद्बुद्धि सुंदर शारीरिक क्षमता आदि देती है, तो दूसरी तरफ पृथ्वी निर्माण की तकनीकी के साथ–साथ आंतरिक साज–सज्जा, फर्नीचर, तस्वीरों, पर्दों एवं डेकोरेशन सामग्री का विशेष ध्यान रखना चाहिए ताकि भूगर्भीय शक्ति (Qi) के साथ–साथ आंतरिक संरचना की तरंगों (Qi) का भी सम्यक ताल–मेल हो।

यही ताल मेल आवासीय भवन, एपार्टमेंट, दुकान, ऑफिस, होटल, बगीचा, उद्योग, कॉम्प्लेक्स की भूगर्भीय एवं आंतरिक संरचना शक्ति के संतुलन एवं समतुल्यता को बढ़ाता हुआ उन्हें दीर्घजीवी बनाता है।

चीनी दर्शन के अनुसार समस्त ब्रहाण्ड यिन और यांग नाम की ऋणात्मक और धनात्मक शक्तियों से आच्छादित है। ये अलग–अलग दिशाओं के स्वामी हैं और इनके अपने–अपने प्रभाव है। इनका विवरण निम्न प्रकार है।

| 'यिन' स्त्री शक्ति | 'यांग' पुरूष शक्ति |
|---|---|
| नकारात्मक | सकारात्मक |
| निष्क्रिय | सक्रिय |
| ठंडे रंग | गरम रंग |
| अंधकार | चमक |
| रात्रि | दिन |
| चंद्रमा | सूर्य |
| छाया | प्रकाश |
| नरम पदार्थ | कड़े पदार्थ |
| अचल प्रकृति | सचल प्रकृति |



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

**फेंग सुई के पंच महातत्व**

| | NW | N | NE | |
|---|---|---|---|---|
| | **धातु** | **जल** | **पृथ्वी** | |
| W | **धातु** | **पृथ्वी** | **काष्ठ** | E |
| | **पृथ्वी** | **अग्नि** | **काष्ठ** | |
| | SW | S | SE | |

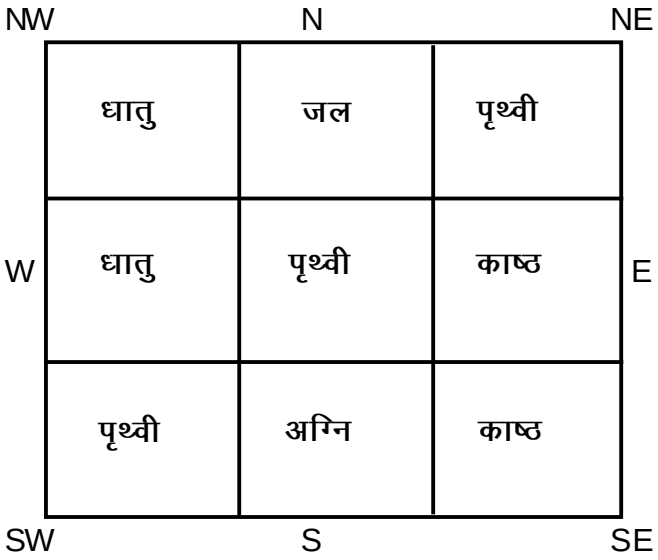

**दिशा और प्रभाव**

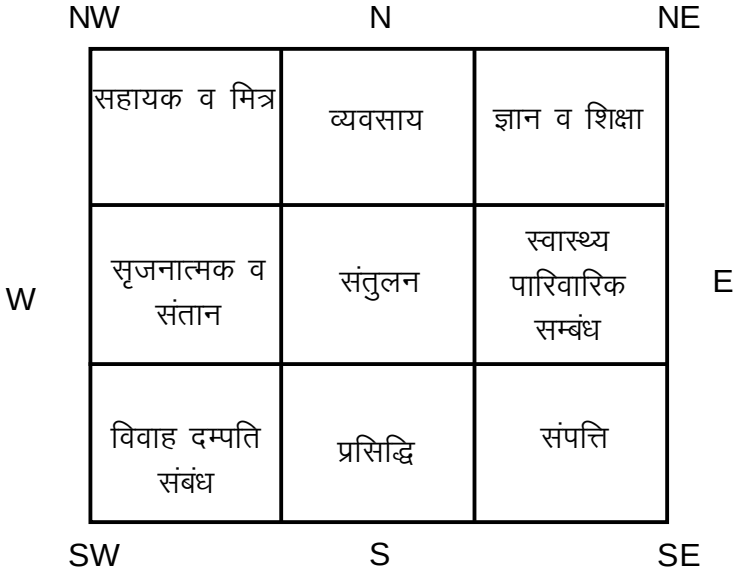

| | NW | N | NE | |
|---|---|---|---|---|
| | सहायक व मित्र | व्यवसाय | ज्ञान व शिक्षा | |
| W | सृजनात्मक व संतान | संतुलन | स्वास्थ्य पारिवारिक सम्बंध | E |
| | विवाह दम्पति संबंध | प्रसिद्धि | संपत्ति | |
| | SW | S | SE | |



www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

## फेंगशुई के पांच तत्व

चीनी दर्शन के अनुसार पूरा ब्रह्मांड पांच मूल तत्वों से निर्मित है– अग्नि, जल, काष्ठ, धातु और मिट्टी। ये पांचों तत्व प्रकृति की शक्ति के साथ अपने जटिल अन्योन्याश्रित संबंधों तथा नाजुक संतुलन का प्रतिनिधित्व करते हैं। वास्तु में इन तत्वों का सही ताल मेल रखने पर उसमें रहने वाले का जीवन सुख शांति एवं आनंदपूर्वक व्यतीत होता है। अन्यथा दुख एवं परेशानी पीछे लगी रहती है।

**काष्ठः–**

काष्ठ पोषक पारिवारिक मानसिकता तथा लचीले स्वभाव का द्योतक है । यह प्रायः विकास से जुड़ा रहता है। काष्ठ का सृजन करने वाले पुरूष उर्जावान होते है। ऐसे पुरूष नित्य नयी योजनाओं को जन्म देते है साथ ही प्रभावशाली व्यक्तित्व के कारण सफलता भी प्राप्त करते है। कलात्मकता की ओर इनका झुकाव होता है। इसकी विपरित काष्ठ की प्रतिकूलता रहने पर व्यक्ति धैर्यहीन और क्रोधी होते है। वे जिस काम को आरंभ करते है उसे पूरा नहीं कर पाते। इस तत्व का रंग हरा दिशा पूर्व और ऋतु वसंत है। यह पेड़ पौधे के विकास का सूचक है इसकी आकृति सीधी आयताकार होती है।

**अग्निः–**

अग्नि उर्जा से परिपूर्ण वातावरण प्रेरणादायक उत्साह से परिपूर्ण बुद्विमान एवं समझदार बनाती है। यह प्रकाश गर्माहट और खुशियॉ ला सकती है तो दाह,धमाका और विनाश भी कर सकती है। अग्नि तत्व सम्मान और न्याय का साथ देता है, किन्तु इसके विपरीत यह युद्ध और आक्रमण का साथ भी देता है। अग्नि का सृजन करने वाले पुरूष नेता और क्रियाशील होते है। इस तत्व की अनुकूलता रहने पर क्रियाशील, हंसमुख और धैर्यवान होते है। इस तत्व की प्रतिकूलता रहने पर व्यक्ति असंयमी, शोषक और स्वार्थी किस्म के होते है। इसकी दिशा दक्षिण रंग लाल और ऋतु ग्रीष्म है। गर्मी में यह तत्व सर्वाधिक समृद्वशाली होता है इसकी आकृति त्रिभुजाकार है।

**पृथ्वीः–**

पृथ्वी तत्व प्रधान लोगों को दूसरे लोगों का पोषण एवं सहायता करने में आनंद मिलता है।ये भरोसेमंद निष्ठावान, दयालु एवं विनम्र स्वभाव के होते है। इस तत्व के अनुकूल प्रभाव से प्रभावित लोग सहयोगी, व्यवहारिक, क्रियाशील, ईमानदार, धैर्यवान और निष्ठावान होते है। जबकि प्रतिकूल प्रभाव से प्रभावित रहने पर छोटी–छोटी बातों पर चिंता करने वाले तथा सनकी स्वभाव के होते है। साथ ही शोषक एवं परपीड़क होते है। इस तत्व का रंग पीला और स्थान केन्द्रीय माना गया है। इसका अस्तित्व पूरे वर्ष भर रहता है। इसकी आकृति वर्गाकार, घनाकार होती है।

**धातुः–**

धातु का संबंध प्रचुरता तथा भौतिक सफलता से होता है। साथ ही यह स्पष्ट विचार विस्तृत जानकारी के प्रति चौकसी से भी जुडा होता है। धातु प्रधान व्यक्ति भावी योजनाएं बनाने में सदैव आगे रहते है। साथ ही धातु प्रधान व्यक्ति भावी योजना में आनंद लेने वाले एवं सौंदर्य भरे वातावरण में बेहतर काम



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

करने वाले होते है। अर्थात ये अच्छे प्रबंधक होते है। ऐसे व्यक्ति बहुत ही धीर–गंभीर होते है तथा बहुत ही कठिनाई से किसी की मदद करने को राजी होते है। यह तत्व सफेद एवं सुनहरे रंग का प्रतिनिधित्व करता है। इसकी दिशा पश्चिम तथा ऋतु शरद–पतझड़ है। पतझड़ या शरद में काष्ठ तत्व कमजोर पड जाता है। धातु काष्ठ को नष्ट कर शक्तिशाली हो जाता है। इसकी आकृति गोलाकार, बेलनाकार होती है।

**जलः–**

जल तत्व समाजिक क्रियाकलापो, दूरसंचार तथा बौद्धिकता को दर्शाता है। यह अंतः प्रेंरणा से युक्त संवेदनशील होता है। जल तत्व आंतरिकता, कला और खुबसूरती का प्रतीक है। इसका सृजन करने वाल व्यक्ति अध्यात्मिकता तथा अध्धयन में रूची रखते है तथा इस तत्व वाले व्यक्ति बुद्धिजीवी व्यवहार कुशल शांतिप्रिय,सौन्दर्य प्रिय समाजिक और दूसरों के हमदर्द होते है। साथ ही जल तत्व से प्रभावित व्यक्ति कुटनीतिक और अपने प्रभाव से काम निकालने वाले दूसरों की मनोदशा के प्रति संवेदनशील होते हैं। वे जोखित उठाते हैं और लाभकारी समझौते करते है। इस तत्व का रंग काला एवं नीला दिशा उतर एवं ऋतु शीत है। हिमपात के समय यह तत्व ज्यादा शक्तिशाली होता है। इसकी आकृति तरंग की तरह होती है।

**फेंगशुई एवं वास्तु में अंतरः–**

चीन सूदुर पूर्व में स्थित देश है। इसके उत्तर में मंगोलिया का ठंडा रेगिस्तान है। पूर्व की ओर खुला प्रशांत महासागर है। वहॉ उत्तर की ओर से बहुत ठंडी हवाएं आती है जो अपने साथ ढेर सारे पीली धुल उड़ाकर लाती है इसलिए उतर दिशा को वहॉ शुभ नहीं माना जाता तथा भवनों में उत्तर की ओर की ओर खुलते दरवाजे, खिडकियॉ, बरामदे रखना आदि अच्छा नही समझा जाता है। पूर्व और दक्षिण–पूर्व की ओर से गर्मीयों में शीतल सुहावनी समुद्री हवाएं आती है इसलिए पूर्व और पूर्व–दक्षिण दिशाओं को वहॉ शुभ माना जाता है। इसके विपरीत भारत में उत्तर को शुभ माना जाता है।

**फेंगशुई एवं वास्तु में समानताएंः–**

दोनों ही शास्त्रों ने पूर्व दिशा को अच्छा माना है तथा पांच तत्व एवं अपनी–अपनी ज्योतिष विद्या को महत्व दिया है। दोनों ही पद्धतियों ने मनुष्य जीवन का प्रकृति से संतुलन किया है तथा दोनों ही शास्त्रों ने उतर–पूर्व को ज्ञान एवं शिक्षा की दिशा माना है। भारतीय एवं चीनी दोनों शास्त्रों ने दक्षिण दिशा को लाल रंग से संकेत किया है तथा दोनों ही शास्त्रों में जनकल्याण की भावना निहित है। साथ ही दोनों शास्त्रों में सुधार की उपाय अपनी–अपनी जगह शुभ परिणाम देते है।

**बागुआ पद्धति**

बागुआ एक अष्टभुजाकार चार्ट है। चीनी भाषा में बागुआ का मतलब है– आठ ओर वाला जो कंपास की आठ दिशाओं को दिखाता है। कंपास का प्रत्येक बिंदु जीवन के अलग–अलग पहलुओं का परिचालन करता है जैसे पेशा, ज्ञान, स्वास्थ्य, धन, ख्याति, विवाह, संतान तथा सहायता करने वाले लोग। बागुआ चार्ट के बीचो बीच ताइची होती है जो गोलाकार के बीच यिन और यैंग का संकेत देती है। यह पूर्णता



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

का प्रतीक है और इस बात का स्मरण कराती है कि संतुलन अनिवार्य है।

कंपास की दिशाओं, विशिष्टताओं और उनके प्रभाव क्षेत्र का ज्ञान होने पर आप प्रतिकूल परिस्थितियों के

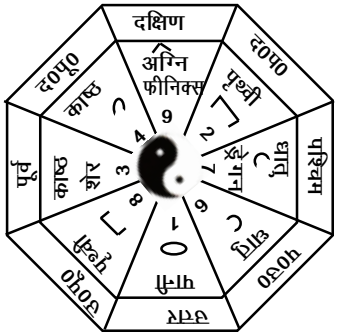


उपचार हेतु और लक्ष्य प्राप्ति में सहायक क्षेत्रों को बढ़ावा देने के लिए सकारात्मक फेर बदल कर सकते हैं।

**दक्षिण**

व्यक्ति की ख्याति आथवा प्रतिष्ठा, भाग्य तथा उत्सवों का परिचालन दक्षिण दिशा द्वारा होता है। दक्षिण का मौसम ग्रीष्म, वर्ण लाल, अंक नौ, मूल तत्व अग्नि तथा जीव कभी न मरने वाली काल्पनिक चिड़िया अमरपक्षी है।

**उत्तर**

उत्तर दिशा पेशे तथा व्यावसायिक सफलता का परिचालन करती है और पेशे में लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रमुख दिशाओं में से एक है। उत्तर का मौसम शीत, वर्ण काला, मूल तत्व जल, अंक एक तथा जीव कछुआ है। अपने मजबूत संरक्षणात्मक आवरण के कारण कछुआ स्थिरता, सुरक्षा तथा लंबी आयु जैसे विशेषताओं के लिए जाना जाता है।

**पूर्व**

यह दिशा स्वास्थ्य, बुद्धि तथा पारिवारिक जीवन का परिचालन करती है। इसकी ऋतु वसंत, वर्ण हरा तथा हल्का नीला, मूल तत्व काष्ठ, अंक तीन तथा जीव शक्तिशाली और प्रेरणादायक कालिय (परदार सांप) है।

**पश्चिम**

संतान, संतति, भाग्य, आनंद तथा रचनात्मकता का परिचालन करने वाली दिशा पश्चिम है। इसकी ऋतु पतझड़, वर्ण श्वेत, मूल तत्व धातु, अंक सात तथा जीव भयावह सफेद शेर है।



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

### दक्षिण पूर्व

यद्यपि बागुआ के आधे कंपास बिंदु किसी न किसी रूप में धन संपत्ति को प्रभावित करते हैं, लेकिन दक्षिण पूर्व सबसे शक्तिशाली और प्रत्यक्ष रूप से धन संपत्ति से युक्त दिशा है। इसकी ऋतु बसंत, तत्व काष्ठ, अंक चार एवं रंग जामुनी है।

### दक्षिण पश्चिम

कंपास की यह दिशा संबंधों, विवाह, साझेदारी तथा मातृत्व का परिचालन करती है। यदि आप अपने व्यवसाय के लिए किसी साझेदार की तालाश में हैं या किसी व्यावसायिक संपर्क को और मजबूत बनाना चाहते हैं तो इस क्षेत्र को सक्रिय बनाएं। इसकी ऋतु ग्रीष्म, वर्ण पीत, तत्व पृथ्वी और अंक दो है।

### उत्तर पूर्व

अगर अपने ज्ञान एवं शिक्षा का आधार विस्तृत करना चाहते हैं या बौद्धिक क्षमताओं को बेहतर करना चाहते हैं तो इस दिशा को सक्रिय बनाएं। वृद्धि के हरे तथा उच्च कांक्षाओं के नीले वर्णों के मेल से इस दिशा में समुद्री हरा रंग क्रियाशील रहता है। इसकी ऋतु शीत, तत्व पृथ्वी और अंक आठ है। चीनी भाषा में आठ अक्षरों का शब्द समृद्धि का द्योतक है।

### उत्तर पश्चिम

यदि दूर दराज स्थित क्षेत्र आपको आकर्षित करते हैं और आपकी रुचि ऐसी है जो आपको घरेलू वातावरण से दूर ले जाती है तो अपने उत्तर पश्चिम क्षेत्र का पोषण कीजिए। यदि अपना व्यवसाय अपने नगर से बाहर फैलाना चाहते हैं, उसे राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय दर्जा देना चाहते हैं तो अपने कार्यालय के उत्तर पश्चिम के कोण का विस्तार फेंगसुई द्वारा करें। यह दिशा पितृत्व, लाभकारकों, परामर्शदाताओं तथा आपकी साहयता करने वाले अन्य व्यक्तियों का परिचालन करती है। इसकी ऋतु पतझड़, तत्व कठोर धातु, रंग धूसर तथा अंक छः है।

### रचनात्मक और ध्वंसात्मक चक्र

चीनी दर्शन के अनुसार पूरा ब्रह्मांड पांच मूल तत्वों से निर्मित है– अग्नि, जल, काष्ठ, धातु तथा मिट्टी। ये पांचों तत्व प्रकृति की शक्ति, उनके जटिल अन्योन्याश्रित संबंधों तथा नाजुक संतुलन का प्रतिनिधित्व करते हैं। यदि इन तत्वों का सही संतुलन के साथ उपयोग किया जाए तो रचनात्मक रूप से सभी प्रकार के विकास एवं विस्तार में सहायक सिद्ध होंगे। इसके विपरीत असंतुलित रूप से इनका उपयोग करने पर विनाश का कारक होते हैं।

### रचनात्मक चक्र

निम्नांकित चित्र में रचनात्मक चक्र में यह दर्शाया गया है कि काष्ठ प्रज्वलित अग्नि को बढ़ावा देता है, अग्नि अपनी राख से भूमि का निर्माण करती है। भूमि से अयस्क (धातु) की उत्पत्ति होती है, जिसकी सतह पर वाष्प बनने से पानी बनता है। जल पेड़ पौधे पोषण देता है, जिससे काष्ठ निर्मित होता है। यहां प्रत्येक तत्व एक दूसरे का सहायक या प्रगतिकारक है। इस चक्र से तत्वों के बीच में सामंजस्य बना रहता है।



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

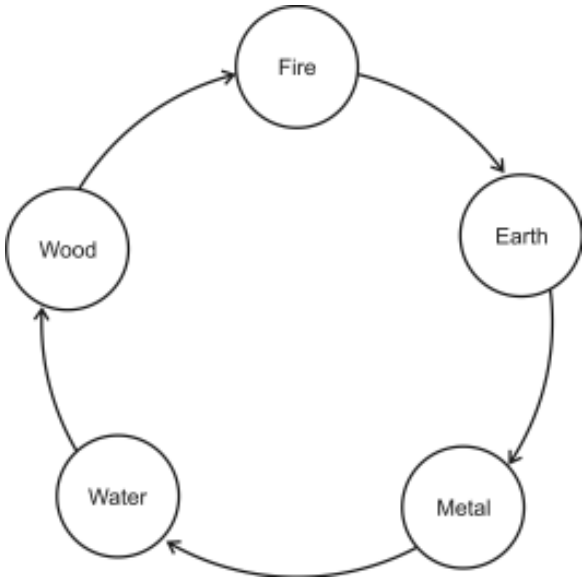


**ध्वंसात्मक चक्र**

जब ये पंच तत्व चक्र विपरीत दिशा में इस तरह बदलते हैं कि वे एक दूसरे की प्रगति, सघनता और प्रभाव को कम करते हैं तो यह चक्र विध्वंसक चक्र कहलाता है। पानी आग बुझाता है, अग्नि धातु को पिघलाता है, घातु से लकड़ी काटी जाती है, काष्ठ भूमि से पोषण ग्रहण करता है और मिट्टी पानी को पंकिल बनाता है। इन तत्वों के बीच में असामंजस्य पैदा होता है। अतः कोई भी तत्व अपने आप में ध्वंसात्मक नहीं है। वास्तव में पांचों तत्व हमारे पर्यावरण के लिए अत्यावश्यक हैं। अपने आसपास के

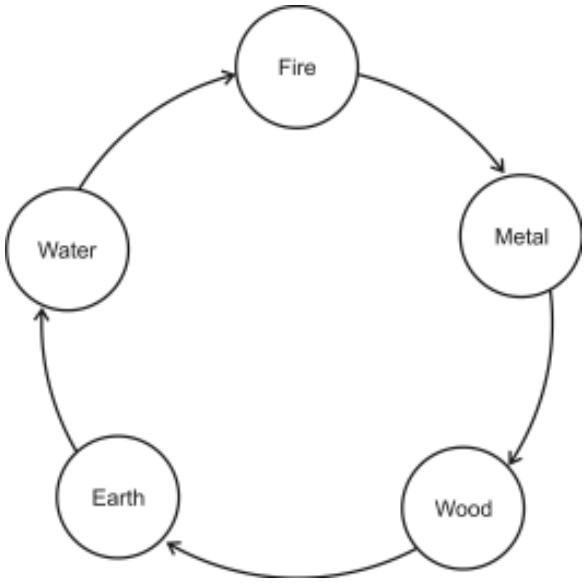




www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

वातावरण को बारीकी से सुधारने के लिए ये चक्र महत्वपूर्ण हैं। उदाहरण के लिए दक्षिण की दीवार पर मछली घर न लगाएं। अग्नि दक्षिण का तत्व है और जल अग्नि के प्रभाव को बुझा देगा। इसी तरह अपने कार्यालय के उत्तरी क्षेत्र में मिट्टी के बर्तन या सजावट के लिए भूरे रंग की कोई वस्तु न रखें क्योंकि उत्तर दिशा जल द्वारा परिचालित होती है। यह मिट्टी का तत्व आप के लिए पेशे की संभावनाओं और व्यवसाय की सफलता को गंदला कर सकता है।

## बिना तोड़–फोड़ वास्तुदोष निवारण

बिना तोड़–फोड़ को वास्तु दोष के दूर करने के संदर्भ में कुछ उपाय यहां बताए जा रहे हैं।

### 1. सही दिशा (Correct Direction)

सभी वस्तुओं को अपनी सही स्थिति एवं दिशा में स्थापित करने से वास्तु–संबंधी दोषों से राहत मिलती हैं। जैसे रसोई घर गलत बना हो तो उसे उसके उचित स्थान आग्नेय में रखने पर वास्तु दोष दूर हो जाएगा। इस प्रकार अगर पानी की बोरिंग आग्नेय में हो तो गलत है, इसलिए वहां इलेक्ट्रिक मीटर लगा दें एवं पानी के निकास को ईशान या पूर्व में कर दें। इससे भवन का जल–दोष दूर हो जाएगा।

### 2. दर्पण (Mirror)

वास्तु विशेषज्ञों की दृष्टि में दर्पण का बड़ा महत्व है क्योंकि यह वास्तु संबंधी बाहरी दुष्प्रभाव को वापस लौटाने की शक्ति रखता है। दर्पण आंतरिक सुंदरता एवं सुरक्षा को भी बढ़ाता है। दर्पण हमेशा उत्तर या पूर्व की ओर लाभदायक रहता है। दर्पण के सामने आते ही यह व्यक्ति (नर या मादा) को उत्साहित (Warm up) कर देता है। दर्पण यदि उत्तर पूर्व भाग में हो तो यह धन एवं लाभ दिलाता है। उत्तर पूर्व की ओर खिड़की, दरवाजा या रोशनदान न होने पर उसकी जगह दर्पण लगाने पर यह खिड़की, दरवाजे एवं रोशनदान का काम करता है। उत्तर या पूर्व की ओर दर्पण लगाकर धन लाभ प्राप्त किया जा सकतत है। इस प्रकार उत्तर में लगा दर्पण उत्तर पूर्व की ओर अपना काल्पनिक प्रतिबिंब बनाता है, जो आय, धन व लाभ के रास्ते खोलता है। साथ ही पूर्वी दीवार पर लगा दर्पण पुत्र या संतान सुख की प्राप्ति है।

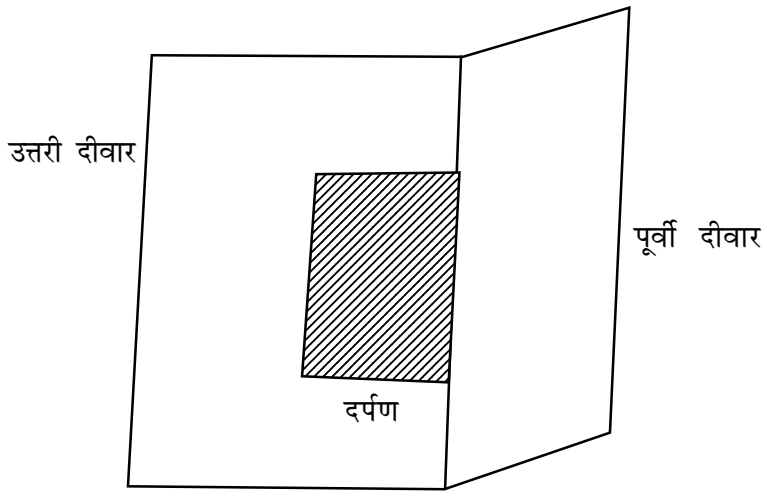




Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

### 3. तेज रोशनी के बल्ब

तेज रोशनी वास्तुदोष सुधार की श्रृंखला में सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है जो पर्यावरण में सुधार ला देती है तथा L की आकृति में बने मकान को चौकोर में बदल देती है। तेज प्रकाश सूर्य का प्रतिनिधित्व करता है जो भवन के आंतरिक एवं बाहरी स्वरूप को चमका देता है। अंधकार दुर्भाग्य, दुख एवं उदासी का जबकि प्रकाश सौभाग्य, सुख एवं प्रसन्नता का प्रतीक है। वास्तु नियमों के अनुसार जिस घर के पूर्व या ईशान में रोशनी स्थायी रूप से रहती है, उस घर में दैविक शक्ति प्रतिपल जाग्रत रहती है।

### 4. मधुर स्वरलहरी या घंटी

फेंग सुई दोष के निवारण में यह अत्यंत ही महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। सिल्वर या उजले रंग की पांच छड़ों वाली धातु की स्वरलहरी कमरे के पश्चिम या घर में पश्चिम की तरफ लगाने से मानसिक शांति एवं पारिवारिक सुख में वृद्धि होती है।

इसी तरह सुनहरे या पीले रंग के धातु की स्वरलहरी मकान या कमरे के वायव्य तरफ लगाने से प्रगति के नए अवसर में वृद्धि होती है तथा लोगों की सहायता मिलती है। साथ ही विदेश यात्रा के अवसर भी प्राप्त होते हैं।

### 5. क्रिस्टल बॉल

क्रिस्टल बॉल पूरे घर में सकारात्मक ऊर्जा प्रवाहित कर वास्तु दोष दूर करने में अहम भूमिका निभाता है। साधारणतः इसे भवन के वायव्य कोण या कमरे के वायव्य में लगाते हैं। यह परिवार में सदस्यों के फेंग सुई दोष के निवारण में यह अत्यंत ही महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। सिल्वर या उजले रंग की पांच छड़ों वाली धातु की स्वरलहरी कमरे के पश्चिम या घर में पश्चिम की तरफ लगाने से मानसिक शांति एवं पारिवारिक सुख में वृद्धि होती है।



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

इसी तरह सुनहरे या पीले रंग के धातु की स्वरलहरी मकान या कमरे के वायव्य तरफ लगाने से प्रगति के नए अवसर में वृद्धि होती है तथा लोगों की सहायता मिलती है। साथ ही विदेश यात्रा के अवसर भी प्राप्त होते हैं।

### 6. वृक्ष और पुष्पगुच्छ

वृक्ष, पौधे और पुष्पगुच्छ जीवनी शक्ति से भरपूर प्रकृति के सुंदर और के अनुपम उपहार हैं, जो मानव को ऑक्सीजन (प्राणवायु) तो देते ही हैं, घर की सुंदरता में भी चार चांद लगा देते हैं। वास्तु दोष परिहार में, बीमारियों को ठीक करने में, उत्तम स्वास्थ्य के लिए वृक्ष और वनस्पतियों का महत्व सर्वाधिक है।

### 7. मछली घर (एक्वेरियम)

मछली घर भी जीवन शक्ति, प्राण वायु एवं प्राकृतिक सौंदर्य का प्रतीक है। मछली घर में उठने वाले पानी के बुलबुले जीवन शक्ति का संकेत देती हैं। ये बुल बुले लक्ष्मी के आगमन के लिए शुभ होते हैं। जब घर में जल तत्व की कमी होती है, तब जल स्थान अर्थात् उत्तर दिशा में मछली घर, फव्वारे या पानी का चित्र लगाना शुभ होता है।

### 8. जलाशय एवं फव्वारे (Fountaions)

बड़े भवन, बहुमंजिला भवन या व्यावसायिक भवन में जल संबंधी दोष को दूर या कम करने के लिए जलाशय एवं फव्वारों को व्यवस्थित कर लगाया जाता है। धनागमन के प्रतीक फव्वारों एवं जलाशयों को बड़ी सूझ–बूझ के साथ लगाया जाता है क्योंकि यदि पानी का निकास गलत ढंग से हो, तो घर का सारा धन गलत ढंग से चला जायेगा।



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

फव्वारा

### 9. भारी पत्थर एवं मूर्तियां

कई बार भवन की विशेष दिशा और कोण को भारी करने के लिए भारी पत्थरों, चट्टानों एवं मूर्तियों का सहारा लिया जाता है। कई बार तो पति–पत्नी के अलगाव, निरंतर यात्राओं एवं अस्थायित्व का दोष वांछित दिशा कोण को भारी करने पर अदृश्य ढ़ंग से स्वतः ही समाप्त हो जाता है।

### 10. भारी विद्युतीय संयंत्र

घर में बिजली का मोटर, कपड़े धोने की मशीन, फ्रिज, टेलीविजन इत्यादि विद्युत उपकरणों को सही ढ़ंग से लगाने पर घर के सदस्यों की पाचन शक्ति एवं ऊर्जा बराबर सही स्थिति में बनी रहती है।

### 11. बांस और बांसुरी (Bamboo & Flutes)

चीन एवं मध्य एशिया में बांस का बड़ा ही धार्मिक महत्व है। बांस की बनी बांसुरी शांति, शुभ समाचार, स्थायित्व और स्थिरता का प्रतीक मानी जाती है। ऐसी मान्यता है कि बांसुरी में एक के ऊपर एक शृंखलाबद्ध बने हुए छेद, भवन को मंजिल–दर–मंजिल सुरक्षित रखते हैं। भवन में बीम से बचाव के लिए दो खोखले बांस तिरछी दिशा में एक दूसरे के सामने मुंह करके लगाएं। इन बांसों पर रेशम के फुदने लटका दें। अगर बांसुरी लगानी हो तो इसे लाल कपड़े में लपेट कर लगाएं। बांसुरी का मुंह नीचे की ओर होना चाहिए। बांसुरी की धार्मिक मान्यताओं के अनुसार जब इसे हाथ में लेकर हिलाया जाता है तो बुरी आत्माएं भाग जाती हैं और जब इसे बजाया जाता है तो घर में सूक्ष्म चुंबकीय प्रवाह (Microcosmos Sound Waves) का प्रवेश होता है।

बांसुरी



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

## 12. पाकुआ दर्पण (Pakua Mirror)

पाकुआ दर्पण द्वार वेध की स्थिति में मुख्य द्वार के बाहर लगाया जाता है। अगर घर के सामने पेड़, कोई मकान, चर्च या मंदिर हो तो इससे वेध को दूर करने के लिए पाकुआ दर्पण मुख्य दरवाजे पर लगाते

पाकुआ दर्पण

हैं। अगर मकान के पीछे वाले दरवाजे पर भी इसी तरह का वेध हो तो वहां भी पाकुआ दर्पण लगाएं। इससे दोनों दरवाजों का वेध का दोष खत्म हो जाएगा। इसे मुख्य द्वार के बीचोबीच लगाएं।

## 13. बागुआ

यह पाकुआ के समान ही होता है। परंतु इसके केंद्र में कोई दर्पण न होकर यिन और यैंग का चिह्न होता

बागुआ दर्पण

है। इसे मुख्य शयन कक्ष के द्वार पर लाल धागे से बांध कर लगाया जाता है। इसे लगाने से भवन एवं कक्ष में नकारात्मक ऊर्जा नहीं आती और सकारात्मक ऊर्जा बाहर नहीं निकलती है।

## 14. मेंडेरियन डक (बत्तख का जोड़ा) या लव–बर्ड्स

मेडेरियन डक का जोड़ा शयनकक्ष के दक्षिण–पश्चिम कोने में रखने से पति–पत्नी के संबंधों में मधुरता आती है और जीवन खुशियों से भर जाता है। विवाह विलंब दूर करने में भी यह बहुत सहायक होता है। कन्या या लड़का, जिसका विवाह होने में विलंब हो, उसके शयन कक्ष के दक्षिण–पश्चिम कोने में लकड़ी के स्टूल पर रखने से शीघ्र लाभ मिलता है।



Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

मैडेरियन बत्तख का जोड़ा

### 15. तीन टांगों वाला मेढ़क

चीनियों की मान्यता है कि मेढक का अगर पूरा परिवार आपके घर के पीछे रहता हो तो आप सभी प्रकार के खतरों एवं दुर्भाग्यों से सुरक्षित रहेंगे। मुंह में सिक्के लिए कूदते हुए मेढक का प्रतीक अति धन

**तीन टांगो वाला मेढ़क**

वृद्धिकारक सिद्ध होता है। इसके रखने की जगह का विशेष महत्व है। सिक्के की दिशा हमेशा घर एवं ऑफिस के अंदर की ओर रखें अन्यथा घर का धन बाहर जा सकता है। इसे सोफे के नीचे एवं आलमारी में रख सकते हैं। लेकिन मंदिर, स्नानघर, शयन कक्ष एवं रसोई में रखना वर्जित है।

### 16. लाफिंग बुद्धा

लाफिंग बुद्धा, जिसके कंधे पर धन की थैली हो, उत्तर–पश्चिम दिशा में रखने से समस्त घर एवं परिवार सुख समृद्धि से भर जाता है। इसके साथ–साथ खूबसूरत झूमर दक्षिण पश्चिम कोने में टांगना चाहिए।

**हंसते हुए बुद्ध की मूर्ति**



Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

### 17. कछुआ

एक जीवित कछुआ पालने या कछुए की मूर्ति या फोटो अपने घर की उत्तर दिशा में रखने या लगाने से जीवन में सुख समृद्धि को बढ़ावा मिलता है। कछुए का मुंह की पूर्व तरफ कर रखना चाहिए। यह

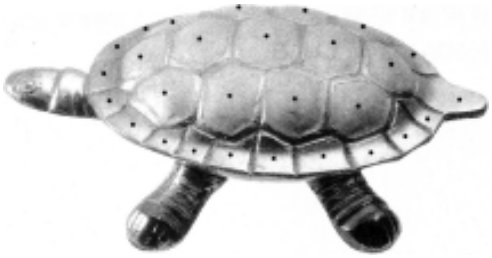

धातु का कछुआ

आयु को बढ़ाता है। घर की उत्तर दिशा में किसी तालाब या पानी के टब में कछुए का होना पूरे घर वाले की समृद्धि एवं आयु के लिए शुभ फलदायी होता है।

### 18. लुक, फुक और साउ

चीनी देवता लुक, फुक और साउ मान–सम्मान समृद्धि एवं दीर्घायु देने वाले माने गए हैं। इनकी मूर्ति घर में रखने से सभी कुछ प्राप्त हो जाता है।

फुक, लुक और साउ

### 19. Rose Quartze

जिन लड़कों या लड़कियों के विवाह में विलंब हो रहा हो वे अपने कमरे के दक्षिण पश्चिम की तरफ Rose Quartze लगाएं, शीघ्र विवाह की संभावनाएं बढ़ जाएंगी।



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

### 20. स्वर्ण मंदिर

स्वर्ण मंदिर की तस्वीर उत्तर पूर्व की दीवार पर लगाने से सुख समृद्धि एवं धन में वृद्धि होती है।

### 21. पहाड़ों की तस्वीर

पहाड़ों की तस्वीर, जिसमें पानी का चित्र न हो, दक्षिण–पश्चिम की दीवार पर लगाने से स्थायित्व, आत्मविश्वास एवं ताकत में वृद्धि होती है।

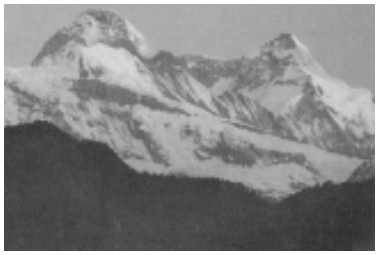

### 22. सेलेस्टिल जानवर

चार जानवर जो चार मुख्य दिशाओं के प्रतीक हैं। इन जानवरों की आकृतियां ड्राईंग रूम की दीवार पर दिशानुसार लगाने से घर के अंदर वास्तु दोष का प्रभाव नगण्य हो जाता है।

| जानवर | रंग | दिशा |
|---|---|---|
| ड्रेगन | हरा | पूर्व |
| टाईगर | सफेद | पश्चिम |
| फीनिक्स | लाल | दक्षिण |
| कछुआ | काला | उत्तर |

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

### 23. उजला बाघ

उजला बाघ की तस्वीर पश्चिम की दीवार पर लगाने से काले जादु अर्थात नजर, जादु–टोना के कुप्रभाव से बचा जा सकता है।

### 24. फीनिक्स

लाल रंग का फीनिक्स दक्षिण की दीवार पर लगाने से ताकत और स्थायित्व में वृद्धि होती है।

**फीनिक्स**

### 25. ड्रैगन

हरे रंग का काष्ठ का ड्रैगन पूर्व की दीवार पर लगाने से समृद्धि एवं पवित्रता में वृद्धि होती है।

**ड्रैगन**



www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

### 26. गरुड़

गरूड का फोटो दक्षिण के दीवार पर लगाने से ताकत के साथ–साथ स्थायित्व में वृद्धि होती है।

**Garuda**

### 27. रत्नों का पेड़

भवन में सकारात्मक ऊर्जा में वृद्धि के लिए रत्नों के पेड़ का उपयोग दक्षिण–पश्चिम या उत्तर पूर्व की दिशा में करना चाहिए। धन की के वृद्धि के लिए टोपाज, पन्ना, मरगज एवं माणिक्य से युक्त रत्नों का पेड़ उत्तर पूर्व में रखना चाहिए। भाग्य में वृद्धि के लिए विभिन्न रत्नों से युक्त पेड़ दक्षिण–पश्चिम में लगाना चाहिए।

**रत्नों का पेड़**

### 28. भाग्यशाली सिक्के

तीन भाग्यशाली चीनी सिक्के पर्स में रखने से धन की वृद्धि एवं कैश मेमो में रखने से व्यापार में आर्डर



www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

चीनी सिक्के

में वृद्धि होती है। इन्हें दरवाजे के अंदर हैंडल पर बांध कर लटकाना भी शुभ माना जाता है।

**29. लव बर्डस**

पति–पत्नी के आपसी सम्बन्धो को मधुर बनाने के लिए इसे शयन कक्ष में लगवाया जाता है।

**30. एजुकेशन टावर**

विद्या की सीढ़ियों को चढने के लिए एजुकेशन टावर को विद्यार्थियों की स्टडी टेबल पर रखा जाता है। इसे सामने रख कर पढ़ने से पढाई में ध्यान एकाग्रचित होता है। इच्छा शक्ति व तर्क शक्ति में वृद्धि होती है। अधिक पढ़ने की प्रेरणा मिलती है।



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

### 31. दोहरा खुशी संकेत

इस चिन्ह को घर के दक्षिण पश्चिम में लगाने से घर में खुशियों के मौके बढ़ते हैं। विवाह योग्य लड़के–लड़कियों की शादी हो जाती है।

### 32. मिसटिक नॉट सिम्बल

रहस्यमय गांठ अर्थात जिसका न प्रास्म्भ पता है न अंत। इस चिन्ह को घर व आफिस की उत्तर दिशा में लगाने से धन व स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है।

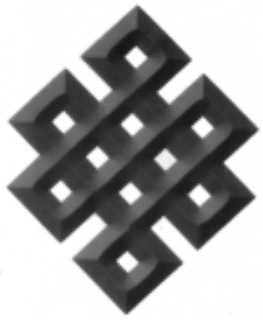



www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

### 33. सुनहरी मछली

सुनहरी मछली धन और समृद्धि की वृद्धि करती है। इनको घर की उत्तर दिशा में पूर्व की ओर मुँह करके लगाना चाहिए। इसे भगवान विष्णु का मत्स्य अवतार माना गया है।

### 34. ड्रैगन के मुँह वाला बोट

संयुक्त परिवार को एकजुट बनाये रखने के लिए इसको घर के दक्षिणी पश्चिमी कोने में रखना चाहिए।

### 35. क्रिस्टल ग्लोब

क्रिस्टल ग्लोब को घर या व्यापारिक स्थल पर इस प्रकार रखना चाहिए कि यह आपके सामने रहे और दिन में कम से कम तीन बार इसे घुमाना चाहिए। यह कैरियर व व्यापार की सफलता में आपका सहायक सिद्ध होगा। शिक्षा व ज्ञान की वृद्धि में सहायक होगा।

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

**वास्तु एवं फेंगशुई के अन्य उपाय :**

- वास्तु एवं फेंगशुई के अन्य उपाय निम्न हैः–
- यदि तीन दरवाजे घर, या किसी वास्तु में एक कतार में हों, तो बीच के दरवाजे पर स्फटिक गोला टांग दें। दोष दूर हो जाएगा।
- सुनहरी मछलियों वाला लघु मछली घर अपने घर में रखना सौभाग्य में वृद्धि करने का एक कारगार उपाय है। इसका उपयोग पूर्व या उत्तर में कर सकते है।
- मधुर संबंधो के लिए प्रसन्नचित मुद्रा में संयुक्त परिवार का फोटो लगाएं।
- घर में नमक मिले पानी से पोंछा लगाएं। यह जल घर में स्थित नकारात्मक ऊर्जा को दूर करने में सहायक सिद्ध होता है।
- शौचालय में समुद्री नमक का कटोरा रखिए। यह गलत स्थान पर बने शौचालय का दोष भी दूर करेगा।
- शिक्षा और ज्ञान के लिए उतर–पूर्व में ग्लोब रखिए और बच्चों के कमरे में महापुरूषों के चित्र लगाएं।
- दक्षिण पश्चिम में पानी रहित पर्वतों का चित्र बनाएं।
- दक्षिण पश्चिम में प्रेमी परिंदें लगाइए।
- धन समृद्वि के लिए चीनी सिक्के जेब में रखें। धन के पेटी के उपर तीन भाग्यशाली सिक्के लगाएं।
- घोड़े की नाल भारत में अत्याधिक भाग्यशाली और सौभाग्यवर्द्धक मानी जाती है। अपनी घर की सुरक्षा और सौभाग्य की वृद्वि के लिए इसे अपने घर के मुख्य द्वार के ऊपर दरवाजे के चौखट के बीच में लगायी जाती है । इसे भूलवश भी पूर्व और दक्षिण पूर्व दिशा की ओर वाले दरवाजे पर इस्तेमाल न करें। इसे पश्चिम,उतर पश्चिम और उतर की ओर वाले द्वार पर लगायें। जो कि काफी लाभकारी होता है। घोडे की नाल हमेशा अंग्रेजी U के अक्षर के भॉति लगायें।
- भवन के कमरे में रहने वाले बीम के दोष को कम करने के लिए बीम के दोनों ओर दो बॉसुरी लाल रिबन में बॉधकर 45 डिग्री के कोण में लगायें।
- मुख्य द्वार के बाहर दोनो तरफ आरोग्य का प्रतीक पवित्र तुलसी का पौधा रखना चाहिए। क्योंकि प्रवेश द्वार ही घर का वह भाग है जहॉ से अच्छी बुरी उर्जा प्रवेश करती है। प्रवेश द्वार के दोनो ओर पौधे रखने से आगन्तुक आकर्षित होते है। साथ ही वहॉ रहने वाले के धन वैभव में वृद्वि होती है।



Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

- संपत्ति तथा सफलता के लिए रत्नों का पौधा अपनी बैठक कक्ष के उतर–पूर्व में रखें।

  प्रसिद्धि एवं स्थायित्व के लिए घर के दक्षिण क्षेत्र में लाल रंग का उपयोग करें एवं उसे लाल रंग की वस्तुओं से सजायें।

- भगवान श्री कृष्ण का चित्र वास्तुदोष को दूर कर खुशहाली लाता है। श्री कृष्ण के साथ

  राधा जी के बगीचे में बॉसुरी बजाते हुए चित्र जिनमें पीछे मोर भी दिखाई दे रहा हो, पति पत्नी के अच्छे संबंधां को दर्शाता है। साथ ही कृष्ण भगवान के मुकुट पर लगा मोर पंख खुशहाली का प्रतीक है।

- मुख्य द्वार पर कोई अवरोध जैसे खंभा, पेड, आदि हो तो दोष निवारण हेतु पाकुआ दर्पण लगायें।

- विवादों या मुकदमों से संबंधित कागजात कभी भी आग्नेय दिशा में न रखें। ये कागजात ईशान या उतर वायव्य में रखे।

- दीवार घड़ी उतर या पूर्व में लगायें।

- घरो मे यदि चोरी होने की समस्या हो तो मंगल यंत्र की स्थापना करनी चाहिए। यदि घर में दंगे फसाद और उपद्रव हो रहे हो तो भयकीलक यंत्र की स्थापना करें।

- जिन घरों में ईशान कोण कट गया हो या पीड़ित हो तो तॉबे के लोटे में पानी भरकर उपर से चॉदी कटोरी से ढॅक दें और कटोरी में चार मोती रखें तथा रोज सुबह कटोरी एवं लोटा को मले और ताजा पानी भरकर पुनः रखें।

- जिन घरों में चुल्हा ईशान क्षेत्र में हो और परिस्थितिवश हटाना मुश्किल हो वैसी स्थिति में तॉबे की तस्तरी में पानी भरकर हमेशा चुल्हे के नीचे रखें और आग्नेय में लाल बल्ब जलायें।

- मारूति यंत्र, मारूति नंदन श्री हनुमान का यंत्र है । इस यंत्र का कई उपयोग है जिनमें एक उपयोग वास्तु के लिए बहुत प्रचलित है। जिसकी जमीन नही बिक पा रही हो या जिसकी जमीन विवाद में पडी हो वह मंगलवार के दिन दोपहर 12 बजे इस यंत्र को ले जाकर संबंधित भूमि में पूर्व मुखी होकर गाड दें। भूस्वामी स्वयं पूर्व या ईशान में सवा हाथ का गड्ढा खोदकर यह यंत्र गाड़ें उपर से दूध और गंगा जल चढायें। संबंधित भूमि का विवाद 3 माह के अंदर सुलझ जायेगा एवं भूमि अच्छे दामों में बिक जायेगी।

- घरों के अंदर अगर किसी तरह का बंधन हो, विकास रूक गया हो तथा कितना भी प्रयास की जाए विकास नही हो पा रहा है तो शनिवार के दिन हरी मिर्च और नींबु मुख्य द्वार पर टांगना चाहिए। धीर–धीरे घर बंधन से मुक्त हो जाएगा।

◆ ◆ ◆ ◆ ◆



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

# 39. पिरामिड

पिरामिड का शाब्दिक अर्थ होता है सूच्याकार पत्थर का खंभा। मिश्रवासियों के अनुसार पिरामिड दो शब्दों से बना है। पिरा (Pyra) एवं मिड (Mid)। दोनों का सम्मिलित अर्थ होता है त्रिकोणाकार। इसके मध्य में अग्नि ऊर्जा के स्रोत का निर्माण होता है। Pyra means fire, indicator at the centre core or nuclei, mid means middle.

**पिरामिड शक्ति :**

भारत के प्राचीन ऋृषि मुनियों तथा तत्व वेत्ताओं ने यह सिद्ध कर दिया है कि सर्वाधिक ऊर्जा एक त्रिभुज तथा उसके केंद्रों से उपजती है। इसी कारण त्रिभुज को शक्ति का स्रोत माना गया है। पिरामिड चूँकि चार त्रिकोण से बनी आकृति है। अतः यह स्वाभाविक है कि जिस वस्तु या आकृति में चार त्रिकोणों से संलग्न प्रतिमा बनेगी वह चार गुनी स्थिरता प्रदान करेगी। अतः पिरामिड जो चार संलग्न त्रिकोणों का प्रतीक है, स्थिरता प्रदान करने वाला है। पिरामिड के दो कोण नींव से 58 डिग्री तथा तीसरा कोण शिखर पर 64 डिग्री पर होता है। चार त्रिभुजाकारी दिशाएं शक्ति का प्रसार करती हैं। वर्गाकार नींव ऊर्जा का प्रसार करती है।

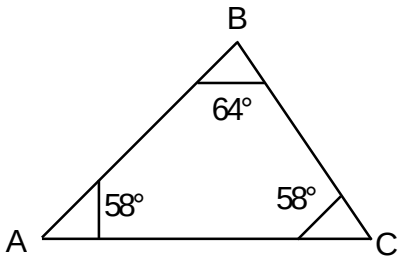


पिरामिड में किसी भी पदार्थ के मूल कणों का विखंडन नहीं होता। पदार्थ यथावत् और उपयोगी बना रहता है। यह जिस स्थान पर होगा वहां विखंडन, बिखराव एवं अलगाव नहीं होगा। साथ ही यह व्यवस्था को अक्षुण्ण रखता है। इसमें किसी भी पदार्थ के बिखरे कणों को पुनः शक्तीकृत करने की क्षमता होती है। इसलिए इसका उपयोग वास्तु और व्यक्ति पर किया जाए तो वह चमत्कारी परिणाम् प्रदान करता है। साथ ही व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक शक्ति को क्षीण होने बचाता है तथा उसे स्वस्थ और दीर्घायु बनाए रखता है। इसमें कोई भी दूषित तत्व या दुर्गंध नहीं रह पाती। किसी भी तरह का वास्तु दोष हो या व्यक्ति का स्वास्थ्य खराब हो तो पिरामिड से उस दोष का निवारण निश्चय ही होता है।



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

इसकी कोई भी सतह पृथ्वी के उत्तर या दक्षिण ध्रुव के समानांतर रखनी चाहिए। इसे साफ–सुथरी, हवादार जगह पर रखें।

इसके आसपास किसी तरह की गंदगी नहीं होनी चाहिए। इसे बिजली के तार एवं उपकरणों से दूर रखें परंतु यदि कम्प्यूटर या कोई अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरण हो तो इसे को इसके ऊपर रखा जा सकता है।

### 1. बढ़े हुए भूखंड को ठीक करने के लिए

किसी भी भूखंड का दक्षिण पश्चिम में बढ़ा होना अच्छा नहीं माना जाता है। यह बीमारी, मानसिक अशांति, दुर्घटना आदि का कारक होता है। साथ ही भूत प्रेत का भय, आत्महत्या जैसी प्रवृत्तियां भी देखने को मिलती है। इस प्रकार के दोष के निराकरण के लिए पिरामिड की दीवार बना कर भूखंड के नीचे

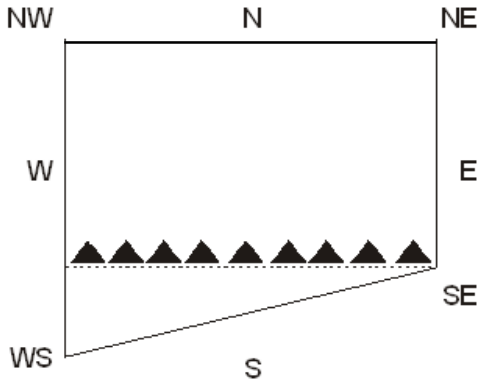


लगाना चाहिए ताकि भूखंड आयताकार या वर्गाकार बन जाए। इन पिरामिडों की एक से दूसरे की दूरी अधिक से अधिक तीन फुट रखें। अधिक शक्ति एवं ऊर्जा के लिए यह दूरी एक फुट की रखें। यह दीवार 9 से Multiples की रहनी चाहिए जैसे 9, 18, 27 आदि।

### 2. भूखंड के कोने कटे होने पर

किसी भी भूखंड के कोनों का कटा होना वास्तु के दृष्टिकोण से अच्छा नहीं माना जाता है। खासकर उत्तर पूर्व के कोने कट जाने पर मानसिक अशांति, ज्ञान की कमी, धन की कमी, संतान की कमी एवं

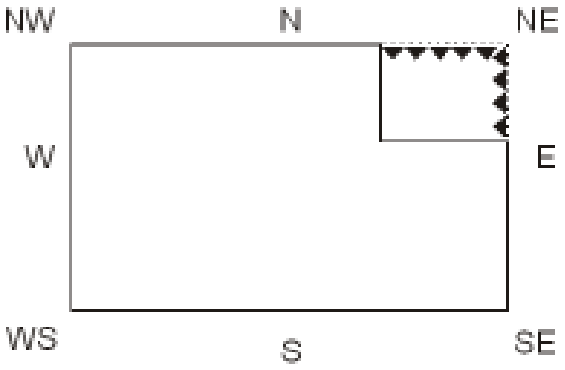




Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

आध्यात्मिक और बौद्धिक विकास की कमी होती है। इसे ठीक करने के लिए पिरामिड की दीवार बनाकर कोने में लगानी चाहिए।

### 3. ब्रह्म स्थान को ठीक रखने के लिए

वास्तु में ब्रह्म स्थल को हृदय माना जाता है। अतः इस स्थान को ठीक रखना आवश्यक है। इस स्थल

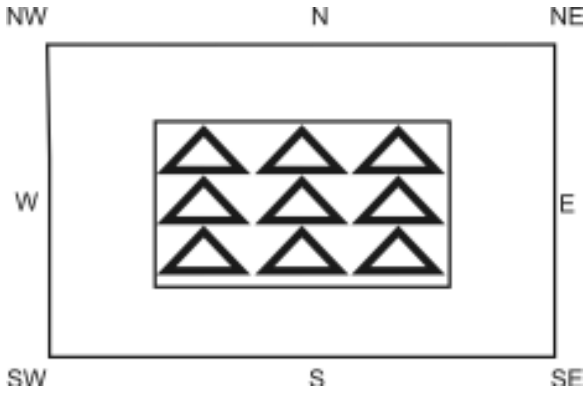


को ऊर्जामय बनाए रखने के लिए नौ मल्टीयर पिरामिड को ब्रह्म स्थान पर लगाएं।

### 4. शौचालय और W/C को ठीक रखने के लिए

भवन में शौचालय उत्तर–पूर्व की ओर नहीं होना चाहिए अन्यथा आर्थिक विपन्नता घेरे रहती है। अतः इसे ठीक करने लिए पिरामिड इसकी बाहरी दीवार की ओर लगाना चाहिए। इससे इसके ऋणात्मक प्रभाव में कमी आएगी।

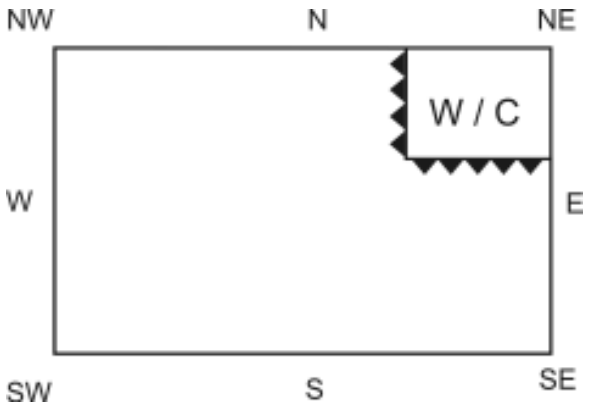




Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

### 5. ब्रह्म स्थल में खम्भा

वास्तु में ब्रह्म स्थल को ह्रदय कहा जाता है। जिस प्रकार ह्रदय पर किसी तरह का भार सहना मुश्किल होता है उसी प्रकार भवन के ब्रह्म स्थल पर किसी भी प्रकार का वजन रखना अच्छा नहीं होता। ऐसा करने से पूरे घर का विकास बाधित होता है। इसके लिए खंभे के चारों ओर आठ पिरामिड लगाएं। इसके अतिरिक्त खंभे को पिरामिड से दो बराबर भागों में बांटकर ब्रह्म स्थल के दोष को दूर किया जा सकता है जैसा कि निम्नांकित चित्रों में दिखाया गया है।

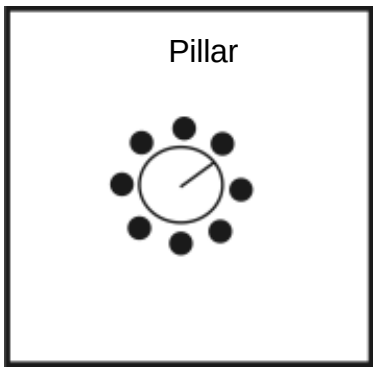


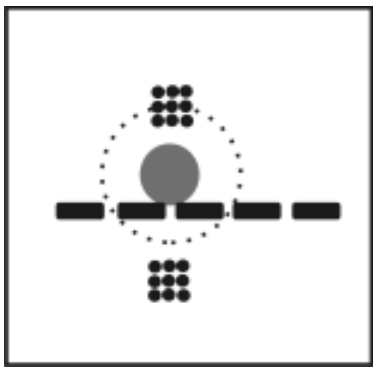

### 6. मुख्य द्वार की सुरक्षा

द्वार के दोष को दूर किए बिना पूरा लाभ नहीं मिल सकता। चित्रानुसार 9X9 का पिरामिड लगाने से इस दोष को दूर किया जा सकता है।

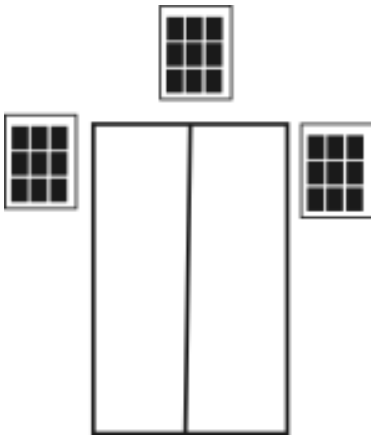

### 7. कमरों को ऊर्जामय बनाने हेतु

कमरे के अंदर के वास्तु दोष को दूर कर उसे ऊर्जामय बनाने हेतु निम्न तरीके से पैरास्ट्रिप लगाएं।



www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

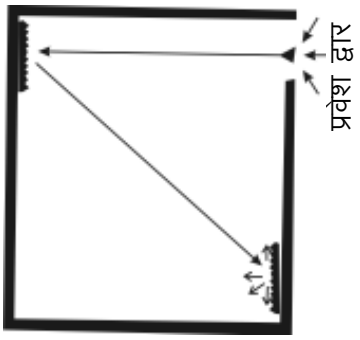


**8. ढाल में सुधार :**

वास्तु में जमीन की ढ़ाल उत्तर, पूर्व या उत्तर–पूर्व की ओर होनी चाहिए। इससे जीवन में सुख समृद्धि बनी रहती है तथा लक्ष्मी का स्थिर वास होता है। यदि यह ढाल दोषपूर्ण हो अर्थात दक्षिण–पश्चिम में नीचा एवं उत्तर पूर्व में उंचा रहे तो इस दोष को दूर करने के लिए निम्नांकित चित्रानुसार पिरामिड लगाएं।

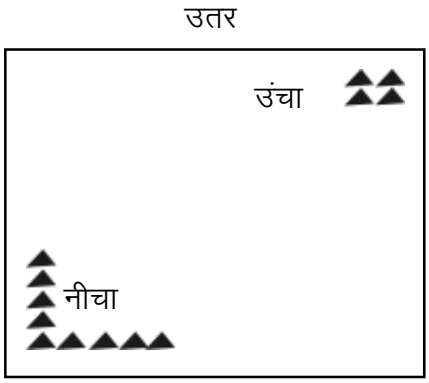


**9. दो घरों के मध्य छोटे भूखंड के लिए**

दो बड़े भूखंडों के बीच यदि कोई छोटा भूखंड रहे तो उसका विकास बाधित होता है। इस दोष को दूर करने के लिए दोनों दीवारों पर चित्रानुसार पिरामिड लगाएं। यह एक उत्कृष्ट उपाय है।

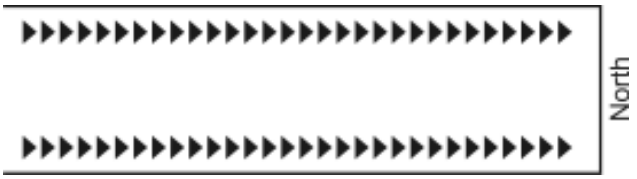


**10. मुख्य प्रवेश द्वार पर अवरोध**

मुख्य प्रवेश द्वार के सामने किसी तरह का अवरोध नहीं होना चाहिए। यदि हो तो उससे बचाव के लिए प्रवेश द्वार के भीतर भवन को घेरती हुई पिरामिड यंत्रों की एक सुरक्षा दीवार बनानी चाहिए।



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

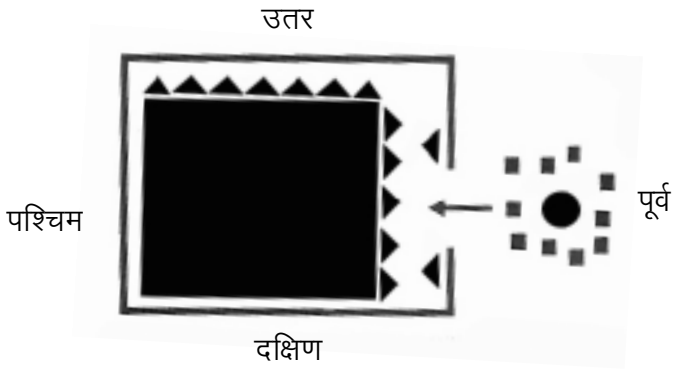


**11. बिजली उपकरण ईशान में न लगाएं**

भूखंड के ईशान कोण में किसी भी तरह का बिजली का उपकरण नहीं लगाना चाहिए। अगर किसी भी तरह का उपकरण लगा हो तो उसके दोष को दूर करने के लिए चित्रानुसार आठ मल्टीयर पिरामिड लगाएं।

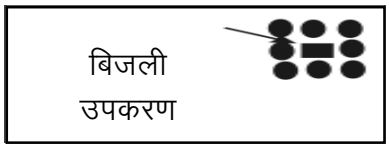


**12. आग और पानी प्लेटफार्म पर एक सीध में न रखें**

आग एवं पानी का एक ही प्लेटफार्म पर रहना परिवार में कलह उत्पन्न करता है। छत पर पिरामिड स्ट्रिप लगा कर इसे अलग किया जा सकता है।

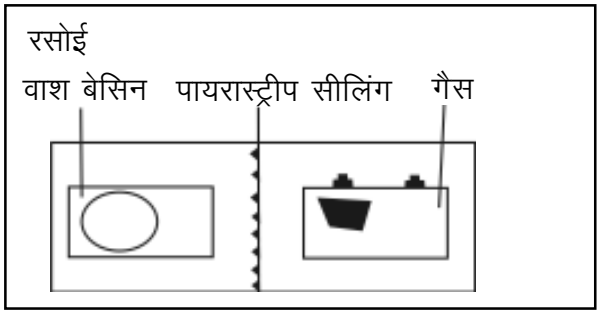


**13. खाना बनाते समय चेहरा पूर्व की तरफ हो :**

खाना बनाते समय गृहिणी का चेहरा हमेशा पूर्व दिशा की ओर होना चाहिए ताकि पूर्व से मिलने वाली ऊर्जा का पूर्ण लाभ उन्हें मिलता रहे एवं स्वस्थ रहते हुए स्फूर्तिपूर्वक खाना बना सके। इसके विपरीत दक्षिण, पश्चिम की तरफ चेहरा कर खाना बनाने से स्वास्थ्य खराब रहता है। यदि इस दिशा में मुंह करके खाना बनाने की बाध्यता हो तो निम्नांकित चित्रानुसार खाना बनाने वाले के चेहरे के ठीक सामने 9 x 9 का तीन इंच का पिरामिड लगाएं।



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

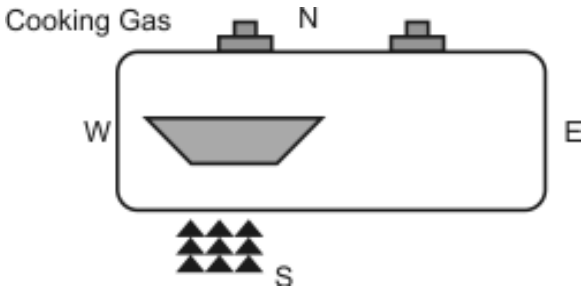


### 14. शयन कक्ष के साथ शौचालय न रखें

शयन कक्ष के साथ शौचालय नहीं रखना चाहिए। यदि शयन कक्ष के साथ शौचालय हो तो निम्नांकित चित्रानुसार शौचायल की बाहर दीवार की चौखट पर तीन पिरामिड लगाएं।

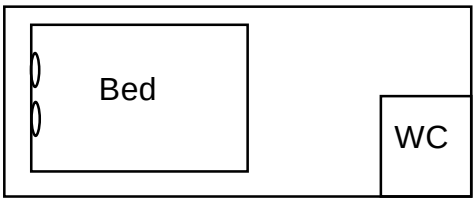


### 15. सीढ़ी ईशान क्षेत्र में ना रखें

ईशान कोण में सीढ़ी आर्थिक तंगी, मानसिक अशांति एवं अन्य विभिन्न प्रकार के कष्टों का कारक होता है। यदि यह इस स्थान पर हो तो वहां से हटा कर नैर्ऋत्य कोण की ओर ले जाएं। यदि ऐसा संभव नहीं हो तो सीढ़ी के निचे 9 x 9 का मैक्स पिरामिड लगाएं। साथ ही तीन पिरामिड प्रथम तीन स्टेप तक लगाए ताकि ईशान कोण में सीढ़ी के वजन से ऊर्जा में आने वाली कमी की पूर्ती की जा सके।

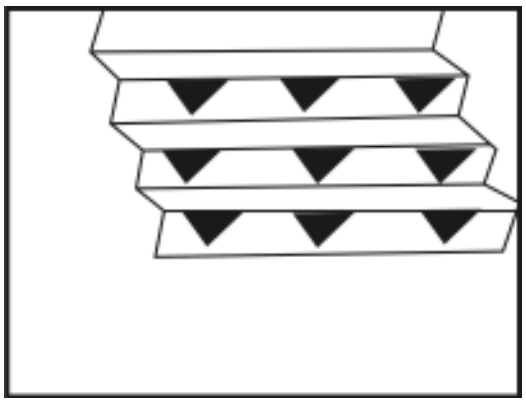

◆◆◆◆◆



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

# 40. वास्तु सिद्धांतों पर आधारित नक्शे

यहां अलग–अलग दिशाओं के आधार पर विभिन्न आकार प्रकार के आवासीय भूखंड के लिए नक्शे बताए जा रहे हैं।

**उत्तर दिशा के मार्गो पर स्थित भूखंड का नक्शा :**

इस नक्शे में उत्तरी ईशान में प्रवेश द्वार रखा गया है जो वास्तु के अनुसार उच्च श्रेणी का द्वार होता

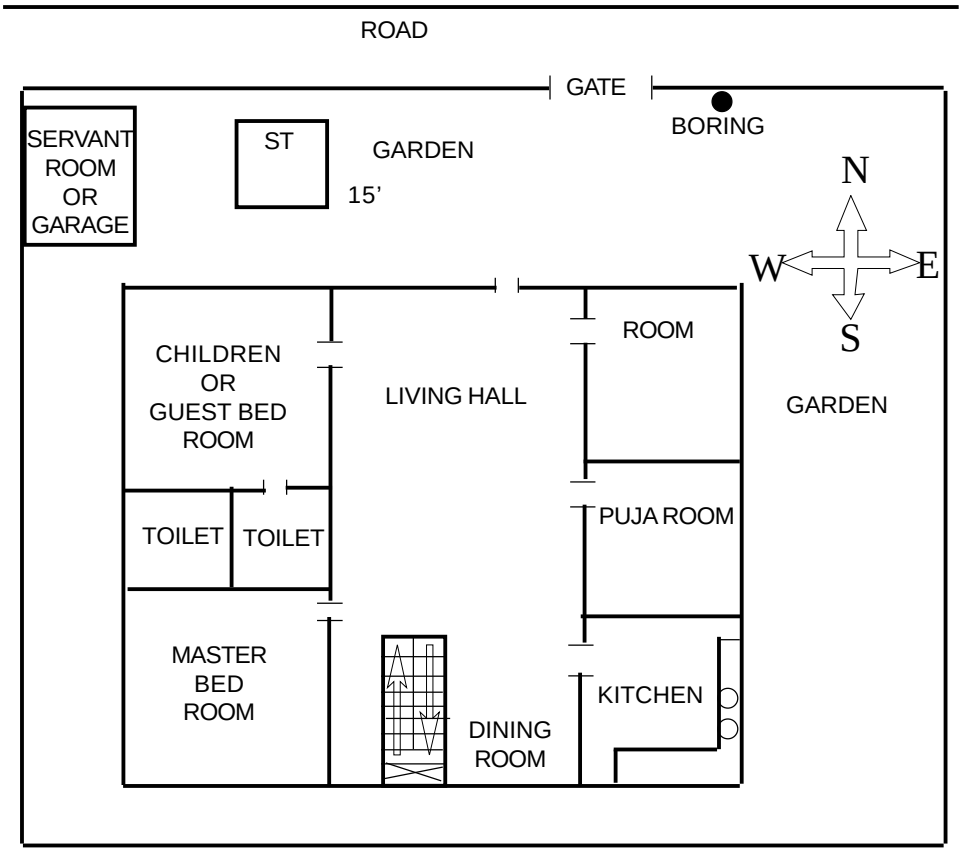


है और शुभ फलदायक माना जाता है। नक्शे में पूजा कक्ष, शयन कक्ष, सीढ़ियां, रसोईघर सभी अपने उचित स्थान पर स्थित हैं। ये सारे तथ्य इस बात का प्रमाण दे रहे हैं कि वास्तु के अनुसार यह एक आदर्श नक्शा है।



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

## उत्तर के मार्गों पर स्थित भूखंड :

वास्तु की दृष्टिकोण से किसी भी भवन के चारो ओर जगह छोड़कर बनानी चाहिए।

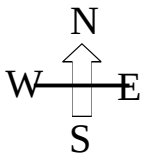


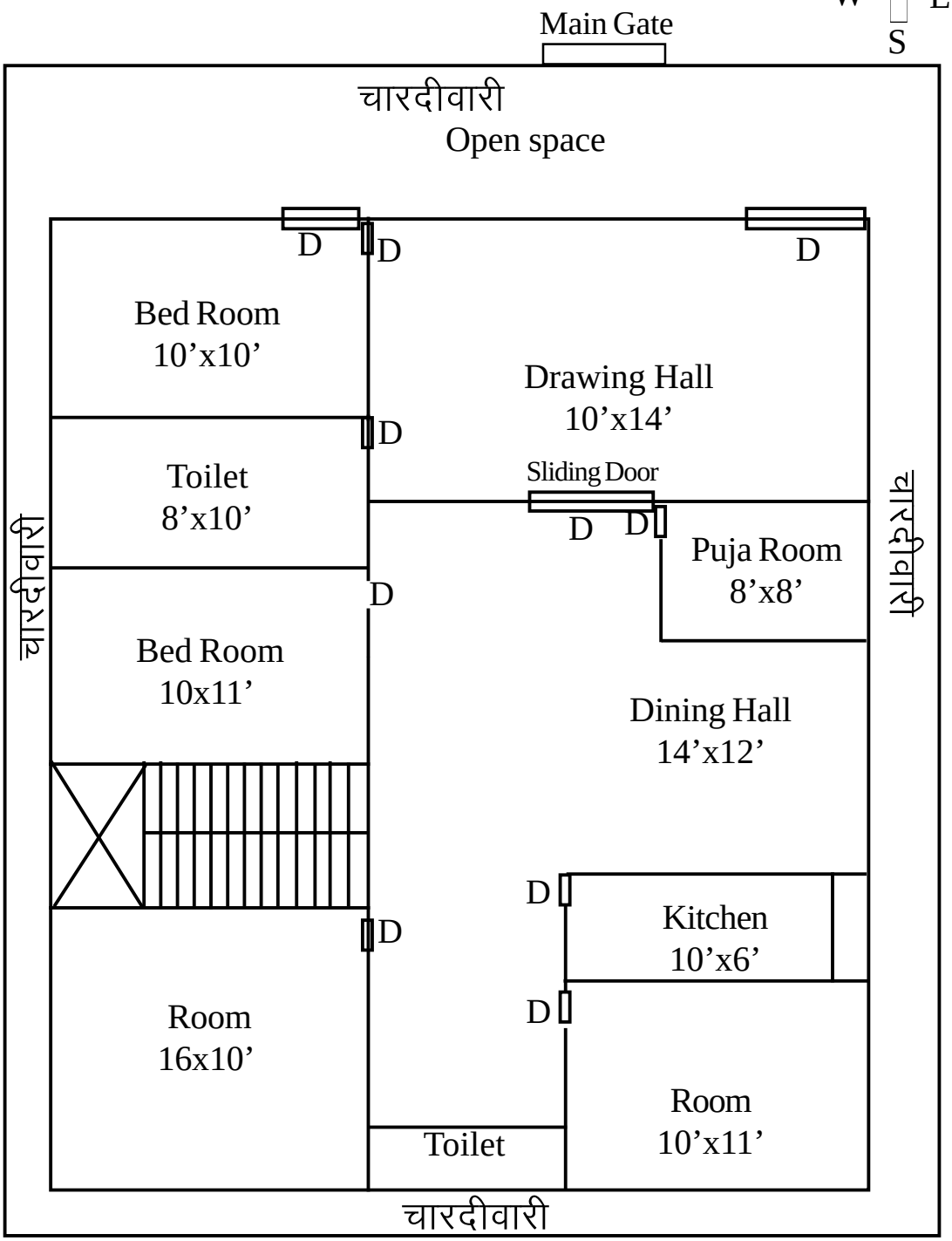


Future Point



www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

खासकर सबसे अधिक जगह ऊतर–पूर्व की ओर छोड़नी चाहिए तथा सबसे कम जगह दक्षिण–पश्चिम की ओर छोड़नी चाहिए। इन नक्शों में इन बातों को खासकर ध्यान रखा गया है। दूसरा ब्रह्म स्थान को अधिक से अधिक खुला रखने के बाद वास्तु का सिद्वांत करता है। दक्षिण–पश्चिम में वजन की वस्तुऍ एवं पूर्व की तरफ पूजा रूम तथा पश्चिमी वायव्य की तरफ शौचालय का होना साथ ही दक्षिणी नैऋत्य और दक्षिण के बीच शौचालय का होना वास्तु के सिद्वांतों का अनुसरण कर रहा है। इस नक्शे में सभी प्रवेश द्वार वास्तु के अनुसार निर्देशित उच्च श्रेणी के जगहों से रखी गई है।

## उत्तर के मार्गों पर स्थित भूखंड :

निम्नांकित नक्शे में उतरी ईशान में मुख्य प्रवेश द्वार रखा गया है। साथ ही पश्चिम में पश्चिमी वायव्य के तरफ से भी घर में प्रवेश के लिए द्वार रखा गया है। इस नक्शे में विशेष तौर पर वास्तु की सिद्वांतों का ख्याल रखा गया है। पूर्व में अधिक से अधिक जगह को खाली रखा गया है। साथ ही ब्रह्म स्थान जो पूरे भवन का ह्रदय स्थल माना गया है। इन जगहों पर अधिक से अधिक खाली रखने का प्रयास किया गया है।

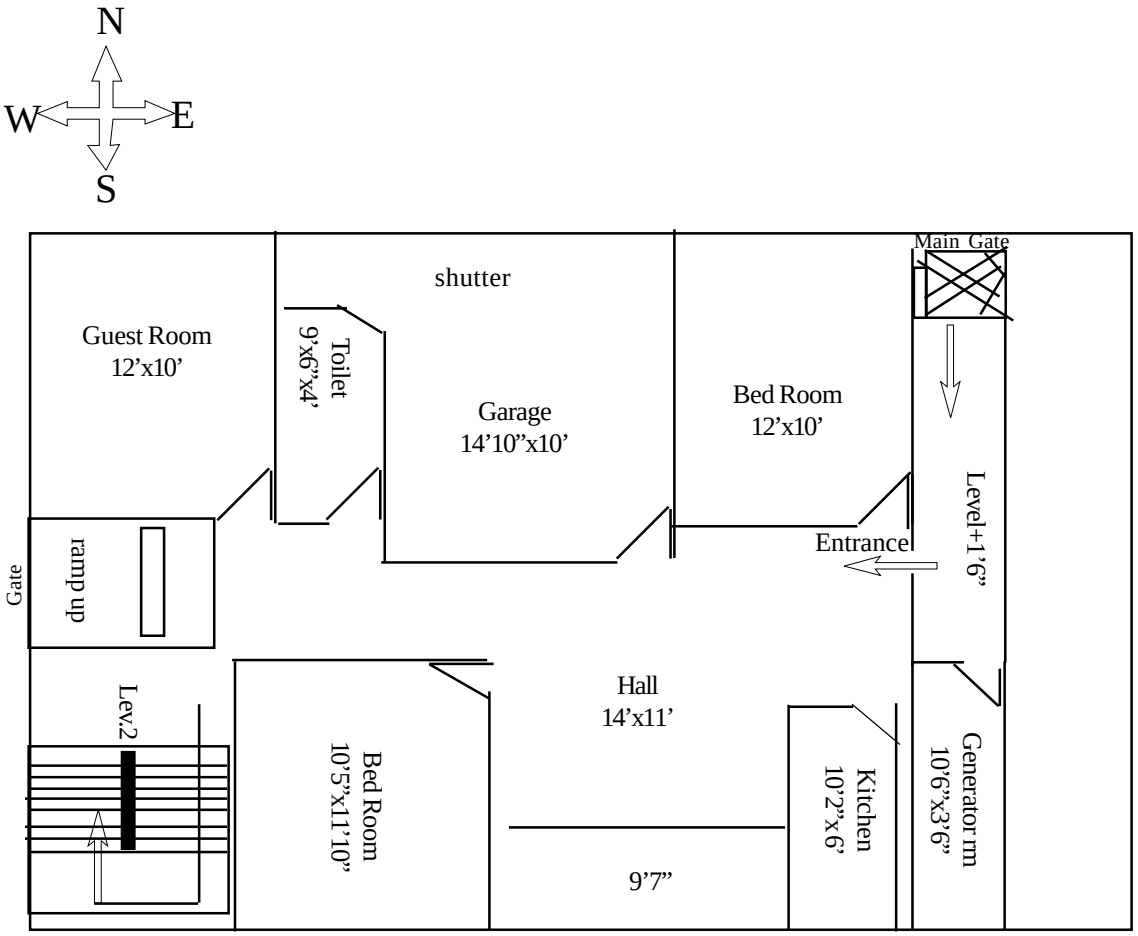




Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

**पूर्वी दिशा के मार्गो पर स्थित भूखंड का नक्शा**

इस नक्शे में चारों तरफ खुली जगह है। सभी कक्ष वास्तु के अनुसार बने हुए हैं। ब्रह्म स्थान को पूर्णतः खाली रखा गया है। रसोईघर डायनिंग के समीप है जो बहुत सुविधाजनक है। सेप्टिक टैंक का निर्माण उतरी वायव्य में की गई है। साथ ही प्रवेश द्वार पूर्वी ईशान में रखी गई है जो वास्तु के दृष्टिकोण से काफी उच्च श्रेणी का द्वार माना गया है। चारदीवारी में पूर्वी ईशान एवं पूर्व में द्वार बनाई गई है जो वास्तु के दृष्टिकोण से काफी उपयुक्त मानी जाती है। उतर एवं पूर्व में फूलो का बगीचा रखा गया है।

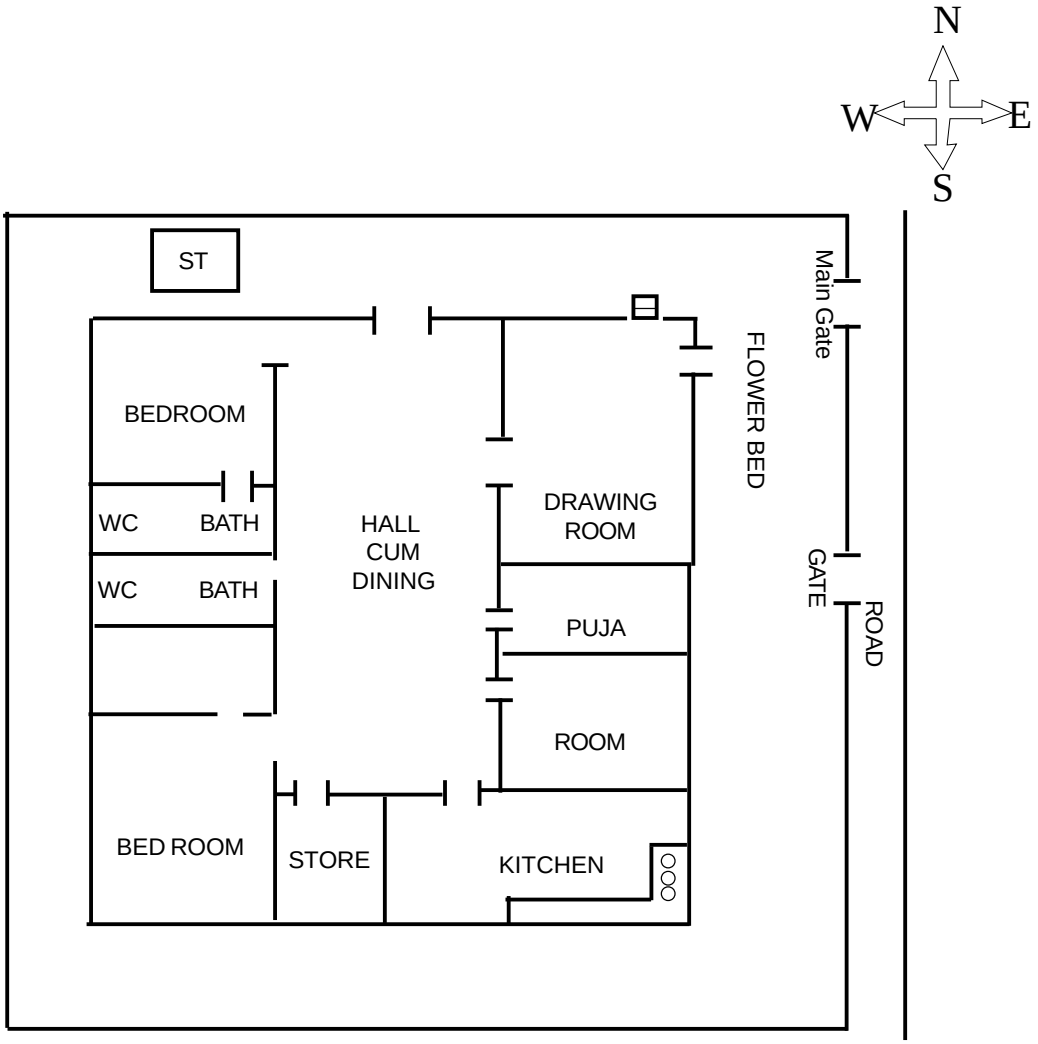




www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

**पश्चिम दिशा के मार्गो पर स्थित भूखंड का नक्शा** :

मुख्य शयन कक्ष वास्तु सिद्धांतों के अनुरूप स्थित है। इस भूखंड के पश्चिम दिशा में मुख्य द्वार है। उतर–पश्चिम में वाहन रखने की जगह रखी गई है।

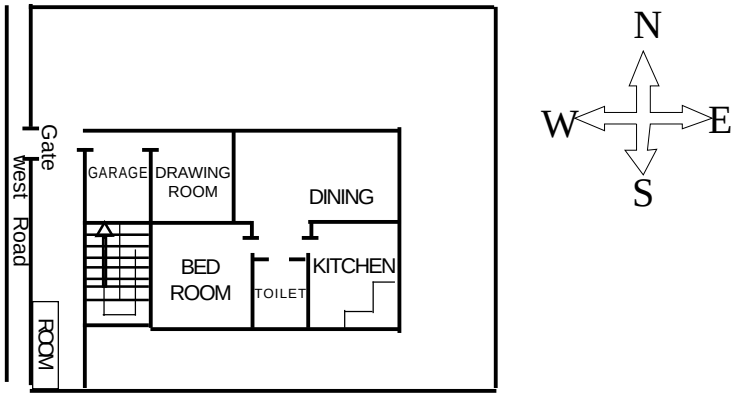


**पश्चिम दिशा के मार्गो पर स्थित भूखंड का नक्शा** :

वर्तमान नक्शा में भी वास्तु के सिद्वांतो के अनुरूप बनाया गया है खासकर मेहमानों के कक्ष से लेकर मुख्य शयन कक्ष का स्थान अपने उपयुक्त जगह पर रखी गई है। साथ ही बोंरिग उत्तरी ईशान में लगाई गई है। जिसके फलस्वरूप घर की सुख–समृद्वि एवं शांति में बढ़ोतरी हो रही है।

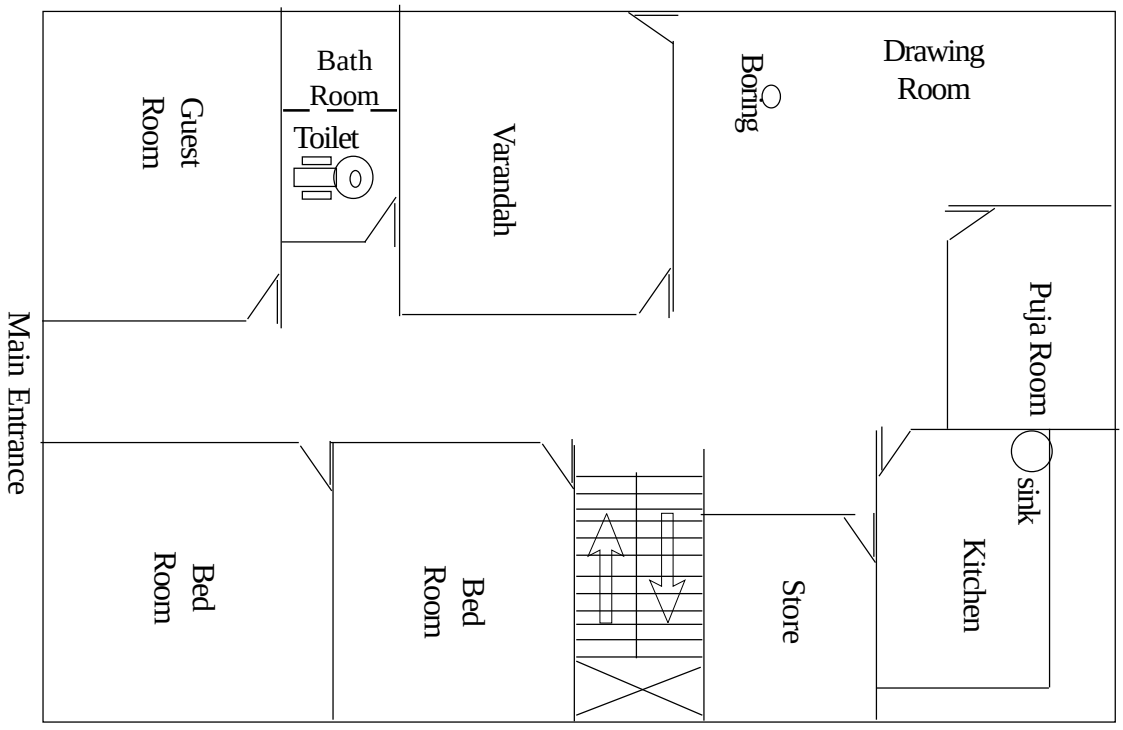




Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

**दक्षिण मार्ग पर स्थित भूखंड**

निम्नांकित चित्र में उतर एवं पूर्व दिशा में सड़क है। इसका मुख्य प्रवेश द्वार ग्राउंड फलोर पर पूर्व की ओर है जहां से व्यक्ति प्रवेश करते हुए दक्षिण से घर में प्रवेश करता है। इसकी रसोई घर अग्नि कोण में एवं मुख्य शयन कक्ष दक्षिण पश्चिम में रखी गई है। इस भवन के चारों ओर जगहें छोडी गई है। अतः यह नक्शा वास्तु के दृष्टिकोण से उपयुक्त है।

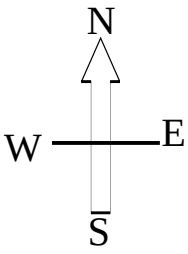


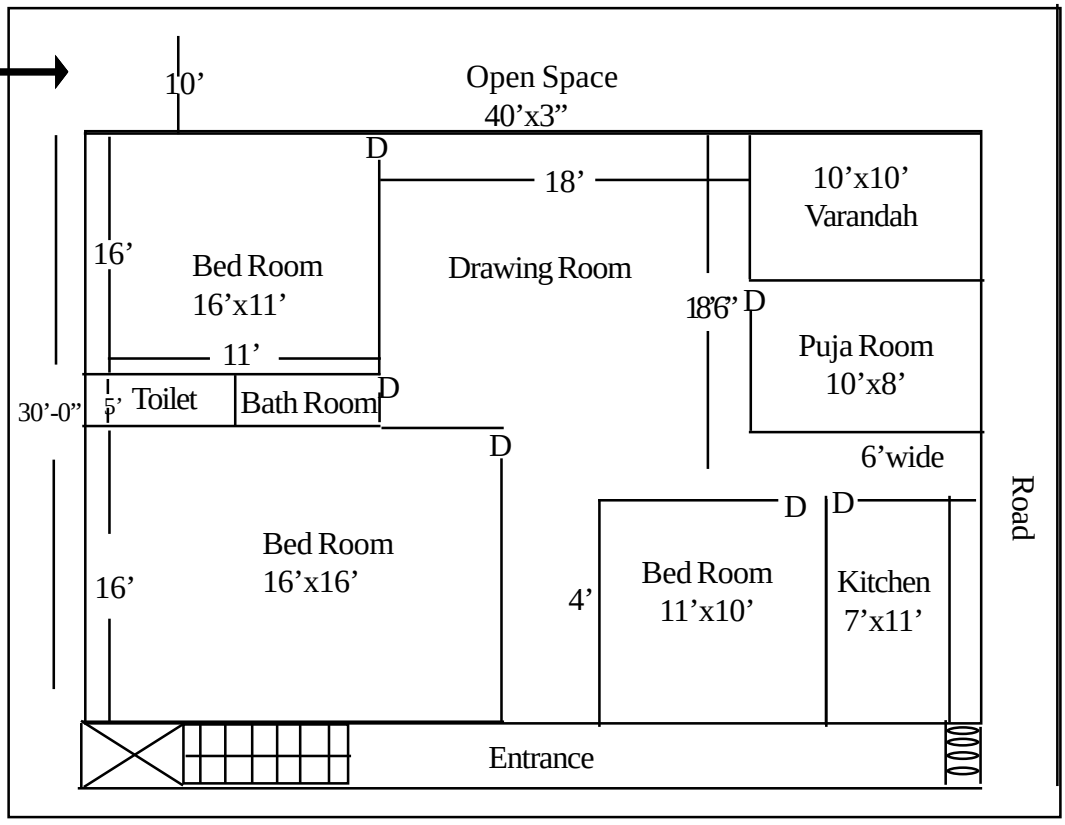


Future Point



www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

**दक्षिण दिशा के मार्गो पर स्थित भूखंड का नक्शा**

इस भूखंड के दक्षिण की ओर सड़क और चारो ओर चारदीवारी है। दक्षिण–पूर्व में वाहन रखने की व्यवस्था, दक्षिण –पश्चिम में मुख्य शयन कक्ष, उत्तर–पूर्व में पूजा घर और घर के मध्य स्थान में हॉल है।

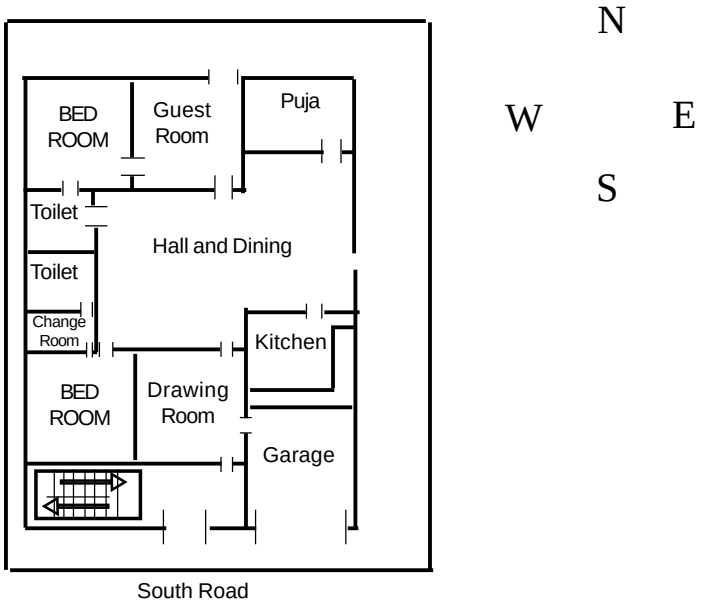


वास्तु दिशाओं पर आधारित विज्ञान है। दिशाओं के समुचित ज्ञान के आधार पर किसी भी भूखंड पर वास्तु के अनुसार निर्माण कार्य कर उसमें वास किया जाए तो जीवन निश्चित रूप से सुखमय, समृद्ध और शांतिपूर्ण हो सकता है।

**दक्षिण दिशा के मार्गो पर स्थित भूखंड का नक्शाः**– यह भी नक्शा वास्तु की दृष्टिकोण से दक्षिण मुखी भूखंड के लिए उपयुक्त है। जहां पर ब्रह्मा स्थान को भारविहीन रखा गया है।

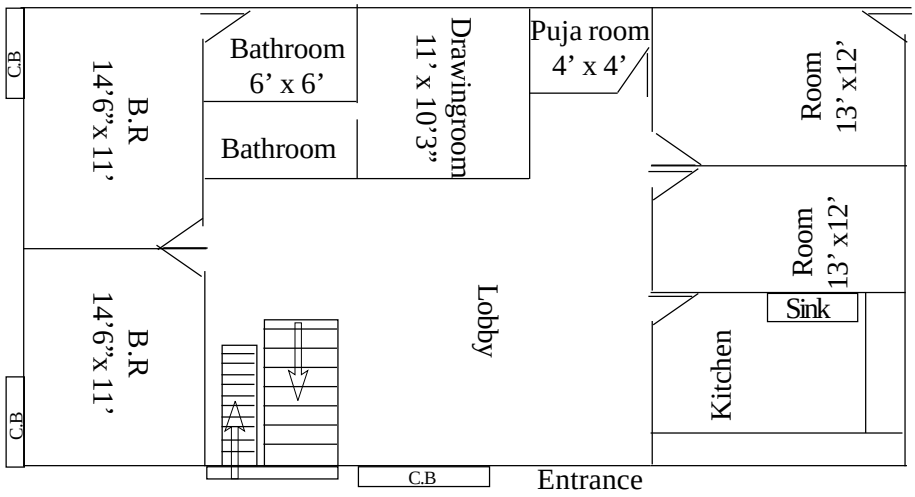




www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

## विदिशा भूखंड का नक्शा :

विदिशा भूखंड में मकान चारदीवारी के समानांतर बनाना चाहिए मुख्य दिशा के समानांतर नहीं। नीचे दिए गए चित्र में विदिशा भूखंड पर दिशाओं के अनुसार नैर्ऋत्य कोण में मुख्य शयन कक्ष रखा गया है एवं सभी कक्ष वास्तु के अनुसार अपने–अपने उचित स्थान पर हैं। घर के मध्य स्थान में डायनिंग कक्ष रख कर उसे अधिक से अधिक खाली रखा गया है जो वास्तु के अनुसार आवश्यक है।

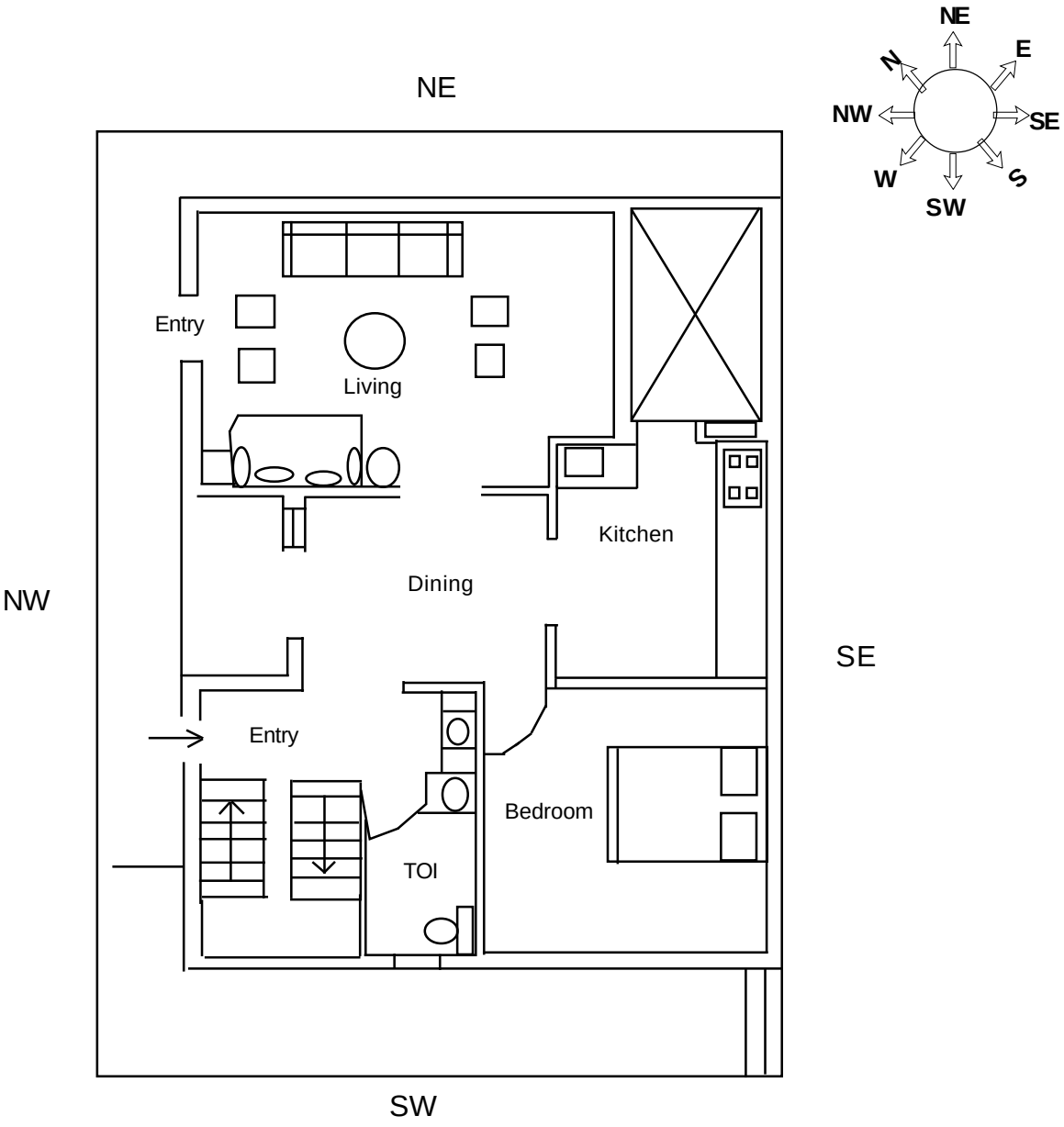




Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

## उत्तर के मार्गों स्थित विदिशा भूखंड :

निम्नांकित चित्र में विदिशा भूखंड के उत्तर में सड़क है। इसका मुख्य प्रवेश द्वार उत्तर की ओर से रखा गया है। पूजा कक्ष भी उत्तर पूर्व में बनाया गया है। फैमिली रूम पूर्व में तथा रसोई घर दक्षिण पूर्व में रखा गया है। डायनिंग रूम दक्षिण में है तथा मुख्य शयन कक्ष दक्षिण–पश्चिम में रखा गया है। अतः किसी भी तरह के भूखंड का नक्शा उसकी दिशाओं के अनुसार बनाने पर वह भूखंड वास्तु सम्मत हो

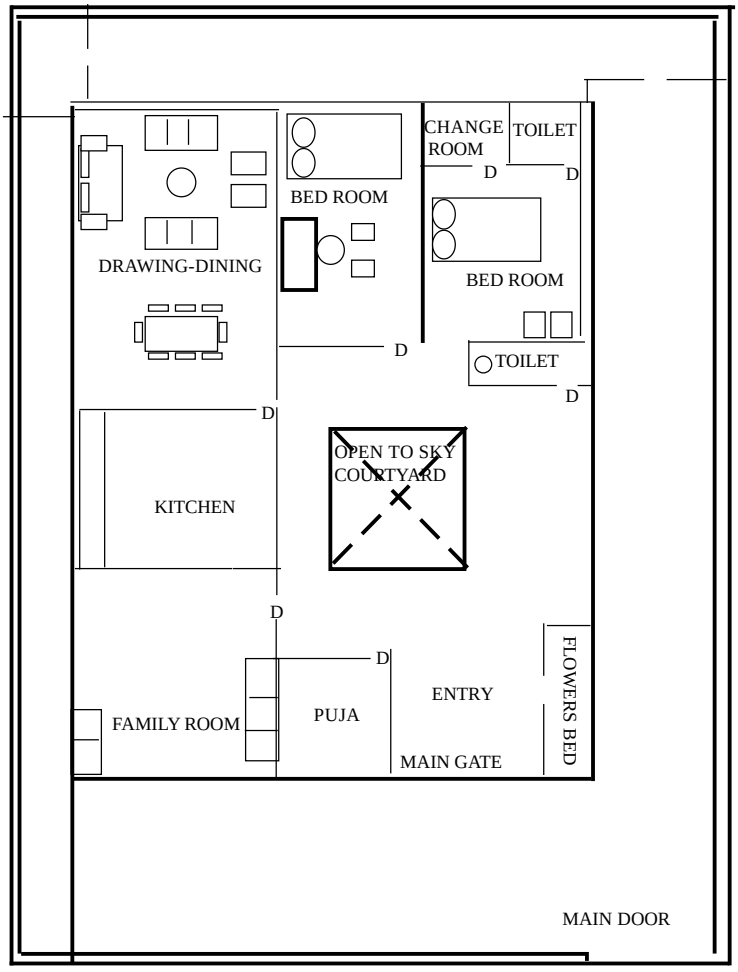


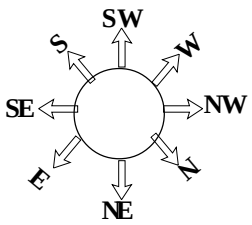


सकता है।



Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

**दोषपूर्ण भवन को कैसे ठीक करें:– (यह एक दोषपूर्ण भवन का विश्लेषण है)**

वर्तमान भूखंड में रसोईघर दक्षिण–पश्चिम में बनाई गई है साथ ही रसोईघर के बाजू में दक्षिण–पश्चिम में ही शौचालय एवं स्नानागार बनाए गए हैं। मध्य पूर्व में एक और शौचालय है तथा दक्षिण पूर्व में सीढ़ी बनाई गई है जो कि वास्तु की दृष्टिकोण से उपयुक्त नही है। इस भूखंड के वास्तु निरीक्षण के दौरान यहां के लोगों के शारीरिक स्वास्थय एवं संतान की विकास में भी कमी पाया।

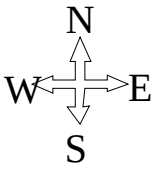


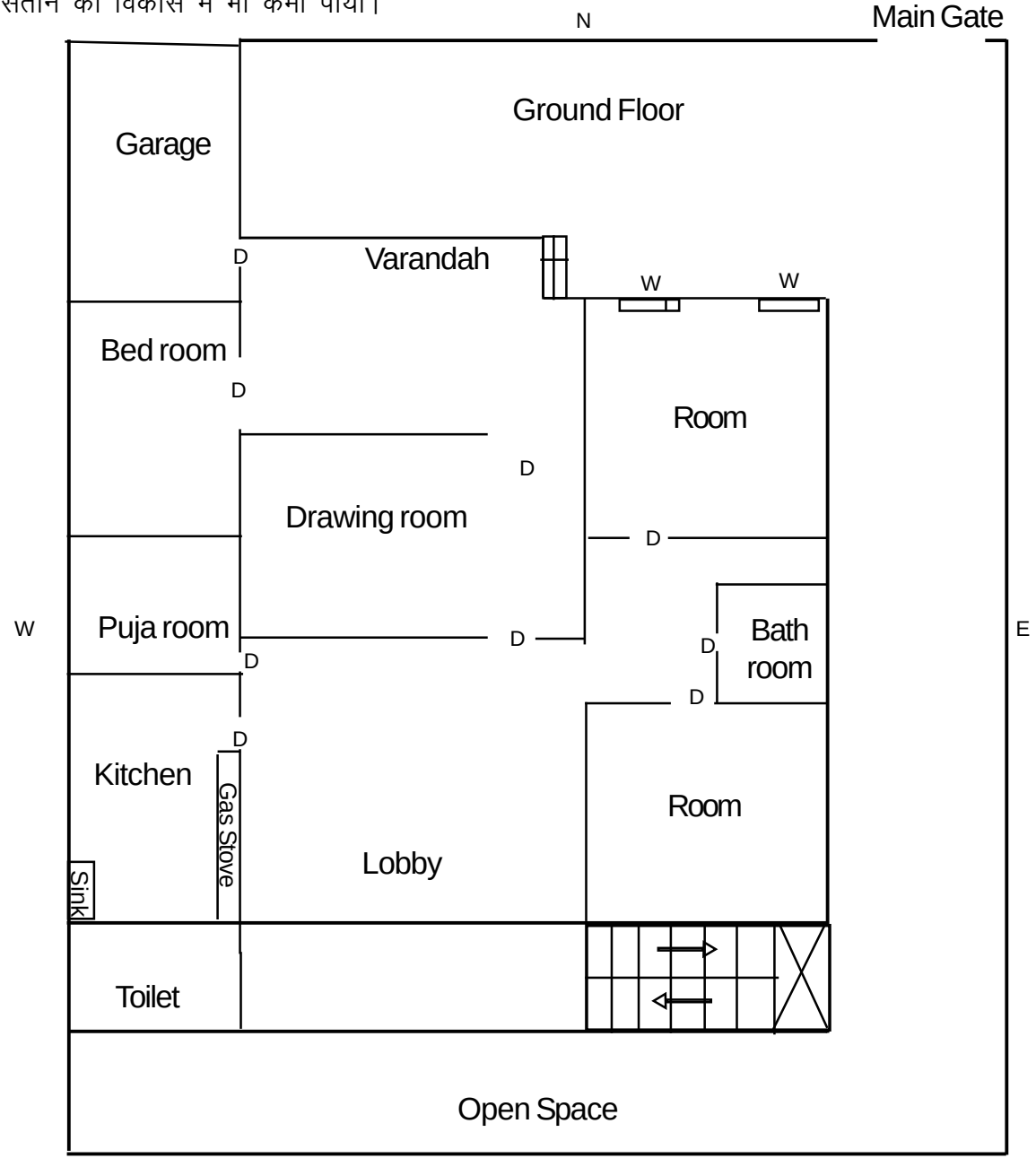




Future Point

## दोषपूर्ण भवन को वास्तु के सिद्वांतो के अनुसार बदला गयाः–

निम्नांकित भूखंड में उतरी–वायव्य में बढ़ी हुई भाग को पिरामिड के द्वारा ठीक किया गया है साथ ही दक्षिण–पश्चिम में मुख्य शयन कक्ष, पश्चिम में शौचालय एवं पूर्व में पूजा कक्ष बनाने का सुझाव दिया गया। साथ ही साथ दक्षिण–पश्चिम में सीढी भी बनवाई गई। तदुपरान्त आज उस घर की समृद्वि एवं विकास देखते बनती है।

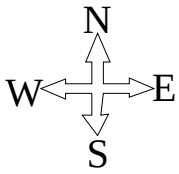


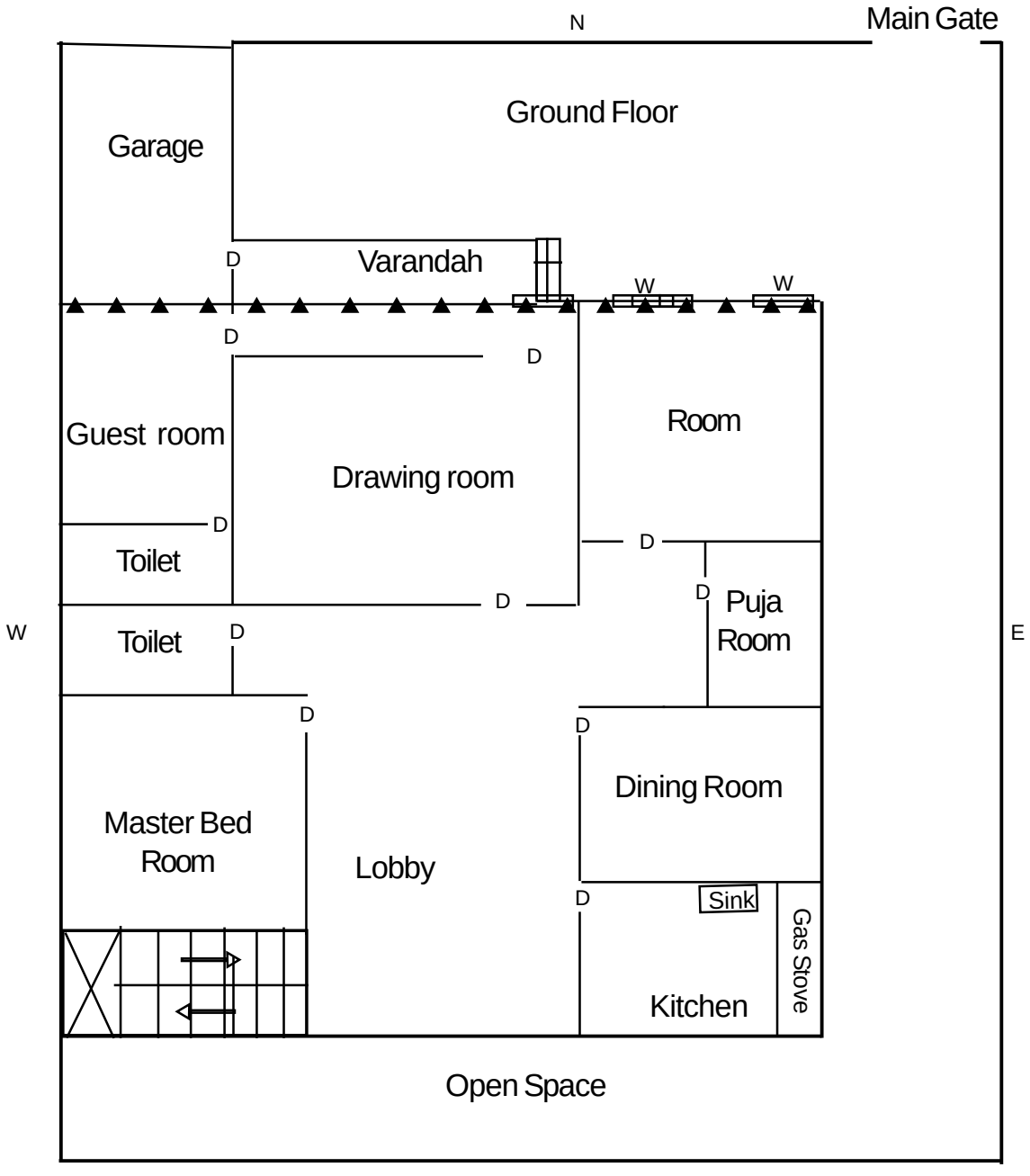




Future Point

Future Point

**यह एक दोषपूर्ण भवन का विश्लेषण है:–**

निम्नांकित भूखंड के दक्षिण, पश्चिम में काफी खाली जगह होना साथ ही दक्षिण–पश्चिम कटा हुआ होना इस घर के लिए दुर्भाग्यशाली साबित हुआ। इस भवन में निवास करने वाले किसी भी व्यक्ति की आयु 60 से उपर नही जा पाई। इस भवन के पूर्व में सीढी एवं उसके बगल का शौचालय भी इस घर में निवास करने वाले के स्वास्थय की दृष्टिकोण से अच्छा साबित नही हुआ। दक्षिण पश्चिम में स्नानागार भी वास्तु के सिद्वांतों के विपरित था। इसमें रसोईघर भी दक्षिण–पश्चिम में बनी हुई थी। हलॉकि बोरिंग पूर्वी ईशान की ओर था जो रहने वाले के लिए शुभफलप्रद था। इस भवन के उतर की दिशा की ओर सडक पर इमली का पेड होना भी गृह में निवास करने वालो के स्वास्थय के लिए नुकसानदायक था।

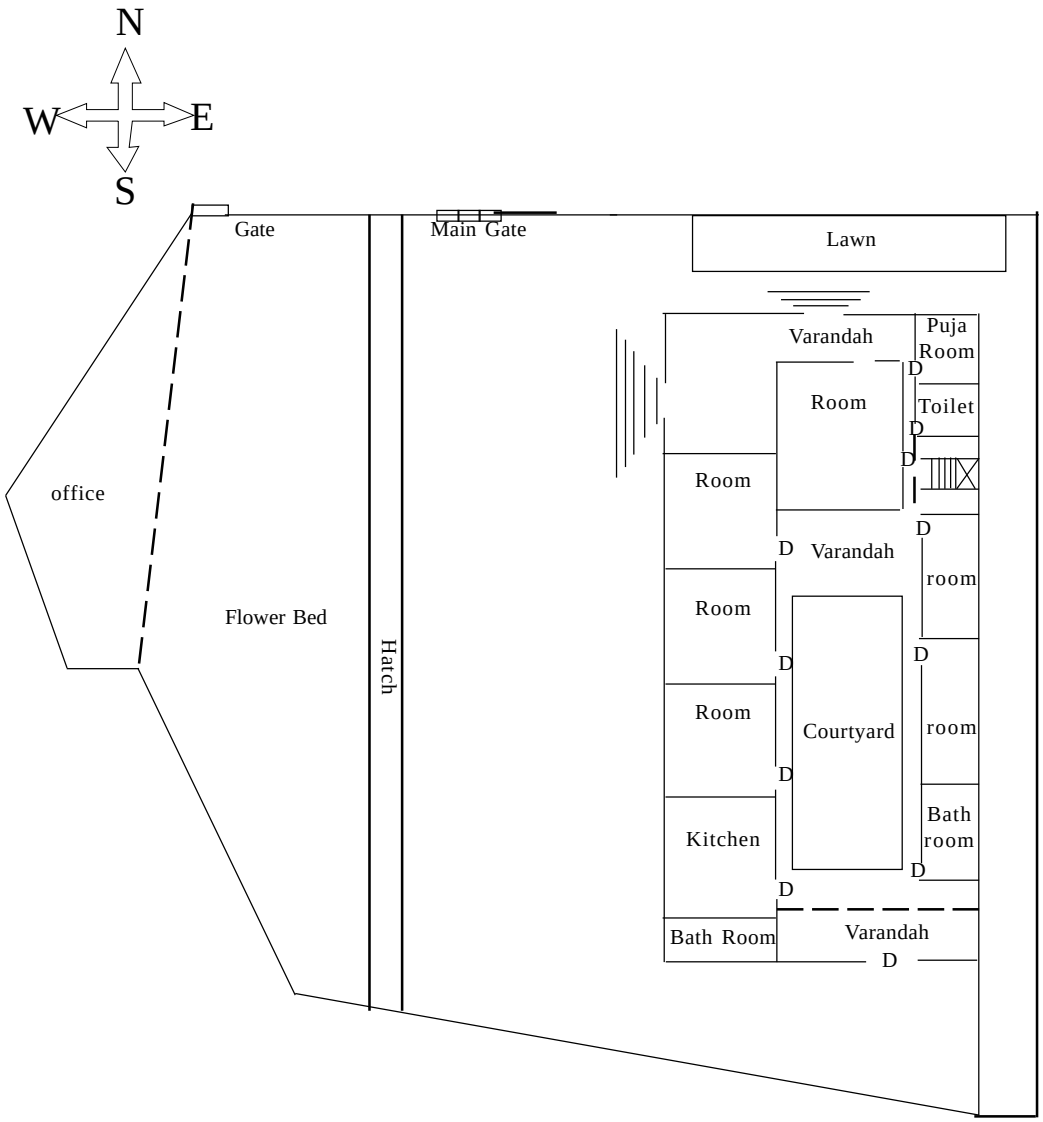




www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

## दोषपूर्ण भवन को वास्तु के सिद्वांतो के अनुसार बदला गया :–

निम्नांकित नक्शे में दक्षिण पश्चिम में मुख्य शयन कक्ष बनाया गया तथा दक्षिण–पूर्व में रसोईघर को रखा गया। पूर्व में जो शौचालय था उसे सिर्फ स्नान घर बनाई गई जिसमें बाथ टब बगैरह रखी गई। पूर्व में जो सीढ़ी है उसे भी हटाने की सलाह दी गई है लेकिन तत्काल वह हट नही पाया । अतः इस कारण सीढ़ी के नीचे मैक्स पिरामीड का इस्तेमाल किया गया। पश्चिम में जो बढ़ी हुई खाली भूखंड है उसे कम करने के लिए हैच वॉल के बगल में एक पिरामिड की दीवार बनाई गई। साथ ही पिरामिड वॉल के बगल में दक्षिण–पश्चिम में छोटे–छोटे पत्थर के टुकड़े रखकर वहां पर वजन दी गई। अनियमित आकार के भूखंड के चारों ओर पिरामिड लगाई गई। इमली का पेड़ की जो परछाई मकान पर आती थी उसको परावर्तित करने के लिए पाकुआ दर्पण का इस्तेमाल किया गया। दक्षिण पश्चिम में पानी के सभी स्त्रोत एवं स्नानागार को बंद करा दिया गया। इन उपायों के पश्चात् विगत पांच वर्षो से उस घर में सुख, शांति एवं समृद्वि लोगों को प्राप्त होने लगी। साथ ही निवास करने वाले मानसिक,आर्थिक एवं शारीरिक वृद्वि की ओर प्रगतिशील है।

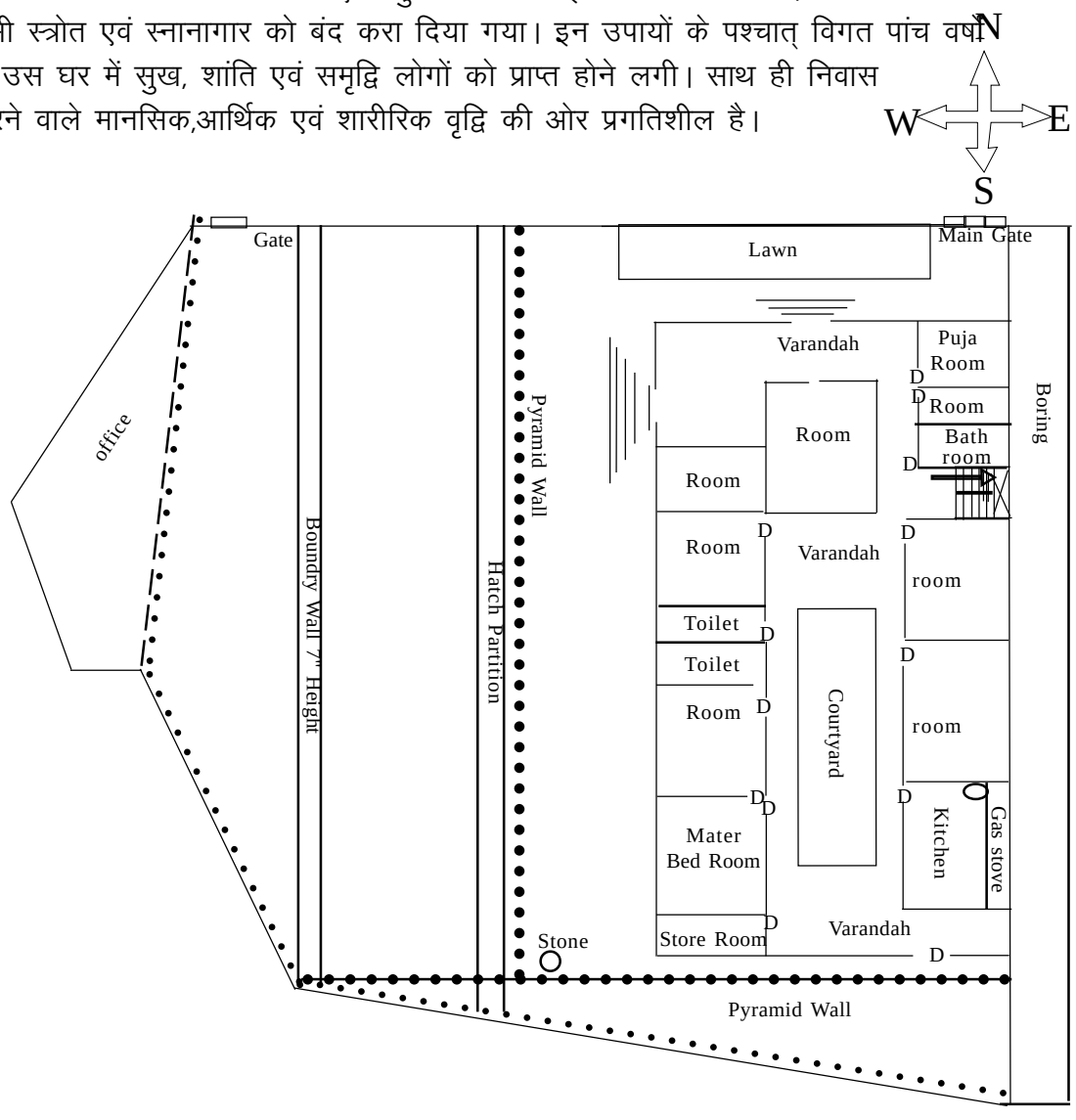




Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

## यह एक दोषपूर्ण भवन का विश्लेषण है:–

इस भवन कां मुख्य प्रवेश द्वार दक्षिण नैऋत्य में बना हुआ है जो वास्तु के दृष्टिकोण से अच्छा नही है।इस भवन के निरीक्षण के दौरान हमने पाया कि महिलाओं की तबीयत हमेशा खराब रहती है। इस भवन में वायव्य कोण थोड़ा कटा हुआ भी है यह भी महिलाओं के स्वास्थय में कमी का एक कारण है।

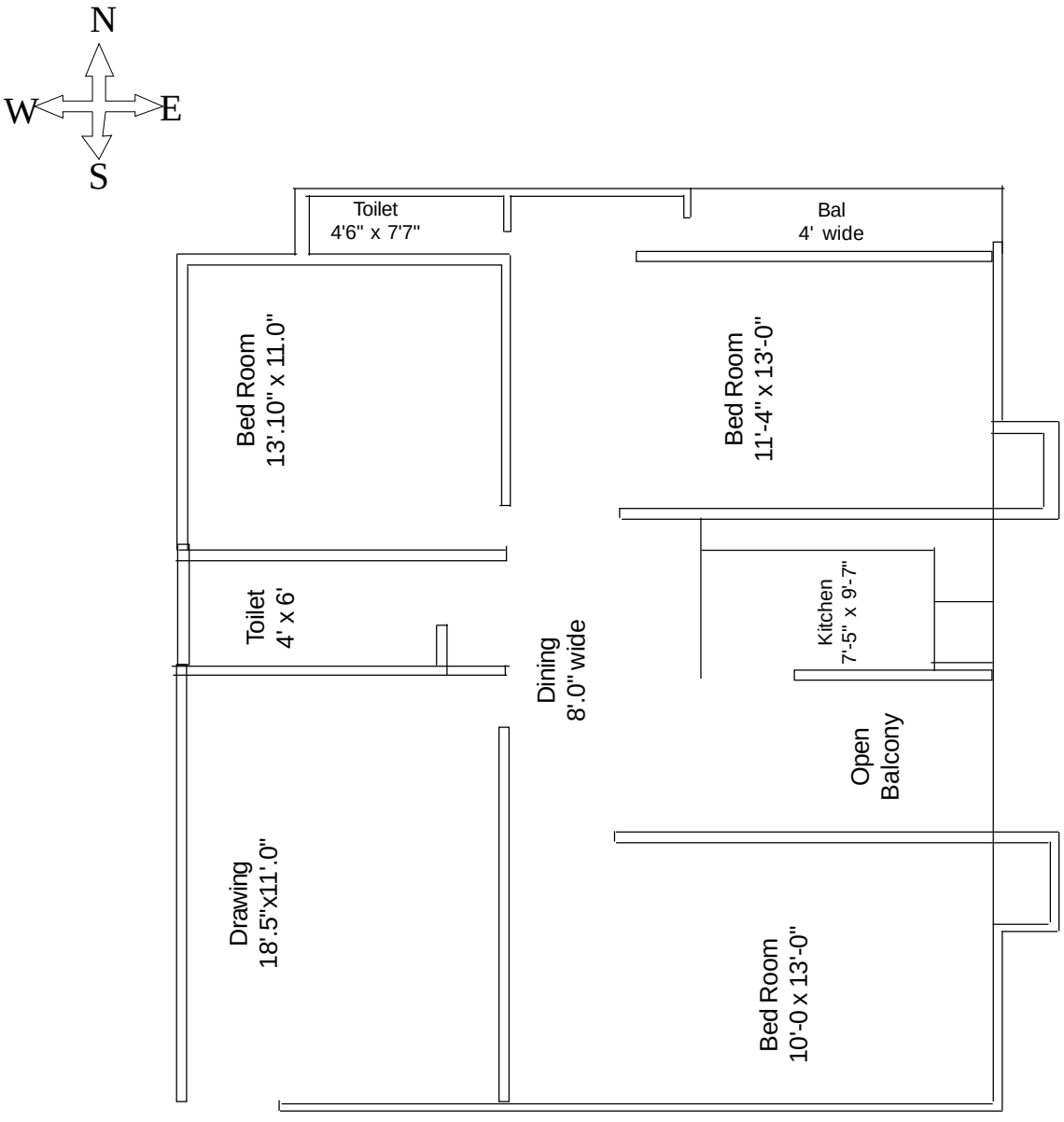


Future Point



www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

## दोषपूर्ण भवन को वास्तु के सिद्वांतो के अनुसार बदला गयाः–

वर्तमान नक्शे में दक्षिणी नैऋत्य के दोषपूर्ण द्वार को बदलने की सलाह दी गई। दूसरे जगह पर दक्षिण आग्नेय के स्थान पर नयी द्वार खुलवाई गयी। उतरी वायव्य में कटी हुई जगह को पिरामिड से ठीक करवाया गया। साथ ही सभी द्वारों को उच्च श्रेणी की जगहों से करवाने की सलाह दी गयी। इसके बाद इनके घर में महिलाओं के स्वास्थय में धीरे–धीरे सुधार होने लगा।

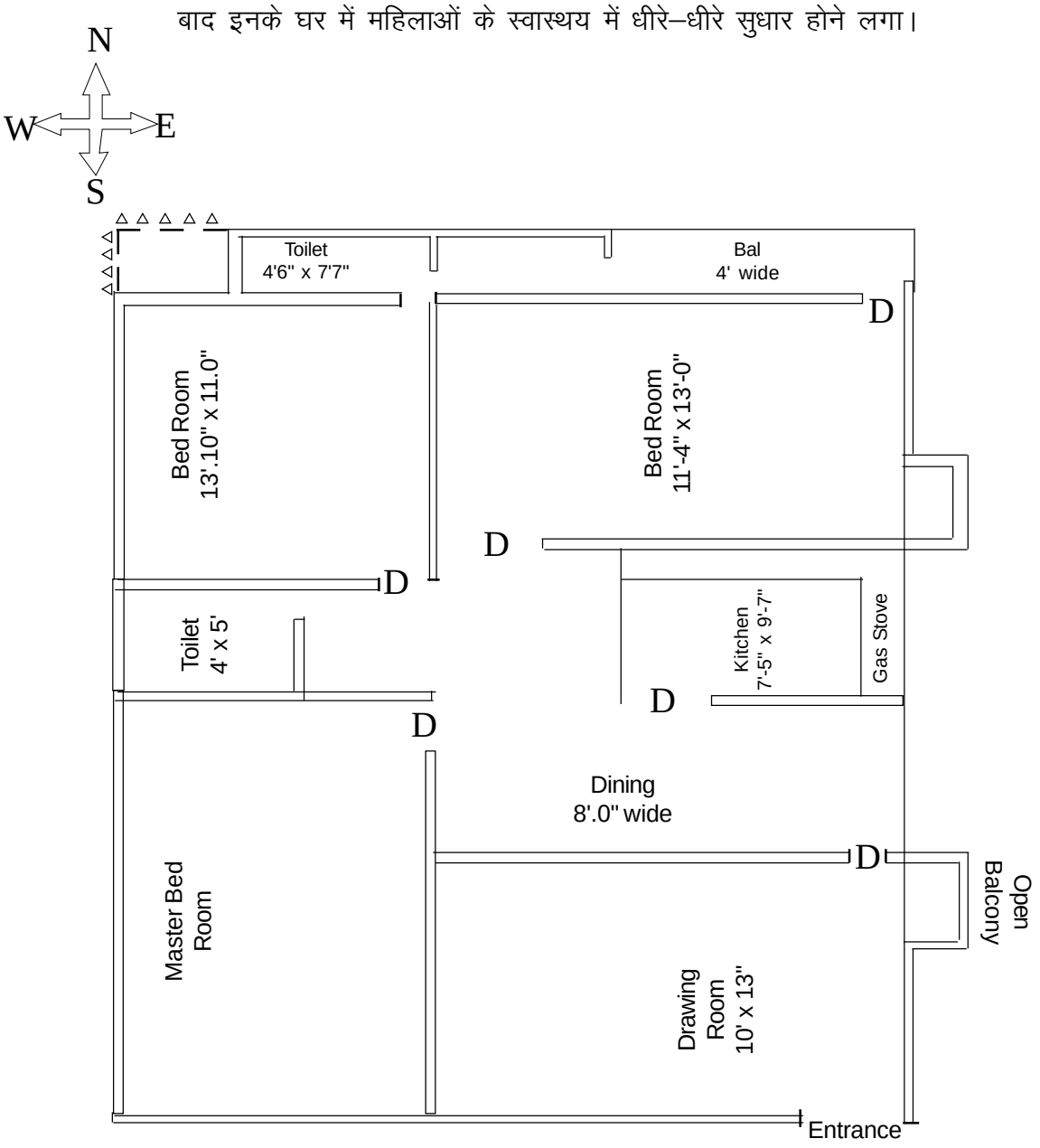




Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

## यह एक दोषपूर्ण भवन का विश्लेषण है:–

इस भवन के वास्तु निरीक्षण अक्टुबर 2007 में किया गया था। इस भवन में सबसे बड़ा दोष भवन के ईशान क्षेत्र में सीढी, शौचालय एवं सेप्टिक टैंक का होना है। इस भवन के ईशान क्षेत्र पुरी तरह बाधित था जिसके फलस्वरूप आर्थिक और मानसिक प्रगति अवरूद्व थी। बच्चों का शिक्षण कार्य अच्छे ढंग से नही चल पा रहा था।

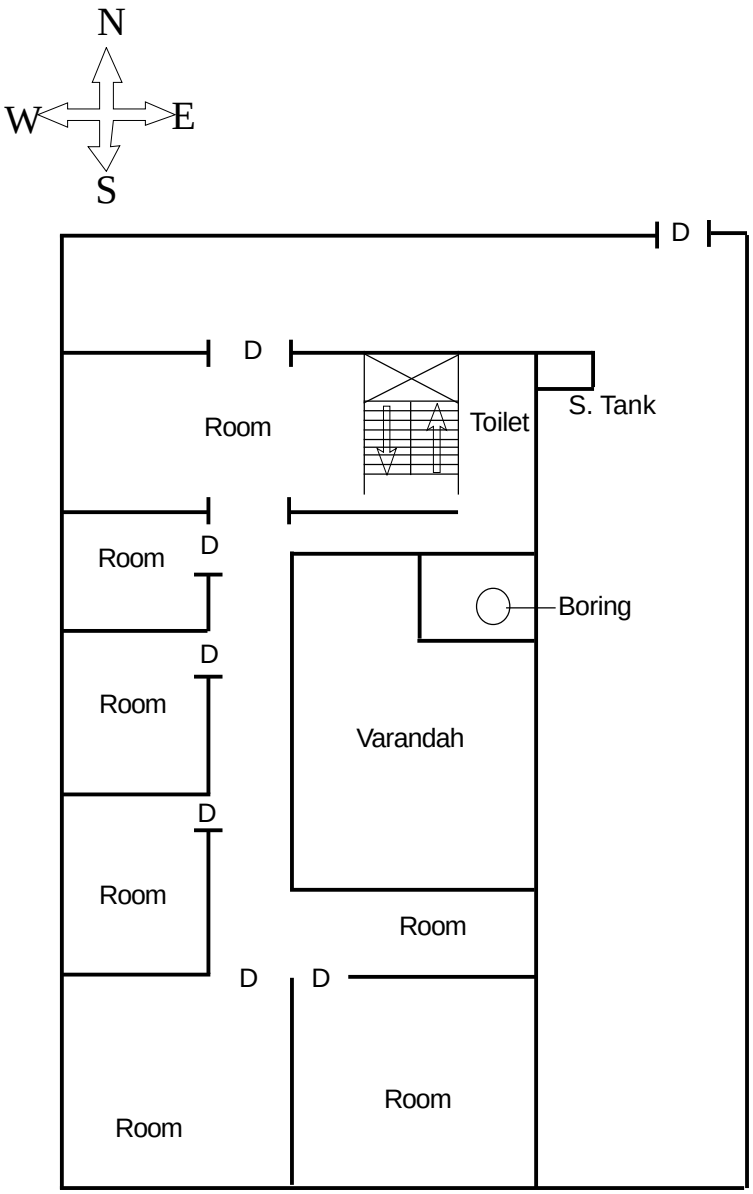


Future Point



www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

## दोषपूर्ण भवन को वास्तु के सिद्वांतो के अनुसार बदला गया :–

इस भवन में सर्वप्रथम शौचालय, सेप्टिक टैंक एवं सीढ़ी बदलने की सलाह दी गयी। सलाह को मानते हुए गृहस्वामी ने उसमें निम्नांकित तरीके से बदलाव अपने आवश्यकतानुसार किया। बदलाव हुए विगत 1 साल हो चुका है आज उस घर मे व्यापार में प्रगति, बच्चों के शिक्षा में सुधार एवं मानसिक परेशानियों से लोगो को राहत मिल रही है। साथ ही धीरे–धीरे आर्थिक प्रगति में भी संतोषजनक सुधार हो रहा है।

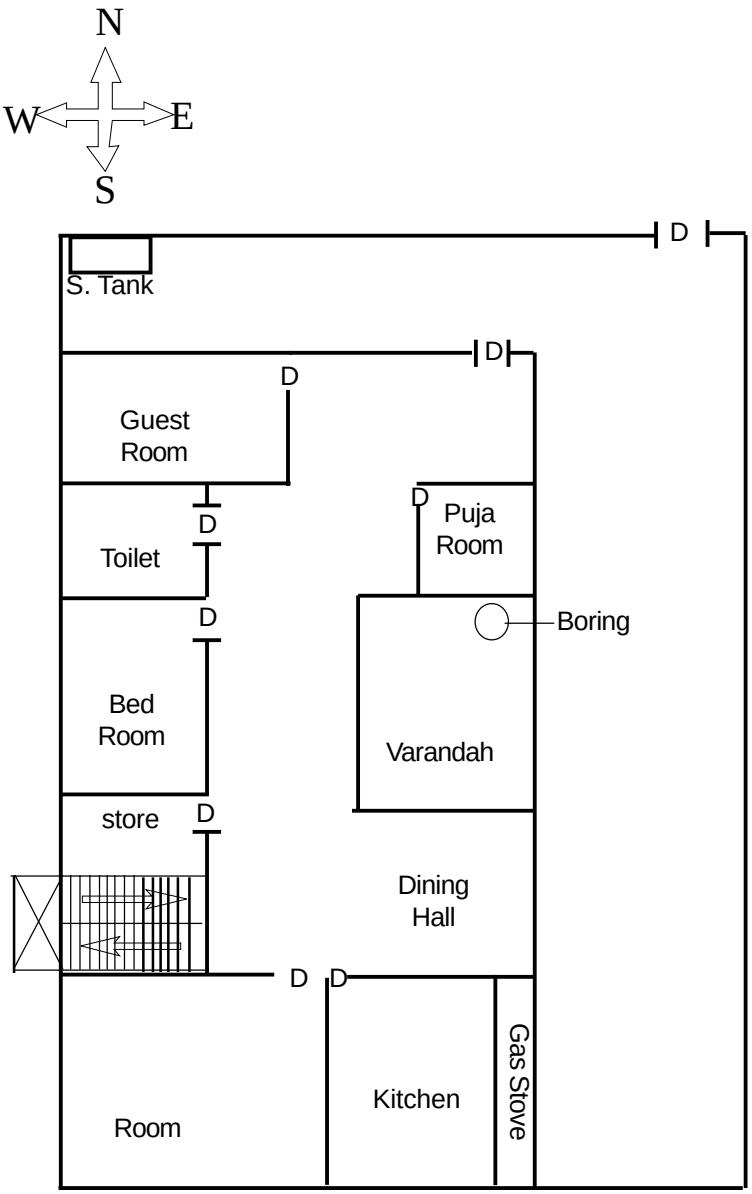




Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

## यह एक दोषपूर्ण भवन का विश्लेषण है:–

इस भवन का वास्तु निरीक्षण अक्टुबर 2006 में किया गया। इस भवन का मुख्य प्रवेश द्वार दक्षिणी नैऋत्य की ओर बना हुआ था और उसी जगह पर सेप्टिक टैंक था। आग्नेय दिशा में बहुत बड़ा अंडर ग्राउंड कमरा गाय रखने के लिए तथा पूर्व दिशा में शौचालय का निर्माण किया हुआ था। इस भवन का उत्तर एवं पूर्व पूर्णतः बंद था। पश्चिम में 4 फीट की गली एवं दक्षिण में 12 फीट का रोड था। इस गृह में प्रवेश करने के 1 साल के अंदर 3 व्यक्तियों की मृत्यु हुई।

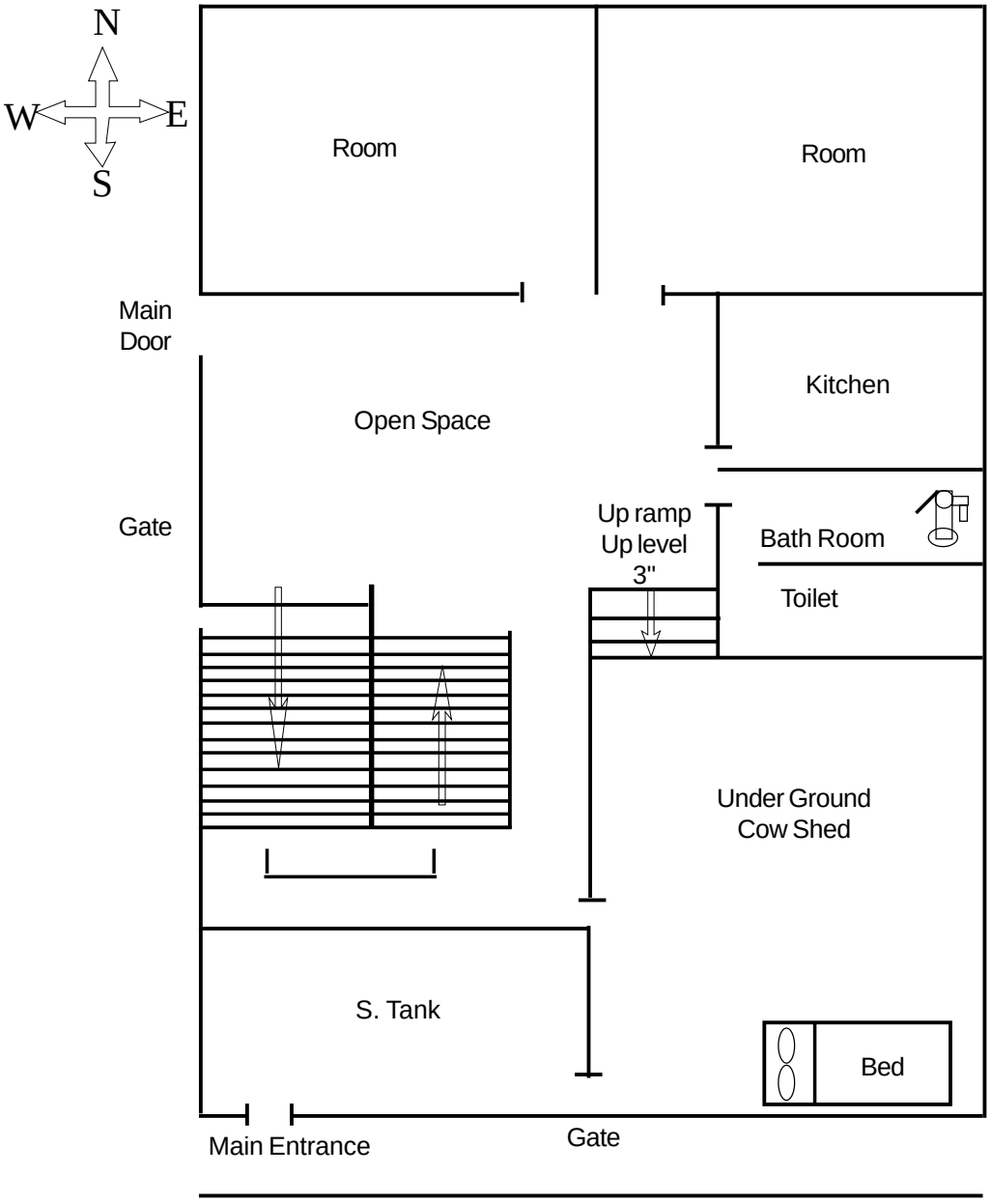


Future Point



www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

## दोषपूर्ण भवन को वास्तु के सिद्वांतो के अनुसार बदला गयाः–

इस भवन में सर्वप्रथम दक्षिण–पश्चिम के सेप्टिक टैंक को बंद करने की सलाह दी गई। पश्चिमी वायव्य में गली में छोड़ी हुई जगह पर नई सेप्टिक टैंक बनाने की जगह निर्धारित की गयी। दक्षिण–पूर्व में जो अंडर ग्राउंड कमरा बनाया गया था उसे बंद करने की सलाह दी गई। शौचालय को भी पश्चिमी वायव्य में रखने की सलाह दी। मुख्य प्रवेश द्वार को मूल दक्षिण में करने की सलाह दी। विगत 2 वर्षों से सारे सलाहों को मानने के उपरांत भवन में निवास करने वाले शांतिपूर्वक जीवन यापन कर रहे है।

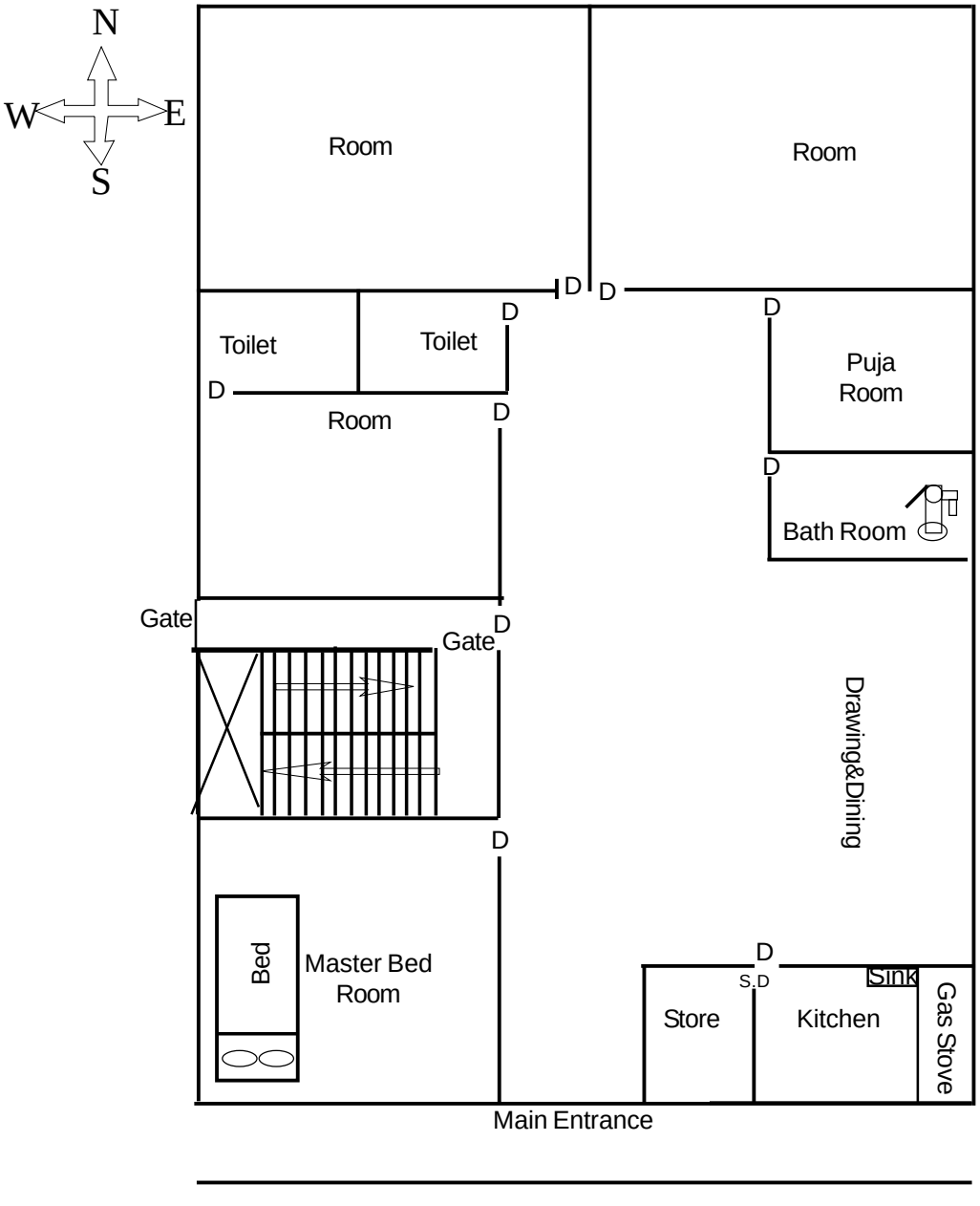




Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

## यह एक दोषपूर्ण भवन का विश्लेषण है:–

यह घर एक प्रशासनिक अधिकारी का है जिसका जुलाई 2005 में वास्तु निरीक्षण किया गया था। घर में प्रवेश करने के उपरांत ही वे पत्नी एवं संतान के सुख से वंचित हो गये। साथ ही विभिन्न प्रकार की परेशानियों से घिर गये। इसकी मुख्य वजह ईशान कोण में सेप्टिक टैंक, वायव्य दिशा का कटा होना तथा नैऋत्य से प्रवेश द्वार था। इनके घर में अमरूद के बडे–बडे पेड़ भी थे।

साथ ही साथ शौचालय भी पूर्व एवं पूर्वी आग्नेय में था।

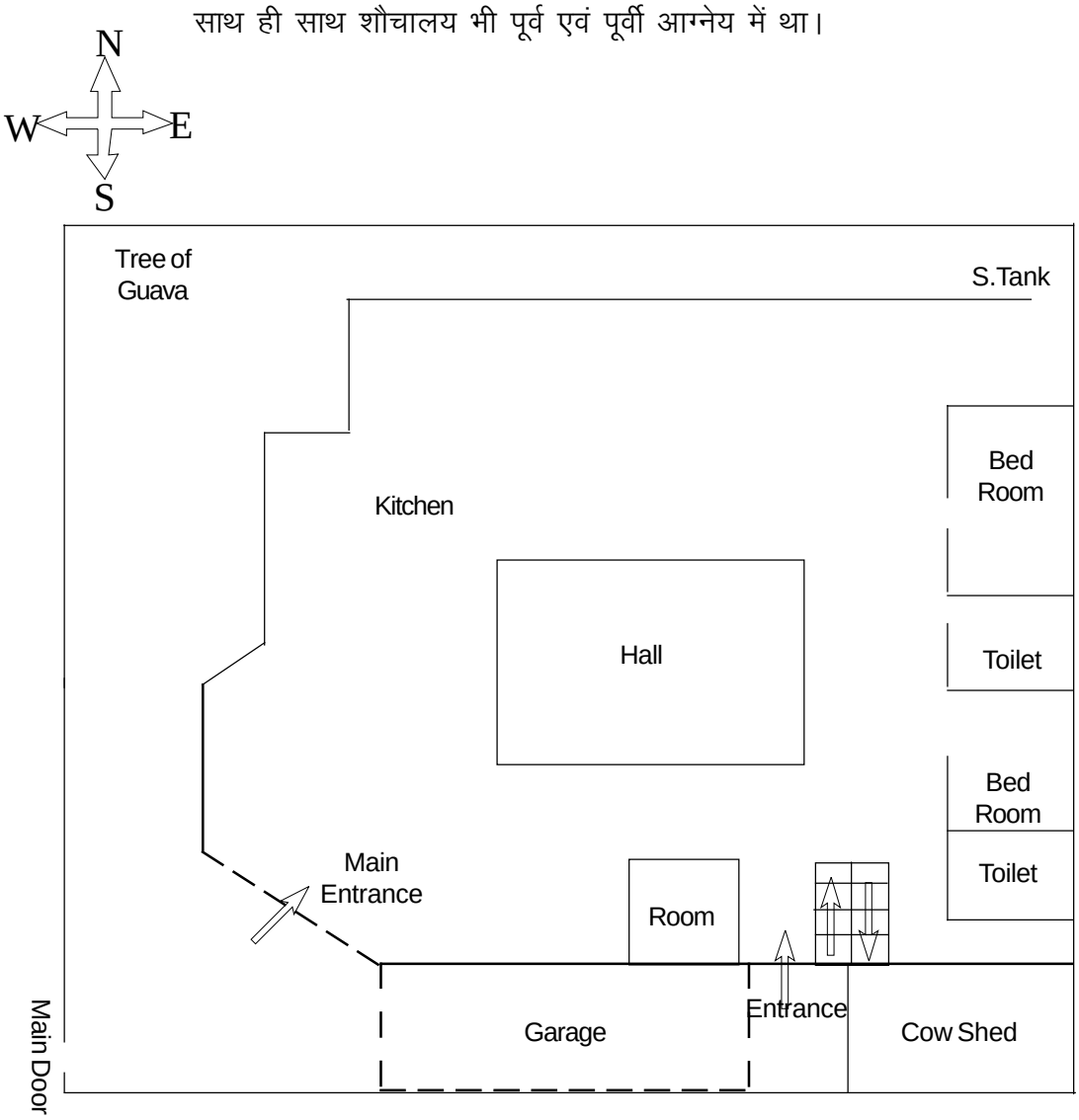


Future Point



www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

## दोषपूर्ण भवन को वास्तु के सिद्वांतो के अनुसार बदला गया :–

इस भवन में सर्वप्रथम प्रवेश द्वार को पश्चिम में बनाने की सलाह दी गई। दक्षिण –पश्चिम में नये कमरे बनाने की सलाह दी गई। साथ ही घर में पपीता, अमरूद एवं कांटेदार पैधे को हटाने का सुझाव दिया गया। सेप्टिक टैंक को ईशान क्षेत्र से हटाकर उतरी वायव्य में बनाने की सलाह दी गई। वायव्य दिशा के कटे हुए क्षेत्र को पिरामिड के द्वारा ठीक करवाया गया। इन सारे सलाहों के मानने के उपरांत उनकी स्थिति में काफी सुधार हुआ। सेवानिवृत होने के बावजूद सरकार के प्रशासकीय कार्यो में उनकी सलाह–मशवरा हमेशा ली जाती है।

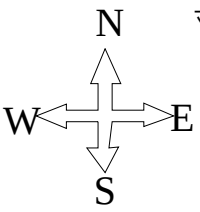


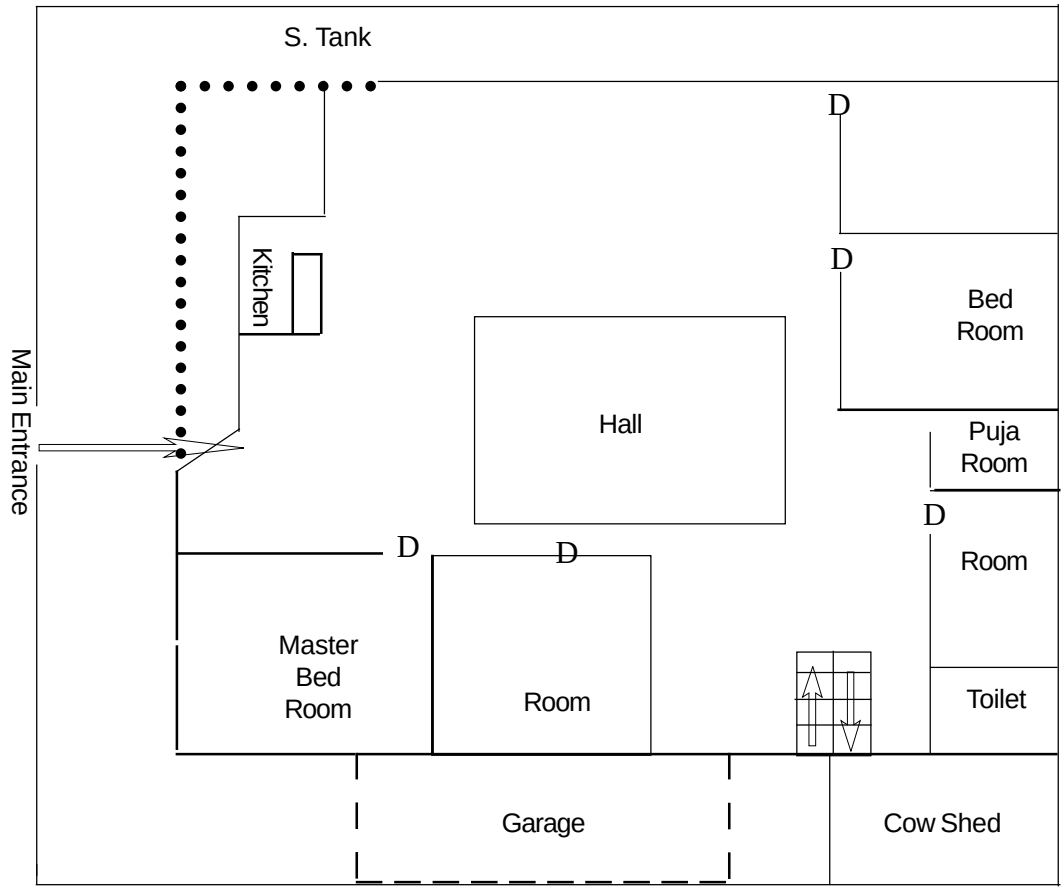




www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com